श्री महावीर ग्रंथ अकादमी—चतुर्थ पुष्प

बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

[१६ वीं-१७ वीं शताब्दि के चर्चित, अज्ञात एवं अल्पचर्चित पांच कवियों—बाई अजीतमति, परिमल्ल, जगपाल, भ० महेन्द्रकीर्ति एवं [illegible] के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ उनकी सम्पूर्ण कृतियों के मूल पाठों का प्रथम बार संकलन प्रकाशित]

लेखक एवं सम्पादक
डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम. ए., पी-एच. डी., शास्त्री

प्रकाशक
श्री महावीर ग्रंथ अकादमी जयपुर

प्रथम संस्करण : अप्रैल, १९८४ मूल्य ५०.००

सम्पादक —डा० हीरालाल माहेश्वरी एम.ए., डी०फिल, डी.लिट जयपुर
डा० राजाराम जैन, एम.ए., पी-एच.डी साहित्याचार्य आरा
डा० गंगाराम गर्ग, एम.ए.पी-एच.डी. भरतपुर

निदेशक मण्डल—
परम संरक्षक—श्री भट्टारक चारुकीर्तिजी महाराज, मूडबिद्री
संरक्षक— श्री साहू अशोक कुमार जैन, देहली
श्री पूनमचन्द जैन, झरिया (बिहार)
श्री रमेशचन्द जैन (पी. एस. जैन) देहली
श्री डी० वीरेन्द्र हेगड़े, धर्मस्थल
श्री निर्मलकुमार सेठी, लखनऊ
श्री महावीरप्रसाद सेठी, सरिया (बिहार)
श्री कमलचन्द कासलीवाल, जयपुर
डा० (श्रीमती) सरयू० वी० दोशी, बम्बई
श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर
श्री रूपचन्द कटारिया, देहली
श्री ज्ञानचन्द जैन, सागर
अध्यक्ष— श्री शाँतिलाल जैन, कलकत्ता
कार्याध्यक्ष— श्री रतनलाल गंगवाल कलकत्ता श्री पूरणचन्द गोदीका, जयपुर
उपाध्यक्ष— सर्वश्री गुलाबचन्द गंगवाल, रेनवाल, अजितप्रसाद जैन ठेकेदार, देहली
कन्हैयालाल सेठी जयपुर, पदमचन्द तोतूका जयपुर
रतनलाल बिनायक्या डीमापुर, त्रिलोकचन्द कोठारी, कोटा
महावीरप्रसाद नृपत्या जयपुर, चिरंजीलाल बज, जयपुर
रामचन्द्र रारा गया, लेखचन्द बाकलीवाल, जयपुर
रतनलाल बिनायक्या भागलपुर, सम्पतकुमार जैन, कटक
पदमकुमार जैन नेपालगंज, ताराचन्द बख्शी, जयपुर
रतनचन्द पंसारी जयपुर, भरतकुमारसिंह पाटोदी, जयपुर
श्रीमती चमेली देवी कोठिया वाराणसी, शांतिप्रसाद जैन, देहली
धूपचन्द पांड्या जयपुर, ललितकुमार जैन, उज्जैन
मोहनलाल अग्रवाल जयपुर

निदेशक एव प्रधान
सम्पादक— डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जयपुर
प्रकाशक— श्री महावीर ग्रंथ अकादमी
८६७ अमृत कलश
बरकत नगर, किसान मार्ग
टोंक फाटक, जयपुर—१५

प्रतियां ११००
मूल्य ५०) रुपये

मुद्रक—मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर—३ फोन—६७२६७

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी

प्रगति परिचय

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के प्रगति परिचय में मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि जिस उद्देश्य को लेकर अकादमी की स्थापना की गयी थी उसकी ओर वह निरन्तर आगे बढ़ रही है। प्रस्तुत पुष्प सहित अब तक उसके सात पुष्प निकल चुके हैं। इन सात पुष्पों में जिन कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है उनमें से अधिकांश कवि अब तक अचर्चित, अज्ञात अथवा अल्प चर्चित रहे हैं। कुछ कवि तो ऐसे हैं जिनके व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का एक मात्र श्रेय श्री महावीर ग्रंथ अकादमी को दिया जा सकता है।

अकादमी के छट्ठे पुष्प कविवर बुलाखीचन्द, बुलाकीदास एवं हेमराज का विमोचन तिजारा (राजस्थान) में पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के विशाल समारोह मे परमादरणीय महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी सा० ने अपने कर कमलों से किया था। यह संभवतः प्रथम अवसर है जब महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने किसी जैन विद्वान की पुस्तक का ऐसे विशालतम समारोह मे विमोचन किया हो। इसलिये ऐसा गौरव प्राप्तकर लेखक एवं अकादमी दोनों आही गौरवान्वित हैं।

प्रस्तुत सप्तम पुष्प में हमने पांच कवियों का परिचय एवं उनकी कृतियों का संकलन किया है उनमें चार तो अब तक पूर्णतः अचर्चित एवं अज्ञात माने जाते रहे हैं। हिन्दी साहित्य में कवयित्रियों के नाम अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं इसलिये बाई अजीतमति की उपलब्धि एक उल्लेखनीय खोज है। बाई अजीतमति के अतिरिक्त अचयाल, ब्र० महेन्द्रकीर्ति एवं देवेन्द्र सभी अचर्चित कवि हैं।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में हिन्दी रचनाओं का विशाल भण्डार छिपा हुआ है। इन शास्त्र भण्डारों की जितनी अधिक खोजबीन की जाती है उतनी ही

नयी एवं अचर्चित कृतियों की उपलब्धि होती रहती है प्रस्तुत पुष्प में जिन चार कवियों का परिचय दिया गया है उनमें तीन कवियों की उपलब्धि अभी गत वर्ष १९८३ में की गयी खोज का सुखद परिणाम है।

अब तक प्रकाशित सात भागों में ८० से भी अधिक कवियों पर विस्तृत प्रकाश डाला जा चुका है। उनमें महत्वपूर्ण कवि, १ भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति, २ बूचराज, ३ छीहल, ४ ठक्कुरसी, ५ गारवदास, ६ चतुरुमल, ७ ब्रह्मजिनदास, ८ भट्टारक रत्नकीर्ति, ९ कुमुदचन्द्र, १० अभयचन्द्र, ११ शुभचन्द्र, १२ श्रीपाल, १३ संयमसागर, १४ धर्मसागर, १५ गणेश, १६ आचार्य सोमकीर्ति, १७ ब्रह्म यशोधर, १८ सांगु, १९ गुणकीर्ति, २० यशःकीर्ति, २१ बुलाखीचन्द, २२ बुलाकीदास, २३ हेमराज गोदीका, २४ हेमराज पांडे, २५ बाई अजीतमति, २६ जनपाल, २७ परिमल्ल, २८ भ० महेन्द्रकीर्ति, २९ देवेन्द्र, एवं ३० ब्रह्म रायमल्ल के नाम उल्लेखनीय है। प्रस्तुत भाग को मिलाकर अब तक २८५० पृष्ठों का विशाल मेटर उपलब्ध कराया जा चुका है जो अपने आप में एक रिकार्ड हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी के जैन कवियों का जैसे-जैसे परिचय, मूल्यांकन एवं उनकी कृतियों का संकलन हिन्दी के विद्वानों के पास पहुंचेगा, जैन कवियों के प्रति उनकी उपेक्षा की भावना उतनी ही तेजी से दूर हो सकेगी और जैन कवियों को भी हिन्दी की मुख्य धारा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकेगा।

सहयोग

अकादमी को समाज का जितना सहयोग अपेक्षित है उतना सहयोग अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। हम चाहते हैं कि अकादमी के प्रत्येक ग्राम एवं नगर में सदस्य हों जिससे इसके द्वारा प्रकाशित सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें साहित्य प्रेमियों के हाथों मे पहुंच सके। फिर भी जितना सहयोग हमें अब तक मिला है उसके लिये हम उन सभी महानुभावों के आभारी हैं जिन्होंने अकादमी का सदस्य बन कर साहित्य प्रकाशन की योजना को मूर्त रूप देने में सहयोग दिया है। हमारी हार्दिक भावना तो यही है कि अकादमी द्वारा प्रति वर्ष तीन प्रकाशन हों, एक सेमिनार का आयोजन एवं प्राचीन साहित्य की खोज के विभिन्न कार्यक्रम तीव्र गति से होते रहें। अकादमी के संरक्षक माननीय श्री निर्मलकुमार जी सा० सेठी लखनऊ की भी यही भावना है कि अकादमी की साहित्य प्रकाशन की योजनाओं पर अच्छी राशि खर्च हो। हम सेठी जी की भावनाओं के प्रति आभारी हैं। आपका अकादमी के प्रति सहज सहयोग प्रशंसनीय है। इसी तरह अकादमी के परम संरक्षक स्वामी श्री पंडिताचार्य भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज मूडबिद्री एवं डा० दरबारी लाल

श्री डा० कोठिया वाराणसी के सहयोग के लिये भी हम आभारी हैं। डा० कोठिया सा० से स्वयं का तो सहयोग मिलता ही रहता है, वे दूसरों को भी अकादमी का सदस्य बनाने की भी प्रेरणा देते रहते हैं।

अकादमी के सदस्य श्री कन्हैयालाल जी सा० पहाड़िया मद्रास के आकस्मिक निधन से संस्था को गहरी क्षति पहुंची है। पहाड़िया सा० अच्छे समाज सेवी थे तथा दक्षिण भारत में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते थे। वे अकादमी के प्रति पूर्ण सहयोग की भावना रखते थे। इस अवसर पर हम अकादमी की ओर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

नये संरक्षक सदस्यों का स्वागत

षष्ठ पुष्प प्रकाशन के पश्चात् माननीय श्री रतनचन्द जी सा० कटारिया एवं श्री डालचन्द जी सा० जैन सागर ने अकादमी के संरक्षक सदस्य बनने की स्वीकृति दी है। कटारिया सा० समाज सेवा एवं साहित्य प्रकाशन दोनों में पूर्ण रुचि लेते हैं तथा बिना किसी प्रदर्शन के अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित करते रहते हैं। इसी तरह माननीय श्री डालचन्द जी सा० जैन मध्यप्रदेश में ही नहीं किन्तु पूरे देश में अपने सेवा भावी जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं। आप देश के जाने माने उद्योगपति हैं तथा अपनी उदारता एवं सरल स्वभाव के लिये सभी ओर लोकप्रिय हैं। हम दोनों ही महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

नये अध्यक्ष का का स्वागत

कलकत्ता निवासी श्री शांतिलाल जी सा० जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद की स्वीकृति देकर अपने सहयोगी भावना का परिचय दिया है। आप एक युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक लगन वाले व्यक्ति हैं। आपने अभी इसी वर्ष श्री महावीर जी में सम्पन्न पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सौधर्म इन्द्र का यशस्वी स्थान लेकर अपनी धार्मिक रुचि का परिचय दिया था। अकादमी की ओर से हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

वर्ष १९८३ में जिन महानुभावों ने अकादमी का उपाध्यक्ष बन कर संस्था को सहयोग दिया है उसके लिये हम सभी के हार्दिक आभारी हैं। ये महानुभाव हैं जयपुर के सर्व श्री रूपचन्दजी पांड्या, तरुणकुमारसिंह जी पाटोदी, एवं श्री मोहन लाल जी [illegible], वाराणसी की श्रीमती चमेलीदेवीजी कोठिया, देहली के श्रीशांति प्रसाद जी जैन एवं उज्जैन के श्री अजितकुमार जी जैन। श्री रूपचन्द जी पांड्या युवा व्यवसायी हैं तथा सभी के प्रति सहयोग की भावना रखते हैं। धार्मिक

कार्यों में अपना अच्छा योगदान देते रहते हैं। श्री भरतकुमार सिंह जी पूर्णतः धार्मिक जीवन जीने वाले व्यक्ति हैं। व्रत उपवास पूजा पाठ जिनका प्रति दिन का नियम है। संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देने की भावना रखते हैं। श्री मोहन लाल जी सा० काला अग्रवाल जयपुर के जाने माने चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट हैं। धार्मिक कार्य एवं समाज सेवा की भावना रखते हैं। साहित्य प्रकाशन में अत्यधिक रुचि लेते हैं। श्रीमती कमलीदेवीजी कोठिया समाज के यशस्वी मनीषी डा० दरबारीलालजी कोठिया की धर्मपत्नी हैं। हमारे उपाध्यक्षों में आप एक मात्र महिला सदस्या हैं। अकादमी के कार्यों से आप विशेष रुचि रखती हैं। हम आपकी भावनाओं का हार्दिक स्वागत करते हैं। देहली के श्री शांतिप्रसाद जी सा० जैन स्वयं बड़े भारी पुस्तक व्यवसायी हैं। आपकी धार्मिक एवं साहित्यिक लगन देखते ही बनती है। बिना किसी प्रदर्शन एवं यश लिप्सा के आप सभी को अपना आर्थिक सहयोग देते रहते हैं। इसी तरह श्री ललितकुमार जी जैन उज्जैन के प्रतिष्ठित युवा समाज सेवी एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं तथा मालवा में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। हम आप सबका हार्दिक स्वागत करते हैं।

इसी तरह कलकत्ता के श्री दुलीचन्द जी सरावगी, बम्बई के श्री राजमल जी जवेरी, सागर के श्री महेन्द्र कुमार जी मलैय्या, जयपुर के श्री गणपतराय जी सरावगी एवं भावनगर के श्री भंवरलाल जी सा० अजमेरा ने अकादमी का सम्माननीय सदस्य बन कर जो सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी महानुभावों के आभारी हैं।

सम्पादन में सहयोग

प्रस्तुत पुष्प के सम्पादन में राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० हीरालाल जी माहेश्वरी, आरा कालेज के प्रोफेसर डॉ० राजाराम जी जैन एवं भरतपुर राज्यकीय महाविद्यालय के व्याख्याता डा० गंगारामजी गर्ग ने जो सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया है इसके लिये हम तीनों ही विद्वानों के आभारी हैं। डॉ० माहेश्वरी सा० ने तो विद्वत्तापूर्ण सम्पादकीय भी लिखा है जिसके लिये हम उनके विशेष आभारी हैं।

विद्वानों का स्वागत

अमृत कलश स्थित अकादमी कार्यालय में देश विदेश के विद्वानों का स्वागत करने का अवसर मिलता रहता है। इस वर्ष जिन विद्वानों ने विशेष रूप से अमृत कलश में पधार कर अकादमी के कार्यों को देखा, परखा एवं अपना आशीर्वाद

प्रदान किया उनमें डॉ० भागचन्द भागेन्दु दमोह, श्रीमती राजकुमारी सेठी, कटनी, डॉ० विनान्द कैलेवार्ट प्राच्य विद्या विभाग, लुवेन विश्वविद्यालय बेल्जियम, डॉ० महेन्द्र सागर प्रचंडिया एवं डॉ० आदित्य प्रचंडिया अलीगढ़, डॉ० भागचन्द भास्कर नागपुर एवं श्रीमती डॉ० पुष्पा जैन नागपुर, डॉ० प्रेमचन्द रांवका मनोहरपुर के विशेष रूप से आभारी हैं। हम समाज के सभी विद्वानों का स्वागत करते हैं।

आगामी पुष्प

अकादमी का अष्टम पुष्प "कवि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण" का प्रकाशन कार्य भी मई ८४ तक पूर्ण हो जावेगा। इस भाग में हिन्दी में रचित प्रथम पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं कवि के काव्य का मूल्यांकन किया गया है। जिसमें ५६० से भी अधिक पृष्ठ रहेंगे।

आभार

अन्त में मैं इन सभी महानुभावों का आभारी हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अकादमी को अपना सहयोग /आशीर्वाद तथा आर्थिक संबल प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की ओर से

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के सप्तम पुष्प "बाई अजीतमति एवं उनके समकालीन कवि" को पाठकों को हाथों में देते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। प्रस्तुत पुष्प में बाई अजीतमति, परिमल चौधरी, भ० महेन्द्रकीर्ति, बनपाल एवं देवेन्द्र कवि-इन पांच कवियों का जीवन परिचय एवं उनके काव्यों के विस्तृत अध्ययन के साथ उनकी मूल कृतियों को भी प्रकाशित किया गया है। यह प्रथम अवसर है जब योजनाबद्ध प्राचीन जैन कवियों की रचनाओं को सुसम्पादित करके साहित्यिक जगत के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। सप्तम पुष्प के पांच कवियों में से परिमल चौधरी को छोड़ कर शेष सभी चार कवि अब तक अज्ञात एवं अचर्चित रहे हैं। यही नहीं हिन्दी जगत के समक्ष एक महिला कवि बाई अजीतमति को खोज निकालने में भी डा० कासलीवाल जी को सफलता मिली है। बाई अजीतमति की कृतियो के अध्ययन के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है वह कि आध्यात्मिक कवयित्री थी तथा भक्ति परक पद रचना में पूर्ण रुचि लेती थी।

भ० महेन्द्रकीर्ति के सभी १५ पद उच्चस्तर के हैं जो अध्यात्म एवं भक्ति रस में ओत प्रोत हैं। बनपाल कवि ऐतिहासिक पदों के लिखने में रुचि लेते थे। वे पहले कवि हैं जिन्होंने केशोराय पाटन में स्थित भगवान मुनिसुव्रतनाथ, आमेर (जयपुर) में स्थित भगवान नेमिनाथ, टोडारायसिंह में स्थित भगवान आदिनाथ एवं सांगानेर में स्थित भगवान महावीर की अतिशययुक्त प्रतिमाओं के स्तवन के रूप में पद लिखे हैं। इसी तरह देवेन्द्र कवि हैं जिन्होंने संवत १६३८ में यशोधर रास को महुआ नगर (गुजरात) में निबद्ध किया था। यशोधर रास १६वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण कृति है जिसका भी प्रथम बार प्रकाशन किया गया है। इसी पुष्प में १७वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण कवि परिमल चौधरी का गहन अध्ययन किया गया है। कवि परिमल अपने युग में ही नहीं किन्तु उसके पश्चात् भी शताब्दियों तक

अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं इसीलिए उनकी "श्रीपाल चरित" कृति की पचासों पाण्डुलिपियां जैन ग्रन्थागारों में उपलब्ध होती हैं। डा० कासलीवाल ने ऐसी महत्व-पूर्ण कवियों एवं उनकी कृतियों को खोज निकालने में जो अथक परिश्रम किया है और उसमें सफलता प्राप्त की है उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। साहित्यिक जगत उनकी इस महान् सेवा के लिए चिरऋणी रहेगा।

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी साहित्य सेवी संस्था है जिसकी स्थापना समस्त हिन्दी जैन साहित्य को योजनाबद्ध बीस भागों में प्रकाशित करने के लिए की गई है। यह उसका सप्तम पुष्प है इसके पूर्व छह पुष्पों में, ब्रह्म रायमल्ल, बूचराज, छीहल, गारवदास, ठक्कुरसी, ब्रह्मजिनदास, भ० रत्नकीर्ति, भ० कुमुदचन्द्र, आचार्य सोमकीर्ति, सांगा, ब्रह्म यशोधर, बुलाखीचन्द, बुलाखीदास, पांडे हेमराज, हेमराज गोदीका जैसे कवियों पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में बहुत सुन्दर प्रकाश डाला जा चुका है।

अकादमी के षष्टम पुष्प का विमोचन गत वर्ष मार्च में महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी ने तिजारा (राजस्थान) में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव में अपने कर कमलों से किया था। यह प्रथम अवसर था जबकि देश के महामहिम राष्ट्रपति जी ने किसी जैन विद्वान की कृति का विमोचन किया हो। इसके पूर्व के पुष्प भी स्व० डा० सत्येन्द्र, क्षुल्लकरत्न सिद्धसागर जी महाराज लाडनू वाले, भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज मूडबिद्री जैसे मनीषियों एवं सन्तों द्वारा विमोचित हो चुके हैं।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र की तरह साहित्यिक क्षेत्र में भी कार्य करते रहने की ओर निरंतर जागरूक है। वह यह भी चाहती है कि श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी जैसी साहित्यिक संस्था द्वारा जैन साहित्य के प्रकाशन का कार्य निरन्तर आगे बढ़ता रहे। मैं समाज के सभी महानुभावों से प्रार्थना करता हूं कि वे अकादमी के अधिक से अधिक से संख्या में सदस्य बन कर जैन साहित्य के प्रकाशन में अपना पूर्ण योगदान देवें।

निर्मल कुमार जैन

दो शब्द

(डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, एम.ए., एल्-एल्. बी., डी. फिल्., डी. लिट्)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं–विशेषतः हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी के साहित्येतिहासों में जैन काव्य धारा का महत्वपूर्ण स्थान है। वह धारा बड़ी व्यापक है। जैन काव्य की गणना धार्मिक काव्य के अन्तर्गत है। जिन जैन कवियो ने लौकिक प्रेम कहानियो और इतिहास को आधार बनाया है, उन्होंने भी धार्मिक रचनाएँ तो लिखी ही हैं।

मध्य युग में मुख्यतः तीन तत्व जनभावना को प्रेरित करते थे–राजा, धर्म और परम्परा। धार्मिक प्रेरणा से ही हमारी अधिकांश सांस्कृतिक और साहित्यिक थाती सुरक्षित रह गई है। जैन काव्य का निर्माण, संरक्षण और प्रचार–प्रसार इस प्रेरणा के फलस्वरूप हुआ है। धार्मिक उत्थान उसका लक्ष्य है। माध्यम है–तद्–तद् कालीन क्षेत्र–विशेष मे प्रचलित सरल भाषा और कथ्य है–(1) परम्परागत और पौराणिक कथाएँ तथा (2) स्वानुभव और भावपूर्ण उद्गार। साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक आकर्षक है–जैन कथा और चरित काव्य। ऐसे काव्यों में स्थान–स्थान पर मनोवृत्तियों और दशाओं, विभिन्न वस्तुओं, त्योहारो, अवसरों, प्रकृति आदि के भाव–भीने चित्रण मिलते हैं। कथा मे वर्णित समाज की युग–युगीन झांकी के भी दर्शन होते हैं। इन काव्यों की विशिष्ट शब्दावली का सांस्कृतिक महत्व है। इस महत्व को भलीभांति दर्शाना अध्ययन का एक पृथक् पहलू है। इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

यद्यपि भारतीय साहित्य भिन्न–भिन्न भाषाओं मे लिखा गया है तथापि वह मूलतः एक है। देश, काल, युगीन मान्यताओं, विचारों और परम्पराओं के कारण उसमें अलग–अलग रंगत दिखाई देती है। भारतीय साहित्य वाटिका में भिन्न–भिन्न भाषा–साहित्यो के फूलों की यह रंगत भी उसका विशिष्ट सौन्दर्य है।

ऐसी ही एक रंगत जैन काव्य की है। यह हमारी गौरवपूर्ण धरोहर है जिस पर गर्व होना उचित ही है।

इस धरोहर की कुछ बानगी डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल ने दिखाई है— प्रस्तुत ग्रंथ में और इससे पूर्व प्रकाशित ६ अन्य ग्रंथों में। प्रेमी पाठकों और अध्येताओं के लिए यह ग्रंथमाला अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगी, इसमें संदेह नहीं ऐसा कार्य कितना कठिन, श्रम और व्यय-साध्य है, यह भुक्तभोगी ही जान सकता है, और इसके लिए साहित्य जगत की ओर से डॉ० कासलीवाल बधाई के पात्र हैं।

यह खेद की बात है कि अभी तक भी जैन काव्य का साहित्येतिहासों में सम्यक् आकलन और विवेचन नहीं हो सका है। इसका कारण साहित्येतिहासकार उतने नहीं जितने स्वयं जैन काव्य प्रेमी हैं। जैन काव्य-कृतियां इस काव्य के जैनेतर अध्येताओं और इतिहासकारों को भी सुलभ नहीं हो पाती, साधारण पाठक की तो बात ही क्या है। उसकी यह किंचित चर्चा जैन समाज तक ही अधिकांशतः सीमित है। दूसरे, जैन दर्शन और चिन्तन की पगडंडियों में जैन काव्य खो गया है यद्यपि यह विचित्र बात है कि साधारण जिज्ञासु और पाठक के लिए जैन काव्य ही उसके दर्शन और चिन्तन के प्रसार का सुदृढ आधार है। विभिन्न जैन-संस्थाएँ इन बातों की ओर किंचित् ध्यान दे सके, तो साहित्य का बड़ा उपकार होगा। तब जैन काव्य जैनेतर समाज मे भी और अधिक चर्चा-परिचर्चा का विषय बन सकेगा जिसके फलस्वरूप उसके अनेक पक्षों के अतिरिक्त उसकी आज की प्रासंगिकता भी उजागर होगी। प्रस्तुत कार्य और अन्य ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन देना और उनका प्रचार-प्रसार करना ही इसका एक मात्र उपाय है। विश्वास है जैन समाज इस ओर ध्यान देगा।

विनीत

हीरालाल माहेश्वरी

लेखक की ओर से

देश में हिन्दी भाषा का विशाल साहित्य विद्यमान है। विगत सात शताब्दियों से कवियों एवं लेखकों ने हिन्दी साहित्य के भण्डार को इतना अधिक आप्लावित किया है कि उसकी थाह पाना किसी नये द्वीप की खोज करने के समान हैं। हम किसी भी गांव/शहर में स्थित शास्त्र भण्डारो अथवा व्यक्तिगत संग्रहों की खोज में निकल जावें तो कभी २ कुछ ऐसी कृतियां उपलब्ध हो जाती है जिनके बारे मे हमने अब तक सुना भी नहीं होगा। इसलिये हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार को इतिहास के रूप मे बांधना किसी एक विद्वान के लिये सभव नहीं है। अब तक हिन्दी साहित्य के जो इतिहास निकले है वे सब किसी न किसी प्रकार अपूर्ण है क्योंकि उनमें समग्र हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाया है। उदाहरण के लिये हम जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी साहित्य को ही लें। इस साहित्य को किसी भी विद्वान् ने उचित स्थान प्रदान नहीं किया। अब तो प्राचीन कवियो को इतिहास में स्थान मिलना ही बन्द सा हो गया है। जैन कवियो एवं उनकी काव्य कृतियो के बारे मे अभी तक जो कुछ भी सामग्री सामने आई है उसे केवल सेम्पिल सर्वे (Sample Survey) कह सकते है। यही कारण है कि जैसे-जैसे अकादमी के प्रकाशनों की सख्या बढ़ रही है वैसे ही अज्ञात एवं अर्चाचित कवियों की सख्या में आशातीत वृद्धि हो रही है। अब तक हम ऐसे ३० हिन्दी जैन कवियों को प्रकाश में लाने में सफलता प्राप्त कर चुके हैं जिनके बारे में हम अब तक पूर्णतः अन्धकार में थे। प्रस्तुत सप्तम पुष्प मे चार कवि पूर्णतः अज्ञात एवं अचर्चित है तथा एक कवि अल्प चर्चित है।

में इन पांच कवियों मे एक कवयित्री अजीतमति है जो १७ वीं शताब्दि मे अपनी कविताओं से श्रोताओं को आनन्दित किया करती थी। अजीतमति प्रथम जैन कवयित्री के रूप में हिन्दी जगत् के सामने आयी है। इसकी उपलब्धि की कहानी भी अत्यधिक रोचक है। जिस पोथी में कवयित्री की कृतियों का संकलन

है इसकी दशा जीर्ण शीर्ण होने से वह उपेक्षित रही थी और उसके पृष्ठ एक साथ नहीं देखे जा सके। करीब ६-७ महिने पूर्व यह पोथी पुनः देखने में आयी और जब उसका एक २ पृष्ठ देखते २ आगे बढ़े तब तो एक पत्र पर बाई अजीतमति का नाम पढ़ने में आया। एक महिला कवि बाई अजीतमति का नाम पढ़कर उसकी कृति को पूरा पढ़ने की ओर भी उत्सुकता बढ़ी तथा धीरे २ पूरी पोथी के एक २ पृष्ठ को ध्यान से देखने पर अजीतमति की अच्छी सामग्री प्राप्त हो गयी। साथ में उसके स्वयं के द्वारा लिखा हुआ वह पत्र जिसमें संवत् १६५० अंकित है। इतनी प्राचीन कवयित्री की उपलब्धि अत्यधिक प्रसन्नता की बात है। अजीतमति मीराबाई की समकालीन थी। मीरा का जन्म सं० १५५५-१५७३ के मध्य माना जाता है तथा उसकी मृत्यु १६०३-१६०४ के मध्य मानी जाती है इसी तरह बाई अजीतमति का जन्म हमने सन् १५५० के आसपास एवं मृत्यु सन् १६१० के आस पास मानी है। जैसे मीरा ने भक्ति परक पद लिखे उसी प्रकार अजीतमति ने भी आध्यात्मिक पद लिखे हैं। यही नहीं संवत् १६५० (सन् १५९३) में प्रयुक्त हिन्दी गद्य के प्रयोग का भी एक गद्यांश मिला है जो भाषा साहित्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत पुष्प के दूसरे कवि परिमल्ल चौधरी हैं जिनके बारे में डॉ० प्रेम सागर, डॉ० नेमिचन्द शास्त्री एवं पं० परमानन्द शास्त्री ने संक्षिप्त प्रकाश डाला है। कवि की एक मात्र रचना श्रीपाल चरित्र ४०-४५ वर्ष पहिले प्रकाशित हुई थी जो अनुपलब्ध मानी जाती है। परिमल्ल कवि उच्च स्तरीय कवि थे। उनके कवि श्रीपाल चरित्र में श्रीपाल की घटनाओं का बहुत विशद रूप से वर्णन मिलता है। कवि की भाषा में लालित्य एवं शब्दों में मधुरता है। कवि ने श्रीपाल के चरित्र का इतना सुन्दर एवं आकर्षक वर्णन किया है कि पूरा काव्य रोचक बन हो गया है। उसके वर्णनों में सजीवता एवं हृदय पुलकित करने की भरपूर क्षमता है। इसलिये कोई भी पाठक श्रीपाल चरित्र को एक बार प्रारम्भ करने के बाद उसे पूरा करने के बाद ही छोड़ता है। प्रस्तुत भाग में काव्य का प्रारम्भिक एवं अन्तिम अंश दिया गया है वह काव्य का प्रमुख अंश है।

तीसरे कवि धनपाल हैं। जिनकी चर्चा भी साहित्यिक जगत् के समक्ष प्रथम बार की जा रही है। धनपाल घेल्ह कवि के द्वितीय पुत्र थे। पिता का कवि होना और उनके दोनों पुत्रों का भी कवि होना अत्यधिक उल्लेखनीय है संयोग है। धनपाल की अभी तक कोई बड़ी कृति नहीं खोज सके हैं लेकिन उनके जो चार पद मिले हैं वे चारों ही इतिहास परक हैं। केशोरायपाटन, आमेर, सांगानेर एवं टोडारायसिंह के मुनिसुव्रतनाथ, नेमिनाथ, महावीर एवं आदिनाथ स्वामी की

प्रतिमाओं का इन पदों में उल्लेख किया गया है। जैन कवियों ने इस प्रकार के बहुत कम पद लिखे हैं।

प्रस्तुत भाग के चतुर्थ कवि भट्टारक महेन्द्रकीर्ति हैं जो अजमेर की भट्टारक गादी के सन्त थे। महेन्द्रकीर्ति के पदों का प्रकाशन भी प्रथम बार हो रहा है। डिग्गी ग्राम के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक गुटके मे इनके पदों का संग्रह मिला है। भ० महेन्द्रकीर्ति पूर्णतः आध्यात्मिक सन्त थे। उनके पदो के अध्ययन से पता चलता है कि जैसे अध्यात्म उनके जीवन का प्रमुख अंग था। कवि के सभी पद एक से बढ़ कर है। सरल एवं ललित भाषा में निबद्ध है। चेतन काहे भरम भुलानो एवं चेतन चेतत क्यू नहि मन में जैसे पद कविवर भूधर दास, बनारसी दास, रूपचन्द द्वारा लिखे हुए पदों के समान है।

देवेन्द्रकीर्ति इस पुष्प के अन्तिम कवि है जिन्हें महाकवि की उपाधि से भी सम्बोधित किया जा सकता है। देवेन्द्रकीर्ति १६वीं एवं १७वीं शताब्दि के एक सशक्त कवि थे जिनका एक मात्र रास काव्य यशोधर रास अपने युग का महाकाव्य है। यद्यपि काव्य की भाषा जटिल एवं दुरूह अवश्य है लेकिन जब रास का गहराई से अध्ययन किया जाता है तो कवि के काव्य कौशल को देख कर मन झूमने लगता है। एक महाकाव्य के लिये जो आवश्यक तथ्य स्वीकृत किये गये है वे सब इस रास काव्य मे है। यशोधर रास की कथा मे पूर्व कवियो द्वारा प्रतिपादित कथा ग्रहण करने के पश्चात् भी कवि ने प्रत्येक घटना का वर्णन जितना गहन, रोमाञ्चक एवं अलंकारिक किया है वह अपने ढंग का अनूठा है। कवि ने राजगृह नगर, राजपोर नगर एवं अवन्ती एवं उज्जयिनी नगर चारों का बहुत विस्तृत वर्णन किया है। अवन्ती की शोभा का तो पूरे ४० पद्यों में वर्णन हुआ है नगर के वैभव एवं समृद्धि का वर्णन करते हुए उसे इन्द्रपुरी से भी उत्तम नगर सिद्ध किया है।

धनद तिहां एक अहां अनेक, इन्द्र घणा नर आहां सुविवेक
चतुर घणा नर सुर गुरु समा, घणी घणी भोम तिलोत्तमा ॥४०॥

सवे नार भर्ता उर्वसी, घिर घिर नार सुकेसी जी।
रंभा जणी ऊर घणी मानमी, रंभा वन मंडित अवनी ॥४१॥

इसी तरह कवि उज्जयिनी के वर्णन में इतना डूब गया कि उसका वर्णन ५१ छन्दों मे भी कठिनता से पूर्ण हो पाया है। कवि ने चीन देश की सखियों का उल्लेख किया है। एक वर्णन मे कवि ने लिखा है कि वहां स्फटिक के कङ्गूर भवन थे इसलिये जब जाली में से चन्द्रकिरण आती थी तो भोली युवतियां उसे चन्द्रहार समझ कर ढूंढने लगती थी। जब कभी चन्द्रमुखी ऊंचे प्रासाद पर रात्रि को बैठ

आया करती थी तो लोग उसे पूर्णिमा का चन्द्र समझ कर आकाश में देखने लगते थे। कवि के वैसे तो सभी वर्णन एक से एक बढ़ कर है लेकिन इनमें यशोधर की रानी अमृतमती के सौन्दर्य एवं उसके विवाह का वर्णन बहुत अच्छा हुआ है। प्रत्येक रीतिरिवाजों का बड़ी सूक्ष्मता से वर्णन किया गया है। बारात की पहरावणी होना एक महत्वपूर्ण रिवाज माना जाता है कवि ने लिखा है कि पहरावणी के लिये परिवार के सभी सदस्य एकत्रित हो गये हैं। राजा यशोधर अपनी रानी अमृतमती के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध था। रात्रि को जब वह अमृतमती के महल में गया तो उसका एक २ मंजिल पर जितना स्वागत हुआ कवि ने उसका बहुत सूक्ष्म वर्णन किया है उसने अपने जीवन में उसे अमृत के समान समझा। यशोमती रानी का बसन्त क्रीड़ा का वर्णन भी अनूठा हुआ है। इन सबके अतिरिक्त मुनि सुदत्ताचार्य द्वारा धर्मोपदेश का भी कवि ने १२६ पद्यो में वर्णन किया है। पूरा रास काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है जो किसी काव्य के लिये पर्याप्त कहे जा सकते हैं।

इस भाग मे परिमल्ल चौधरी के श्रीपाल चरित्र का एक भाग ही दिया जा सका है शेष अभी कवियो की सभी रचनाओं के पूरे भाग इस में दिये गये हैं। यशोधर रास स्वयं ही एक काव्य है, इसके अतिरिक्त बाई अजीतमति की ६ कृतियां, महेन्द्र कीर्ति के पूरे १५ पद एवं धनपाल के ४ गीत इस प्रकार ३० मूल कृतियों के पाठ भी दिये गये हैं।

सम्पादक मंडल :—

प्रस्तुत पुष्प के संपादक मंडल में माननीय डॉ० हीरालाल जी माहेश्वरी, डॉ० राजाराम जी जैन एवं डॉ० गंगाराम जी गर्ग हैं। डॉ० माहेश्वरी राजस्थान विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभाग में रीडर हैं। आप राजस्थानी भाषा के जाने माने इतिहासज्ञ विद्वान एवं लेखक हैं। अकादमी पर आपकी विशेष कृपा रहती है आपने विद्वतापूर्ण "दो शब्द" वक्तव्य लिखने की जो कृपा की है उसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। डॉ० राजाराम जैन मगध विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रोफेसर हैं समाज आपकी विद्वत्ता से चिरपरिचित है। इसी तरह डॉ० गंगाराम जी गर्ग युवा पीढ़ी के विद्वान् हैं। जैन साहित्य पर शोध कार्य आपकी रुचि में शामिल है। पार्श्वदास निगोत्या पर आपने अच्छी खोज की है। तीनो ही विद्वानों के हम हृदय से आभारी हैं।

अकादमी के संरक्षक श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने "संरक्षक की ओर से दो शब्द" लिखने की महती कृपा की है। सेठी साहब उदार व्यक्तित्व के धनी

है तथा साहित्य प्रकाशन में बहुत रुचि लेते हैं। अकादमी को आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

प्रस्तुत भाग के उपयोग के लिये श्रीपाल चरित्र की पाण्डुलिपि के लिये श्री पं० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ एवं श्री राजमलजी संघी, नवीतमति की पाण्डुलिपि के लिये कैलाशचन्द जी सोगानी, धनपाल एवं महेन्द्र कीर्ति की पाण्डुलिपियों के लिये श्री माणक चन्द जी सेठी डिग्गी एवं यशोधर रास की पाण्डुलिपि के लिये श्री लक्ष्मीचन्दजी गांधी, प्रतापगढ़ का आभारी हूं जिन्होंने उदारता पूर्वक पाण्डुलिपियां देकर इस भाग के प्रकाशन में योगदान एवं सहयोग प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

१०-६-८४

विषय-सूची

पूर्व पीठिका

१७वीं शताब्दी में जितने व्यापक रूप से हिन्दी कृतियां लिखी गयी उतनी कृतियां इसके पूर्व किसी शताब्दी में भी नहीं लिखी जा सकी। इस शताब्दी में देश के सभी प्रदेशों में हिन्दी रचनायें लोकप्रिय बन रही थीं। प्राकृत एवं संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दीकरण का यह युग था। जैन कवियों का इस ओर विशेष ध्यान जा रहा था। पाण्डे रूपचन्द इसी शताब्दी के कवि थे जिन्होंने समयसार कलश पर हिन्दी टब्बा टीका लिखी थी। जैन कवि स्वतन्त्र रूप से भी काव्य रचना करते तथा गीत, रासो एवं काव्य की अन्य विधाओं के माध्यम से छोटी बड़ी रचनाएं लिखते रहते थे। इस शताब्दी में होने वाले ब्रह्म रायमल्ल, भ. त्रिभुवनकीर्ति का अकादमी के प्रथम पुष्प में भट्टारक रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द एवं उनके समकालीन ६८ अन्य कवियों का। चतुर्थ पुष्प मे बुलाखीचन्द, बुलाकीदास एवं हेमराज जैसे सुप्रसिद्ध कवियों का छठे भाग में परिचय दिया जा चुका है। इनके अतिरिक्त अभी और भी पचासो कवियों का परिचय अवशिष्ट है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

इस शताब्दी में होने वाले कवियों मे कवयित्री 'अजीतमति' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किसी जैन कवयित्री की यह उपलब्धि विगत ५०-६० वर्षों में की गयी सतत खोज के बाद हो सकी है। जैन हिन्दी कवयित्रियों में दिगम्बर समाज मे चम्पाबाई का नाम आता है जो करीब १०० वर्ष पूर्व टोंग्या परिवार में देहली में हुई थी और जिनकी एक मात्र कृति 'चम्पा शतक' का मैंने सम्पादन करके प्रकाशित करवाया था। श्वेताम्बर समाज की कवयत्रियों में हरकू बाई, (सं. १८२०) हुल साजी (सं. १८८७) सरूपा बाई, जडावजी एवं भूर सुन्दरी जैसे नाम और आते हैं लेकिन ये सब कवयित्रियां हरकूबाई एवं हुलसाजी के अतिरिक्त एक शताब्दी पूर्व ही हुई हैं। इसके अतिरिक्त जहां हिन्दी जैन कवियों की संख्या ४०० से कम नहीं होगी वहां महिला कवियों की यह संख्या एक दम नगण्य है इससे पता चलता है कि महिला समाज में कभी साहित्यिक चेतना नहीं रही या फिर उनके द्वारा निबद्ध साहित्य की उपेक्षा की गयी और उसको संग्रहणीय नहीं समझा गया। इसलिये १६वीं-१७वीं शताब्दी में होने वाली कवयित्री अजीतमति से हिन्दी साहित्य निःसंदेह गौरवान्वित हुआ है।

बाई अजीतमति

अजीतमति ने अपने आपको बाई अजीतमति लिखा है। वह भट्टारक वादिचन्द्र (१६वीं–१७वीं शताब्दी) की प्रमुख शिष्या थी। उन्ही के संघ मे ब्रह्मचारिणी साध्वी के रूप में रहती थी। वादिचन्द्र स्वय अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान् भट्टारक थे। जो मूलसंघ के भट्टारक ज्ञानभूषण के प्रशिष्य एवं प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। स्वयं वादिचन्द्र एक समर्थ साहित्यकार थे जिन्होने संस्कृत एवं हिन्दी मे कितनी ही रचनायें निबद्ध करने का श्रेय प्राप्त किया था। साध्वी अजीतमति ने इन्हीं के संघ में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी।

कवयित्री अजीतमति हुंबड जाति के श्रावक कान्ह जी की पुत्री थी काह्नजी अपने समय के प्रभावशाली व्यक्ति थे। वे हूबड जाति के शिरोमणि थे। उनका निवास स्थान सम्भवतः सागवाडा था जिसका उन्होंने एक गीत मे निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

"सागवाडा नयरे छि बहु अवास, श्रीय सघनी पुरवो स्वामी आस"

इसके अतिरिक्त कवयित्री का जन्म कब हुआ, कहा हुआ इस सम्बन्ध मे कोई जानकारी नही मिलती लेकिन उसके स्वय का हाथ लिखा हुआ जो गुटका मिला है उसमे कवयित्री द्वारा रचित सभी पाठो का सग्रह है। गुटका का लेखनकाल सवत् १६ ५० (सन् १५९३) है इससे उसके जन्म काल का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उसने गुटके मे जो पाठ लिखा है वह ऐतिहासिक तथ्यो से युक्त है इसलिये यदि उसकी आयु उस समय ४० वर्ष की भी होगी तो उसका जन्म संवत् १६१० (सन् १५५३) के आस पास हुआ होगा।

अजीतमति की शिक्षा दीक्षा के बारे में भी कोई जानकारी नही मिलती लेकिन क्योंकि उसके गुरु भ. वादिचन्द्र स्वय अच्छे विद्वान् थे, ग्रन्थो के निर्माता थे। संस्कृत, हिन्दी एव गुजराती मे ग्रन्थ रचना करने में प्रवीण थे। इसलिये अजीतमति की शिक्षा दीक्षा भी अच्छी होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त जिस तरह की उसकी रचनायें मिली हैं उनसे भी पता चलता है कि उसने सभी रचनायें स्वान्तः सुखाय लिखी थी।

कवयित्री के जिस गुटके में उसकी रचनायें मिली हैं उसमें बीच-बीच में ऐसे पाठ भी हैं जो अधिकांश गुटकों में नहीं मिलते हैं। उसकी लिपि भी इतनी सुन्दर नहीं है जितनी एक महिला कवि की होनी चाहिये। फिर भी जैन समाज का यह सौभाग्य है कि उसमें ऐसी विदुषी कवयित्री ने जन्म लिया और अपनी रचनाओं से एक रिक्त स्थान की पूर्ति की। राजस्थान के अवशिष्ट शास्त्र भण्डारों की यदि सघन खोज की जावे तो सम्भवतः और भी कुछ कवयित्रियों के नाम एवं उनका साहित्य मिल सकता है।

कवयित्री अजीतमति द्वारा निर्मित तथा एक ही गुटके में संग्रहीत रचनाओं के नाम निम्न प्रकार है—

१. अध्यात्मिक छन्द
२. षट पद
३. भक्ति परक पद—७
४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन—

उक्त सभी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

अध्यात्मिक छन्द

आध्यात्मिक विषय पर प्रायः सभी जैन कवियों ने थोड़ा बहुत अवश्य लिखा है। यदि किसी कवि ने स्वतन्त्र रचना नहीं लिखी हो तो उसने अपनी अन्य कृतियों में ही अध्यात्म विषय का वर्णन किया है। कवयित्री अजीतमति ने भी "अध्यात्मिक छन्द" निबद्ध करके अपनी आध्यात्मिकता का परिचय दिया है। इसमें केवल ३० पद्य हैं लेकिन सभी पद्यों में आत्म रस भरा हुआ है जो मानव को अपनी आत्मा का ज्ञान कराते हैं। अपनी आत्मशक्ति की वास्तविकता को बतलाते हैं और उसे सचेत करते हैं। क्योंकि यदि शुद्ध दृष्टि से अपने आपको देखा जावे तो अपने भीतर ही हमें आत्म प्रकाश मिल सकता है।

जो सरी दृष्टि करी निलावि, ज्ञान जोत घट भीतर वावि ॥२॥

कवयित्री अजीतमति ने आगे चलकर कहा है कि यदि "तुझे देखना ही है तो अपनी आत्मा को देख। दूसरे को देखने से आत्म ज्ञान की प्राप्ति अथवा आत्म दर्शन कभी नहीं हो सकता। क्योंकि दूसरों के कपड़ों को धोने से अपने कपड़े कभी नहीं धुल सकते अर्थात् अपने कपड़ों का मैल कभी साफ नहीं हो सकता—

जो जूझि तो अप्पा जूझि, पर कि जूझि ठाम न हुँसि ।
पर का झगड़ा क्या तु झीसि, अपना मेल करि कहीं जोहोसि ।।७।।

बाई अजीतमती ने इसी अध्यात्म ग्रंथ में आगे कहा है कि यदि तेरा मन झगड़ालू है तो दूसरों के झगड़ो में जाकर क्यों पड़ता है। दूसरों के झगड़ों में तुझे किञ्चित् भी स्थान अर्थात् सद्गति प्राप्त होने वाली नहीं है क्योंकि तू अपना झगड़ा निपटाने अथवा शांत करने के स्थान पर दूसरो का झगड़ा शांत करने में लगा हुआ है।[1]

यह बत्ती वाला दीपक सभी को देखता है किन्तु यदि उसमे बत्ती न हो उसे कोई नहीं देख सकता लेकिन यह आत्मा तो बिना बत्ती का ही दीपक है जो स्वयं तो सबको देख लेता है और दूसरा इसे कोई नही देख पाता। वह स्वयं ही अपने ज्ञान के द्वारा अपने को देख सकता है।[2] अपनी इसी बात को कवयित्री ने आगे के पद्य मे फिर दुहराया है और जो अधिक स्पष्ट है—

बाती दीपक सबको जाणि, बिण बाती कोई न पिछाणि ।
सो अप्पा सो अप्पसु ध्यावि, बिण बाती का दीपक पावि ।।२१।।

मानव का यह मन बहुत ही भटकता है स्थिर रहना तो मानो जानता ही नही। अधिक डोलने से वह अपना मार्ग ही भूल गया है। अनेक जातियो मे वह फिर चुका है जन्म ले चुका है लेकिन अभी तक उसे सद्बुद्धि नहीं आयी है क्योंकि वह आत्मा से परे रहता है और आत्म ज्ञान के बिना उसे सुख नहीं मिल सकता।

एह मन मेरो बोहोल डोलण्यो, फरी फरी जी बिसरे भूलाव्यो ।
बहु अकल ब्योहो मति करी जावि, अप्पा बिण कही सुख न पावि ।।२२।।

आत्म ज्ञान मानव के लिये आवश्यक है। जैसे सिद्धालय मे आत्मा निवास करती है उसी प्रकार शरीर मे भी आत्मा का निवास रहता है इस प्रकार जो

---

१. जो झगड़ु मन होवि तेरा, पर कि झगड़ि जावि सलोरा ।
पर कि झगड़ि ठोकण जावि, अप्पार झोडी ठर कु ध्यावि ।। ।।

२. आतम दीपक सबको देखे, बिण बाती कोइ नहीं देखे ।
अप्पा अप्प ध्यान करि ध्यावा, बिण बाती का दीपक पावा ।।१७।।

आत्मा को जानता है। वही आत्म सुख का अनुभव कर सकता है और जन्म मृत्यु के बन्धनों से मुक्त हो सकता है।

इस प्रकार अध्यात्मिक ग्रंथ के सभी पद्य आत्म रस से ओत प्रोत है। इससे मालूम पड़ता है कि अजीतमति का जीवन पूर्ण वैराग्यमय था तथा आत्म चिन्तन मे उसकी अधिक रुचि थी।

इसमे ३० पद्य हैं। अन्तिम पद्य में कवयित्री ने अपने गुरु वादिचन्द्र को नमस्कार किया है। भाषा यद्यपि अधिक परिष्कृत नहीं है किन्तु कवयित्री के भावों को समझने के लिये पर्याप्त है। भाषा पर गुजराती का प्रभाव है।

२. षट पद—यह लघु कृति है जिसमें केवल पाच छंद है और प्रत्येक छन्द में पाच छह पंक्तियां हैं। विषय की दृष्टि से इसमें किसी एक विषय का वर्णन न होकर एक से अधिक पर चर्चा के रूप मे है। प्रथम छन्द में आत्म का वर्णन है तो दूसरे छन्द मे भगवान आदिनाथ के माता-पिता, शरीर प्रमाण एवं वंश का उल्लेख हुआ है। यह छन्द नमस्कार के रूप मे है।[1]

तीसरे पद्य मे भट्टारक वादिचन्द्र का परिचय दिया गया है। वादिचन्द्र ने बडिल वश मे जन्म लिया। उनके पिता का नाम पिरा एवं माता का नाम उदया था जो रत्नाकर के समान थी। वे जब प्रवचन देते थे तब उनकी वाणी मेघ के समान गर्जना करती थी। वादिचन्द्र साधुओ के शिरोमणि थे।

चतुर्थ पद्य मे भी अपने गुरु वादिचन्द्र का ही और अधिक परिचय दिया गया है। वादिचन्द्र मूलगुणों एव उत्तरगुणों सभी का पालन करते थे। अपने समय के वे प्रसिद्ध साधु थे जिन्होने मोह एव काम दोनों पर विजय प्राप्त की थी। उनमें विद्वत्ता भी खूब थी इसलिये कुवादियों के लिये वे सिंह के समान थे। ये भट्टारक प्रभाचन्द्र के पट्ट पर विराजमान थे।

---

1. वंशं बडिल विख्यात, ख्यात पिरा गुण गुण्यर
रूप कला [illegible], चतुर नारीमहु अधिक
उदयो उदरि तास, तासं जननी रत्नाकर
वाणी गाजि मेघ, मेघ जनु जन रत्नाकर
गुणाकर यतीश्वर जयो, श्री वादिचन्द्र [illegible]
बाई अजीतमती एवं [illegible]

अन्तिम पद में पंच परमेष्ठी की शरण ही एक मात्र उत्तम शरण है इसी भाव को उसमें बतलाया गया है।

३. बाई अजीतमति ने कुछ पद भी लिखे थे जिनकी संख्या अभी तक सात है।

प्रथम पद मे चौबीस तीर्थंकरो को नमस्कार किया गया है लेकिन पद शैली में लिखा होने से "नेमजी तू मुझ मन आवो" स्थायी अन्तरा है। यद्यपि इसमें पद का कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें १३ अन्तरें हैं। भाषा एवं शैली दोनों ही सामान्य हैं। इस पद को सम्भवतः उजीलगढ में जो पर्वत शिखर पर स्थित था, लिखा गया था। कवयित्री ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

उजीलगढ गिरिवर तणो नेमी जिनराय।
कर जोड़ अजीतमती कहि, नित सेवु रे पाय ॥१३॥

दूसरे पद मे ऋषभदेव की स्तुति की गयी है। तीसरा पद मानव को चेतावनी के रूप मे है। चौथा पद नेमिनाथ स्तवन है जिसे कवयित्री ने सागवाडा नगर में निर्मित किया था। इसमे ६ अन्तरे हैं। पंचम पद मे धन यौवन पर हमने बहुत अभिमान किया इसका वर्णन किया गया है। छठा पद उपदेशी है तथा सातवा पद पार्श्वनाथ स्तवन के रूप मे हैं। भाषा एव भावो की दृष्टि से सभी पद सामान्यतः अच्छे हैं।

४. ऐतिहासिक लेख

यह एक ऐतिहासिक लेख है जिसमे वृषभनाथ के पौत्र मारिचि द्वारा दूसरे मतो की स्थापना से प्रारम्भ होता है। भरत चक्रवर्ती के द्वारा ब्राह्मण मत की स्थापना की गयी। तीर्थंकर शीतलनाथ के पीछे यज्ञशालाओं की स्थापना हुई थी। भगवान पार्श्वनाथ के युग में पिहितास्रव के शिष्य बुधिकीर्ति द्वारा बुद्ध मत की स्थापना की गयी। जो मांस मद्य सेवन मे दोष नही मानते थे। विक्रमादित्य के पीछे सम्वत् १३० मे यत्याचार्य भद्रबाहु के शिष्य जिनचन्द्र ने श्वेताम्बर सम्प्रदाय की स्थापना की थी। जो स्त्री की मुक्ति, केवली कवलाहार, आहार और नीहार, गर्भापहरण, केवली उपसर्ग आदि मान्यताओं को मानने वाला है। ५२६ वर्ष पश्चात् पूज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि द्वारा द्राविड संघ की स्थापना, संवत् ७४३ में कुमारसेन द्वारा काष्ठा संघ की स्थापना, गायो की पीछी का ग्रहण, इसी तरह विक्रम संवत् २००

के पीछे माथुर गच्छ की स्थापना। संवत् १८०० के पश्चात् लोग विपरीत क्रिया करने लगेंगे ऐसा भी लिखा है।

उक्त लेख स्वयं अजीतमति द्वारा संवत् १६५० में लिपिबद्ध किया गया था।

इस तरह साध्वी अजीतमती ने यद्यपि लघु रचनाएं निबद्ध की हैं लेकिन वे उसकी काव्य शक्ति की परिचायक है। वे सभी रचनाएं एक ही गुटके में लिपि बद्ध हैं जो स्वयं अजीतमति का था। हो सकता है अभी राजस्थान के शास्त्र भण्डारो मे कवयित्री की और भी रचनायें संग्रहीत हों। एक महिला कवि द्वारा इतनी सारी काव्य रचना करना प्रशंसनीय है।

कृतियो की भाषा गुजराती प्रभावित है। अलंकार शैली एवं भावों की दृष्टि से सभी रचनायें सामान्य हैं।

अध्यात्मिक छन्द

आर्या

परमाणदं नत्वा अनिभारति देवी गुणं करीआ ।
छंदो परमाणंदो आणंदो एहि गुणकंदो ॥

हवि छंद

आतम आपज दृष्टि जोवि, परम जोत घर भीतर होवि ।
जो तरी दृष्टि करी लिलावि, ज्ञान जोत घर भीतर पावि ॥१॥

गीत कवीति क्या लिलाया, गुणी छोडि निर्गुणी कु ध्याया ।
गध वरण रस उसका नाही, परम जोत सोहे घट माहि ॥२॥

घट छोडी उर क्या तु चाहि, घट मांहि न्यान पट सोहि ।
घट भूला तु फरे सायणा, घट मा सुता चतुर सुजाणा ॥३॥

नीर विकल्प तु काहे नही ध्यावि, विकल्प सेधि क्या लिलावि ।
एह विकल्प कि जीव का जाणा, परम जोत कु नही समाणा ॥४॥

रे आतम चित किहा फिरावि, जे न्या हालि सो घट मां पावि ।
एक समो जब कदि पेस्वे, ज्ञान जोत घर भीतर देख ॥५॥

न्यान छोडी जीव उर कु ध्यावि, वीतराग सेधि चिन्ह जलावि ।
इसि मन कु तु अंतर ल्यावि, परम समाधी समिमां पावि ॥६॥

जो जूथि तो अप्पा जूथि, परकि जूथि ज्ञान न होयि ।
परका उजवल क्या तु धोवि, अपणा मैल कदि नही खोहोवि ॥७॥

जो झगडु मन होयि तेरा, पर कि झगडि जायि घणेरा ।
परकि झगडि ठोकन पावि, अतर छोडी उर कु ध्यावि ॥८॥

रे जीव ज्ञान काहा तु जोवि, जे जूथि सो घटमां होवि ,
सूता जे मन जाइ जगाया, मन मारी अपणे घरे आया ॥९॥

मन रूंधी करी कां नहि राखि, वीतराग फल या फरी फरी चाखि ।
आव्या जब अपणे घरि मावि, तब होवी ममता नही आवि ॥१०॥

जो रे जीव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
एक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] ॥११॥

रे जीव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
एक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१२॥

रे जीव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हारि ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१३॥

रे जीव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१४॥

रे तत परम सुपिरो, आयि काल बहुती न देखे ।
एक समो [illegible] [illegible] [illegible], अनंतकाल के बाद [illegible] ॥१५॥

अनाद का थिर विकलप भाड, थीर विकलप कु रहा समाइ ।
थीर वीकलप कु जो मन लावि, निरविकलप [illegible] [illegible] पावि ॥१६॥

आतम दीपक सबको देखे, विण बाती कोइ नहीं देखे ।
अप्पा अप्प ध्यान करी ध्याया, विण बाती का दीपक पाया ॥१७॥

रे जीव ध्यान धरो [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
जो पंथी [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१८॥

घर की जोत न जाणि कोइ, पंग पठ्यी परा ध्यान न होइ ।
रे जीव फरी फरी विकलप ध्यावि, विकलप ध्यानि ध्यान न पावि ॥१९॥

एह विकलप जे जीव का नांहि, निर विकलप कु कह्या न जाहि ।
जेह जोगी जोगीस्वर जाण्या, उसका गुण मही मांहि विखाण्या ॥२०॥

बाती दीपक सबको जाणि, विण बाती कोइ न पिछाणि ।
सो अप्पा सो अपसु ध्यावि, विण बाती का दीपक पावि ॥२१॥

भूली रह्या जग मां सहु कोइ, पर की दृष्टि आनम होइ ।
स्वकीय ज्ञान दृष्टि करी पेखे, पर की दृष्टि कु सेहेजे देखे ॥२२॥

एह मन वैरी बोहोत डोलाव्यो, फरी फरी जो विलरो भूलाव्यो ।
बहु थकव [illegible] [illegible] करी ध्यावि, अप्पा विण कहीं सुख न पावि ॥२३॥

रे जीव मनति [illegible] [illegible], फरी फरी भमति बहु दुःख पायो ।
फरी फरी भमी [illegible] [illegible] [illegible], अपणा घर विण ठोड न पायो ॥२४॥

उपसम कु तु काहेनी बुधि, उपसम तेरे घट मा सुधि ।
अपणा [illegible]ता जोति न जाण्या, पर का गुता सेहज बखाण्या ॥२५॥

साची दृष्टि करी कान नीहालि, जे चाहि सो नही देखालि ।
साची दृष्टि करी अतर न्याहाल्या, करम कीटउरिण तत खिण जाल्या ॥२६॥

राक दृष्टि करी काहे देखे, घर की अंतर काहे न पेखे ।
घर घर जोत रहि घर भीतर, घर छोडी उर नहीं अतर ॥२७॥

शब्द ज्ञान सब कोइ जाणि, पंडित ने नि शब्द पिछाणी ।
तिस की बुधि क्या [illegible], अंतर [illegible] रंचा ध्याट ॥२८॥

जेसो सीखालि तिसो देहालि, असो करी जे नर नीहालि ।
अप्पा आतम सुख बहु पावि, जनम जरा उठा कु नही आवि ॥२९॥

इति कलस

सोहि जगमा तेह जेह अतर लिलावि
सोहि जगमा तेह,जेह सुन्य ध्यानि ध्यावि ।
सोहि जगमा तेह, जेह अप्पा गुण गावि ।
सोहि जगमा तेह जेह धरी सिव पद पावि ॥
सोहि जगमा जतु काहि सुम बिना अनुभवहि ।
वादीचंद्र नमी कहि अजितमती लब्ध बिना ते नवि लहि ॥३०॥
इति अध्यात्मि छंद समाप्तः ।



षट पद

शुद्ध नीरंजन एकअनेक आतम व्यवहारि
घट माहि सोहि एक, अनेक बहु विस्तारि
ध्यान धरे गुन एक, अनेक ध्यानह विस्तारी ।
ध्यानी जोई बंधु काहि, न जाणिए ध्या हम रहि ।
बाइ अजितमति एवं वदति धर्म बिना ति नवि लहि ॥1॥

अजोध्या नयरी नरेंद्र, नाभिनंदन हेम प्रभ ।
मरुदेवी सुत वृषभ, वृषभसेन वंदति जिन वृषभ ।
उन्नत धनुष सत पंच, पंच कल्याणक सुखाकर ।
इक्ष्वाक वंस विख्यात, ख्यात उदये दीवाकर ।
श्री आदीदेव आदि जयो श्री वादीचंद्र सेवे सदा ।
बाइ अजीतमति एवं वदती, जनम जरा नाथि कदा ॥2॥

वर वडिल विख्यात, ख्यात थिरा सुत सुन्दर ।
रुप कला चातुर्य, चतुर वादीन्द्रह मंदिर ।
उदयो उदरि बाल, तास जननी रत्नाकर ।
वाणी गाजि मेघ, मेघ सहु जन सुखाकर ॥
सुखाकर जतीवर जयो, श्री वादीचंद्र वादिंद्र वर ।
बाइ अजीतमती एवं वदती सकलसंघ आणंद कर ॥3॥

मूल उत्तरगुणसार सार कीया सुभ मंडित ।
जग मां जतीवर एह, मयण मोहमद खंडित ।
विद्वजन मां एह, एह सोहि सुभ पंडित ॥
कुवादी गज सिंघ सिंघ चउवीह करी वंदति ।
श्री वादीचंद्र वादि निपूण श्री श्री प्रभाचन्द्र पट्टाभरण
बाइ अजीतमती एव वदती सकल संघ मंगल करण ॥4॥
पंच परम गुरु तेह, जेह पचमी गति पामीय ।
पंच परम गुरु तेह, जेह जन सहु उपकारीय ।
पंच परम गुरु तेह, जेह कुवादी वर वामीय ।
पंच परम गुरु एहवा जे मनोमय नीतक मेह धपि ।
बाइ अजितमती एवं वदती भव सागर ते नर तरे ॥5॥

राग केदारो

तू तो वृषभ जिनेस्वर वृषभ जन सहु कृत
वृषभ लांछन सोवनमि कोयो करी सोहि रावा
वृष मगट करी राजसहु परहरी मुगति रमणि सुति चित लायो ।।१।।

कुमार पदवी सलाख पूरवगयो, त्रिसिट लाख पूरव काल सुखमि हुयो ।
एक लाख पूरव काल जब रह्यो, तब जिनवर वैराग भयो ।।२।।

लोकातिक देव जय जय करतु हि, जीव जीवतु नंद नंद ।
तप कुठार करी कर्म कानन वन, तेह नी कीधो स्वामीतिनी कंद ।।३।।

नृत्य नीलंजसा देखी नी मीत करी, संजम श्री कुलिचित धरी ।
कर जोडी बाइ अजीतमती कहि, मुगति रमणि जिन वेग वरी ।।४।।

राग केदारो

तू चेते चेतन चतुर वरा, मेरा कह्या भूलो नही चित्त धीरा ।
कर्म्म नो कर्म्म प्रावरिण कारावीयो, ते सुर सुकृत तू जीत विरा ।।१।।

हृदय कमल सेज्यामि सुवतु हि, जागत ऐनस पास नावि ।
जनम जरा मरण दूरी करी, ते नर सिव पुरी वेगे जावि ।।२।।

दूध दमि जिम कांचन विराजतु हि, तिम देह मां वेही तु परम देवा ।
त्रिकाल जोग धीरी कर्म सहु नजिरी प्रगति रमणि तुम करइ सेवा ।।३।।

अतुल बल वीर्य पराक्रम पुरतु, तुम सम नही कोइ परम जीया ।
कर जोडी बाइ अजीतमती कहि, तुम समरे मुनी सुगति गया ।।४।।

राग बसन्त

श्री सरसति देवी नमीय पाय, गाएसु गुण श्री नेमि जिनराय ।
जेह नामि सौख्य अनंत थाय, भूरी पातिग भर दूरे पलाय ।।१।।

सीव नारी सु नेम रमि बसंत, अतिसि सबनि कीधो गुणवंत ।
ग्यान सरोवर सांत रसि भरयु माहंत, मुनी हंसी करी सरोवर सोहंत ।।२।।

समुद्र विजय सिवादेवी नंद, [illegible] रे हुवो आणंद ।
हुं [illegible] भर्म कंद, शुभ [illegible] देवा [illegible] ॥३॥

हरिवंस [illegible] हु [illegible] कुमार हु रे [illegible] सूर ।
जिणे जोबन पणि तजि [illegible] दूर, मोह ममत्व [illegible] चूर ॥४॥

[illegible] [illegible] कुमार, [illegible] मन माहि [illegible] ।
[illegible] लांबा तीतर [illegible], [illegible] मोर [illegible] ॥५॥

[illegible] नमन [illegible] [illegible], [illegible] स्वामी पास ।
सुभ असुभ कर्मनो [illegible], [illegible] अजीतमती [illegible] ॥६॥

पद

धन जोवन [illegible] [illegible] । [illegible] अतीत हुये ।
तीन भुवनि के रायजनि वन सबहि अतीत भये ॥१॥ ॥धन॥

चेतो चेतो रे तहि [illegible] रे, लख चौरासि [illegible] ।
कबहि न ठाढे भये । धन जोवन ॥२॥

दरसन ज्ञान चरण तप बहुत बार लहे ।
मोह ममता रापि जब [illegible] तब [illegible] न रहे ॥धन॥३॥

हुं जिसको नहि को नहि मेरो [illegible] सुख ध्यान करे ।
कर जोडी बाइ अजितमति कहे [illegible] काज सरे ॥धन॥४॥

[illegible]

हु बलिहारी [illegible], जो चेतन सु [illegible] रे ।
[illegible] जि आज्ञाये तो ते [illegible] जाये रे ॥१॥

मोह [illegible] [illegible] हु [illegible] रे ।
[illegible] [illegible] ॥२॥हु॥

पे [illegible] पदारथ दिसी ते उपरि [illegible] रे ।
मोहनि करमिहु लपटाणो, तो [illegible] रे ॥हु॥३॥

[illegible] सुख सु वर [illegible] रे ।
कर जोडी बाइ अजितमति कहि, [illegible] रे ॥हु॥४॥

राग सामेरी

नमो नमो पास जिणंदह पाय
नील बरण शुभ सुंदर काय, पूजतां पातिग जाय ।।१।।
अश्वसेन वम्मादेवी नंदन वंदन, जन जन आधार ।
सुर नर फणीपती खगपती वमली करे जिन जय जयकार ।।२।। नमो।।
नयर बणारसि जनम्यो एह प्रभु, सतगुरु सतसु आय ।
हस्ता नव सोहि उन्नत काय, इक्ष्वाकवस को राय ।।३।।
घाति अघाति कर्म सब नीर्जनी, पोहोतो मुगतीवास ।
करि जोडी बाइ अजितमति कहि, पूरवो हमारी आस ।।४।।नमो।।

४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन

श्री वृषभनाथनिवाणी मरीचि अनेक दर्शन अनेक मतनी स्थापना कीधी । भरत चक्रवर्ति ब्राह्मणनी स्थापना कीधी । श्री सीतलनाथ पछि पर्वति यागनी स्थापना कीधी । पहिलि मुंडशालायणि दश कु दाननी स्थापना कीधी । श्री पार्श्वनाथनिवारि पहिताश्रवस्य शिष्य बुधीकीर्ति ते णे बुद्धनी स्थापना कीधी । मास मद्यना दोष न मानि । श्रीमहावीरनिवारि मसक पूर्ण मुनीस्वरि तर्कनी स्थापना कीधी । राजा वीक्रम पछि वर्ष १३६ गते भद्रबाहु शिष्य सत्याचार्य तास शिष्य जिनचंद्रेण स्वेताम्बरनी स्थापना कीधी । स्त्रीनि मोक्ष ग्रहीनि मोक्ष । तीर्थंकर ने आहार न्याहार रोग वस्त्र केवलीनि उपसर्ग गर्भ संचार कहि । तीर्थंकरी करी कहि महावीर ब्राह्मणी गर्भ संचार कहि । मास भक्ष गहे आहारनी छोतिननानि । वर्ष २०५ जाते श्री कलसेन आचार्य आपुली गच्छनी स्थापना की धी । पंछि वर्ष ५३६ गते श्री पुज्यवाद शिष्य वज्रनंदी द्राविड संघनी स्थापना कीधी । बीज अन्न पासी सचीत्त न मानि । क्षेत्रा वीसावद्य न मानि । वीक्रम पछि ७५३ विनयसेन शिष्य कुमारसेन सन्यास भग करीनि काष्ट संघनी स्थापना कीधी । पीछि कठण चमरनी लीधो । स्त्रीनि पुनरपी दीक्षा । क्षुलकनि वीरचरी । छट्ठ अनुव्रत कहि । वीक्रम पछि २०० जाते मथुरायां रामसेने माथुरा गच्छनी स्थापना कीधी । नपीछीया । दक्षण देसे विभ देसे पुष्कलावती नगरे वीरचद्र मुनिना तेम करीष्यति भीलिसंघ । वीक्रम पछी वर्ष १८०० जाते कीया वीपरीत करीस्यती । सवत् १६५० वर्ष पंचमी दिने लखीत बाई अजीतमती निज कर्मक्षयार्थ ।।

कविवर परिमल्ल

परिमल्ल १६वीं-१७वीं शताब्दी के कवि थे। उनका जन्म ग्वालियर में हुआ लेकिन उनकी जवानी एवं बुढ़ापा आगरा में व्यतीत हुआ। कवि का परिवार एवं पूर्वज अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं राज्य द्वारा सम्मानित थे। उसने अपने पूर्वजों का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

चन्दन चौधरी
|
रामदास चौधरी
|
आसकरन चौधरी
|
परिमल्ल चौधरी

चन्दन चौधरी ग्वालियर के महाराजा मानसिंह द्वारा सम्मानित व्यक्ति थे। सम्भवतः वे मानसिंह के विश्वस्त उच्चाधिकारी अथवा नगर सेठ थे। उनका यश एवं ख्याति सारे देश में व्याप्त थी। उनके पुत्र रामदास जो कवि के बाबा थे अपार सम्पत्ति के स्वामी थे। जीवन में उन्होंने अपार सुख प्राप्त किया। उनके पुत्र एवं परिमल्ल कवि के पिता आसकरन अपने कुल के दीपक थे और अपने परिवार की ख्याति एवं प्रतिष्ठा को पूर्ण रूप से बनाये रखा था।[1] ऐसे परिवार में जब परिमल्ल का जन्म हुआ तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। परिवार एवं माता-पिता का उन्हें पूरा लाड प्यार मिला। ग्वालियर में ही उनकी शिक्षा दीक्षा हुई और यहीं अपने पिता की छत्रछाया में उनका बाल्यकाल समाप्त हुआ।

कवि दिगम्बर जैन बरहिया जाति के श्रावक थे। उस समय ग्वालियर में बरहिया जाति के अच्छी संख्या में घर थे। सभी वैभव सम्पन्न मर्यादा पूर्ण एवं यशस्वी थे। लेकिन कवि के पूर्व होने वाले महाकवि रइधू ने बरहिया जाति का

---

1. गोपाचल गिरि गढ़ उत्तिम थान, सूरवीर तहाँ राजा मान।
ता आगें चांदन चौधरी, कीरति सब जग में विस्तरी ॥३५॥
जाति बरहिया गुन गंभीर, अति प्रताप कुल रंजन धीर।
ता सुत रामदास परवीन, नंदन आसकरन सुभ लीन ॥३६॥
ता सुत [illegible] नंदन परिमल्ल, [illegible]

कोई उल्लेख नहीं किया। १८वीं शताब्दी में होने वाले पंडित बख्तराम साह[1] ने चौरासी जातियों के नामों में बरहिया जाति का कोई उल्लेख नहीं किया लेकिन यदि बारहसैनी जाति ही बरहिया जाति का दूसरा नाम है तो इसका उल्लेख तो यत्र तत्र मिलता है। फिर भी सम्वत् १५४५ के एक मूर्तिलेख[2] में बरहिया कुल का उल्लेख अवश्य मिलता है इससे यह तो स्पष्ट है कि बरहिया जाति दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थी और उसका ग्वालियर एवं आगरा क्षेत्र में अच्छा प्रभाव था।

परिमल्ल को अपने पिता एवं बाबा का कब तक प्यार मिला तथा तब तक उनकी छत्रछाया में ग्वालियर में रहे इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन वे ग्वालियर छोड़कर अपने परिवार के साथ आगरा आकर रहने लगे थे इस घटना का कवि ने अवश्य उल्लेख किया है। आगरा में वे शल्य रहित होकर रहने लगे थे इसका कवि ने निम्न पंक्ति में उल्लेख किया है।

"ता सुत कुल मंडन परिमल्ल, बसै आगरे में तजि सल्ल"

आगरा में उनका जीवन शान्तिपूर्ण था। जब उन्होंने श्रीपाल चरित्र की रचना प्रारम्भ की थी उस समय देश में अकबर बादशाह का शासन था। कवि ने अकबर के शासन काल का उल्लेख ही नहीं किया किन्तु उसके तेज एवं प्रताप की भी प्रशंसा की है। उसने समस्त पृथ्वीतल को अपने वश में कर लिया था तथा उसकी चारों ओर दुहाई फिरती थी। इसी के साथ परिमल्ल कवि ने बाबर एवं हुमायुं का भी उल्लेख किया है—

बाबर पातिसाहि होई गयौ, तासु साहि हुमाऊं भयौ।
ता सुत अकबर साहि प्रधान, सो तप तप्यौं दूसरो भान ।।३२।।
ताके राज न कहुं अनीति, बसुधा सकल करी बसि जीति।
जंबूदीप तास की आन, दूजौ अवरंग ताहि समान ।।३३।।

रचना काल

अधिकांश प्रशस्तियों में रचना समाप्ति के समय का उल्लेख होता है लेकिन श्रीपाल चरित्र में कवि ने रचना के प्रारम्भ करने का उल्लेख किया है जो सम्वत्

1. बुद्धिविलास—बख्तराम साह पृष्ठ संख्या—८६
2. संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदि १० [illegible] श्री मूलसंघे [illegible] जिनचन्द्रदेवा: बरहिया कुलोत्पन्न साहु [illegible] आदीश्वर बिम्बं [illegible] प्रतिष्ठापितं। [illegible] पृष्ठ संख्या १०४

१६५१ आषाढ सुदी अष्टमी शुक्रवार है। रचना समाप्त कब हुई और उसमें कवि को कितना समय लगा इसका कवि ने कहीं भी उल्लेख नहीं किया।

संवत् सोलहसै ऊपरै, तापर इक्यावन धारौ।
मास असाढ पहूंती आई, वर्षारितु को कहुं बढाइ ॥२०॥

पख उजालौ आठै जानि, सुकरवार वार परवानि।
कवि परिमल्ल सुभ करि चित, आरंभ्यो श्रीपाल चरित ॥२१॥

श्रीपाल चरित्र के अतिरिक्त कवि ने और कितनी रचनायें निबद्ध की इसका भी कहीं नामोल्लेख नहीं मिलता और न शास्त्र भण्डारों में परिमल्ल की श्रीपाल चरित की अतिरिक्त कोई रचना प्राप्त हो सकी है। जिसका अर्थ यही है कि प्रस्तुत कृति ही कवि की एक मात्र कृति है जिसको उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में लिखी थी।

श्रीपाल चरित की पूर्व कृतियां

जैन धर्म में श्रीपाल का जीवन अत्यधिक लोकप्रिय है। सिद्ध चक्र पूजा के महात्म्य के कारण श्रीपाल का कुष्ट रोग दूर हुआ था इसलिये पूरा समाज श्रीपाल और मैना सुन्दरी के पावन जीवन से प्रभावित है और यही कारण है कि प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं के कवियों ने श्रीपाल चरित को कविता बद्ध करने में अपना गौरव समझा। अपभ्रंश भाषा में निबद्ध जयमित्रहल, पंडित नरसेन एवं पंडित रइधू के 'सिरिवाल चरिउ' पर्याप्त लोकप्रिय रहे हैं। संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्ति एवं पंडित नेमिदत्त के श्रीपाल चरित्र समाज में चर्चित ग्रन्थ रहे हैं। हिन्दी भाषा में परिमल्ल कवि के पूर्व ब्रह्म जिनदास एवं ब्रह्म रायमल्ल (संवत् १६१५) के नाम उल्लेखनीय है। यही नहीं परिमल्ल के साथ साथ ब्र० वादिचन्द्र ने भी उसी वर्ष (संवत् १६५१) में श्रीपाल आख्यान लिखकर समाज में श्रीपाल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

लेकिन जितनी लोकप्रियता परिमल्ल के श्रीपाल चरित्र को प्राप्त हुई उतनी अन्य कवियों के काव्यों को नहीं मिल सकी। यही कारण है कि राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में कवि के श्रीपाल चरित की पाण्डुलिपियां सर्वाधिक संख्या में मिलती है। अभी तक उपलब्ध पाण्डुलिपियों में साहित्य शोध विभाग (वर्तमान जैन विद्यासंस्थान

---

१. देखिये—राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची भाग चतुर्थ— पृष्ठ संख्या ७७१.

श्री महावीरजी) के एक गुटके में संग्रहीत पाण्डुलिपि है जिसका लेखन काल संवत् १६६० द्वितीय वैशाख शुक्ला तीज है ।[1] उक्त प्रति के अतिरिक्त १७वीं १८वीं शती में लिपि की गयी निम्न पाण्डुलिपियां भी उल्लेखनीय है ।

१	शास्त्र भण्डार	दि. जैन तेरह पंथी मन्दिर, दौसा	पत्र सं. १८०	लिपि काल सं. १६६९ फागुण सुदी १२
२.	,,	दि. जैन मन्दिर [illegible] दीवान पुरानी डीग	गुटके मे है	सं. १७५७
३.	,,	दि. जैन बीस पंथी मन्दिर दौसा	९७	१७७४
४	,,	दि. जैन तेरहपंथी बड़ा मंदिर जयपुर	१५८	१७७६
५.	,,	दि. जैन मंदिर गोधो का, जयपुर	८५	१७९०
६	,,	दि जैन मंदिर बैर (भरतपुर)	१५८	१७९६

लेकिन संवत् १८०० के पश्चात् लिपि की हुई पचासों पाण्डुलिपियां राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारो मे संग्रहीत है । किसी २ शास्त्र भण्डार में तो ५–६ अथवा इससे भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है । राजस्थान के अतिरिक्त आगरा, देहली, मैनपुरी आदि नगरों के शास्त्र भण्डारो में भी श्रीपाल चरित्र काव्य की अच्छी संख्या मे पाण्डुलिपियां मिलनी चाहिये ।

पद्य संख्या

श्रीपाल चरित की विभिन्न पाण्डुलिपियो का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकल सकता है कि उनमे पद्यों की संख्या समान नहीं है । श्री दि. जैन मन्दिर चौधरियो की पाण्डुलिपि में २२२२ पद्यों की संख्या दी गयी है जबकि राजमहल [टोंक] की पाण्डुलिपि २२०० पद्य, बयाना की पाण्डुलिपि मे २२९० तथा गोधा मन्दिर जयपुर वाली पाण्डुलिपि मे पद्यो की संख्या २३४१ दी हुई है । यह संवत् १७९० की पाण्डुलिपि है । इस तरह अन्य पाण्डुलिपियो में पद्यों की संख्या मे अन्तर हो सकता है ।

भाषा—श्रीपाल चरित ब्रज भाषा का काव्य है । आगरा ब्रज भाषा का प्रमुख केन्द्र रहा है इसलिये परिमल्ल कवि ने भी अपने काव्य मे ब्रज भाषा का प्रयोग किया है ।

आपस में सब मंत्री कराहिं, बाचो वीरधवल पै जांहि ।
जो आईस देहै हम जोग, सोई मानि लेहु सब लोग ॥१४०॥

मोती रतन भार भरि जाय, सब मिलि श्रीपालन पै जाए।
बाई भेंट ता आगे धरी, बाइ सीस विनती है करी ॥१४२॥

भाखी, कीहु, गरी, भा देखै (५०/१५) ताको (७१/१६) जैसे शब्दों की अधिकता है।

काव्य की विशेषतायें

श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी पर हिन्दी में अब तक जितने भी काव्य लिखे गये हैं उनमें प्रस्तुत काव्य सभी दृष्टियों से उत्तम है। भाषा एवं वर्णन शैली दोनों ही आकर्षक है। कवि ने नायक, नायिका एवं उपनायिकाओं के जीवन में घटने वाली घटनाओं का सरस वर्णन किया है। कवि की वर्णन शैली से काव्य के सभी पात्रों का चरित्र विकसित हुआ है तथा पाठकों में उनके प्रति सहानुभूति, करुणा अथवा रोष के भाव जाग्रत होते हैं।

काव्य का नायक श्रीपाल है जो कोटिभट है। असंख्य योद्धाओं की शक्ति का प्रतीक है। विपत्तियों एवं संकटों के सामने वह कभी हार नहीं मानता है किन्तु अपनी शक्ति, साहस एवं सूझबूझ से उन सभी पर विजय प्राप्त करता है। वह युवावस्था में ही राज शासन चलाता है लेकिन कुछ ही समय के पश्चात् वह भयंकर कुष्ट रोग से पीड़ित हो जाता है। वह कुष्ट रोग उसके साथ की अंग रक्षकों के भी हो जाता है। खाना, पीना, उठना, बैठना, नहाना, धोना, वस्त्र पहिनना आदि सभी सभी क्रियायें दूसरों द्वारा की जाती है। राध एवं पीप की दुर्गन्ध से सारा वातावरण दुर्गन्धमय बन जाता है। नाक एव अंगुलियां गिरने लग जाती है। कवि ने कुष्ट रोग पीड़ा का बहुत अच्छा वर्णन किया है—

भई राज पीड़िनी सरीर, होई दुःख्या बहुत सधीर।
कोढ उवम्बर बध्यो अति राई, गलित आंगुली अरि पग पाई ॥१२१॥
रक्तपीत जाके तन बीस, डारैं चोर राई कैं सीस।
भरे प्रसेद कम सौं गई, देह वात पच्छारी रही ॥१२२॥
स्याम दाह जाके असमान, तौ राखी हि बनावैं थान।
मरदन करैं ताहि घरी काल, अकुला भरयो भ्रसगाल ॥१२३॥

श्रीपाल राजा थे लेकिन प्रजावत्सल थे। उनके कुष्ट रोग के कारण जब प्रजा को दुख होने लगा, नगर दुर्गन्ध से भर गया, तथा उनका खाना पीना हराम हो गया तब मन्त्रियों ने राजा से निवेदन पूर्वक प्रजा की व्यथा बतलायी। तत्काल श्रीपाल ने कुष्ट रोग से मुक्ति पाने तक राज्य का समस्त भार अपने चाचा वीर-

दमन को सौंपने का निश्चय किया। इस अवसर पर कवि ने प्रजा के महत्व पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है—

रइयति बिन सोभा नही रहै, रइयति बिन को राजा कहै।
बिन पंखनि है पंखो जिसो हुं रइयति बिन वोसो तसो ॥१५२॥

× × × ×

रैयति को हम ऊपर छांह, रैयति बसै हमारी बांह ॥१५६॥

ऐसे कहे सयाने लोय, राजा प्रजा बराबरि होय ॥१६०॥

मैनासुन्दरी जब सोलह वर्ष की हुई तब रूप एवं सौन्दर्य की राशि बन गयी। जिसने उसके रूप को देखा उसी ने दांतों तले अंगुली दबा ली। मैना सुन्दरी का कवि के शब्दो मे सौन्दर्य देखिये—

षोडस बरष चढी परवान, कोउ रूप न ताहि समान।
ताको रूपसो हेम करंडु, मानौ सरद पून्यौ को चंदु।
लोचन परम सुवसत अति बने, ज्यों चकृत मृग सावक तने ॥२६॥

कटाक्ष दृष्टि मांनु बहुबान, भृकुटी कुटिल धनुष कबान।
माथे मांगे बिराजे बार, मानौ नागनि के उनिहार ॥२७॥

कवि ने मैनासुन्दरी के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का वर्णन किया है जब मैना सुन्दरी को कोढी के साथ विवाह करने के समाचार सुने तो चारों ओर राजा को धिक्कारने तथा मति भ्रष्ट होने, विनाश होने के ताने सुनने को मिले। इसी प्रसंग में अपने २ कर्त्तव्य का पालन नहीं करने के कारण किन २ का विनाश होता है इसका काव्य मे बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है।

बिनसै मंत्री संकाधरै, बिनसै राव अन्ध जो टरै।
बिनसै भामिनी आइसु तजै, बिनसै कुल वेस्यि रए भजै ॥४०४॥

बिनसै ईसु कौंहु परहरै, बिनसै साधु बाधु जो करै।
बिनसै बाला तजै विवेक, बिनसै बाछल बसै बिन एक ॥४०५॥

श्रीपाल का कुष्ट रोग सिद्धचक्रव्रत पूजा के प्रभाव से गया था। मैना सुन्दरी ने पूर्ण आस्था एवं विधि के साथ इस व्रत का विधान किया था। अन्तिम तीन दिन तक गन्धोदक से स्नान करने पर श्रीपाल का कुष्ट रोग दूर हुआ था।

कवि ने इस व्रत के अवसर मांडने, फिर उस पर पूजा करने आदि क्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि परिमल्ल कवि पंडित भी थे।

> तीन विकल्प अर्घावल बनाय, कीनु विनति पढ़ते अनुराग।
> कंचन बरन भयो तनु ईसो, सोहतु काम देवतो जिसो ॥

श्रीपाल जब विदेश गमन करने लगे तो मैना सुन्दरी अतीव धर्मात्मा होने पर भी पति विरह के दुख को सहन नहीं कर सकी और पति को अपनी विरह व्यथा निवेदन करने लगी—

> यह कहि गवनु कीयो वरवीर, कामिनि व्याकुल भई सरीर।
> लोचन भरे चित उमह्यो, मनु गाढो करि न बहु गह्यो

श्रीपाल की बलि देने के लिये उसे धवल सेठ के पास ले गये। श्रीपाल सुन्दरता की प्रतिमूर्ति होने पर भी धवल सेठ के हृदय में किञ्चित् भी दया नहीं आयी। और उसने उसकी बलि देने की स्वीकृति दे दी। लोभ मनुष्य का गला काटता है। इस प्रसग में कवि ने लोभ रूपी पाप का विस्तृत वर्णन किया है—

> लोभ अंध जो मानवु होई, पाप पुन्य जाने नहि कोई।
> लोभ अंध जाके हैं प्रान, मलिन भाव नहि तजै निदान ॥१६०१॥
>
> लोभ अंध जो अरजै वित्त, सो नर खाये न खर्चे मित्त।
> लोभ अन्ध जाको मन रहै, सो न भली काहू को कहै ॥१६०२॥

श्रीपाल का जीवन विदेश में भी पूर्णतः धार्मिक था। जहां भी उसे जिन चैत्यालय मिलता, वह दर्शन करके ही भोजन करता। यदि मुनिराज होते तो फिर उनके भी दर्शन करता।

> जिन चैत्यालो वंदौ जाय, तब ही भोजन करि हो आय।
> अरु मुनिवर के वंदे पाय, भोजनु करो सदा ही आय ॥

धवल सेठ ने जब रैनमंजूषा के रूप को देखा वह कामान्ध बन गया और पिता पुत्र के सम्बन्ध को भुला बैठा। वास्तव में मनुष्य जब काम का शिकार बन जाता है तो वह भाई बहिन, माता पिता, पुत्री के सम्बन्ध को भुला बैठता है इसी को कवि के शब्दों में देखिये—

> काम पुरुष जबहर वरहुई, कामहीन कछु चिन्ता न करी ॥

सुरा पान ते बुधि सबु जाय, तथा होत ज्यों पामिनु काय ।।१२६०।।

× × × × × ×

कामी जन बंछै परनारि, कामी जन मन भावै गारि ।
कामी जन छाडै गुरु सेव, नारी कारन न बूझै देव ।।१२४७।।

कामी जन जनकै उलटी रीति, उत्तम तजै मध्यम सौं प्रीति ।
कामी जन कै मित्रु न बंधु, नैननि देखै तदपि निरंधु ।।१२४८।।

श्रीपाल फिर संकट में फंस जाता है। धवल सेठ द्वारा वह समुद्र में गिरा दिया जाने के पश्चात् वह सागर तैरकर दूसरे द्वीपमें आ जाता है। वहां सागर तटपर राजा के सिपाही उसका स्वागत करते हैं। और सागर तैर कर आने के उपलक्ष में राजा द्वारा अपनी लडकी गुणमाला से उसका विवाह कर दिया जाता है। वे दोनो कुछ समय तक सुख से रहते है लेकिन जब धवल सेठ का जहाज उसी द्वीप मे आ जाता है। श्रीपाल को देखकर घबरा जाता है और एक नयी चाल खेलता है। वह भांडों को बुलाकर राज दरबार मे श्रीपाल को भांड पुत्र सिद्ध कर देता है। जिस व्यक्ति के बुरे दिन आने लगते हैं तो अपनी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा वह धर्म का मार्ग छोड देता है। कवि ने इसका अच्छा वर्णन किया है—

यह सुनि सेठ विचारे तबै, जिनस हाथ होसु मन अबै ।
पहलैं जनि ताकी तजि जाय, दूजे अनु बसै कुटकाय ।।१५३७।।

तीजैं सतु चले सुनि सोवु, चौथु कीजि सेठ अन्नीवु ।
अहिम्म ताकैं पास न रहै, आनु ताहि तजि मारणु चहै ।।१५३८।।

संगम सोतु तबै कुलि ताहि, दया विवेकु बसै चित नाहि ।
पहलैं कुमति बैसी आय, मेरे असुमु जु कंठ लगाय ।
बहोरि होय अदया सौ प्रीति, बहोरि असत्य करै असि जीति ।।१५४०।।

भांडों ने राज्य सभा मे श्रीपाल को अपनी जाति का तथा अपना लडका सिद्ध कर दिया। भांडों द्वारा किये हुए प्रदर्शनको देखिये—

कोउ कंठ लागि रोवय, कोउ कुमु पीछे बिहुसाय ।
कोउ ताके पकरै पाय, कोउ बाह गहै अकुलाय ।

कोउ ताके पीछे बंधु, ताहि देखि हरखो बहु अंधु ।
कोउ कहै धनि भूपाल, याको भयो यहां प्रतिपालु ।।

भांडों ने विचित्र प्रकार से राजा को समझा दिया कि श्रीपाल उन्हीं का पुत्र

है। श्रीपाल को फिर अशुभ कर्मों ने घेर लिया। राजा ने कोपित होकर चंडालों को श्रीपाल को मारने का आदेश दे दिया।

> यहु सुनि राय कोप अति भयो, चंडालनि कौं आयसु दयो।
> मारौ उव बीच मैं मति करौ, आ ठाढी मैं सूली धरौ ॥१६८२॥

इसके पश्चात् रैनमंजूषा से श्रीपाल का पूरा परिचय सुनने के पश्चात् राजा ने श्रीपाल से क्षमा मांग की और फिर से नगर में उसका जोरदार स्वागत किया गया। इसके पश्चात् तो विभिन्न लोगों से श्रीपाल के सामने विवाह के प्रस्ताव आने लगे और श्रीपाल ने भी सभी प्रस्तावों को स्वीकार कर अपनी उदारता का परिचय दिया।

श्रीपाल को राजकुमारियों से विवाह करने से पूर्व उनकी समस्या पूर्ति भी करनी पड़ी। कोकन पट की आठ राजकुमारियों द्वारा रखी गयी समस्या का श्रीपाल द्वारा निम्न प्रकार से पूर्ति की गयी।

समस्या—जहां साहसु तहां सिधि (शृंगार गौरी द्वारा)

पूर्ति—सत सरीरह आपतो, प्रगटै अंक सुबुद्धि।
  सील सुलाखन परहरैं, जहां साहसु तहां सिधि ॥१७१८॥

समस्या—गो पेखंतह सबु (पद्मलोमी द्वारा)

पूर्ति—नवि पूजा नवि दान हित, अनिषापो यो दव्व।
  वृथा जनम गवाइयो, गयो पेखंता सव्व ॥१७१९॥

समस्या—ते पंचानण सिंह (पउलोमी द्वारा)

पूर्ति—सील विहुना जीवि नरु, तिन की देह मलीन।
  जे चारित्तह निर्मला, ते पंचानण सिंह ॥१७२०॥

समस्या—कासु पियाउ खीरु

  रावन विधा सीभियो, दसमुख एक सरीरु।
  तास माय षर्ण परी, कासु पियाउ खीरु ॥१७२२॥

इसके पश्चात् और भी देश की राजकन्याओं के साथ श्रीपाल ने विवाह कर लिया। एक दिन अचानक उसे मैनासुन्दरी की याद आ गयी और किया हुआ वायदा। वह तत्काल गुणमाला और रैनमंजूषा के पास आ गया और वहां से चलने की तैयारी कर ली. दलपट्टन के राजा ने उसे निम्न प्रकार सैन्य बल दिया—

चलत राव सुण्यौ सिहसंघु, एक हजार तह गजदंत ।
च्यारि सहस वर रह तुरंग, तीने लख पयदर वर संघ ॥

अनेक देशों में होता हुआ श्रीपाल उज्जैनी पहुंच गया जहां मैना सुन्दरी उस की प्रतीक्षा कर रही थी । उसके दीक्षा लेने के समय में केवल एक रात्रि बाकी थी । मैनासुन्दरी के लिये एक रात्रि की प्रतीक्षा भी कठिन हो रही थी । मैनासुन्दरी एवं उसकी सास के मध्य होने वाले वार्तालाप को सुनकर श्रीपाल ने घर में प्रवेश किया । दोनों को वह रात्रि को ही अपने कटक में ले गया और अपनी माता एवं रानी को अपनी विशाल सेना एवं अपनी पत्नियां बतलाई । उसने सबके सामने मैनासुन्दरी को पट्टरानी—महारानी घोषित किया तथा रैन मन्जूषा, गुणमाला, चित्ररेखा को रानियां घोषित की । मैनासुन्दरी का हृदय प्रसन्नता से भर गया और उसने श्रीपाल से निम्न प्रकार निवेदन किया—

मेरे पिता करम नहि मान्यो, मानभंग कीजै ता तनौं ।
कंवर पहरि कुहारी कंध, कर पीनां की भरी सबंध ।
ऐसो विधि जब मिलि है तोहि, तब ही सुख उपजैगो मोहि ॥

दूत ने तत्काल जाकर राजा से इसी प्रकार के वेश मे श्रीपाल से भेंट करने का आग्रह किया । राजा ने क्रोध में आकर दूत को पकड़ लिया । लेकिन मन्त्री के कहने से उसे छोड़ दिया । राजा पहुपाल ने उसी तरह श्रीपाल से मिलने की बात मान ली लेकिन मैनासुन्दरी ने जब राजा का मान भंग होता सुना तो श्रीपाल से पुनः अपने पिता को राजा के तरीके से बुलाने के लिये कह दिया । दोनों में जब परस्पर मिलन हुआ तो चारो ओर आनन्द छा गया ।

राजा पहुपाल ने जब मैना सुन्दरी एवं श्रीपाल के वैभव को देखा तो उसके आखों में आंसू बह चले और निम्न शब्दो मे मैना सुन्दरी की प्रशंसा करने लगा—

मो पुत्री सबही गुण जान, शील धुरंधर सुख निधान ।
तु अति दयावत जीव जोय, तो सम पुत्री और न कोय ॥
मै तेरी देख्यौ सब करमु, जब आराध्यो जिनवर धरमु ।

अभी श्रीपाल को अपना स्वयं का राज्य और लेना था जिसे वह अपने चाचा को दे आया था इसलिये जब उसने अपना राज्य दूत भेजकर मांगा तो उसे निम्न प्रकार उत्तर मिला—

बिनु भुजबल बिनु खड्गप्रहार, बिनु रण सूरै न करै प्रचार ।
जौलौं एहु करम नहि होय, तौ लौं राज न पावै कोय ॥१६४६॥

श्रीपाल ने एक बार दूत भेजकर अपने चाचा को समझाने का प्रयास किया तो वह और भी क्रोधित हो गया और दूत को ही मारने का आदेश दे डाला—

दूत ने सगरी सिखइ कही, तैसे जातिक क्रोध कुल गयो ।।

लड़ाई की तैयारियां होने लगी और उसने तत्काल आक्रमण करने का आदेश दे दिया ।

आवै मार मार तिहु बार, हुए सब ताकी से हुशियार ।
यो संग्राम मिटे हम मार, जैसे श्रीपाल एक न मार ।।१९८८।।

यह कहत करी उपरो चढ्यो, कोर लै सजन चल्यो रिस बढ्यो,
ता देखत हो सबै जुझार, चढ़ए काल सम तिहि बार ।।१९८९।।

सैनिकों की पत्नियां जब अपने अपने पति को युद्ध के लिए विदा किय उन्होंने निम्न प्रकार अपने विचार प्रगट किये—

कोउ प्रिया मांगै रतिदान, हम तुम कंत अमय है प्रान ।
कोउ कहै मुहं मुख लगी, हरसायो पिय अब जागयो ।।१९९९।।

कोइ सीख देई कुल मान, युद्ध हारि मति आयो थान ।
बहुत योस जो खायो माल, स्वामी काम अब करी हलाल ।।२०००।।

कोउ कहै संगिनी नारि, भजियो पीय जो जानि हारि ।
एक कहै मुक्तनि के हार, अरु पाटंबर चीर अपार ।।२००१।।

दोनों में युद्ध होने लगा । गज से गज, अश्व से अश्व एवं पायक से पायक भिड़ गये । शाम हो गयी लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला । मन्त्रियों के परामर्श से अन्त में यह निश्चय किया गया कि श्रीपाल एवं वीरदमन में परस्पर युद्ध होने पर जो जीत जायेगा वही राजा पद प्राप्त करेगा । दोनों में भीषण युद्ध होने लगा ।

तब ए कोप भरे दोउ राइ, भिरे मल्ल ज्यों दोऊ धाइ ।
नाना भांती करै दोउ वीर, कोऊ गिरै परै धर धीर ।।२०२८।।

ऐसैं बहुत बेर जब भई, श्रीपाल की शक्ति छिन गई ।
ताके दोउ पकरे हाथ, वरि बापुर हूं बांधी [illegible] ।।२०२९।।

भयतो पकरत [illegible] भई, [illegible] तबल [illegible] सुर लई ।
[illegible] ।।२०३१।।

वीरदमन ने अपनी हार मान ली और श्रीपाल को राज्य भार सम्हला कर स्वय ने जिन दीक्षा धारण कर ली। श्रीपाल ने सब राज्य सुख भोगा और धर्म नीति के अनुसार राज्य किया। कवि ने धर्म की बड़ी महिमा गायी है। धर्म का प्रभाव एवं तेज अपूर्व होता है जिसके हृदय मे धर्म उतरता है उसे चारों ओर से सुख शांति एवं अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है—

धर्म एक त्रिभुवन में सार, धरमै कुगति निवारण हार।
धर्म एक सब सुख को कंदु, धरम एक सबै दुख दंदु ॥२०२५॥

धर्म पसाय गज गुडरें, धरम पसाय होस हीय धरें।
धरम पसाय चंवर सिर ढरें, धरम पसाय छत्र सिर धरें ॥२०२६॥

अन्त मे श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी दूसरे सहस्रो राजाओं एवं रानियो के साथ जिन दीक्षा धारण कर ली। मैनासुन्दरी की घोर तपस्या का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है—

अब वन मारग सो पगु धरें, ग्रीषम रितु सिकता पर जरें।
सरद सोम सम वदनी विकासु, पोमनि करती पोष पियास।
ग्रीषम हल माह परभात, हो तो मलिन सीत की घात ॥७॥

इस प्रकार श्रीपाल चरित हिन्दी का उत्तम काव्य है। इस काव्य से हिन्दी काव्य जगत् को गतिशीलता मिलती है। महाकवि तुलसीदास की रामायण के पूर्व दोहा, चौपई मे रचित श्रीपाल चरित से तत्कालीन समाज में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन, काव्य निर्माण मे कवियो एव विद्वानो की रूचि बढ़ी थी। परिमल्ल कवि का आगरा केन्द्र था और ब्रज भूमि मे हिन्दी का प्रचार प्रसार करने मे जैन कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्रीपाल चरित मे काव्य के नायक द्वारा जिन जिन देशों एव द्वीपो का भ्रमण किया था उनके नाम निम्न प्रकार है—

१. राजगृह—राजा श्रेणिक की राजधानी, भगवान महावीर के विहार का प्रमुख केन्द्र।

२. चम्पापुर—अग देश की राजधानी, श्रीपाल के राज्य की राजधानी, भगवान वासुपूज्य की निर्वाण स्थल।

३. उज्जैन—मालवा प्रदेश की राजधानी, मैना सुन्दरी की जन्म स्थली,

श्रीपाल द्वारा कुष्टी जीवन यापन, वन में सिद्ध चक्रव्रत की पूजा से कुष्ट निवारण। कवि के शब्दों में—

देस मालवो सब सुख थानु, मध्यलोक में अमरपुरी मान।
पुर नाँव जिहि है वासर रैनि, सुबस बसै तहाँ नगर उज्जैनि ॥६॥

४. कौशांबीपुर—श्रीपाल उज्जैन से कौशांबीपुर पहुंचा जहां उसकी धवल सेठ से भेंट हुई। वहीं से वह सेठ के साथ आगे व्यापार के लिये गया।

५. हंस द्वीप—यात्रा का प्रथम पड़ाव। श्रीपाल ने इसी द्वीप में स्थित जिन मन्दिर के वज्रकपाट खोले थे तथा उसका रैनमंजूषा से विवाह हुआ था।

६. कुंकुम द्वीप—दलपट नगर—समुद्र को तैरता हुआ श्रीपाल इसी द्वीप के किनारे पहुंचा तथा दलपट नगर के राजा द्वारा अपनी लड़की गुणमाला से उसका विवाह कर दिया। धवल सेठ के आने पर भांडों द्वारा श्रीपाल को अपना लड़का बतलाने पर राजा द्वारा श्रीपाल को सूली लगाने का आदेश दिया। लेकिन रैन मंजूषा के पहिचान के कारण श्रीपाल सूली से बचा तथा पुनः सम्मान प्राप्त किया। धवल सेठ की वहीं मृत्यु हुई।

७. कुण्डलपुर द्वीप—हंस द्वीप में कुण्डलपुर द्वीप पहुंच कर चित्ररेखा के साथ विवाह हुआ।

८. कंचनपुर—विलासवती का जन्म स्थान।

९. कोंकण पट्टन—यहां श्रीपाल ने पहुंचकर आठ राजकुमारियों की समस्या पूर्ति करके उनके साथ विवाह किया।

१०. पंडीय देश—कोंकण पट्टन से श्रीपाल पंडीय देश में पहुंचा।

११. मेवाड़ देश—पंडीय देश से मेवाड़ देश में पहुंचा।

१२. तिलिंग देश—श्रीपाल की यात्रा का अन्तिम देश।

१३. सोरठ देश (सौराष्ट्र)—तिलिंग देश से श्रीपाल वापिस कुंकुम द्वीप के दलपट नगर में पहुंचा तथा वहां कुछ समय विश्राम के पश्चात् रैन मंजूषा, गुणमाला आदि रानियों के साथ उज्जैन के लिये प्रस्थान किया। तथा सौराष्ट्र में पहुंचा।

१४. सौराष्ट्र से श्रीपाल वहा के राजाओं से कर वसूल करता हुआ मरहट (महाराष्ट्र) देश में पहुंचा।

१५. उज्जयिनी—महाराष्ट्र से श्रीपाल उज्जयिनी नगरी में पहुंचा जहां मैनासुन्दरी उसकी १२ वर्ष से प्रतीक्षा कर रही थी।

१६. चम्पापुरी—उज्जयिनी में कुछ समय अपने श्वसुर के यहां ठहर कर अन्त मे वह चम्पापुरी पहुंचा। यहां उसका अपने चाचा वीरदमन से युद्ध हुआ और अन्त में विजय प्राप्त करके अपना राज्य प्राप्त किया।

काव्य की विशेषता

श्रीपाल चरित्र अत्यधिक रोचक काव्य है। कवि ने घटनाओ के वर्णन के साथ और भी ऐसे वर्णन प्रस्तुत किए है जिनके कारण काव्य और भी सुन्दर बन गया है। श्रीपाल का पूरा जीवन ही कर्म प्रधान है वह भाग्य के सहारे आगे बढता है इसलिए निम्न मान्यता में वह अपना पूर्ण विश्वास रखता है:—

विधना जो कछु लिख्यौ लिलार, शुभ अरु अशुभ अंक शुभ सार।
जैसो निमित्त जास कै होइ, ताहि मिटाइ सकै नहिं कोई ॥३०३॥

इससे आगे कवि और भी अपने भाव निम्न शब्दों मे प्रस्तुत करता है :—

पूरब ते पछिम रवि उवै, नर फुनि मेरु चूलिका छुवै।
सायर हू पै धूरि उडाइ, भावी तऊ न मेटो जाइ ॥३०५॥

भवितव्यता मे इस प्रकार अटल विश्वास के साथ श्रीपाल आगे बढ़ता है। मैनासुन्दरी का भवितव्यता मे सबसे अधिक विश्वास है अपने पिता के बार बार आग्रह करने पर भी वह अपने विचारों में दृढ रहती है और कुष्ट रोगी के साथ विवाह के अपने पिता के निर्णय को सहर्ष स्वीकार करती है। विवाह मडप मे बैठने के पश्चात् जब उसका सारा परिवार रुदन करने लगता है, मौन हो जाता है तब वह साहस पूर्वक कह उठती है कि जिस प्रकार उसकी बड़ी बहिन के विवाह में मंगलाचार गाये गये थे उसी प्रकार उसके विवाह में भी गाये जाने चाहिये :—

तब सुन्दरी उठि ठाडी भई, निज परियन माता पै गई।
सुरसुन्दरी को गायो जिसो, मोकी क्यों नहिं गावौ तिसो ॥१२०।६१

पुत्री के विवाह में जो कुछ पिता द्वारा कन्या को दिया जाता है उसे हम दहेज संज्ञा देते हैं। मैनासुन्दरी के विवाह मे भी श्रीपाल को ढेर सारा दहेज मिलता है

लेकिन आज के युग की तरह उस युग में मांग ठहराव अथवा और जबरदस्ती कुछ भी नहीं होता था जो कुछ भी दिया जाता उसे सहर्ष स्वीकार करने की परम्परा थी। और इसी परम्परा से समाज जीवित भी रह सका। श्रीपाल को भी दहेज में अपार चल एवं अचल सम्पत्ति मिलती है कवि ने उसका अच्छा वर्णन किया है।

> छत्र चमर दीन्हे भंडार, दीने मैमन तुरीय के डार।
> पाटंबर दीए बहु और, दिन्हें सबै निर्मोलिक हीर ॥१३४॥
>
> सहस दास सुन्दर गुन गेह, दीए सिरीपाल को नेह।
> सेवन भले भले जो भए, बहुत और सेवा को दए ॥१३५॥

पत्नी के लिए पति चाहे कैसा ही क्यों न हो वही उसका देवता कहलाता है। श्रीपाल ने विवाह के पश्चात् मैनासुन्दरी से दूर रहने के लिए कहा क्योंकि वह उस समय कुष्ट रोग से पीड़ित था। कहां रूप लावण्य की खान मैनासुन्दरी और कहा कुष्ट रोग से पीड़ित श्रीपाल। लेकिन मैनासुन्दरी ने श्रीपाल को जो उत्तर दिया वह बहुत मार्मिक एवं पढ़ने योग्य है :—

> बिधिना मोहि यह लिखि दियौ, सोहि मोकों मिल्यौ भयौ।
> तुम मेरे प्रीतम भरतार, तुम मेरे जामनि आधार ॥१५३॥
>
> तुम अति रूपवंत गुनवंत, तुम ही सुख सागर बलिवंत।
> लोचन दुखी भी लोए चार, तो लौं देखै तुम्हैं निहार ॥१५४॥

श्रीपाल जब विदेश यात्रा के लिए रवाना हुआ। उसके पूर्व उसकी माता ने सुखद यात्रा के लिए कुछ बीज मंत्र दिये। ऐसी शिक्षा श्रीपाल के लिए ही नहीं सभी के लिए हितकारी सिद्ध हो सकती है कवि ने इन सबका बड़ा अच्छा वर्णन किया है—

> धन दीनो मति लीजहु चित्, परदारा मति लावहि चित्तु।
> तौं ते बड़ी नारि जो होय, मात बराबर जानियें सोय ॥७७०॥
>
> होय त्रिया जो ताहि समान, ताहि जानि जो बहिन समान।
> जो कामिनि तोतें लघु आहि, पुत्री सम जो जानिजो ताहि ॥७७१॥
>
> दुखिजन जन को करियो मानु, दु जो दीन जन दीजो दानु।
> बहुत बात का कहुं सुजान, करियो व्रत संजम परवान ॥७७२॥

श्रीपाल पुण्यशाली था। इसलिये जब विदेश प्रस्थान के पश्चात् वह पुरपट्टन नगर में पहुंचा तो उसे सहज मे ही तीन विद्यायें सिद्ध हो गयी जिससे उसको विदेश यात्रा में बहुत सहायता मिली। इन विद्याओं के नाम थे शत्रु निवारिणी, जल तारिणी। प्राचीन काल मे मंत्र विद्याओं पर जन सामान्य को पूर्ण आस्था थी और वह उनके चमत्कारो से पूर्ण प्रभावित थी।

धवल सेठ का जब समुद्र में जहाज नहीं चला तो उसे मनुष्य की बलि देने के लिए कहा गया इससे पता चलता है कि उस समय उपसर्ग निवारण के लिये मनुष्य तक की बलि देने का प्रचलन था। बलि के लिए श्रीपाल जैसे युवक को पकड़ लिया गया।

तातें मन मैं उपज्यो संदेहु, मंत्री मन विचारयो एहु।
एक पुरुष बलि दीजै आय तब यह चलै परोहन जाय ।।७७३।।

प्राचीन काल मे समुद्री लुटेरे यात्रियों को लूट लिया करते थे। वे जहाज तक डुबो दिया करते थे। धवल सेठ के जहाज के ऊपर भी लुटेरोने हमला कर दिया था जिसके कारण पूरा व्यापारिक संघ ही संकट मे पड़ गया था। यदि श्रीपाल नहीं होता तो पता नहीं धवल सेठ की क्या हालत होती।

श्रीपाल कोटिभट्ट था। पुण्यशाली था। इसलिये उसके हाथ लगते ही वज्र के किवाड़ खुल गये। जिनके खुलने का अर्थ था वहां के राजा की कुमारी रैनमजूसा के साथ विवाह। श्रीपाल का भाग्य चमक उठा और विदेश मे उसे सफलता पर सफलता मिलने लगी। इसके पूर्व वह जहाज को अपने बाहुबल से चलाकर लुटेरों को पकड़ने में सफलता प्राप्त कर चुका था। यह तीसरी सफलता उसके उज्वल भविष्य के लिए वरदान सिद्ध हुई। श्रीपाल ने रैनमजूसा जैसी सुन्दर राजकुमारी ही नहीं किन्तु विवाह मे अपार सम्पत्ति भी प्राप्त की इसका एक वर्णन पढ़ने योग्य है :—

रैनमंजुसा गुणह विसाल, श्रीपाल ब्याही सुकुमाल ।।
सोनो दीयो तुठि कै राय, और छत्र हय गय अधिकाय ।।८६२।।
दीनौ मणि रत्ननि भण्डार, दासी दास एं सुभसार ।।
और बहुत को कहै बढ़ाय, दीनौ मोहल महल कराय ।।८६३।।

श्रीपाल के जीवन मे फिर संकट आ जाता है और वह समुद्र में गिरा दिया जाता है। उस समय रैनमंजूसा के दुख का कोई थाह नहीं रहता। वह भी

अपने पूर्व कृत कर्मों को रोती है और निम्न प्रकार पश्चाताप करती है :—

कै मैं पर पुरुषह मन धर्यो, कै मैं साससु जीयतें डर्यो ।
कै मैं काहू को वित्तु हर्यो, कै मैं भविजन मानन कर्यो ॥१२८१॥

कै मैं निंद्यो जिनवर धर्मु, कै मैं असुभ कमायो कर्मु ।
कै मैं जीव दया परहरी, कै हूं कहूं अग्नि मैं जरी ॥१२८२॥

कै मैं मिथ्या गुरु सेइयो, कै मैं पात्रही दान न दियो ।
कै मैं कहू उधार्यो धंमु, कै मैं कियो धरतु को भंगु ॥१२८३॥

कै गुरु कह्यो न लीनो मानि, कै मैं झूठो बोल्यो आनि ।
कै मैं परगुरण भेद्यो पाय, कै हूं बूडी नदी मैं जाय ॥१२८४॥

श्रीपाल का व्यक्तित्व पूरा क्षमाशील था । शत्रु को जीतने पर भी वह उसे क्षमा कर दिया करता था । उसने सर्व प्रथम समुद्री डाकुओं को धवल सेठ के जहाज पर हमला करते समय पकड़ कर लाने पर भी उन्हें क्षमा कर दिया । तथा स्वयं धवलसेठ को उसे समुद्र मे गिरा देना एव भांडो द्वारा पुत्र बतलाने के षड्यंत्र का पता लगने पर भी धवल सेठ को क्षमादान दे दिया । श्रीपाल ने अपने जीवन में कभी ऐसा कोई कार्य नही किया जिससे उसके जीवन मे कलक लगता हो । इस प्रकार श्रीपाल चरित्र शिक्षाप्रद काव्य है जिसमे एक ओर कर्मवाद (भाग्यवाद) की प्रधानता है तो दूसरी ओर पुरुषार्थ को भी गौण नहीं किया गया है । स्वयं श्रीपाल राजा होने पर भी वैभव, धन संपत्ति अर्जन के लिए देशाटन करता है । वह अपने सिद्धान्तो पर चलता है और उनका कभी उल्लंघन नही करता ।

श्रीपाल का अन्तिम जीवन साधु जीवन के रूप मे व्यतीत होता है। अपने अपार राज्य एवं वैभव, आठ हजार रानियों के भोगो को हेय समझ कर मुनि दीक्षा धारण करता है अर्थात् अन्तिम जीवन में त्याग को प्रधानता देता है । जो वर्तमान भौतिक जीवन व्यतीत करने वालो के लिए अच्छा उदाहरण है । मानव को अपनी वृद्धावस्था मे त्यागमय जीवन अपनाना चाहिये इसी मे उनका कल्याण और आगामी जीवन के लिए शुभ लक्षण है ।

विद्याध्ययन

श्रीपाल को आठ वर्ष का होते ही विद्याध्ययन के लिए मुनि के पास भेजा गया जहां उसने णमोकारमंत्र, अक्षर विद्या, अंक विद्या (गणित), न्यायशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, वैदिक आदि विद्यायें सीखी । यही नहीं जल में तिरना, घुड़सवारी, हाथी की सवारी, रथ की सवारी एवं संगीत आदि की विद्याओं भी अध्ययन किया। इसी तरह मैनासुन्दरी एवं सुरसुन्दरी ने भी विद्यायें सीखी इतना अवश्य है कि मैनासुन्दरी ने जिन मन्दिर में आर्यिका के पास जाकर जैन धर्म

की शिक्षा प्राप्त की जिससे उसके मन में कर्मवाद की प्रधानता स्वीकार करने का प्रभाव पड़ा और सुरसुन्दरी ने 'शिवगुर'' से शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसके दूसरे ही संस्कार बने। इस प्रकार जैसा शिक्षक मिलता है बालक के उसी प्रकार के संस्कार पड़ जाते हैं। मैनासुन्दरी ने जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त की उसका एक वर्णन देखिए :—

जोतिष पढ्यो हसी परवानि, आगम अरु अध्यातम जानि।
सीख्यो तिन संगीत पुरान, नाटिक वाटिक करै बखानि॥

तर्क छंद पुनी पढ़ि लियौ, अरु राखन तिन उत्तर दियौ।
भाषा सोजु अठारह पढ़ी किया करि दिन ही नित बढ़ी॥२२७॥

इस प्रकार परिमल्ल कवि का श्रीपाल चरित्र उत्तम प्रबन्ध काव्य है जिसका जितना गहरा अध्ययन किया जावे, उतना हीश्रेष्ठ एव सुखद है।



श्रीपालचरित्र (परिमल्ल कृत)

चौपई

मंगलाचरण

श्रीसिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि । गुण अनंत फल आकर सिद्धि ॥
प्रणमों परमसिद्धगुरु सोइ । भविक संग ज्यों मंगल होइ ॥ १ ॥

सिद्धपुरी सिद्धनि को थान । सिद्धपुरी आनंद निधान ॥
प्रगट जोति त्रिभुवन में आहि । अलख देव को लखै न ताहि ॥ २ ॥

अंजन रहित निरंजन जानि । हीन बुद्धि क्यों सकै बखानि ॥
जय जिनंद आदीसुर देव । सुर नर किन्नर पद पंकज सेव ॥ ३ ॥

जय अजितेसुर मुकति निधान । मान रहित मिथ्यातम भान ॥
जय जिन संभव हरे विकार । मुक्तिरत अति आनंद अवतार ॥ ४ ॥

जय अभिनंदन नंदन वीर । गुन गरिष्ट भव भंजन धीर ॥
जय सुमतीसुर परम उदास । सुमय प्रकाशन कुमय विनास ॥ ५ ॥

जय जय पद्मप्रभ पदु जाहि । श्री संजुत कमलासन आहि ॥
जय सुपास उपहास निकंद । प्रनवत दूरि होइ भव फंद ॥ ६ ॥

जय चंद्रप्रभ केवल नाम । होहु कृपाल सबै सुख धाम ॥
जय पुष्पदंत जीत्यो जिहि मार । दुर्धर धर्यो चारित्रह भार ॥ ७ ॥

जय जय सीतलनाथ मुनिंद । मधुर जस सेवै सुर वृंद ॥
जय श्रीयांस रहित विकलेस । उदित मुक्ति भंभू परमेस ॥ ८ ॥

जय श्री वासपूज्य व्रत लीन । जैन धर्म उपदेस प्रवीन ॥
जय श्री विमलदेव मति धंध । विमल भयो गुण विमल अनंग ॥ ९ ॥

जय अनंत जिनवर सुभ थान । मन वच क्रम जानियौ प्रमान ॥
जय श्री धर्मनाथ सुखगेहु । कंचन वर्ण विराजित देह ॥ १० ॥

जय श्री शांति क्षमासिंधु आनि । दुःख हरन पूरति सीखानि ॥
जय श्री कुंथ कुपंथ विनास । केवल उदित ज्ञान परकास ॥ ११ ॥

जय श्री अरहनाथ जगनाहु। अति बलिष्ट जिह मोह मसाहु ॥
जय श्री मल्लि मल्यौ जिह मांन। पुन तीरथ महि जो परवान ॥ १२ ॥

जय श्री मुनिसुव्रत मुनिराइ। [illegible] पाइ ॥
जय जय नमि रतनत्रय धार। मन के छांडे सकल विकार ॥ १३ ॥

जय श्री नेमिनाथ गुणखांन। [illegible] राजमती थए निर्वाण ॥
जय श्रीपारस नाथ जिनंद। फनि मनि मंडित त्रिभुवन [illegible] ॥ १४ ॥

जय श्री वर्द्धमान जिनराइ। केहरि लंछित आसन छाइ ॥
चतुर्विंश जिन जे गुनमाल। प्रनवत दूरि होइ भ्रम जाल ॥ १५ ॥

अरु जे मुकतिपंथ मुनिगए। निरभय अलख अगोचर थए ॥
कीनौं नमसकार परिमल्ल। जिमते दूरि होइ भव सल्ल ॥ १६ ॥

जिनमुख अंबुज तैं उचरी। त्रिभुवन मांहि कथा विस्तरी ।-
द्वादसांग शासन भगवती। जास प्रसन्न होइ बहुमती ॥ १७ ॥

विमल वर्ण वेदनि में कही। निज निर्वेद अभंग भारही ॥
निरमुख ताहि कहै बहु भंग। गुणतामैं राखी सरबंग ॥१८॥

स्वामिनि जिन पर होहु दयाल। बढ़े कथा ज्यौं होइ रसाल ॥
मूरिष थैं पंडित पद लहौं। सारद गुन गाढौ करि गहौं ॥१९॥

घट दंसन मुख मंडन सार। मिथ्या कुमति विनासन हार ॥२०॥

दोहा

अमुख हरन अघ खंडनी, वंदौ केवल संग ॥
देहु बुद्धि ब्रह्माइनी, ज्यौं होइ उक्ति तरंग ॥२१॥

चौपई

तोहि सुमरि कर सेवनि गहौं। सिव [illegible] विधि वरनन कहौं ॥
ज्यौं सारद पसाउ मति लहौं। नवरस कथा प्रगट करि कहौं ॥२२॥

गुरु गौतम मोहि देहु पसाउ। बढ़ै कथा होइ मन चाउ ॥
पुंजि परमेठि पंच गुरजांनि मन क्रम करि कहौं बखांनि ॥२३॥

पंच परमेष्ठी स्तवन

जय जय नमौं देव अरिहंत । है प्रसिद्ध गुण जाहि अनंत ॥
जय जय नमौं सिद्ध वर देव । अलख रूप त्रिभुवन करि सेव ॥२४॥

जय जय आचारिज मुनिराइ । अमर खचर नर वंदहि पाइ ॥
जय जय नमौं परम उवझाइ । उदीयत गुन जा अगनाइ ॥२५॥

जय जय साध लोक वर धीर । अमृत बुधि बखानैं करि ॥
तिनकौं नमस्कार कर जोरि । जाते अघमल होइ बहोरि ॥२६॥

पढत सुनत मन उपजै भाउ । कहि परमल हीऐं धरि भाउ ॥
कैसैं श्रीपाल औतरयौ । कैसैं कुष्ट व्याधि करि भरयौ ॥२७॥

श्रीपाल के जीवन को जानने की उत्सुकता

कैसैं बन उजालह गयौ । कैसैं सिद्धचक्र व्रत लयौ ।
कैसैं सायर बूड्यौ जाय । कैसैं कोढ गयौ विकुताय ॥२८॥

कैसैं दस तिन प्रगटयौ घनौं । कैसैं प्रगटयौ वसु आपनौं ॥
कैसैं राजकीयौ परवांन । कैसैं वाको चल्यौ पुरान ॥२९॥

रचना काल.

संवत सोलहसैं उपरैं । सोवन इक्यावन आगरैं ॥
मांस असाढ पहूंती आइ । वर्णारित की कहूं कढाइ ॥३०॥

पक्ष उजाली आठैं आंनि । सुकरवार वार परवांनि ॥
कवि परमल्ल सुभ करि चित्त । आरंभ्यौ श्रीपाल चरित्त ॥३१॥

बाबर पातिसाहि होइ गयौ । तासु साहि हुमाऊ भयौ ॥
ता सुत अकबर साहि सुजान । सो तप तपै दूसरौ भान ॥३२॥

ताकै राज न कहूं अनीति । वसुधा सकल करी बसि प्रीति ॥
अनुदिन राज करौ जोय । दूजौ अवर न लईहि समान ॥३३॥

ताकै राज सोभा बहु करी । कवि परमल्ल अल्प चितधरी ॥
जंबूद्वीप भरतह सुभथांन । कौसल देस जासु वखांन ॥३४॥

आ बहु फेरि सिंधु जल बहै। कोऊ जाको पार न लहै ॥
तामैं भरहखेत परवांन। सब ही खेतनि मैं परधांन ॥३५॥

मगध के राजा श्रेणिक का वर्णन

मगधह नाम राजै तिह देस। भूमंडल में सुजस असेस ॥
नयर राजगिर सुबस बसाइ। ताकी सोभा कही न जाइ ॥३६॥

अमरपुरी अमरनि की जिसी। है प्रसिद्ध महिमंडल तिसी ॥
सुन्दर ग्रह सतखने अवास। बाडी बाग कुवा बहु पास ॥३७॥

श्रेणिक राव तिहां वरिसल्ल। करै राज अगट्यो भुव भल्ल ॥
एक छत्र निवसै इह रीति। वसुधा सकल करी वसि जीति ॥३८॥

कथा नाथ है ताको नाम। पुन्यवंत सबको सुषधाम ॥
ताकै सतुसील जानियैं। धरमातमा बसैं वानियैं ॥३९॥

कोऊ ताकै दुषी न लोइ। दया दांन पालै सब कोइ ॥
ताकै बहुत महासुत जान। तामैं वारिषेन परधांन ॥४०॥

तसु रांणी चेलणा परधांन। सतसील अरु गुणह निधांन ॥
कछु सुन्दरता कहीयन परै। दरस होत पापनि कौं हरै ॥४१॥

मिथ्या दरसन रीति सुजांनि। समकित की परतीति वषांनि ॥
अरु अति जैनधर्म्म की लीन। दया दान पालन परवीन ॥४२॥

करै राज श्रेणिक नर पार। बहुत राइ सेवैं दर बारि ॥
एक दिवस सिंघासनि आइ बैठ्यो सिर परि छत्र धराइ ॥४३॥

सेवग लाष सेव ता करैं। हय गय गाह चौर हू ढरैं ॥
तिह अवसरि आयौ बनपार। हर्षवंत मनमांहि अपार ॥४४॥

श्रेणिक के दरबार में वनपाल का आगमन

छह रित के जु फूल भए। अति मनोग राजा कौं दए ॥
विपुलागिर परवत परवांन। आयौ समोसरण तिह थांन ॥४५॥

चतुर्विंशतमौ वीर जिनंद। दरस होत दुख दुरति निकंद ॥
कौतूहल कछु कह्यो न जाइ। सुर लोक तिह ठां रह्यो आइ ॥४६॥

इंद्र चन्द्र धरनिंद फुनेस । तिनकी बहुत भांति [illegible] ॥
अस्तुति करत जोरि दो हाथ । ठाडे रहत सुनो हो नाथ ॥४७॥

श्रेणिक द्वारा महावीर वन्दना

अमर खचर नर भूप जिते । सेव करन आवत हैं तिते ॥
ऐसी सुनि आनंदो राउ । सीघ्र ताहि तिह कियौ पसाउ ॥४८॥

कर कंकन आभरन अपार । दीनौं ताहि न लाई बार ॥
आसन ते उठि ठाढौ भयौ , मनकी भरम सबै भजि गयौ ॥४९॥

तिह ठा उपज्यौ सुख असेसु । तीन प्रदक्षणा दई नरेसु ॥
वाछित ज्यौं मनमें सुख पाइ । फलि भयौ सो अंबिन आइ ॥५०॥

आनंद भेरि बाइ सुख लह्यौ । परजन सहित राइ उमगह्यौ ॥
पाटबद्धंना गुणनि अगाध । नारि चेलणा ताके संग ॥५१॥

गुण बरनत सो पहुतौ तहां । समोसरण श्रीजिन कौ जहां ॥
द्वादस कोठा देखन लए । धनपति आइ आप निरमए ॥५२॥

तिनकी सोभा बरनि जो कहौं । कहत कथा कछु अंत न लहौं ॥
मानसथंभ देखियौ राइ । अति आनंदौ चित न समाइ ॥५३॥

तब जिनवर थुति लाग्यौ करण । जय जय जरा जनम कौ हरण ॥
जय जय उदति नभ जोति जिनेस । जय जय मुकित वधू परमेस ॥५४॥

जय जय छियालीस गुणमंड । जय अतिसै चौतीस प्रचंड ॥
तीन लोक की सोभा जाहि । कोऊ और न उपमा ताहि ॥५५॥

जय जय केवलज्ञान प्रकास । जय जय निर्नासिन भव त्रास ॥
जय जय मोन रहित जिनदेव । नर सुर असुर करैं जा सेव ॥५६॥

जय जय अस्तुति राव करेइ । बारबार प्रदक्षणा देइ ॥
नयौं प्रताप दुःख भजि गयौ । मन वच काय सुख अति भयौ ॥५७॥

गौतम स्वामी गणहर जाहि । नमस्कार कीयौ नृप ताहि ॥
जिह ठा अर्जिकानि कौ साथ । वंदन करैं तहां नर नाथ ॥५८॥

अरु क्षुल्लक तहां पूरे आहि । सम्यापान तिन पूछे राइ ॥
ताके हर्ष कछु न कुभाव । नर कोठा तहां बैठ्यौ राव ॥५९॥

श्रेणिक द्वारा सिद्धचक्रव्रत कथा जानने की इच्छा प्रकट करना

श्रेणिक पूछै वीर जिनेसु । सिद्धचक्र फल कहि परमेसु ।।
गुण अनंत राजै सरवग । वाणी तब उच्छरी अभंग ।।६०।।

गोतम स्वामी गुणह निधान । लागो परिछन केवलनान ।।
सुंनि सुंनि श्रेणिक राइ प्रवांनि । सिद्धचक्र व्रत कहौं बषांनि ।।६१।।

कथा का प्रारम्भ

जबूदीप मनोगि उदार । जोजन लछि तास विसतार ।।
छार सिंधु ता चहु'धा वहै । अति अथाह को पारन लहै ।।६२।।

ता मै भरह खेत्र सो सार । सब ही क्षेत्रनि मैं अधिकार ।।
तामहि अंगदेस परवान । अवर देस ता सम नहि आंन ।।६३।।

चम्पापुरी का वैभव

तहां नगर चंपापुरी वसै । देखत जाहि चित्त उलहसै ।।
सोहै ग्रह सतषने अवास । द्वारं कंचन कलस निवास ।।६४।।

घर घर प्रति चौंतरा सुठान । अति उज्जल ते फटिक समान ।।
विचि विचि हींगुर वन्यौं सुरंग । ते चमकत देषियो सुचंग ।।६५।।

घर घर सबै लोग परधांन । लक्षमीवंत सरब गुन जान ।।
घर घर सुर वेद धुनि करै । सहैसक्रत भाषा उच्चरैं ।।६६।।

सामोद्रक व्याकरन पुरान । घर घर कीजै अरथ बषांन ।।
जोतिग अरु वैदक गुन लीन । सब नर कोक कला परबीन ।।६७।।

सब को दया धर्म्म व्योपरं । परसंसा नहि कोऊ करै ।।
अति रमनीक हाट बाजार । बसै तहाँ नर साहु सा बार ।।६८।।

विराजै मग निरमोलिक चुनी । तिनकी बस बोलै सब दुनी ।।
कहूं होइ बालक पैसनौं । सो कछु ताहि कहत नहि बनौं ।।६९।।

कहूं कहूं नाचक नाचै ठाट । कहूं कहूं जाचै चंचल भाट ।।
कुली छतीस बसैं तहाँ लोइ । कुल की रीति न छाँडै कोइ ।।७०।।

अपनैं अपनैं चित सब सुखी । तिह पुर कोऊ नांही दुखी ॥
आस पास वाटिका सुथांन । बहुत बावरी कुवा निवांन ॥७१॥

अरु तिहां बागर बांने बरे । सघन दाष दारयौं द्रुम परे ॥
बहुत भांति अमृत फल रूख । देषत जिनैं न लागै भूख ॥७२॥

फरे नारिकर अंब अनंग । बहुत करि नारिंगि सुरंग ॥
अगिनत केला और पिंडूर । रहे बिजौरे जहां तहां पूर ॥७३॥

कुसुम कदंब रहे बहु फूलि । रहे भ्रमर तिनके रसभूलि ॥
तिहकी सोभा कहियन जाइ । जोजन वास रही महकाइ ॥७४॥

वस्तु बन्ध

केवरो केतकी मरुओ मोगरौ अरु जाइ,
गुलाब कुंजो भवर करणी रह्यो तहां महकाइ ।

मंजरी अरु जुही चंपौ राइ बेलि सुवास,
पाडर निवारी राइ चंपौ देखत बढै उल्हास

फूली चंबेली सरपडी मचकुंद सोभित मूल,
भवर एक सुगंध जित कित बहुत फूले फूल ॥७५॥

चौपई

महा फूल फूले बहु भाइ । सोभा कछु कही नहि जाइ ॥
कोकिल बोलत मधुरी भाष । सारो सूवा अधनति लाष ॥७६॥

पांडुक घुमरी भ्रमर चकोर । कहूं क बोले विधि विध मोर ॥
जो सब पंषी बरनन कहौं । कहत कछु इक अंत न लहौं ॥७७॥

अरु तहां सुन्दर सरोवर भये । मांनौं उदधि आप ही चये ॥
तिनमैं अम्बुज बहुत विकास । केत पास सुवासे अलिमाल ॥७८॥

चकवी चकवा केलि करांहि । जल कुकरी तहां कहरांहि ॥
जिनकी सोभित मधुरी चाल । रहे निकट बहु कुच मराल ॥७९॥

जलचर जीव रहैं जहां जिते । कहै कथा जो बरनौं तिते ॥
है अनेक जाकी विधि करी । जानौ इन्द्रपुरीहि बिपरी ॥८०॥

अरिदमन राजा

करै राज अरिदमन नरेस । ताको बहुत आहि उतबेस ॥
वीरदमन लहुरो ता वीर । कोटी भट यहु साहस धीर ॥८१॥

हय गय पाइक अगन अपार । परिगह बहुत लहै को पार ॥
सूर असंषि रहै दरबार । जे आवैं छत्तीस कुम्यार ॥८२॥

आम्या देस दिसांतर दूरि । सुजस रह्यो मही मै भरि पूरि ॥
पट्टण गढ मंगर भूपाल । तिनकी आवैं बहुत रसाल ॥८३॥

कुन्दप्रभा रानी

एक छत्र सो आहि नरेंदु । मानौं सोहै दुजौ इन्दु ॥
कुदप्रभा ताकै अरधंग । पाटप्रधानि गुणनि आभंग ॥८४॥

सीलवंति सुंदरि अति सोइ । ता सम और त्रिया नहीं कोइ ॥
जैसे रामचद्र कै सीय । प्रगट पुरांन जनक की धीय ॥८५॥

जैसे ससि कै रोहणि नेह । जैसै कवला हरि के गेह ॥
समयें समये के यहु सुष जिसौ । विलसति पियके सगति तिसौ ॥८६॥

एकैं दिन सौरनि अवास । सोइ गई करि भोग विलास ॥
तीनि जाम निसि वीती तवैं । चौथो जाम आइयौ जबै ॥८७॥

भयौ परफूलत ताको हियौ । अति उत्तिम सुपनौं पेषियो ।
धवल महागिर कंचन वर्न । कलपवृक्ष देषियो रवन ॥८८॥

तबै तहां अंधकार मिटिगयौ । पहु फाटी जब पगडी भयौ ॥
बहु बुधिवंत सयांनी घरी । नाह पासि आवै सुन्दरी ॥८९॥

सत्रदवन भणौं सुनि सुन्दरी नारि । सुपने को फल कहौं विचारी ॥
भूधर सुरतरु धवल जु दिठ । हूं सो फल मन की इष्ट ॥९०॥

बहुर्यो जंपै राइ सुजांन । महा कुसल अरु विनै प्रधान ॥
सकल परिगह को सुषकार । ह्वैं है सुन्दर तोहि कुंवार ॥९१॥

कंचन गिर सम ह्वै है धीर । सोभत नृमंघ होइ सरीर ॥
कल्पवृक्ष सम होइ उदार । दुषी जनहि कौ करै प्रतिपार ॥९२॥

धरमधुरंधर श्रीमहु जानि । बहुत कहा हौं कही बखानि ॥
यह सुनि दंपति बहु सुख भए । निवसत धर्म करत दिन गए ॥९३॥

स्वर्ग थकी सुर चय करि गिर्यौ । रानी गर्भ आय संचर्यौ ॥
मुह पांडर देषीयोरवन । कुच बोहरा भयो उन्नत ॥९४॥

श्रीपाल का जन्म

थूल पयोद स्तन पय भरे । मंहता नैन देषिए हरे ।
दसमास भयो गर्भ परवान । अति उदित रवि किरण समान ॥९५॥

जनम्यौ नंदन कुलह पयास । दुर्जन जनकौ प्रगट्यौ त्रास ॥
सज्जन जन मन भयौ आनंद । लखमवत भायौ कुलचंद ॥९६॥

ताको मुष देषियौ नरेस । मनबंछित सुख भयो असेस ॥
कंसाल ताल बाजै अनिवार । बंभन बेद पढ़ै झुनकार ॥९७॥

भयो उदार अति फूल्यौ गात । धन बिलसत को कहै कछु बात ॥
हीन दीन जे दुष निधान । जिनतैं सुष व्यापै दिनमान ॥९८॥

हय हाटक मुक्ता भरिथार । बहु धन दीयौ मंगन द्वार ॥
तब तिन जनम सुफल के भयौ । बालक तीस दिवस को भयौ ॥९९॥

रानी राजा भयो सुष संग । बालक लयो उठाय उछंग ॥
कीजिन भवन पहौतो जाइ । परस महा मुनीसर पाइ ॥१००॥

जाकौ निर्विकार ही हियो । मन सुख सफल जांनि तिन दियो ।
ताकैं चरननि पाड्यो बाल । रूपवंत सो महा गुनाल ॥१०१॥

मुनिवर ताहि बोलियो सोइ । धर्मवृद्धि दीनी सुख जोइ ॥
नीकैं करि मुनिवर सौ दीठ । तू है बहुजन ही को ईठ ॥१०२॥

भाष्यौ मुनिवर सुषदातार । याहि नाम श्रीपाल कुमार ॥
अब यामैं गुन है अधिकार । बरनत मोहि होइगी बार ॥१०३॥

यह सुनि निमस्कार तब कर्यौ । बहुरि धरि मन को दुःख हर्यौ ॥
जननी जनक लाडियौ बालु । बरष आठ कौ भयौ अवालु ॥१०४॥

श्रीपाल की शिक्षा

मुनिवर पास पठन सो गयो। ऊंकार प्रथम ही लयौ ॥
गण अक्षर मत्तहू भयौ लीन। तर्क वितर्क भयौ कोक प्रवीन ॥१०५।

साम्योद्रिक सीख्यौ सुख सार। पढ़यौ ग्रंथ व्याकरन कुमार ॥
सबही विधि सो कला विनान सीख्यौ बहु सो अर्थ पुरांन ॥१०६॥

कला बहेंतरि प्रगट विनोन। नाद करै गंधर्व समांन ॥
हय गय वाहन रथ विधि आहि। गुन छतीस प्रसिद्ध ताहि ॥१०७॥

जल तिरिबो सीख्यौ लिहु बार। तर्क वितर्क पढ़यो अतिसार ॥
जोतिग वैदक गुन सीखियौ। आगम अध्यातम पढ़ि लियौ ॥१०७॥

हैं प्रसिद्ध विद्या पद जितौ। पढ्यौ कुंवर मुनिवर पैं तितौ ॥
जोवन करि आरुढ्यौ जबैं। राजा चित्त उलह्स्यौ तबैं ॥१०८॥

महाबली श्रीपाल सुजांन। रूपवंत अरु गुंनह निधांन ॥
अति प्रचंड कोटीभटु सोइ। जाकै दरस अघ क्षय होइ ॥१०९॥

कबहूं भूलि न भाषै कूर। साहस धीर धरम कौ मूर ॥
ऐसी जुगति काल कछु भयौ। राजतिलक श्रीपालहु दयौ ॥११०॥

भयौ निसल्ल को कहूं बढाइ। आप काल बसि हूयौ राइ ॥
है हैकार कियौ संसार। वीरदमन दुख कियौ अपार ॥१११॥

श्रीपाल राजा दुष लह्यौ। हूवै विचारि सोच करि कह्यौ ॥
तीन लोक देख्यौ अवगाहि, दहै मरण सबही कौं आहि ॥११२॥

यह विचारि अपनैं जिय धर्‌यौ। मन को सोक दूरि सब कर्‌यौ ॥
कुंदप्रभा रानी समझाइ। देषि विचारि रीति यह भाइ ॥११३॥

जौ अब माता कीजै सोग। तौ सब हसैं देस मैं लोग ॥
छत्री कुल जाको अवतार। श्रीपाल यौं कहै कुमार ॥११४॥

ताहि सोक पूछिएन आनि। बहोत कहा हौं कहौं बखानि ॥
मोते कछु होइगौ जितौ। जांकौ सेवा करिहौं तितौ ॥११५॥

बात सुनत सुष ताकौं भयौ। हूवै सोक माता कौ गयौ ॥
करै राज श्रीपाल प्रचंड। लीयौ सब राइनि पैदंड ॥११६॥

ताकी सेन सातसै वीर । ते बहु सहैं भूख की पीर ॥
ताकी कीरति भई असेष । कीर्ति अति औरि सब देस ॥११७॥

धर्मरूप राजा व्यौहरै । परधन परत्रीय लोभ न करै ॥
दुर्जन सकल जीति वसि कीए । महा कंठ तिन पै है लिए ॥११८॥

श्रीपाल के कुष्ट रोग होना

कोउ अमरै न सो संचवै । एक छन प्रगट्यौ पचमाँ ॥
ऐसी भांति काल कछु जाइ । पूरब पाप उदै भयौ आइ ॥११९॥

कुष्ट व्याधि राजा कौं भई, हरैं हरैं सो बरधत गई ॥
भग सातसै हैं अति नेह तिनहूं कोढ वियापी देह ॥१२०॥

बहु रसि पीडियो सरीर । होइ दुगंधा बहुत समीर ॥
कोढ उभारै वेढयो राइ । नासि पंगुरी गरि गए पाइ ॥१२१॥

रक्त पीत जाकै सब सीस । झरैं नीर राइ के सीस ॥
झरै प्रसेदु खन सो गहै । देह दाघ संकारी रहै ॥१२२॥

स्यांम दाघ जाकै असमांन । सो राखै हि कमावै मान ॥

मरदन करै जासिहू नही कांन । पजुवा करवावै असनांन ॥१२३॥

वरएा फवार्ने बरै संजोग । नृपति की सु विजावै सेज ॥
कंठ गूंम सोहै कुतवार । सूरज वर्ण सूर असवार ॥१२४॥

जाको कहुं कछु गल्यौ सरीर । सो नर वैठो जाहि उनीर ॥
मीर दुरगंधि मुष भावै जान । सो निरंद को है परवांन ॥१२५॥

काहू पाप जाको तन जाहि सोदक तै सब देखे काहिं ॥
बहै नाक पकसनी मनि करै । ते राजा की पानी भरै ॥१२६॥

जिनके हात भए बसि भार । ते पायक देखिए अपार ॥
ते सिरतेच पाइते करै । ते निसान बजावैं अगै ॥१२७॥

जाके उगल भेद तिन साज । सो नर बैठे जाहि बजाज ॥
जाकै हृदय सिरह बहु झरै । बहुतक जन ते गुरहि करै ॥१२८॥

महा पंगु सारथ कुलवार । सरदीनिका बजावै हार ॥
जाके सांसी लावै सीरि । बीन बजावै तार सरोरि ॥१२९॥

घरे पांचरे गावै गीत । पातरि नाचै पुर विपरीति ॥
ग्रैसौ तिहां भयानौ कोढ । सवनि कोढ जानै सब कोइ ॥१३०॥

जो सब कोढ वरनि कैं कहौं । कहत कहत कछु अंत न लहौं ॥
इह सामिग्री राज कराइ । सगरी सभा जुहारै आय ॥१३१॥

कबहूँ न निकरै सैल बजार । रहैं महल कैं सभा मझार ॥
सेवग साहु जुहारै जिते । राजै देषि बिसूरै तितै ॥१३२॥

जनमन कहै सबै सति भाउ । एहु श्रीपाल महाबल राव ॥
अरु यह दया धर्म परवान । राजनीति पालै गुन जान ॥१३३॥

ताकौ कहा कर्म यह भयौ । कुष्ट रोग जाकै तन तयौ ॥
कछू कर्म गति कहियेन जाइ, महानींच नीचनि की राह ॥१३४॥

उत्तिम कौ मध्यम गति करै । मध्यम कौं उत्तिम पद धरै ॥
नृपस्यौं ते नहि कछू कहाइ । घर घर आपस मैं पिछताइ ॥१३५॥

महा कोढ राजा कै अग । कोढी अंग सात सै संग ॥
बहु दुर्गंधता बढी अपार । फैलिगई सब नगर मझार ॥१३६॥

जबै बयारि बढै नहि घटै । तबै नाक सबही की फटै ॥
बहुत बात को कहै बढाइ । कोऊ नगर न भोजन खाइ ॥१३७॥

कोऊ बिनती सकै न मांडि, बहुत लोग गए घर छांडि ॥
घर घर एक बुलावो फिरयौ । रयति लोग नगर कौ भिरयौ ॥१३८॥

जो आवै सो कहौ विचारि । महा दुष क्यौं सकै सहारि ॥
कोऊ कहै भजो हरिद्वार । जैसैं राजा लहै न सार ॥१३९॥

कोऊ कहै ग्रैसी न करेहु । ग्राइस मांगि राह पै लेहु ॥
बनिये भाजै छांडि धनधाम । मरिहैं दुष देषि बेकाम ॥१४०॥

ग्रापस मैं सब मतौ कराहि आवो वीरदमन पै जांहि ॥
जौं ग्राइस देहैं हम जोग । सोई मानि लेहु सब लोग ॥१४१॥

मोती रतन थार भरि लए । सब मिलि वीरदमन पै गए ॥
जाइ भेट ता आगैं धरी । नाइ सीस सब बिनती करी ॥१४२॥

महादुष सबको संदेह । स्वामी हमकौं ग्राइस देहु ॥
तेरैं देश अंत कहूं रहैं । राजा सौं क्यौं भिक्सव कहैं ॥१४३॥

जाकै राज सुख हम लयो । दुख दारिद्र सब ही को गयो ॥
जाकै राज धर्म को वास । जाकै वस्तु है मोक्ष निवास ॥१४५॥

जाकै राज पाप की हानि । जाकै हिरदै दया की वानि ॥
जाकै राज सुख सब भये । दुख सब परियन घरे गये ॥१४६॥

जाकै राज सुबस ह्व बसे । कबहूं दुर्जन दुखन डसे ॥
जाकै राज सबै जन सुखी । जीव जन्त कोऊ नहि दुखी ॥१४७॥

कुष्ट रोग अब ताको भयो । नासा पाइ अंगु गरि गयो ॥
अरु जे अंग सातसै बीर । तिनकु को गरि गयो सरीर ॥१४८॥

तिनकी महा दुर्गंधा होइ । सब ही पुर मैं फैली सोइ ॥
दिन द्वै च्यारि जन बिनि भए । कछूक मूए कछु भजि गए ॥१४९॥

जो जैसी कहूं सुनिए कांन । तो भोजन नहि जाई खांन ॥
फैली वास नांक रुधि रही । अब ज्यौं हम तुमस्यौं नहि कही ॥१५०॥

महा कष्ट भूले सब चाउ । सब ही नगर भयो कह राउ ॥
क्यो हूं कोऊ धीर न धरै । स्वामी हम पै रह्यौ नहि परै ॥१५१॥

प्रजा का महत्व

सुनि मनमांहि चितवै राउ । अब यहु कीजै कहा उपाउ ॥
जो घर में श्रीपाल रहाइ । तो खोते सब रइयति जाइ ॥१५२॥

रय्यति बिनि सोभा नहि रहै । रइयति बिनि को राजा कहै ॥
बिन पंखनि है पंषी जिसौ । हूं रइयति बिनि दीसै तिसौ ॥१५३॥

बिन पांननि तरवर जो आहि । रइयति बिन जो राजा आहि ॥
बिन पानी है जिसो तलाव । रइयति बिन है तैसो राव ॥१५४॥

जैसो है उडगन बिनु चंद । रइयति बिन है तिसो नरिंदु ।
बिन रुखनि जैसो वनु जानि । बिन रइयति भूपति त्यों मांनि ॥१५५॥

जैसौं सघन घटा बिनु मेह । रइयति बिनि त्यों राजा एहु ॥
बिन हथ्यार ज्यौं सुभट अनूप । तैसो रइयति बिनि है भूप ॥१५६॥

बार बार बिचारै राउ । अब तैसो कीजियै उपाउ ॥
जैसै सब रइयति जो रहै । श्रीपाल अब भागयु गहै ॥१५७॥

रइयति की हम उपरि छांह । रइयति असी हमारी बांह ॥
जैसैं कहै सयाने लोइ । राजा प्रजा बराबरि होइ ॥१५८॥

वीरदमन यह चितै बनी राखै रहपति राज उतारै ॥
वीरदमन मंत्री मनि आइ । मंत्री लीने पासि बुलाइ ॥१५७॥

तुम कहौ श्रीपाल सौं जाइ । जैसी वाके हिए समाइ ॥
रहपति के मनकी तुम चितौ । कहियौ भांति भांति करि तितौ ॥१५८॥

तब मंत्री नृपकौं सिर नाइ । विनयो श्रीपाल सौं जाइ ।
कछू बात जो मनमें रही । मंत्री जाइ राइसौं कही ॥१५९॥

सुनत बात जानवी राइ । मनमैं कछू न कियौ कुभाइ ॥
समो देषि मंत्री उठि गयौ । देस घटी को कारण भयो ॥१६०॥
तीज पांन कौं बीरा लयौ । आपुन श्रीपाल कौ दयौ ।

वन उद्यानिनि साहस धीर । जाइ असुभ भुंजो बरवीर ॥१६१॥
जौलौं कुष्ट व्याधि तुम अंग । जौलौं भंग सातसै संग ॥
इह असुभ भुंजो वर वीर बनमैं जाइ मठ देवल तीर ॥१६२॥
जौलौं उदै कुवर तो पाप । तौलौं नहि कीजिए संताप ॥

जौलौं शुभ न प्रसिद्ध आइ । तौलौं घर मति आवै राइ ॥१६३॥
होइ पुंन्य प्रगटै तुम तनौं । आइ राज कीज्यो आपनौ ॥
जाकौ राज भार तुम देहु । सोई करै धरै जिय नेहु ॥१६४॥

यह सुनि श्रीपाल उचरयौ । कछु कुभावन जिय मैं धर्यो ॥
कर्म तनौं जान्यौं शुभ भाव । मनमैं बिचार कियौ सब राइ ॥
सुनहु तात भाष्यौ व्यौहार । मेरो ऊहो इहै विचार ॥१६५॥

मेरी बढी दुर्गंधा घनी । होत दुषी नगरी मो तनी ॥
बिनती करि न सकै को आइ । मेरै चित बीती इह आइ ॥१६६॥

मेरो दु:ष वियाप्यौ हियौ । मैं हूं बन ही को मनु कीयौ ॥
भली भई तुम निकसन कह्यौ । या कौ सुष बहुत मैं लह्यौ ॥१६७॥

तुम सब लेहु राज कौ भार । परजा कीज्यो सकल प्रतिपार ॥
न्याव नीति करि कीज्यौं सुषी । सुपिनै कोई होइ न दुषी ॥१६८॥

सोरठा

जो उबरैंवे प्रांन, कुष्ट रोग जौ नाशि है ।
तौहूं इंद्र समान, राज करौंगो आइकैं ॥१६९॥

दोहा जौं लग पूरब पाप कौ, उदै फिरैंगो साथ ॥
तौं लग अपनौं भुंजि हौ, राज तुम्हारे हाथ ॥१७०॥

चौपई

सबै राज मैं दीनौ तोहि । मन मैं ताते राखियौ मोहि ।।
कुंदप्रभा कौं देकर भार । निकस्यौ तब श्रीपाल कुंवार ।।१७१।।

ताकै बली सात सै संग । कोढी सबै लागियै अंग ।।
बुरे भेस दीसै सब जना । पीछै कंवर कौ पीछना ।।१७२।।

श्रीपाल का नगर त्याग

राज विभूति जिसी बरनई । सामग्री सब मोहन भई ।।
जब वे गांव बाहिरे भए । लोचन वीरदमन भरि लए ।।१७३।।

रोवै सब नग्री को लोग । विधनां तैं कित कियौ वियोग ।।
घर घर सोग सबै जन धरैं । अति बिलखाइर करुना करैं ।।

घर घर करैं अमंगलचार । भूल्यौ संबनि सुख अधिकार ।।
घर घर सूंनसान होइ गई । पुर मैं राति द्यौस तैं भई ।।१७४।।

वे चलि दूरि पहुंते जबै । कुंदप्रभा सुधि पाई तबै ।।
तिन मनमैं दुख कर्‌यौ असेस । आजि मूयौ अरिदमन नरेस ।।१७५।।

गेह भरि नैननि मूंकी धाह । अब हूं निश्चै भई अनाह ।।
विधनां इह बूझिए न तोहि । पूत बिछोह दियौ कत मोहि ।।१७६।।

वीरदमन राषि समझाइ । कछू कर्मगति कही न जाइ ।।
सुभ अरु असुभ जु लिख्यौ लिलार । को है ताहि मिटावन हार ।।१७७।।

अब यह होनहार सो भई । सब सामग्री देषत गई ।।
कर्मयोग क्यो मेट्यौ जाइ । तासौं कहै बात समझाइ ।।१७८।।

जौ लौ असुभ जोग तनु वहै । तौ लौ श्रीपाल बन रहै ।।
बहुर्‌यौ सुष देखैंगी घनौ । आइ राज करि है आपनौ ।।१७९।।

मातर भूलि करौ जनि सोग । नाना देषहि पर्‌यौ वियोग ।।
मानस कौन बानमैं बानि । सुपिनौ सो हू मनमैं आनि ।।१८०।।

कुंद प्रभावन गाढौ कियौ । परम ध्यान परिचित राखियौ ।।
लेइ आय जिनवर संभर्‌यौ । मुनिवर दान मान आदर्‌यौ ।।१८१।।

श्रीपाल पहुतौ उद्यान । रहै सबै मठ देवल थान ।।
राज विभूति सबै का संग । कोलाहल सबनि कौ संग ।।१८१।।

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंग मंगलकरणं ॥
बुधजन मन रंजन पातिग गंजन सिघचक विध दुषहरणं ॥१८३॥

त्रिभुवन सुषकारण, भवजल वारण, चौपई बंध परिमल्लकृतं ॥
सातसैं थंग ताकै संग, श्रीपाल उद्यान भ्रमै ॥१८४॥

द्वितीय सर्ग

चौपई

श्रीपाल उद्यान मैं रहै। कुष्ट व्याधि व्यापैं दुख सहै ॥
इतनी कथा रही इह ठौर। अतरकथा सुनौ अब और ॥१८५॥

नीकै करि हौ करौ बषांन। पंडित भव्य सुनौ दै कान ॥
देस मालवो मो सुषधांम। मध्य लोक मै प्रगट्यौ नाम ॥१८६॥

उज्जयिनी वर्णन

दु षनि जिह ठां बासुर रैनि। सुबस बसै तहा नगर उजैनि ॥
नौ कोसकी बसै चकराइ। बारह कोसो बसै लम्बाई ॥१८७॥

श्रीनिवास महाजन जहा। चौथो काल प्रवर्त्तै तहा ॥
कनय रयण मणि मंडप जरी। अतिरवनीक मनोहर खरी ॥१८८॥

पुहपाल राजा

राजकरै पुहपाल नरेस। ताकै परिगह बहुत असेस ॥
जोधा बहुत सेवता रहै। रण संग्राम जुवै निरवहै ॥१८९॥
एक छत्र सो राज कराइ। ताकी कीरति कहीय न जाइ ॥
ज्यौ माता सुत उपरि भाउ। त्यौ परिजा प्रतिपालै राउ ॥१९०॥
ताकै कामिनि बहुतक गेह। अति गुनवंत रूपकी रेह ॥
जौ सब नांम वरनि कैं कहौ। कहत कथा कछु अंत न लहौ ॥१९१॥

पट्टरानी सुन्दरी

पाट परधांन नांम सुन्दरी। मनौ आइ रम्भा औतरी ॥
अति सरूप देवंगनां कही। कांमदेव ज्यौ रतिपति अही ॥१९२॥

संकर के ज्यों पारवती रती । अति स्वरूप सीता सम सती ॥
ताके परम सुता द्वै रही । रूपवंत द्वै पंडित सही ॥१९३॥

दो कन्याओं का जन्म —

दोऊ अति सुलच्छ औसरी । अति लावनि विराजै भरी ॥
प्रथम कुंवरि सुरसुन्दरि ताहि । बहुत रूप सोभित है वाहि ॥१९४॥

परि सिवधर्म बसै ता चित्त । कुगुर कुदेव सुध्यावै नित्त ॥
कछु विवेक ताहि नहीं होइ । इहै संसारह सुख सोइ ॥१९५॥

मैनासुन्दरी

लघु कन्या मैना सुन्दरी । रूपवंत अरु सब गुन भरी ॥
अंग अंग की सोभा जिसी । कहै कथा जो बरनी तिसी ॥१९६॥

अरु अति जैनधर्म परवीन । सीलवंत रत्नत्रय लीन ॥
निर्मल जाको हिरदो जोइ । कपट वचन बोलै नहि सोइ ॥१९७॥

बहुत विवेक चित्त ता रहै । मिथ्या वचन भूलि नहीं कहै ॥
सब सखियन मैं सोभै खरी । ज्यौं सरिता मांहै सुरसरी ॥१९८॥

मधुर वचन बोलै विहसाइ । सब कुटंब रावै सुखपाइ ॥
आए धाए जिय अंकौ भरै । रहसि खिलाइ लगावै गरै ॥१९९॥

और बहुत को कहै बखांन । तिहकौं उपज्यौ बहुत सयानु ॥
आपन मंत्री विचारै राइ । अरु तिन लीनी प्रिया बुलाय ॥२००॥

जुगल रवानी जोवैं एहु । देषत नैननि उपजै नेहु ॥
मेरे चित यह कही विचारि । इनै पढावैं मुनि परनारि ॥२०१॥

सुनी राइ इन भावतो जहां । दोऊ कुंवरि पढावौ तहां ॥
तिमैं विहसि करि पूछै राउ । तुमी कहौ मनभावौ भाउ ॥२०२॥

जो गुर भावहि तुमहि सुजांन । तापै सिक्षा पढौ सुजांन ॥
सुरसुन्दरी कहै सुनि तात । सांची कहौं आपनी बात ॥२०३॥

सुरसुन्दरी का विद्याध्ययन

दिन दिन वृधि होइ गुन बढो । अब हूं सिव सिवगुर पैं पढौ ॥
राजा जानी भली परनाई । कुंवरि उछाह उच्च पढ़ भई ॥२०४॥

सिवगुर तब धा लियौ बुलाय । नाउ कएं सु कने कहै सवाय ॥
बोल्यौ निकट कहै तब राउ । विद्या सुरसुन्दरी पठाउ ॥२०५॥

जितनी होइ कला अरु ग्यान । सब सिखाइ ज्यौं अरथे पुरान ॥
भली भली पाडे उच्चरी । मौ परि कृपा गुसाई करी ॥२०६॥

जो मोपे सुख हो है राइ । याहि पढाउ सबनिकु ताइ ॥
सुनी बात तब तुस्यो राइ । कछुक ताको कियो पसाय ॥२०७॥

तब तिहू नृपहि दइ असीस । जुग जुग जीवो कोटि बरीस ॥
महिमंडल मैं प्रगटौ आन । राज तेज बढौ दिनमान ॥२०८॥

सोरठा

जो लौं ससि अरु भान, जल थिर मेरु महि उपरं ॥
तौ लगु इन्द्र समान, मगल होहि नरेस घर ॥२०९॥

चौपई

विप्र गयौ घरि कुंवरि लिवाई । लाग्यौ ताहि पढावने जाइ ॥
मैनासुन्दरि स्यो नृप कहै । पुत्री कहा तोहि मनु रहै ॥२१०॥

मैनासुन्दरी की शिक्षा

सुनो तात हो कहौं सुभाइ । पढिहौं जिन चैत्यालय जाइ ॥
दंपति सुख तब भयौ अभंग । पुत्री लई उठाइ उछंग ॥२११॥

रानी राउ और जनभए । पुत्री लै देवालै गए ॥
पूजा अष्ट प्रकारी ठई । जैसी परम मूरति बरनई ॥२१२॥

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु । नैवेद्य दीपक अरु धूप ॥
नाना विध फल करे कलास । कियौ अरचन मन वच अरु काय ॥२१३॥

पुनि तिह लौ सौंप्यौ मुनिंद । जय जय तब उचरै नरिंद ॥
बैस्यौ मुनि अणगाराज । भवसमुद्र तिरन जहाज ॥२१४॥

ध्यावैं चैयत्य गुण जु अखंड । तीन गुपति पालन गुनमंड ॥
भव्य कुमुद परफूलण चंद । दरसत ताहि बढ आनन्द ॥२१५॥

मिथ्या तिमर विनासन भान । जिन निजुकै छांड्यो भव थान ॥
सत्रु मित्र जाकै इकसारं । मंने के जिह सब तजे विकारं ॥२१६॥

बाईस परीसा सहत समत्थ । केहरि बसन पंच मुन मथ ।।
तीन प्रदच्छिना दई समीप । नमसकार तब कियौ महीप ।।२१७।।

हरखवंत मनमांहि अपार । वंदे चरन कमल नरपार ।।
दंपति पुत्री मैनासुन्दरी । बैठी जहां गुरु तप करी ।।२१८।।

जंपै राउ हरख अति गात । स्वामी सुनौं कहौ इक बात ।।
लहु पुत्री मैनासुन्दरी । अपनै चित एह इच्छा करी ।।२१९।।

पुत्री कहै जोरि दुइ हाथ । सिक्षादान देहु जगनाथ ।।
नरपति कह्यौ सुनौ मुनि नाथ । कृपा करौ वा ऊपरि नाथ ।।२२०।।

अजिया एक सील की खांनि । दया धर्म जिहु लीयौ जांनि ।।
मन वच काय सुव्रता चित्त । जानैं एक धर्म ध्रुव मित्त ।।२२१।।

रतनत्रय व्रत पालन आहि । मुनिवर पुत्रि समर्पी ताहि ।।
रानी राव हरख अति भए । नमस्कार करि घर तब गए ।।२२२।।

मैनासुन्दरि के मन चाउ । अजिया को ता ऊपरि भाउ ।।
प्रथम पढायौ ओंकार । दुःख हरन त्रिभुवन मैं सार ।।२२३।।

पढिया बारह मत्त विसेस । जातैं उपजै बुधि असेस ।।
पढि लीनौं नीकै करि ताहि । लघु दीरघजे अक्षर आहि।।२२४।।

जांनी लोयह थिति विचित्त । पढिया चरित्त पुरान पवित्त ।।
गन अरु अगन मिलेई जांनि । काव्य अनेक सुकहै बखांनि ।।२२५।।

जोतिष पढ्यौ इसौ परवांनि । आगम अरु अध्यातम जानि ।।
सीख्यौ तिन संगीत पुरान । नाटिक साटिक करै बखानि ।।२२६।।

तर्क छंद पुत्री पढि लियो । बहु हरखत तिन उत्तर दियो ।।
भाषा सोखु अठारह पढी । विद्या करि दिन ही दिन बढी ।।२२७।।

कला विनान विचक्षन भई । पुनि मुनिवरह पढावन लई ।।
धारि ध्यान अनुव्रत जु पंच । सोलह कारन भावना संच ।।२२८।।

रत्नत्रय विधि सुनह सिधांत । सब श्रावक को सकल सघांत ।।
जो कछु श्रावकाचार मैं कही । सो विद्या सब सुन्दरि लही ।।२२९।।

दोहा

मुनिवर पै सब गुरु पढ़ी, कियौ कुंवरि [illegible] ।।
मन वच काय विशुद्ध हूँ, धान्यौ पाप निकन्द ।।२३०।।

मन में पुत्री कियौ आनन्द । जान्यौ निहचै पाप निकन्द ।।
श्रीजिन पूजा करि मनु लाइ । मुनिवर के बंदे तिन पाइ ।।२३१।।

दोनों का अध्ययन समाप्त कर आना

निज जननी हू बैठी जहां । सुरसुन्दरि पहुंती तहां ।।
प्रथम पुत्री वह पढ़ै पुरान । सामुद्रिक व्याकरण सुजान २३२।।

कोक कला नाटक गुन जिते । पढ़ै कुंवरि सुरसुन्दरि तिते ।।
पढ़ि गुनि, महा विचछन भई । तब पांडेस्यौं गोहनि लई ।।२३३।।

राजा पासि पहुंतो जाइ । पुत्री देषि राउ बिहसाइ ।।
तबहि विप्र बोल्यौ करि सेव । मेरी बात सुनो हौ देव ।।२३४।।

पुत्री के मन को तम गयो । विद्या दान याहि मैं दयो ।।
और कहा हूं कहूं बषानि । करौ परीक्षा आपुन जांनि ।।२३५।।

तबै राउ अति हर्षित भयो । बहुत दान पांडे कौं दयो ।।
दै असीस सिवगुरु घरि गयो । पुत्री सभा देषि सुखभयो ।।२३६।।

जो जो बात पयासै कोइ । सो सो निरभासै कहि सोइ ।।
चपल चित्त जोवन भीलही । राजा पासि बात तिन कही ।।२३७।।

अरध सिंघासन जाइ बईठ्ठ । दह दिशि जोवै चंचल दीठ्ठ ।।
राजा कही समस्या तेन । लहियै कहा कुंवरि पुन एन ।।२३८।।

दोहा

पुन्यह लहिए एउ, विद्या जोवन रूप धन ।।
घरि परियन कैं नेह, मनवंछित सुष पाइये ।।२३९।।

चौपई

तब नृप रह्यो मुहां मुंह चाहि । नीके करि मन परख्यौ ताहि ।।
मांगि पुत्री वर जो मन बसै । देषत ताहि चित्त उल्लसै ।।२४०।।

सुरसुन्दरी का विवाह

सुंनौ तात हौं भाषौ तिसी । मेरे मन मैं बसंत जिसी ।
कौसम्बीपुर को नृप जान । बहुत सैन है तुमै समांन ।।२४१।।

ता नन्दन हरिवाहन वरी । जाकौ रूप मोही सुन्दरी ।।
नीकौ वच मो भायौ तात । सांची कही आपनी बात ।।२४२।।

सुनि करि राव विचारै हियै । याही जोग बनैं या कियै ।।
बोल्यौ विप्र राइ सौं भलौं । सुभ दिन जोग महूरत बनौं ।।२४३।।

ताको विधि सौं कियौ विवाह । सबही जन मन भयौ उछाह ।।
उनहू सुष मन भयो अनन्त । कौसम्बीपुर गए तुरन्त ।।२४४।।

मैनासुन्दरी का वापिस आना

मैना सुंदरि पहुंती तहां । नंदीसुर की प्रतिमा जहां ।।
पूजा करी सुष मनु कियौ । भरि बेला गंधोदिक लियौ ।।२४५।।
कछु न चित्त विचारी और । गई तहा राजा जिह ठौर ।।
भाव भाव राजा उच्चरयौ । गंधोदिक लै आगैं धरयौ ।।२४६।।
हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । आइ जिनेसुर कैं सिर ढरैं ।।
इसौ गंधोदिक है अनूप । सुर नर नाग लियौ करि चूप ।।२४७।।
कहै राउ कहि पुनि विचारि । यह कहि आहिसु कहहि कुवारि ।।
मैना सुंदरि उचरैं बात । गंधोदिक जिनवर कौ तात ।।२४८।।
होइ दुर्गंध देह आदमैं । सुंदर दिव्य होइ जा लगैं ।।
नैन निरंधह नर औतार । नैक लगैं देखै संसार ।।२४९।।
नैक लगैं अरि कर्म निकंद । जाकी इच्छा करत हैं इंद ।।
जनम भयौ तीरथंकर जबै । साइर तैं सुर लाए तबै ।।२५०।।
हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । आइ जिनेसुर कैं सिर ढरैं ।।
सुर नर असुर ईंदु हरसियौ । बारंबार अंग परसियौ ।।२५१।।
तात सुनहि गंधोदिक सोइ । करै बंदना परमगति होइ ।।
तब भूपति लै बंदना करी । परमलीन पुत्री है खरी ।।२५२।।
राजा हर्षित हूवो जाम । अर्ध सिंघासन बैठि ताम ।।
मां सिर चूंबि पूछि करि नेह । पुत्री कहो परीक्षा एह ।।२५३।।
कीजै पुंन्य जिसो पाइयै । तातैं कहा अचंभि पाइयै ।।
सुनि सुनि तात पयासौं तोहि । जो नीकैं करि पूछौ मोहि ।।२५४।।

दोहा

जिन सासन निरगंध गुरु, चलहु निष्पोल येहु ।।
मुक्ति बाज सब सुख करन, सुमहु हमें एहु ।।२५५।।

चौपई

सुंनि निरंद भए लोचन भीन। कही साधु पुत्री परवीन ॥
फुंनि तिन भाष्यो मन अविवेक। मलिन बचन तिन बोल्यो एक ॥२५५॥

दोहा

अति सुन्दर गुनवंत अरु, जो को भावैं तोहि।
आज सु उत्तर समझिकै दीजे पुत्री मोहि ॥२५६॥

चौपई

इन नरनाह मांहि जो कोइ। मन भायौ वरु मागहि सोइ ॥
ताहि समप्पों जोसु ज आहि। सूबौ सैन देऊ बहु ताहि ॥२५७॥
तात बचन जब सुंनियौ कान। तब चित मांहि गए औसांन।
मनमैं भयौ बहुत अनुराउ। मानों भयौ बज्र को घाउ ॥२५८॥
ऐसौ बोल सत्रु नही कहै। चहुं दिसी जोवैं चुप करि रहै।
बार बार सो लेइ उसास। बोलि न सकै राइ कै त्रास ॥२५९॥
राइ बचन मन धर्यो दिठाइ। तापैं कछु कह्यो नहीं आइ ॥
मनमैं दुष्ट दुष्ट उच्चरयौ। कहा पाप इन जिय मैं धरयौ ॥२६०॥
अति अविवेक लीन सो जांनि। कुल मारग तिह तज्यौ प्रवानि ॥
अलिषो बोल कयौ मतिहीन। मूरिख कछू लाज नहिं कीन ॥२६१॥
बहुत बाल को करैं बढाइ। याको है सब नींच सुभाउ ॥
जाकैं नही कुल मारग देव। जांनै नही दइ लक्षिन भेव ॥२६२॥

मैंना सुन्दरी की दशा

जाकै गुर निरगंथ न कोइ। ताहि विवेक कहां ते होइ ॥
यह पुत्री मन में चिंतई। नीची दिष्टी न ऊंची भई ॥२६३॥
रही मुरझि मैनासुंदरी। अति विचित्र सबही गुन भरी ॥
तातहि उत्तर कछू नहीं दियौ। पिशुन बात तै कांपौ हियो ॥२६४॥
भावै नैंक न बात विचारि। संसै दह मैं अरि कुवांरि ॥
धरती चौदै दुखिती भई। फुंनि नर ढंको पूछन लई ॥२६५॥

सुनि पुनि पर उत्तर भाखि । कहां मिश चितई अकारि ॥
जैसैं सुरसुंदरि वं छियो । मांग्यो नाह ब्याह करि लियो ॥२६६॥

त्यौं तु काहु राजहि आंनि । परनि कुंवरि अनके सुखमांनि ॥
बार बार तात यौं भनैं । पुत्री धिरकारें अवधनैं ॥२६७॥

चिंतैं सुख अज्ञानी राउ । अति निष्टत्तु सुनिए अनिकाउ ॥
जिसौ निरांकुस मत्त गयंदु । करैं पाप पापी मतिमंदु ॥२६८॥

जैसैं बालक होय अयांन । जो सो बोलैं कछु न जांन ॥
जैसैं अंधु बहुत दुख दहै । बहुं दिसि जोवै पंथ न लहै ॥२६९॥

त्यौं नृप लाज दई छिटकाइ । जोग्य रचना सी कहत बनाइ ॥
निज गुर बचन निपोर्यौं अबै । संतोषी परिजन सब तबै ॥२७०॥

इह सुंदरि चितई सुजांन । सील धुरंधर गुनह निधांन ॥
जपै तात सुनौ करि नेहु । अनुगत बात कहौ तुम एहु ॥२७१॥

जिनसूत्रनि मुनिवर नहि भणी सुनहु तात सबही अवगणी ॥
वर सुंदरि जो होइ कुलीन । लोक लाज नहि तजै प्रबीन ॥२७२॥

अपजस बाय बाहि जो बात । सोई तुम भाषत ही तात ॥
लोक विरुद्ध बाहि यह कम्मु । मन वांछित बर रहै न धम्मु ॥२७३॥

मन मान्यो जो करैं विवाहु । लोक सुहासी हास्य उछाहु ॥
कछु रहै नहि कुल की रीति । सब को भावै महा अनीति ॥२७४॥

अरु जितही तित होइ विचार कोउ न धरै सील की भार ॥
यहै फेर सब कोऊ न करै । मातु न बंछि बरहि जो मरै ॥२७५॥

और कहां लौ सुनि हो राइ । तो सौं कही कथा समकाइ ॥
श्री आदीश्वर प्रथम जिनंदु । ताकैं भारे बाप निकंदु ॥२७६॥

प्रगट पुराननि मैं बरनए । कछु सुकच्छ ह्वै राजा भए ॥
तिनकैं भई सुभद्रा दोइ । चंद सुनयन जानौं सोइ ॥२७७॥

जोबनवंत भई ते जबल । रूपवंत अरु गुनहु बिसाल ॥
तिनहु पै न बंछि बरकिएँ । रही सदा कुल रीति धु लिये ॥२७८॥

तात कुपि उनकौं जो भई । ताइ सुगन तनकौ परनई ॥
ते भई लीन जिनेस्वर पाइ । बहुत काल कौ कहौ बढाइ ॥२७९॥

सो मारग प्रगट्यौ सुनि तात । मोपै आंड्यौ जात न जात ॥
पुंनि ब्रह्मी सुंदरि द्वै पुत्रि । दीक्षिहि भई तजै सुन कुत्रि ॥२८०॥

माता पिता नहि दीनी कासु । तिन सब छांड्यौ भोग बिलासु ॥
मन मैं लाज भई अतिगाह । दुहूंनि छांड्यौ छिन मैं ब्याह ॥२८१॥
भई अजिका ले सुभ चित्त । जानैं एक सत्रु अरु मित्र ॥
भेदाभेद कछू नहि जानि । जानैं सब जिन धर्म बखानि ॥२८२॥
लोक विरुद्ध ब्याह की लाज । अब सुष छांडि दियो सुभ काज ॥
अरु सुनि उत्तर कह्यौ बिचारि । जौ बंछौ निज नैन निहारि ॥२८३॥
तुमही देषी सुरसुंदरी । हीन बुधि तिन मनमैं धरी ॥
ताहि दोष नहि दीजै राइ । यह कारन सब गुरु पसाइ ॥२८४॥
जैसे जीव बिचछन जांनि । है त्रैलोक माँहि परवान ॥
षोटैं संग करमकै रहै । निस बासुर महादुष सहै ॥२८५॥

कर्मों की विचित्रता

छिन मैं नीच कहावै सोइ । छिन ही मैं उत्तिम पद होइ ॥
छिन ही मैं दुष पावै घनो । छिन ही मैं सुष ह्वै तुम सुनौं ॥२८६॥
छिन ही मैं सु कहावै राइ । छिन ही मैं महारंक ह्वै जाइ ॥
छिन ही मूढ महा भय भरै । छिन ही मैं संका परहरै ॥२८७॥
छिन ही मैं सो दुर्गति जाइ । छिन मैं स्वर्ग पहुंचै धाइ ॥
जितनै दुष पावै जड एहु । तितनो कहा कहौं धरि नेहु ॥२८८॥
पै कछु जीवै औरिन जांनि । कर्म कुसंगति कौ फलु मांनि ॥
सुरसुंदरी कुमति त्यौं लही । कुगुरू पढाई तैसी कही ॥२८९॥
अरु सुनि राइ बचन इै कांन । जातैं सुजस होइ परवांन ॥
माइ बाप जाइ गुन सार । कुल उत्तिम जाको औतार ॥२९०॥
जोवनवंति देखैं राउ । छिन छिन मन चितवै सुभाउ ॥
मन बंछ्यो बर मांगै सोइ । सीलवत नहि गनिका होइ ॥२९१॥
बाप बिचारैं जाकी चित्त । पुत्री कौं अब देवैं मित्त ॥
निर्मै होउ यह दीजै कास । कोबर जोग सुकलह पयास ॥२९२॥
यह चिंतै परिजन जु महंत । सकल बोल कीजै सुभवंत ॥
उत्तिम कुल सोधिजै प्रवानु । विद्यावंतरु आपु समान ॥२९३॥
सुजन जन सब मंगल करैं । होइ ब्याह दो कुल उधरैं ॥
कन्या दान आरु तब लेइ । सौंवी तुठि बहुत करि देइ ॥२९४॥

लिखतो करै कोटि हो हाथ । [illegible] पुरुष कीये को साथ ॥
जाके [illegible] होत मतिहीन । जाके होइ कला प्रवीन ॥२९५॥

जाके कुबजे होइ नपु कुटे । जाके मूढ़ होइ चातुरी ॥
जाकै रोगी व्यापत पीर । जाके कुष्टी होइ शरीर ॥२९६॥

जाकै बालक होइ सयान । जाकै होइ सबै गुन ज्ञान ॥
जाके वृद्ध होइ विकराल । जाकै जोगी होइ नवाब ॥२९७॥

सब परियन बीचै या बाहु । [illegible] तास की बाहु ॥
यह कुल कर्म सुनी चित लाइ । अब विभ्रम ते सब खिटकाइ ॥२९८॥

कर्म की महिमा

चलि हौं कुल मारग सुनि तात । तूं है कर्म लिखी जो बात ॥
कर्म ही तैं होइ है राइ । कर्महि तैं सु रंक होइ जाइ ॥२९९॥

कर्महि तैं नत होइ कलंक । कर्महि तैं नर चढ़ै कलंक ॥
होइ कर्म तैं माछी भाग । कर्म हि तैं पावै सुख भाग ॥३००॥

कर्महि तैं त्रिय होइ सुहाय । कर्म रूप होइ प्रगटै आय ॥
अब प्रति सुख कर्म तैं सोइ । दुखी सुहागनि करम ते होइ ॥३०१॥

कर्म हि तैं सु होइ तन भंग । कर्मतै होइ सोभित अंग ॥
यह परपंच कर्म को सर्व । कोऊ और करी नहि गर्व ॥३०२॥

विधना जौं कछु लिख्यौ लिलार । शुभ अरु अशुभ अंक सुन सार ॥
जैसो निमित्त जासको होइ । ताहि मिटाइ सकै नहि कोइ ॥३०३॥

अमर अपर अरु नर गंधर्व । मानुर सुर पुर रवि ससि सर्व ॥
जो ए सब मिली करै सहाय । कर्मरेष नहि मिटि है काय ॥३०४॥

पूरब तें पश्चिम रवि उवै । नर फुनि मेरु सुमिका छुवै ॥
सायर हू पै सूरि [illegible] । जाकी तऊ न मेटी जाइ ॥३०५॥

पवनी हु नहि बंदन परिहरै । प्राली काल हू पै उमरै ॥
वासुर तैं सु निसा हूं पि होइ । जाकी लिखी न मिटै कोइ ॥३०६॥

[illegible]

[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥३०७॥

पंचामृत साल्यो दिन होई। छहरस भोजन तुम वै सोई ॥
ते सुष पुत्री भुगतन लेई। तू तौ कहै कर्म मो देई ॥३०८॥
मो कौं आदि बहुत संदेह। तेरै गुरनि पढायौ येह ॥

मैना का प्रत्युत्तर

जब नृप निन्दा गुरु की करी। तब बोली मैनासुंदरी ॥३०९॥
सुनि अविवेकी तात विचारि। तो सौं कहौं कथा विसतारी ॥
मैं सुभ कर्म कमायो सार। तेरैं घरि पायौ अवतार ॥३१०॥
तातै भोजन भुगतो सुख। पावती नही नैंकहू दुःख ॥
कीयौ हौं तौ असुभ मैं कर्म। नीच घरां तौ लेती जनम ॥३११॥
तहां दुःख लहती अधिकाइ। सुष तू तहा न देतौ आइ ॥
कहा अयांन होइ नर नाथ। शुभ अरु असुभ कर्म कै हाथ ॥३१२॥
तुमतौ रूपवंत कौ देहु। अरु श्री तात सर्व गुनगेहु ॥
अरु जो होइ महा जड़ मूर। कालहिं कोढि कातर कूर ॥३१३॥
यह तुम सुनो बात सब ठौर। विध्वानि करै और की और ॥
माता पिता बहुत हित करै। भावी लिषी न टारी टरै ॥३१४॥

पिता द्वारा रोष प्रकट करना

पुत्री बचन सुनें सब सार। राजहि रिसि उपजी अधिकार ॥
मन मैं धरत दुष्ट मति गयौ। मुंह करि करि कछु न उत्तर दयौ ॥३१५॥
कवि परमल्ल कहै सत भाउ। मनमें इहै चितयो राउ ॥
अब हूं निज कै परषो तिसो। देषौं याहि कर्म फल किसो ॥३१६॥
जाको कियो बहुत ढिठाउ। देषो तास करम को सहाउ ॥
जीयमैं इसो पिसुनता धरी। मुहुं कहि धनि मैना सुंदरी ॥३१७॥

मैना की सुन्दरता

पुत्री उठि चाली निजगेह। करौ पारतो चीनी देह ॥
तात बचन सुनि उठी तुरंत। परफुल्लित मनते विहसंत ॥३१८॥
पंथ मांहि सो निकसी जाइ। पुरजन रहे देषिवि कुलाइ ॥
थोषं रहे मुहांमुह चाहि। यह धौं कुंवरि कौन की आहि ॥३१९॥

काहूली वैसी बरनई । सुरकन्या सुरनर्ई कही ॥
कोऊ कहै नाही यह सोइ । यह तौ नाग सुता पुनि होइ ॥३२०॥
काहू कहू हम ऐसी भनी । यह पुत्री विमला घर तनी ॥
काहू तौ यह सपना दीय । काहू चाहि सबल की पीय ॥३२१॥
कोऊ कहै को देवी याहि । पटतर कहूं न सके हम ताहि ॥
षोडस बरस बढ़ी परवांन । कोऊ रूप न ताहि समान ॥३२२॥
नैना की जस बरनै चंद । ताको मुख सोहै मकरंद ॥
लोचन प्रबल श्रवन प्रति बनै । ज्यों चकित मृग स्यावक तनै ॥३२३॥
करै कटाक्ष दृष्टि मनु बान । भृकुटि कुटिल मनमथ कमान ॥
माथे मंग विराजै बार । प्रति कोमल अति स्याम सुढार ॥३२४॥
श्रवननि कुंडल राजत कंद । मानौं बात कहै द्वै चंद ॥
नीके सोभित अधर प्रबंग । विद्रुम उपम विराजहि अंग ॥३२५॥
ऊंची नाक इसी उनहारि । मानो कंचनि धरी सवारि ॥
दसन पंति दीसै चमकंति । कुंदली दाडिम कीसी भंति ॥३२६॥
छोटी ग्रीव मुक्ति की मार । ताकी जोति बनै अधिकार ॥
उर उपरि द्वै सुबलित सुंभ । मानौ मैन के कंचन कुंभ ॥३२७॥
मृगपति लंक मध्य प्रवीन । त्रिबलि तरंग सोभ करि लीन ॥
कोमल पान कमलता बाल । बाहु जुगल सोभै सुविसाल ॥३२८॥
जंघ जुगल कदली के तुल । कोमल पगा गौर वनफूल ॥
चंपक वर्न पुष्प तन जानि । प्रति कोमल को कहै बखानि ॥३२९॥
प्रति सुगंध तासु को सरीर । आवै लपटै बहुत समीर ॥
प्रति कुल संभ्रमी दिन रैनि । विलसत चितचोरै मृगनैनि ॥३३०॥
महि पर मंद मंद पग धरै । देषत मनमथ को मन हरै ॥
हस चाल सो पहुंती तहां । जिन घर बनती सोवति जहां ॥३३१॥
दिव्य वस्त्र पहरे सति सची । तब जिनवर की पूजा रची ॥
अष्ट प्रकारी जिय धरि नेह । मद बच काइ छांडि संदेह ॥३३२॥
द्वारापेषण सब तिन कियो । मुनि कोऊ न तहां पेखियो ॥
आयतो आई पूजी जाय । पुंनि जोवन की यह आयास ॥३३३॥
रमल्यौवन यह रस सुभचित्त । पारनै एक तब्यो पवित्त ॥
अति सुंदर मुख सोभित जो भई । तबबनि सौं उठि ठाडी भई ॥३३४॥
कैसैं सुध मुंदै बहु जाय । औरनंद मध पुनह विसाल ॥
काहू दीहा लंब अनेक । प्रगट परद आवै सु अनेक ॥३३५॥

मनवांछित सुष लहै प्रवीन । रहे भक्ति मुनिवर पद लीन ॥
कबहू न बात पाप की कहै । निस दिन धर्म ध्यान में रहै
कबहू बात कलि नषि कहै । सांची होई सुहिर दै चहै ॥ ॥२३६॥

दोहा

सुष जननी परियन सकल, श्री जिनवर सुमरंत ।।
ऐसें बीते बहुत दीन, निजगृह में निवसंत ॥२३७॥

इति श्रीपाल चरिते महापुराणे भव्य संघ मंगल करणं ।
बुध जन मन रंजन पतित गन गंजन सिद्ध चक्र विधि दुषहरणं ।
त्रिभुवन सुख कारण भव जल तारण । चौपई बंध परिमल्ल कृतं ॥२३८॥

चौपई

राजा की श्रीपाल से भेंट

मैंना सुंदरी प्रति उत्तर दियो । तातैं तात निभ्रांट्यो गयौ ॥
राजा कैं मन उपज्यौ कोह । जंपैं होनहार सो होह ॥ १॥
एकै दिन सब सैंन पलानि । हय गय रथ को कहै बषांनि ॥
नगर निकास मेल्यौ आइ । मंत्री लीने संग लगाइ ॥ २॥
बहुर्‌यो कथा गई तिह थान । श्रीपाल जहां वन उद्यान ॥
नासा पाइ गए करि हाथ । ऐसे संघ सातसै ले साथ ॥ ३॥
भ्रमत भ्रमत सो पहुंती तहां । राजा वर चितत ही जहां ॥
देखि राज उठि ठाडो भयौ । मंत्रिन कै मन कोऊ भयौ ॥ ४॥
देषत मंत्री सबनि भई लाज । यह कोढि भेट्यौ किह कांज ॥
सगरे रहे मुह मुंह चाइ । कोऊ बूझि सकै नहिं राइ ॥ ५॥
तब तिह ठा बोल्यो यौं राउ । मंत्री सुनौं कहो सत भाउ ॥
या परि मेरी है यसि चित्त । यह मेरौ प्रीतम है मित्त ॥ ६॥
याकी ढिग तै नेक न टरौ । या परि नेह निरंतर धर्‌यौ ॥
मंत्री कहैं सुनौं हो राई । गर्‌यौ सरीर हाथ अरु पाइ ॥ ७॥
रही दुरगंधा जित तित पूरि । याहि देषिए भजिए दूरि ॥
तास्यो मिले कहा करि नेहु । याको चाहे बडौ संदेहु ॥ ८॥
यह सुनिकैं भूपति यौं भनैं । मंत्री मैं तुम मूरष गनैं ॥
नृप की कही न समझत बात । क्यौं जानौं को है वस तात ॥ ९॥

या जैसे जानै नाहिं कोइ । हौंनै कटकी जिनै कोइ ॥
ऐसी कथा कहत है यही । कवि परमल्ल प्रगटि करि कही ॥१०॥

मुख की कही न समझत बात । क्यों जानैं मन की बात ॥
यह कहि तहां पहुंतौ राउ । पुनि पुनि अवलोकै करि भाउ ॥११॥

पूछै तापहु भूपाल नरेस । को तू आहि बहुत असलेस ॥
कुंडल माँहि डोलै तन अंग । बहुत नरिनहु तेरे संग ॥१२॥

कहाँ इह नगर कियौ परनाम । सांची कहो ग्राम व्यौहार ॥
तब श्रीपाल कियौ परनाम । हम सुनि आए तेरौ नाम ॥१३॥

दयावंत सब कोउ कहै । अति उदारता तो जिय रहै ॥
तातैं सुनि आये हम राइ । बहुत कहा हम कहैं बनाय ॥१४॥

पुर गिरवर सरवर नाघंत । अब हम पहुंते आइ तुरंत ॥
चिंता रोग सोग सब गयौ । तुम्हरौ नृप जब दरसन भयौ ॥१५॥

यह सुनि नृप फूल्यौ सब गात । सुनि कुष्टी नृप मेरी बात ॥
मंगि मंगि अबि तूठो भयै । बहुरचौ त्याग लेइ जौ कवै ॥१६॥

विलम न कीजै औसर एह । मनकौं आनि देहु संदेह ॥
जोई तू मांगैगो दान । सोई देउ राखिहौं मान ॥१७॥

तब तिन जंप्यौ पुनि देह । राजा प्रगट पुहमि जस लेहु ॥
यह सुनि राउ कोप अति भयौ । फुनि अपनैं मनमैं चितयौ ॥१८॥

यह तो निमत पहुंतौ आइ । बहुत कहत हूं कही बढाइ ॥
देपौ सुंदरि को हो कमुं । काहि देहु सबै सब मर्म ॥१९॥

इनि कछु मेरी कारज निकारी । मदिन बाउ कुष तैं उबरी ॥
यह मनमांहि विचारै राउ । तब तिन जंप्यौ चित लाउ ॥२०॥

श्रीपाल को मैनासुन्दरी देने का प्रस्ताव

कुष्टी राइ बात सुनि सोहि । मैनासुन्दरी दीजै मोहि ॥
तेरे मन की भावी भयो । सो की पुहु मांग्यो वर दयौ ॥२१॥

चलो लीजइ पर नाँहि कानि । तब बोलत पुरु देखिकि बानि ॥
जब यह वचन राउ को सुन्यौ । तब सब बचिन आगौं सुन्यौ ॥२२॥

ए नरनाह किये कहा कहुं । कियौ कुपत न कहियौ कहुं ॥
यह कुष्टि तनं अंग विकार । कुष्टी है जो कहा विचार ॥२३॥

जनम जनम की चढै कलंक । हसि है सबै राउ अरु रंक ।।
राउ सुनिवि जपैं जब तास । मंत्री क्यों निबल सुपयास ।।२४।।

याकै सब सामग्री सिसी । होति और भूपनि पैं जिसी ।।
सिर पर छत्र चंवर छै ढरैं । भागैं सूर खडग कर धरैं ।।२५।।

भंडारी राखै भंडार । बेसर बाहन भवन अपार ।।
दुखी लोग सेवतहैं पास । भागै नितु होत है रास ।।२६।।

गाहा गीत वाद बहु भेद । सीषौ बहुत धरमआमेद ।।
अरु सब भांति देषिये सूर । भूलि न कबहूं भाषं कूर ।।२७।।

अरु देषिये दया अधिकार । दान देत है चित्त उदार ।।
यापैं कोप उदै कछु कीयौ । सुष अरु दुःष अचानक दियौ ।।२८।।

यह सबहि विधी पूरो आहि । अैसो बर तजि दीजे काहि ।।
वारंवार पयंपै राउ । याहि ऊपरि मेरो भाउ ।।२९।।

यह सुनि मन्त्री उठै रिसाइ । अजुगत कहा कहत हो राइ ।।
मन मैं संक बात तुम कहै । बारंबार चरन ते गहैं ।।३०।।

राजा सुनौ करो मत कोह । कीजै कछु सुता कौ मोह ।।
तुमतो करत कहाणीं इसो । काहू मूढ कीयौ है जिसौ ।।३१।।

पायौ नग निर्मोलिक एक । ताको कछु न कियौ विवेक ।।
काग जिहां जहि बैठ्यौ आइ । सो वि डारियो ताहि चलाय ।।३२।।

काहू आय भेद जब दयौ । ताको पिछताबौ रहि गयौ ।।
होत कहानौ तैसो एहु । कन्या मति कोढी कौ देहु ।।३३।।

अपजस फैलि देस मैं जाइ । अंतपि तौ पिछतै हो राइ ।।
आग्यौ सोच काम जो करै । तातैं चूक कबहूं न परे ।।३४।।

अपजस ताको देइ न कोइ । नीकैं करि देषौ जिय सोइ ।।
और सुनौ जंपे भूपाल । पाथर ले मनि आपौं लाल ।।३५।।

कहा कर्म पुत्री कौ करैं । सोई होइ बातु जिय धरैं ।।
नीकैं करि तुम देषौ चाहि । वा मैं कछु न चौखौ आहि ।।३६।।

यह सुनि बोल्यौ राइ प्रचंड । एण वचन भो लागत डंड ।।
तुम मंत्री जानौ उनमान । यह कारिजु हो इहै परमान ।।३७।।

मति जंपौ तुम बारंबार । को समर्थ जु फेरन हार ।।
बहु भोजन श्रीपालहु दयौं । पुर बाहरि सु थौपि राषियो ।।३८।।

मैनासुन्दरी से श्रीपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव

मनमें हुरषवंत विकसाइ । राजा मेह पहुंतो जाइ ।।
जिह ठाहीं मैना सुन्दरी । तासौं प्रथम बात उच्चरी ।।३९।।

पुत्री उत्तर देहु विचारि । अजहूं अपनी करम निवारि ।।
पानि ग्रहन करी तजि लाज । सुन्दरी जंपे सुनि महाराज ।।४०।।

कहा कहत है हीनी बात । सुख चित होइ सुनि ही तात ।।
जो मुनि क्रियावंत मति होइ । दरसण मिष्ट कहा कीजै सोइ ।।४१।।

कीजै कहा धर्म जो गहै । जाकै चित दया नहि रहै ।।
कीजै कहा ध्यान धरि एक । जाकै हिरदै नही विवेक ।।४२।।

कीजै कहा त्याग बहु दीये । जाकै क्रोध प्रगट है हिये ।।
कीजै कहा पुत्रि गुन रात । मेटै मातपिता की बात ।।४३।।

बार बार को करै बषान । तात बचन मेरै परवांन ।।
निठुर चित्त रानी गह गयो । दुष्ट कहांनौं तासौं कह्यौं ।।४४।।

मैं दीनी पुत्री पिय जानि । कुष्टी राउ परनि सुषमानि ।।
सुन्दरि सुनै तात के बोल । तेई मनमैं धरे अबोल ।।४५।।

मनमैं कीयो हरिष अपार । बिहसत जंपै बारंबार ।।
विषी निर्मयौ हीन गुनवंत । सुनहु तात वह मेरौ कंत ।।४६।।

सुंदर नर नरेन्द्र जे आन । ते सब देषौ तुमहि समान ।।
यह तो यौं करम निरजोस । काहू स्यौं कछु राग न रोस ।।४७।।

शुभ अरु अशुभ अजौ है संग । कोऊ मति भूलौ भ्रम रंग ।।
हुरत परत परलोक्यौं सुझै । राजा कछू दोस नहि तुझै ।।४८।।

पुत्री सुनियो जंपै राव । तेरै पीते दुष्ट सुभाव ।।
अजहुं न तजहि कर्म प्रति गाहु । वैसी लागै हौंन विवाहु ।।४९।।

विप्र एक विद्या करि लीन । लासौकिक जोतिक परवीन ।।
लीयौ बुलाय राय नर नाहु । हुरषवंत पुत्री कै ब्याहु ।।५०।।

दिन सुभ अरि महूरत साधि । लगन धर्यौ जोतसि बाचधि ।।
भाष्यौ विग्रहु तबै निरदल । शुभ करि वासर आजि पवित्त ।।५१।।

सूर्य शसि गुरु सुर गुरु चाहि । बर कन्या कौ अतिबल ताहि ।।
बरस बीस जौ सोधो राइ । वैसी प्रीत न पहुची जाई ।।५२।।

स्याम लेत सा हाथ न बहै । बारंबार विप्र यौं कहै ॥
काल कहै सो करै न संक । सुनि हो राइ करम के अंक ॥५५॥

ताको कछु न दीजे खोरि । प्रानी बांध्यो विधी की डोरि ॥
जित भेजै तित ही लै जाइ । या मैं कछु न चोषो राई ॥५६॥

जा परि ताको दुख निरमयो । काहू पै दुख जाइ न दयो ॥
ज्यौं दुखी सिरजी दुखकाज । को दुख देवे सुनि हो राज ॥

अपनो कियो कछू जो होइ । तौ काहू को बदे होइ ॥
विधना अंक जु लिख्यो लिलार । ते निरवहै ठोर इकसार ॥५७॥

भूलि गर्व कोऊ मति करो । करता वसी तहां पनि करो ॥
तिणस्यौं वज्र पलक से धरै । पलमैं वज्र ताहि त्रिण करैं ॥५८॥

करतै पहल कांम चितवै । यहै और की और कछु ठवै ॥
सोधं पंडित सुनै पुरांन । ताको अपजस होइ निदान ॥५९॥

यह अजुगति कछु कही न परै । राजसुता क्यौं कोढी वरै ॥
जाकै रूप जगत माहिए । सो क्यों कुष्टी को सोहिए ॥६०॥

राजा हीन बात जीय धरी । तेरी बुधि विधाता हरी ॥
ऐसो ते आरंभ्यो काज । जान्यो बूझ्यो चाहत राज ॥६१॥

विनासके कारण

विप्र गयो घरि लयो न वित्त । लागो प्रगटन एहु चरित्त ॥
मंत्री बरजै फुनि फुनि तास । स्वामी एतौं धर्म विनास ॥६२॥

विनसै मन्त्री संका मन धरै । विनसै भामिन साहस टरै ॥
विनसै राव मंत्र जो तजै । विनसै सुभट देखि रन भजै ॥६३॥

विनसै ईसुक्रोध परिहरै । विनसै साध क्रोध जो करै ॥
विनसै दाता जो न विवेक । विनसै वाड चलै दिन एक ॥६४॥

विनसै अलि पंकज की बास । विनसै रागी रहै उदास ॥
विनसै चोर पयासै भेव । विनसै सिषटै कै को सेव ॥६५॥

विनसै साहु जुवारी देह । विनसै गनिका जी जस लेइ ॥
विनसै अति कामातुर देह । विनसै रावर मीठी नेह ॥६६॥

विनसै पाव क्रिया जो हीन । विनसै तपा लोभ करि लीन ॥
विनसै रांक राग चित धरै । विनसै जोगी पाप न डरै ॥६७॥

जिनसे जोसी घर घर फिरै । जिनसै पैरत पायक [illegible] ॥
जिनसै बैद न नारी लहै । जिनसे बैदक शाह न लहै ॥६८॥

जिनसै ज्यारी [illegible] कहै । जिनसै साहु चोर [illegible] रहै ॥
जिनसै [illegible] नदी के तीर । जिनसै राजा [illegible] वजीर ॥६९॥

जिनसे बाप लजावै पूत । जिनसै जो संडे [illegible] ॥
जिनसे काजी [illegible] करै । जिनसै [illegible] कपूत [illegible] ॥७०॥

जिनसे कीट पींजरै पड़ै । जिनसै साधु को ऊंची चढ़ै ॥
जिनसै ठग [illegible] वर्ग । जिनसै पांव हुवै [illegible] ॥७१॥

जिनसै करिवर [illegible] हाथ । जिनसै [illegible] पुनि साथ ॥
जिनसै चोरी [illegible] । जिनसै घर जो बैठ न खावे ॥७२॥

जिनसै चोर साहु [illegible] बसै । जिनसै साहु न मारो जसै ॥
जिनसै चित को [illegible] चार । जिनसै काम हीन [illegible] ॥७३॥

जिनसै [illegible] पुनि पुनि जलै । जिनसै साहु को [illegible] ॥
जिनसे साधु करत जो कहै । जिनसै राज कुमंत्री गहै ॥७४॥

बार बार मंत्री मन कहै । काहु को बरज्यो नहीं रहै ॥
जिम मांती मैगल बनि परी । आंकुस रहै न एको घरी ॥७५॥

[illegible] चलकै मंत्र [illegible] । [illegible] होइ [illegible] ॥
नंदि [illegible] । [illegible] ॥७६॥

[illegible] बात [illegible] । [illegible] ॥
तब रानी [illegible] । [illegible] ॥७७॥

[illegible] हिए [illegible] । [illegible] ॥
मैं तो [illegible] । [illegible] ॥७८॥

तब [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥७९॥

तब मैं [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥८०॥

[illegible] । [illegible] ॥
राजरीति [illegible] । [illegible] ॥८१॥

[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥८२॥

तब मन्त्री बोलैं कर जोरि । स्वामी हमैं न दीजै खोरि ॥
हम मंत्री बोलैं नृप जोति । यहै हमारे कुल की रीति ॥८३॥

स्वामि धर्म इह बाहर होइ । साची बात कहासैं सोइ ॥
जो हम काज करैं सुनि राइ । तौ कुल रीति हमारी जाइ ॥८४॥

अरु राजनि कौ इह सुभाउ । जब जानत है वसक दाउ ॥
तब मन्त्री लीजिये बुलाइ । । बूझे ताहि भेद निकुताइ ॥८५॥

जोइ बात कहै समझाइ । सोई करैं सबै छिटकाइ ॥
और न मन ल्यावैं अधिकार । ऐसे नृप कुल के आचार ॥८६॥

तातै बार बार उच्चरैं । कछू जिय की लालच करैं ॥
चूक हमारो कछू न आहि । नीकै करि देखो चित चाहि ॥८७॥

मनमैं समझ्यो कछु इक राइ । मुख करि तिनसौं उठ्यो रिसाइ ॥
और बात मति ल्यावो चित्त । सामग्री तुम करो पवित्त ॥८८॥

सुन्दरि वर कौं सोभा करो । वेगे होइ बार मति करो ॥
सुनत कुंच मंत्री जन भयो । हरे बांस मंडप अरु ठयो ॥८९॥

लगन मंडप का वर्णन

च्यारि थंभ कंचन के बनें । जगमगै नग निर्मोलिक घनें ॥
च्यारि कलस इस सोभन धरे । ते सोहै चहुं पूंटह परे ॥९०॥

अरु सोभा तिह बिध प्रकार । मुक्ताहल की बंदरवार ॥
चौक सवासिन देहि सुचंग । अति उज्वल देखियौ अभंग ॥९१॥

अरु तहां निए सुरंग उछार । तिनकी सोभा बनै अपार ॥
कैन्ही चूनी वई केसाई । ते जगमगै कछु कहियन जाइ ॥९२॥

सबैं सिंघासनि रचन कराहि । सोभा चौक संवारहि जाहि ॥
सज्जन लोग जुरैं सब आइ । मलिन चित्त को नहि विकसाइ ॥९३॥

ठांठा घेर करै सब कोइ । अनुचित बात न ऐसी होइ ॥
विधना कछू इह विपरई । राजा की मति विधु हरि लई ॥९४॥

राजा लाइ जुरे सब जिते । अश्रुपात करैं तहां तिते ॥
अरु बाजै बाजित्र अपार । भेरि मृदंग तुर सहनाइ ॥९५॥

गहर सबद बाजैं नीसान । मलिन सबद अति सुनिए कान ॥
विप्र वेद धुनि पढैं अपार । नरनारि रोवैं अधिकाइ ॥९६॥

राजा कहै ब्याह के काइ । ऐसे कछु कहीइ बनाइ ॥
मेरी मन को इष्ट सु आहि । बेगि बुलाई ल्यावौ ताहि ॥९७॥
करौं वेष जो मोसे होइ । बार बार यौ भाषै सोइ ॥
मंत्री भये सीस धुनि जहां । नगर निकासहु वरहीं जहां ॥९८॥
देख्यौ कहीत अति विपरीति । तिन मन आको हू गय नीति ॥
लै आए अति कुष्टी देह । कहै राजीं वर वाकौ येह ॥९९॥
जो देखें सो हूं की करै । किसी को आड न टप्यौ टरै ॥
देखत राजा अति सुष कियौ । कंचन कलस न्हावन दियौ ॥१००॥
सोधौं मरन घी बहुत अबीर । लोकी बाक न लखै सरीर ॥
कंकन कर बांध्यौ सेहुरौ । भूरिष राउ भयौ बावरौ ॥१०१॥
कामिनि धोरी गावैं जबै । दूलहा ब्याहन चलियौ तबै ॥
चंचल तुरी चढावन लियौ । मंत्री चाहै हांसी कियौ ॥
कहडिठ बाव कहीं कर चाउ । रावसंत क्यौं मिटै सुभाउ ॥१०२॥

श्रीपाल की बारात

चली बरात उडी तहां धूरि । रही तहां घर आंबर पूरि ॥
रतन जरित सिर कपडि अनु । करैं छत्र चोजावे महत्तु ॥१०३॥
श्रीपाल मन हर्षित भयौ । मंडफ द्वारै ठाडो भयौ ॥
धन सयल देखियौ आइ । तिनके बदन गये कुमिलाइ ॥१०४॥
मांनो पंकुज हुए तुसार । मानौं तरुवर हुए कुठार ॥
ऐसी भयौ चित्त धनराउ । मांनो भयौ वज्र को घाउ ॥१०५॥
ते बहु रुदन करैं बहु मरैं । राजा कौं ते निंदा करैं ॥
नारी नर अंतेवर जिते । अति बिलषांहि बिसूरै तिते ॥१०६॥
तिनके बिलषैं कहा सिराइ । राजा कामनि करौ बनाइ ॥
मूंड रही नीचौ करि नारि । काहू तन नाहि वर्क निहारि ॥१०७॥
माता बहुत धरी महं करै । हियकर आंसु धार करैं ॥
मात महा दुःख तन करी । पुत्री मांगहु आंसू आवी ॥१०८॥
हा पुत्री दुःख सागर परी । क्यौं है जिन मैना सुन्दरी ॥
पूरब कहं किसी तैं पाप । पावैं ताही नाहु संताप ॥१०९॥

मैनासुन्दरी द्वारा सान्त्वना

सुन्दरी बोली जिन कर सोच । समझावै परियन परसोच ॥
कोउ दुःख करौ नहि सोचु । हुआ सब अशुभ कर्म को सोचु ॥११०॥

जो प्राणी आयो संसार । ताकै परै दुख की मार ॥
जित ही देखैं नैन पसारि । तितही बांधी दुख की पारि ॥१११॥

यह साइर संसार अपार । विरलौ कोऊ पावै पार ॥
मात पिता सुत बंधव मित्त । हय गय वाहन रथ सु पवित्त ॥११२॥

माया और जगहि अधिकार । मिथ्या सर्व रची करतार ॥
काकी पिता कौन की माइ । जीव अकेलौ आवै जाइ ॥११३॥

बैठे रहैं हितू पचास । बार बार जीवैं चोपास ॥
काहू पासि न होइ उपाइ । जब कर केस गहै जम आइ ॥११४॥

सोई बडी हितू सुनि आइ । धरबराइ मरघट लै जाइ ॥
भजै खौरि देहु मति कोइ । होनहार सोई परिहोइ ॥११५॥

प्रतिबोध्यौ सगरौ परिवार । मांडन कह्यौ ब्याह को चार ॥
आपुन हरषि उठाइ सुलियौ । ससि बदनी सेहर बांधियौ ॥११६॥

मणिमय कुंडल पहरे कंन । करकंकन सोहियै रतन्न ॥
नेवर पहरे अति झुंनकार । पहरी कलि मोतिन की मार ॥११७॥

सूरति बास भरदियौ सरीर । पहरयौ अंग कसूंमिल चीर ॥
करि श्रृंगार पहुती जांम । सिरीपाल मंडफ गयौ तांम ॥११८॥

मैना का विवाह मंडप में बैठना

मैंना सुंदरी बैठी आइ । परियन रहसि लियौ छिटकाइ ॥
तिहठा वचन करै सब कोइ । टकटक रहैं मुहां मुह जोइ ॥११९॥

तब सुंदरि उठि ठाढी भई । निज परियन माता पै गई ॥
सुरसुंदरी को बायौ जिसौ । मोकौ क्यो नहि बायौ तिसौ ॥१२०॥

पुत्री जंपै बारंबार । करौ बुब्याह व मंगलचार ॥
यह कहि कै पुत्री बैसियौ । माता बहुत हियौ भरि लियौ ॥१२१॥

ढरै चौंर दूलह कै सीस । जै जै सबद करैं नर ईस ॥
बाजै जहां गहर बाजनें । जाचिग जन बिरदावलि भनैं ॥१२२॥

चंदन मरवटि दई लिलार । पहरे पाटंबर सुकुमार ॥
नाचैं गावहि मंगलचार । बंभन वेद पढैं फुंकार ॥१२३॥

भावरि सात फिरी सुख भयैं । राजा गंधर्वी लियौ तबैं ॥
मैंनासुंदरि पकरी हाथ । सौंपी श्रीपाल नर नाथ ॥१२४॥

कन्यादान लियौ नरनाह । तब करि हौयौ कुंवरी नाह ।।
मंत्री जन सब लए बुलाइ । मेरो मुंह मति देखौ आइ ।।१२५।।

राजा द्वारा पश्चात्ताप करना

है है हूं पापी बरवान । है है हूं मतिहीन अयान ।।
महादुःख परियन कौं दयौ । अपजस सकल लोक मैं भयौ ।।१२६।।

बार बार ऐसो उच्चरै । ऐसे काम नीच नहीं करै ।।
सर्व बुवाई कुल की रीति । नरयौं पोयौ करी अनीति ।।१२७।।

अब कहां बदन दिखाऊं लोइ । यही कालिमा मेटै कोइ ।।
है है पुत्री सब गुन लीन । जैन धर्म पालन परवीन ।।१२८।।

मो निर्मल मति खोटी भई । तू कन्या कोढी कौं दई ।।
पुत्री कहै सुनौ हो तात । मिटै केम जिन भाषी बात ।।१२९।।

कछु खोरि नहीं दीजे तोहि । उदै कर्म आयौ सुनि मोहि ।।
जो कुछ निमित्त होइ जिह काल । सेई अंक लिषे मम भाल ।।१३०।।

पहलैं विधनां यह जीय धरी । पीछे हीं गरभ संचरी ।।
जो कछु आप करै करतार । ताको कीजै कहा विचार ।।१३१।।

काहू पास न भाषौ जाइ । अजहूं कहा होयगी राइ ।।
ऐसौ वचन भूप जब सुन्यौ । मन पिछतावौ पायौ धुन्यौ ।।१३२।।

नीकें करि देखौ चित माहिं । अनमी भूक सुनायौ काहि ।।
यह चितत दीनी ज्यौनार । सोषी दीन्ही सकल समार ।।१३३।।

छत्र चमर दीन्हे भंडार । दीने मेगल तुरीय ते सार ।।
पाटंबर दीए बहु चीर । जिनै लगे निर्मौलिक हीर ।।१३४।।

षोडस बर्षनि कीनी अंग । पहिरै कंचू सबै सुरंग ।।
अति सुंदरि दासी बनि लई । एक सहस सुंदरि कौं दई ।।१३५।।

दहेज

सहस बास सुंदर गुन देह । दीए सिरीपाल कौ तेह ।।
सेवक भले भले के गए । बहुत और सेवा कौं दए ।।१३६।।

पुत्री देखि बिछुरै राइ ।। बार बार मनमें पिछताइ ।।
कंचु दीन्हे काहू न जाइ । बहुत दीए कामनि चढ़ाइ ।।१३७।।

थाई सात रुपी चहुं पास । नौतन दीए कराइ आवास ॥
पुर बाहरि राखियौ नरेस । दिए बहुत पुर पट्टन देस ॥१३८॥

बहुत दीए बाजनै निसांन । दियौ सुषी बिना उनमान ॥
राजा दियौ अति धन जितौ । कवि परमल्ल न बरन्यौ तितौ ॥१३६॥

प्रजा द्वारा दुःख प्रकट करना

लई कुंवरि चौठोर चढाइ । सिरीपाल घरि गयौ लिवाइ ॥
यह सुनि नगर भयौ कहराउ । सभी कहैं दुग दुम यह राउ ॥१४०॥

रोवै परियन बे उनमांन । रोवै मंत्री अरु परमांन ॥
रोवै रइयति कुली छतीस । रोवत पशु पंछी सब दीस ॥१४१॥

तू बिधनां अति षोटी आहि । बुरे भले नहि देषै चाहि ॥
घर घर घेर करै बिलषांहि । राजइ गारि देहि पिछताहि ॥१४२॥

बहुत बात को करै बिचार । सुष निबसै श्रीपाल कुंवार ॥
मैंनासुंदरि मन की इछा । एकै दिन एकासन बिछा ॥१४३॥

तब श्रीपाल कहै ए नारि । प्रान पियारी देषि बिचारि ॥
तू निसुद्ध गुन सील अभंग । रूपवंत कंचन मैं अंग ॥१४४॥

चन्द्रमुषी सुनि अभी निवास । मति आवहु तू मेरे पास ॥
जौलौं असुभ उदै मो कर्म । तौ लौ राषि आपनौ धर्म ॥१४५॥

बार बार हू बिनऊ तोहि । सुंदरि मति आलवै मोहि ॥
ए बलभा तुम सुषदातार । संगति आई दोष अपार ॥१४६॥

संगति का महात्म्य

संगति गुनी निरगुनी होइ । संगति होत कुबुधी लोइ ॥
संगति तपा भ्रष्ट व्रत तजै । संगति पाइ सुरभी भजै ॥१४७॥

संगति साधु सुरा आचरै । संगति ही चोरी नर करै ॥
संगति सींह स्यार होइ जाइ । संगति श्रावक आमिष षाइ ॥१४८॥

संगति बिप्र तजै षट कर्म्म । संगति ते हूं धर्म अधर्म ॥
संगति सील तजैं बरनारि । आपनि मनमैं देषि बिचारि ॥१४९॥

संगति कोड चढै दुष काहै । सिरीपाल सुंदरिस्यौं कहै ॥
मेरी संग बुरी जनि जानि । सुंदरि बात हमारी मांनि ॥१५०॥

बोली नारि बैन सुनि एहु । मन मैं उपज्यौ अति संदेहु ॥

श्रीपाल से मैनासुन्दरी का निवेदन

बालम सुनौं कहौं अब तोहि । कर्कस बचन कहौ मति मोहि ॥१५१॥

नीकैं करि सोचौ मन मांहु । जो जो उदै कर्म को आंहु ॥
तौलो भुगतौ दुख सुख संत । भूलि न काइ रहुजे कंत ॥१५२॥

विधिना मोहि बहु विधि दियौ । जोई मोकौं निरखे जियौ ॥
तुम मेरे प्रीतम भरतार । तुम मेरे प्रांननि आधार ॥१५३॥

तुम अति रूपवंत गुनवंत । तुम ही सुख सागर बलिवंत ॥
लोचन सुखी जो लौंए बार । तौलौं देखें तुमैं निहार ॥१५४॥

तौलौं पवित्त रहै शुभ ठांम । जो लौं जपौं तुम्हारौ नाम ॥
तो लो हाथ धन्य सुनि राय । जो लौं प्रखालौं तुम पाइ ॥१५५॥

बाहु धन्य कछु कही न जाइ । जो आलंबी कंठ लगाइ ॥
हो पिय धन्य तौ लौं जिय धरौ । जो लौं सेव तुहारी करौं ॥१५६॥

सील विहूनी नारि जु होइ । तिह की निंदा करि है सोइ ॥
पतिव्रता सब ही गुन भरी । हो तो सीलवंति सुंदरी ॥१५७॥

शील की महिमा

सीलहीस्यो मेरी अति चित्त । सील पिता बंधु अरु मित्त ॥
सील परिग्रह मेरी संग । सील रूप मेरी सरवंग ॥१५८॥

सील द्वादस आभरन विचार । सीलै है नव सत श्रृंगार ॥
सीलै जीवन सीलै मरन । सीलै धर्म सु सीलै सरन ॥१५९॥

सीलै मेरैं मग उनमान । तौलौं तजौ न जी को प्रांन ॥
सर्वस जाइ सील जो रहै । त्रिभुवन मैं सोभा सो लहै ॥१६०॥

श्रीपाल का प्रसन्न होना

यह सुन सिरीपाल हरखियो । धनि मैनासु धरि हियो ॥
धनि धनि हेरी भरतार । जिह दिन राख्यो सील को सार ॥१६१॥

ऐसी विपति माँहि विहसंत । बहुत दिवस बीते निकसंत ॥
कोठा एक रहै चहुं पास । सुंदरि देवै लेइ उसास ॥१६२॥

ए विधना दोषन के राइ । तेरी कथा न कहनी जाइ ॥
तेरी सरन आइ जिह लयौ । ताकौ दुःष बहुत तैं दियौ ॥१६३॥

अरु जे फिर्‌यौ दुष्ट तो साथ । ताकौं भले लगाए हाथ ॥
तेरी आस रह्यौ जिय सोइ । ततकाल ताकौं दुष होइ ॥१६४॥

जिह काहू तो को सुष दियौ । ताकौं बुरी सर्वथा कियौ ॥
जिह तेरो सेवी पर संग । ताकौ सदा भयौ सुष भंग ॥१६५॥

दोहा

जिह मार्‌यौ तू दु:षदे, रे विधि अष्ट प्रकार ॥
सो पहुचे वैकुंठ को, तेरे मुष दै छार ॥१६६॥

जिह तेरी आसा तजी, कीनौं मूल विनास ।
तिह भव दुषसागर तज्यौ, लह्यौ मुकति पर वास ॥१६७॥

चौपई

नया बहुत करम की करी । और न काहू ऊपरि धरी ।
मैंना सुंदरि उठी तुरंत । दिव्य अबर पहरे विहसंत ॥१६८॥

सीलवंत अरु गुंनह निधांन । निज बालम संयुत सयान ।
मनमैं उपज्यौ सुष असेस । श्री जिन भुवन कियौ परवेस ॥१६९॥

तीन प्रदक्षणा उत्तम बुधि । कीनी मन वच काय त्रिसुधि ॥
दंपति लागे अस्तुति कर्न । जै जै मुनिवर भव भय हर्न ॥१७०॥

मैंनासुंदरी एवं श्रीपाल द्वारा मुनि के पास जाना

जै मिथ्यातम हरन पतंग । सेवत सुर नर षेचर संग ॥
निरद्वंद निरामय नांहन कोप । क्षय कीने अष्टादश दोष ॥१७१॥

अनंत चतुष्टय गुनह निवास । इन्द्री वेदन क्षुधा उदास ॥
महित सप्त तत्वारथ भास । अकलंक मोहारि विनास ॥१७२॥

रत्नत्रय भूषण युत चित्त । एकत्व भेदत धरि चित्त ॥
मानंदकरण जे वे जगदीश । जे वे करुणासर विश ईस ॥१७३॥

सुभ चित्तै दोऊ चिरताइ । बैठे मानल कमल तट जाइ ॥
तब सुंदरि बोली करि चाउ । हौं नंदिनी मोहि समझाउ ॥१७४॥

भो स्वामी कछु ज्ञान प्रकासि । जौ मेरे चित्त की भासि ॥
जे जे मुनि वीतराग निहार । ताहु भीख दे चित्त उधार ॥१७५॥

कछु परम स्वामी कहि सोइ । कुमति मनि हरी सब होइ ॥

मुनि द्वारा संबोधन

मुनिवर कहै सुनि सुनि एह । अनुपम सुख समकित सूं नेह ॥१७६॥
पुंनि मिथ्यामत कुमति निवारी । मनमैं मुनिवर धर्म उचारि ॥
गुरुवो चरन प्रणाम्यो जो ताहि । नीके करि सुनि भाष्यो ताहि ॥१७७॥

मुनीश्वरोवाच हे पुत्री च वत्सं ।
धर्मे मतिर्भवति किं बहुना श्रुतेन ।
जीवे दया भवति, किं बहुभि प्रदानैः ॥
शांतिर्मनो भवतु किं कुजनैश्चतुष्टै ।
आरोग्यमस्तु विभवेन धनेन किंवा ॥१७८॥

बुद्धेः फलं तत्वविचारणं च ।
देहस्य सारं व्रतधारणं च ॥
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं ।
वाचः फलं प्रीतिकरं नराणां ॥१७९॥

सिद्धचक्र व्रत लेने के लिये कहना

चौपई

निर्मल सिद्धचक्र है एहु । [illegible] ग्रही व्रत एहु ॥
तब तापै सुनियो विधि साधि । वसु दिन सिद्धचक्र आराधि ॥१८०॥

प्रथमहु मंडल कीजे आदि । ॐकार प्रथम हि आदि ॥
चहुं कुणै लिखि सोलह अंक । भक्ति पंच परमेष्ठि बखानहु ॥१८१॥

दल दल दे लिखिए वसु वर्ण । क च ट त प य श स वे वसु वर्ण ॥
दल अंतर अंतर सुखदाय । दरसन ज्ञान चरित सुभाय ॥१८२॥

पुनि चक्कीय ज्वालामालिनी । अंबा पदमेसरी पौमिनी ॥
ध्याइये लिषिये गुनहु विसाल । लिषिए तहां तहां दिगपाल ॥१८३॥

गोमुख जरवेसुर लेषिए । कहूरि मातका भाषिइ ॥
दशमुष को थापिए सारंभ । जहाँ द्वार उद्योत थभंभ ॥१८४॥

वसु दिन पालही सील सुभाउ । इंद्रिनी को जपलहु सिभाउ ॥
मूल मंत्र वसु दिन भाषिए । होउ नचीत भाउ राषिइ ॥१८५॥

संषेपह विधि यह मैं कही । पुत्री सुनत भई गह गही ॥
दुष्ट कुष्ट तन नीको होइ । रोग सोग सब डारें धोइ ॥१८६॥

वितर प्रेत भै न कछु करें । बसीकरन मोहन सब हरें ॥
होई जसु धन बढै अपार । पुत्र कलित्र बाढे परिवार ॥१८७॥

नर अरु नारि सबै सुष लहै । दुःख दारिद्र तहां नहीं रहै ॥
सुनि पुत्री पूजा विधि जिसी । तो सौं वरन कहौं ही तिसी ॥१८८॥

कात्तिग फागुन असाढ बषानि । स्वेत पक्ष निर्मल अति जान ॥
अष्टमि दिन कीजे उपवास । कीजे इंद्रिन को सुष नास ॥१८९॥

वसु दिन ब्रह्मचर्य मंडिए । घर की चिंता सब छांडिये ॥
सिद्धचक्र वसु दिन तजि आंनु । कीजे पूजा मिटै भवसांनु ॥१९०॥

नीकै करि थिर मनु राषियै । मूल मंत्र पुनि पुनि भाषिये ॥
मनवांछित फल पावै जवै । उद्यापन विधि कीजे तवै ॥१९१॥

व्रतका उद्यापन

कीजे आठ भुवन जिन तनें । धरिए आठ बिंब अति घनें ॥
कीजे सिध जंत्र सुभ अट्ठ[1] । थापै मुनिवर गुनह गरिट्ठ ॥१९२॥

झलरि मुकट चमर सुभ थाल । कीजै आठ आठ परवांन ॥
कीजै आठ प्रतिठ्यसार । बहु धन खर्चै चित्त उदार ॥१९३॥

पूजा आठ करो धरि भाउ । अथवा एकै मन करि चाउ ॥
उद्यापन कछु होइ न जाहि । तो दूनौ व्रत कीजिए तिवाहि ॥१९४॥

---

१ आठ

विस्त जोग बहु दीजे दान । चीवंचहु भरिए अति थान ॥
आँजिका मैं सारी पहरात । आठ पंच दीजिए निवात ॥१९५॥

दुखी दीन दालिद्री जिते । करि सनमान पोखिये तिते ॥
सुंदरि अरु श्रीपाल कुंवार । सुनि मनमें सुख कियो अपार ॥१९६॥

गुरु कौं नमस्कार करि चले । बहु जिन मंदिर दोऊ भले ॥
रहे सुपसु बहु बढ़े उल्हास । आय पहुंती कातिक मास ॥१९७॥

कार्तिक की अष्टाह्निका

ससि पखहु अष्टमी दिन भयो । अति निर्मल भानु उग्यो ॥
न्हाए अंग पहरियौं वस्त्र । अति उज्जल देखिये समस्त ॥१९८॥

सर्व दर्व लिए भरि थाल । अति हर्षित मन उमग्यो चाल ॥
इंद्रिमुक्ति भए जिन देहु । वीतराग छंदा सुभ देहु ॥१९९॥

तिहूं गुप्ति मन वच अरु काय । अष्टविधि जी जिन पूजत भाव ॥
थिरमन होय कियो अति भाइ । सिद्धिनौं पूजतौ जी जिननाहु २००॥

वसु दिन प्रति विधिस्यौ मांडियौ । राग रोस दोऊ छांडियौ ॥
जानै सम सो वसु करमित । आठवां मानसो वाके चित ॥२०१॥

मुनि पै लीन्हौ कियौ उपास । उपज्यौ दुष्ट कर्म को नास ॥
नीकै सिद्धचक्र पूजियौ । सुभभाव गंधोदिक लियौ ॥२०२॥

गन्धोदक लगाना

अति सुगंध को करै विचार । वंछित भई जहां करतार ॥
सिरतै तबै महुवासो छोड़ । अपवाहि दिन कछु नीको होइ ॥२०३॥

श्रीपाल अरु सातसै कुष्ठ अंग । देखियो कुष्टहु जल सु प्रसंग ॥
वसु विधि पूजा करै मनोह । मानौ कुष्ट नीसरौ देह ॥२०४॥

हरै चौर आयौ कोउसान । सफलाय कीन्हौ सुखदान ॥
मलियागिरि सों कुंकम आदि । अगरादि जिनवर जिन सिद्धादि ॥२०५॥

ससि सम उज्जल कांकत तिहु चावीं । सुंदर पुंच मनोहर लिए ॥
पहुप मनोहर नाना भांत । अति सुगंध देखिये अनुपम ॥२०६॥

कछुक कीन्ही सुन्दर माल । स्वेत अरुन देखिए बिसाल ॥
कछु कुसुम अति छूटे लए । झरि झरि अंजुरि जिन कौं दए ॥२०७॥

नइवेदक पकवान अपार । श्री जिन आगैं रचे अवार ।
बारि धरे तहां दीप अनूप । खेयी वर कृष्णागर धूप ॥२०८॥

नाना विधि फल धरे सवारि । मनवांछित को कहै विचारी ॥
श्रीपाल पूजा की जहां । आठौं द्रव्य चढाए तहां ॥२०९॥

कुसमांजुलि दे सिर नाइयौ । दुग्ध जलांजलि पानी दयौ ॥
प्रथम ज पूजा इक गुनि करी । दूजे दिन दह गुन विस्तरी ॥२१०॥

तीजें सौं गुनि पूजा सची । सहस गुनी चौथे दिन रची ॥
पंचम दससहस गुन बनी । लक्षगुणी षष्ठै दिन तनी ॥२११॥

सातैं दिन दसलक्षण गुणी जानि । अष्टम कोटि गुणी परवानि ॥
ठाडे सब सुर कौतिग हार । मनमे कीयौ हरिष अपार ॥२१२॥

अति सुकंठ लीनी जैमाल । उपज्यौ कौतूहल तिह काल ॥
सुंदरि महा आरती रचै । इंद्र इन्द्राइनि दोऊ नचै ॥२१३॥

सुर बाजे बाजैं अनिवार । मधुरी धुनि सोभा अधिकार ॥
जिनके नाम न बरने जांहि । नाचैं किन्नरि अति मुसकांहि ॥२१४॥

अमरेसुर सब चढे विमान । पहुंचे आप आपने थान ॥
पूजा करी भरम सब भग्यौ । कोटीभट आठौं निसि जग्यौ ॥२१५॥

कुष्टरोग नष्ट होना

तीन दिवस गंधोदक न्हाइ । कोढ मिट्यौ पर्यौ सहु राइ ॥
कंचन वर्न भयौ तनु इसौ । सोहत कामदेव को जिसौ ॥२१६॥

और जु बली सातसैं मित्त । तिनहू के तन भये पवित्त ॥
और जु कुष्ट देह हे जिते । गंधोदिक नीके भये तिते ॥२१७॥

भूत पिसाच निसाचर मंत । नासै गंधोदिक परसंत ॥
मोहन वसीकरन जे आहि । बिसहर डाइनि साइनि जाहि ॥२१८॥

नैननि रुम श्रवन विधि जिते । नीके भए सबै नर तिते ॥
अरु जे दुष्ट कर्म दुख दले । सुख पावैं गंधोदिक लगे ॥२१९॥

नर नारी मन बच करि कोइ । सिद्ध चक्र आराधै जोइ ॥
सो प्रगटै तिहुं लोक मझार । सो भुंजै बहु सुख अधिकार ॥२२०॥

बाढै बिभौ बिधा समसान । करै राज सो इन्द्र समान ॥
नाना फल बिलसैं सुखपाइ । मरिकैं बहुर्यौ मुकतिहु जाइ ॥२२१॥

जाके जल न्हायैं कवि कहै । कुष्ट व्याधि नहिं तन मैं रहै ॥
याको इचरज कछू न आहि । जो करि है सो पावै ताहि ॥२२२॥

मैंनासु दरि पिय की देह । देषत नह भरि आई नेह ॥
तब तासौं मुनिवर यौं कह्यौ । वह फल तैं अब सुरत ही लह्यौ ॥२२३॥

मुनि की वन्दना करना

स्वामी तुम प्रसाद सब एह । बहुत बिनति कीनी करि नेह ॥
चरन कमल मुनिवर के बंदि । दोऊ घरि आए आनंदि ॥२२४॥

गयौ असुभ तब धर्म सहाइ । ताकौ सुख कौं कहै बढाइ ॥
धर्म एक त्रिभुवन मैं सार । धर्म दुष बिनासन हार ॥२२५॥

धर्म की महिमा

धर्म हि ते नर भौ पाइए । धर्म हि कुल उत्तिम पाइए ॥
धर्म हि ते कीरति बिस्तरै । धर्म हि ते कोऊ बैर न करै ॥२२६॥

धर्म हि ते बाढै परिवार । पुत्त कालित्त रू बिभौ अपार ॥
धर्म हि ग्रह व्यापै नहि कोइ । धर्म हि ते सब कारिज होइ ॥२२७॥

धर्म हि ते नहि चढै कलंक । धर्म हि ते सबै सुर रंक ॥
धर्म हि ते नर बैर न बहै । धर्म हि ते कोई बुरी नवि कहै ॥२२८॥

धर्म बिहूनां नेह बिलाइ । सब अघु आन दिषावै आइ ॥
गईं केस वपछोईं सबै । परम राषि लेत है तबै ॥२२९॥

धर्म हि ते सब मिटै किलेस । धर्म हि ते भरि होइ सुरेस ॥
बहुत बात को कहै बढाइ । धर्म हि के नर मुकतिहु जाइ ॥२३०॥

कवि परमल्ल कहै चित चाहि । धर्म बिना को हितू न आहि ॥
प्रानी तजि परपंच बिकार । करहु धर्म ज्यौं उतरैं पार ॥२३१॥

और कछू सब दुष को ठाम । धर्म एक जु सुख को नांम ॥
धर्म हि तैं श्रीपालहु रूप । मकरध्वज सम भयो अनूप ॥२३२॥

कुष्ट व्याधि तैं लयौ उबारि । पाइ महा मनोहरि नारि ॥
हूई परसपर सुख अपार । भोग भोगवै विविध प्रकार ॥२३३॥

जिन मंदिर नित जिन पद धरै । जिन गुर की ते अस्तुति करै ।
बिलसैं बिभौ देहि बहुदान । गुनी जन सबै लहै तिहा मान ॥२३४॥

चहि विधि जिय काल सुख माहि । मूल संघ जन पूजै ताहि ॥
महासुख उपनो नौरंग । सेवा करैं सात सैं संग ॥२३५॥

इति श्रीपाल चरित्र महापुराणे भव्य संघ मंगल करणं ।

पुण्यजन मन रंजन, पाप निकंदन, जिनवचन विविध सुख पूरणं ॥

त्रिभुवन सुख कारण, भवजल तारण, चौपई बंध परिमल्ल कृतं ॥
मद सुंदरि पाई, विपत गमाई, श्रीपाल सुख राज करै ॥

इति

× × × × × ×

इसके पश्चात् श्रीपाल का जीवन ही बदल जाता है। वह विदेश यात्रा करता है। बारह वर्ष तक विभिन्न द्वीपों में भ्रमण करता है। इसी यात्रा के मध्य में अनेकों विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन अन्त में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। अन्त में पूर्ण वैभव एवं सेना के साथ वह वापिस मैनासुन्दरी के पास लौटता है। कुछ समय तक अपने ससुर के यहां रहने के पश्चात् वह वापिस अपने देश को लौट आता है।

× × × × × ×

श्रीपाल चरित्र का अन्तिम पाठ

चौपई

श्रीपाल की सेना

वीरदमन सो मुनिवर भयौ । [illegible] विधि [illegible] ।।
श्रीपाल भुंजै सुखराज । [illegible] को सुख साज ।।१।।

सरब जीव की रक्षा करै । दुःख [illegible] ।।
मनमैं परिग्रह संख्या करी । और विभूति सबै प्रगटि ।।२।।

आठ सहस अंतेवर अंत । बीस सहस हाथी मैमंत ।।
बीस लाख राजिया तुरंग । सोलह लाख रथ वर अंग ।।३।।
पैदल संख्या कहीयन जाइ । बहुत रिधि को कहै बढ़ाइ ।।
संख्या सकलनि की को कहैं । कहत कथा कछु अंत न लहैं ।।४।।

दोहा

अशुभ कर्म भयौ दूर सब, शुभ प्रगट्यो जु प्रचंड ।।
राज करै विलसै विभौ, श्रीपाल बलि बंड ।।५।।

कीयो सुजस भुव लोक मैं, दुर्जन के उर सल्ल ।।
सकल जीव रक्षा करन, श्रीपाल भुव मल्ल ।।६।।

एक छत्र सो भयौ नरेस, जाको प्रतिपन बहुत असेस ।।
दीपानी ते नृप आए साथ, बहु सुख दै सब वे नरनाथ ।।७।।

चौपई

सत राज पारै वर धीर । दुष्ट जननि मर्दै बरबीर ।।
दयावंत नहीं ताहि समान । कोऊ मिटि न सकई आन ।।८।।

तिनसौं नेह कियौ असमान । बोली श्रीपाल की आन ।।
सेवक ह्वै अपनै करि भूप । ते निरखे सबही है भूप ।।९।।

अरथ चक्कवरि पाली लिखी । राजनीति बहु पारै तिसी ।।
जिनको नाम चहुँवै चित्त । अतुल सुख सो भुंजै नित ।।१०।।

इह विधि राज करै नरनाह । सब ही जनमन भयो उछाह ।।
दीन दुखित बहु पोषै आज । कोटि टका दिन दीजै दान ।।११।।

पुत्र प्राप्ति

बहुत दिवस यों बीते जांय । रहुसै प्रेम सुंदरि कीं तांम ॥
मैनासुंदरि कैं मन चाउ । भयो दोहरो निर्मल भाउ ॥१२॥

दांन पुंन्य परि रावैं चित्त । आराधै जिन नांम पवित्त॥
पुंन दोहरो उपज्यौ जिती । सिरीपाल सब पुरयौं तिती ॥१३॥

पूरे भए जबै दस मास । जिन गुन गावत सुष विलास ॥
भयो पुत्र सब लछन सार । कुल सलिहर उपज्यौ कुंवार ॥१४॥

सब कुटंब आनंदित भयौ । अतुल द्रव्य जाचिग जन लयौ ॥
कह्यौ जोवसी सब सुभ्भांम । धनपाल है याकौ नांम ॥१५॥

महीपाल ता पीछैं भयौ । तीजौ पुत्र देवरथ ठयौ ॥
चौथो भयो महारथ वरी । च्यारि जने मैंनासुंदरी ॥१६॥

मंजुसा जाए सुत सात । दुज्जन भजन जिनके गात ॥
पांच पुत्र जाए गुंनमाल । अति बलिष्ट अरु गुनह विसाल ॥१७॥

सब सुंदरी नि सत कर धरे । एक हि एक रूप आगरे ॥
कोटी भट सब सुत जनए । बारंसहस्र आठसैं भए ॥१८॥

बाढै दिन दिन सबै कुवार । और ही रूप और व्योहार ॥
मंडलेश्वर श्रीपाल नरिंद । दीसै मनो दूसरो इंद ॥१९॥

दोहा

जानैं ऐसो फल भयो, मिट्यौ असुभ सब कर्म्म ॥
यहै जानि नरलोक हौं, पालौ जिनवर धर्म्म ॥२०॥

धर्म का महात्म्य **चौपई**

धर्म्म एक त्रिभुवन मैं सार । धर्म्म कुगत विनासन हार ॥
धर्म्म एक सब सुष को कंदु । धर्म्म एक भंजै दुह दंदु ॥२१॥

धर्म पसाइ गज गुंजरैं । धर्म पसाइ हींस हय करैं ॥
धर्म पसाइ चवर सिर ढरैं । धर्म पसाइ छत्र सिर धरैं ॥२२॥

धर्म पसाय सुष अधिकार । धर्म पसाइ सबै नरपार ॥
धर्म पसाइ सुजस बिस्तरै । धर्म पसाइ सकल दुष हरै ॥२३॥

धर्म पसाइ रूप अधिकार । धर्म्म पसाइ सेवैं नर पार ॥
धर्म्म पसाइ सुजस बिस्तरैं । धर्म्म पसाइ सकल भै हरै ॥२४॥

धर्म पसाइ सुरनि तनु होइ। धर्म पसाइ जाइ भय मोह ॥
धर्म पसाइ मिलैं बरनारि। अति सुवनी रंभा उनिहारि ॥२५॥

अमृत बैन मुख की बांत। तीन पुरंदर सेवै जात ॥
धर्म पसाइ होहि सुख घने। जिनकी ओपम कहुत न बनें ॥२६॥

धर्म पसाइ सेव सुख करी। धर्म पसाइ आपद नहि परी ॥
धर्म पसाइ न बैरी करें। धर्म पसाइ विष नहि चरें ॥२७॥

धर्म पसाइ सिंघ बसि होइ। धर्म पसाइ जाय भय मोह ॥
धर्म पसाइ ज्वाला नहि जरे। सो प्रानी पहुप ह्वै परै ॥२८॥

धर्म पसाइ रोग मरि जाइ। धर्म पसाइ परै सब पाइ ॥
धर्म पसाइ न मूसे चोर। धर्म पसाइ न व्यापै घोर ॥२९॥

धर्म पसाइ होइ जल पार। नदी सरोवर सायर वार ॥
धर्म पसाइ न दोहै चाड। धर्म पसाइ मिटै भव चाड ॥३०॥

धर्म पसाइ देव बसि रहै। धर्म पसाइ भली सब कहै ॥
धर्म पसाइ उच्चाटन सबै। धर्म पसाइ देखि रिपु भजै ॥३१॥

धर्म पसाइ मन मुंचन लहै। धर्म पसाइ सोक सब दहै ॥
धर्म पसाइ परम मति होइ। माया मोह निवारै सोइ ॥३२॥

धर्म पसाइ देइ बहु दान। धर्म पसाइ मिटै अवसान ॥
धर्म पसाइ पंचव्रत धरै। भव के दुख सबै परिहरै ॥३३॥

धर्म पसाइ डिगै नहि चित्त। आराधै जिन नाम पवित्त ॥
धर्म पसाइ कर्म को नास। धर्म पसाइ ज्ञान परकास ॥३४॥

धर्म पसाइ बहुत को कहै। प्रानी मुकति जाय घर लहै ॥
इंद्र आदि सब सेवै पाइ। बहुरि न भव मैं आवै जाइ ॥३५॥

धर्म पसाइ मोख गति होइ। धर्म पसाइ मुकति घर सोइ ॥
धर्म पसाइ पंच पद होइ। तातै धर्म करौ सब कोइ ॥३६॥

दोहा

प्रानी सुनौ चरित्र यह, मन देसी चित्त चोइ ॥
धर्म हितू संसार मैं, जाते सिव पद होइ ॥३७॥

एकहु दिन श्रीपाल नरेस । बैठ्यो संघासन मलवेस ॥
वाम अंग मैनासुंदरी । रूपवंत सब ही गुंन भरी ॥३८॥

ढरै चमर सोहै सिर छत्र । हर्षित चित महा सुष सत्त ॥
आगे नाटिक नचैं अपार । गीत विनोद होहि अधिकार ॥३९॥

बुधजन भाषे शास्त्रपुरान । सुनिये ताको अरथ बषान ॥
कस्तूरी चोवा अरु भेद । कपूर जवादि बासकौ भेद ॥४०॥

कुंकुम सों मर्दे वसु अंग । चहुंघा फैली बास अभंग ॥
इह सुष आसन बैठ्यौ जाम । आ बनमाली प्रणम्यौ ताम ॥४१॥

मुनि दर्शन

अैसे भाष्यौ परणाइ देव । भो भूपति सुखकरनि देव ॥
लै फल फूल छहों रितु तनैं । जिनकी सोभा कहत न बनैं ॥४२॥

उपवन सब परिफूलित भयौ । देषत ही वैरी दुष गयौ ॥
आवागमन भयौ मुनि तनौं । वा सोभा कैसें कर भनौ ॥४३॥

यह सुंनि श्रीपाल सुखियौ । सिंघासन ते उठि हरषियौ ॥
सात पैड उसर्‌यौ तब सोइ । प्रोष्यनयो मनमें सुष होइ ॥४४॥

वस्त्राभरन उतारे सबैं । बनमाली कौं दीए तबैं ॥
पुनि बैठ्यौ राइनि कौ राउ । सैंन समांन सु उपज्यौ चाउ ॥४५॥

अति उदार ताकौ चित भयौ । बहुत दर्ब बनपालहि दयौ ॥
आनंदभेरि दिवाई तबै । नगर लोग चलि आए सबैं ॥४६॥

चउरंग दल चल्यौ अभंग । अंतेवर सब लीयौ संग ॥
ते परफूलित चली बिसाल । जिन गुंन गावत आछी डाल ॥४७॥

करै सग सब मंगलाचार । बहुत परिग्रह चल्यौ अपार ॥
पंथ न सूझै छिपियौ भान । सिरीपाल मनमें रंजान । ४७॥

अैसे दलसौं पहुतौ तहां । उपवन [illegible] मनोहर जहां ॥
कुसमित कुसुम वृक्ष अधिकार । जह तह बासु लेत अलिभार ॥४९॥

मद पवन अति सीतल बहै । अति सुबास जन कौं सुष बहै ॥
कछु कदम मोर कछु हरे । कछु कंच फूले कछु फरे ॥५०॥

रति बसंत सोहत बन जिसौ । मुनिवर पुण्य भयौ बन तिसौ ॥
द्रुम असोक सुंदरता मांहि । ताकी अति सुंदर सुभ छांहि ॥५१॥

सब सुष करि श्रीपाल हि दीठ । ताकौं लाग्यौ मन कौ ईठ ॥
ता करि सुद्ध सिला सुभहेत । मुनिवर बैठ्यौ तहां सहेत ॥५२॥

देष्यौ श्रीपाल नरेस । मनमैं उपज्यौ सुष असेस ॥
एक परम पद जानें सोइ । केवल ग्यांन जाकाई होइ ॥५३॥

मुनि बर्णन

राग रोस नहि जाके चित्त । संजम सील पालै नित्त ॥
तीन गुपति जाकै परमत्थ । रत्नत्रय भूषन समरत्थ ॥५४॥

तीन सल्लि फेडण सिवकंत । ग्यांन चरन अनुप्रेक्षा चिंत ।
भव जलनिधि तारन जिहाज । पंच महाव्रत धर मुनिराज ॥५५॥

मकरध्वज पंडयौ करि काज । जहां अठवीसुगुन भासन राज ॥
अष्ट कर्म मारन मद हरना । अष्ट सिद्ध गुन धारन सरना ॥५६॥

नवविधि ब्रह्मचर्य प्रतिपाल । दसलक्षन गुन धरन दयाल ॥
एकादस प्रतिमा जिय माहि । द्वादसांग भाषन जो मांहि ॥५७॥

बारा विधि तप करै प्रमांन । द्वादस भावनौ भावै सुजांन ॥
बाइस परीसह सहन अपार । पंच महाव्रत पालन हार ॥५८॥

देषत उपजै हर्षि बिसाल । ऐसौ मुनि बंदौ श्रीपाल ॥
तीन प्रदक्षणा दीनी ताहि । निमसकार कीयौ ता पाहि ॥५९॥

आयत भंतिवर परवांन । नयर लोग संयुत जन जांन ॥
बैठ्यौ ता मुनीस के पास । अति आनंदित भयौ उल्हास ॥
सब मिलि अस्तुति कीनी जबै । धर्मवृद्धि मुनि दीनी तबै ॥६०॥

बहुर्‌यौ निमस्कार करि राउ । पूछन लागौ मनि धरि भाउ ॥
भौं मुनि करुना सरवर धीर । कहौ धर्म बुधि गुनगंभीर ॥६१॥

जातैं जीवन मरन न होइ । चहुँ गति कौ संसौ मिट सोइ ॥
दुरगति पंच निवारन हार । कैसौ धर्म सुनौं सुष सार ॥६२॥

मुनि द्वारा धर्मोपदेश

यह सुनि मुनि जंपै सुभ कंद । सुनौ राइ निज कुलके चंद ॥
धर्म वृद्धि हौ भाषौं तिसी । श्रीजिन आगम भाषी जिसी ॥६३॥

बडो धर्म दस लछन जानि । गुंन अनंत को कहै बखानि ॥
अरु सम्यक दरसन सुभ जोइ । धर्ममूल है प्रथमह सोइ ॥६४॥

अतुल लब्धि समिकत ते सबै । समकित ते लहिए सिव दबै ॥
समिकत तीर्थंकर पद करै । समिकत गुंन अनंत संचरै ॥६५॥

सम्यकु सबै होय दुष नास । सम्यकु सबही सुषको बास ॥
समिकत बिन दुष पावै सबै । सम्यक बिन नर भवमैं भमैं ॥६६॥

सम्यक गुन जाके मन माहि । सबै गुंन आवंहि ताहि ॥
तपु जपु संजमव्रत अरु पुन्न । सम्यक एक बिना सब सुन्न ॥६७॥

अब सुंनि श्रावक ब्रत हो राइ । संषेपौं कहौं समझाइ ॥
मन बच काइ त्रिशुध्यौ नित्त । जीवौं बध न कीजिए मित्त ॥६८॥

थावर बिनु कारज टारिए । प्रथम अनोइत कह पारिए ॥
सबै सुष सबैं जी रहै । मिथ्या बचन भूलि नहि कहै ॥६९॥

अजियौ बोल बोलिए जबै । जीव बिराधत उबरै तबै ॥
पुरपट्टन मारग मैं जाइ । परधन दिष्टि परै जो आइ ॥७०॥

लेइ अदत्तन उत्तिम लोइ । त्रिन समान देषै जिय जोय ॥
कबहुं न चोर संग जाइए । ताकौ हरयौ न मनु लाइए ॥७१॥

परदारा न देषिए नैन । माता बहन सम बोलहु बैन ॥
हय गय रथ अरु दासी दास । वस्त्राभरन धीर धरवास ॥७२॥

गाइ भैंसि धन बेत धधांन । इन संष्या कीजिए प्रवान ॥
अनोवरत एकादस सार । जीव दया गुंन पंच प्रकार ॥७३॥

दोहा

जो को पारै भाव धरि, सुन गुंनै मन जोइ ।
भव दुष सकल विकौडिकै, मुक्ति कामिनी होइ ॥७४॥

पुनि धनोकूल सुनि हो राइ । दिसि सब निर्विसि जाय की जाइ ॥
इनकी संख्या तैं है और । एक प्रथमहु न जानों ठौर ॥७४॥

हीन मलेछ बसत है जहां । कबहूं भूलिन जइये तहां ॥
पुन्न प्रभावना जहां न होइ । तहां विवेकी लोग न कोइ ॥७५॥

नदी मंजार स्नांन किम किजे । भोजन हन्न बहुत ही लिजे ॥
तिनमें ते कीजिए निवाइ । बरो एक पुत्र है बहु भाइ ॥७६॥

मैंन लोह लाख मद रास । मधु वाणिज्य भूत हरिताल ॥
सब तिन मैं वसिए परवांन । धर्मवंत सब गुन जान ॥७७॥

यह उद्यम सबही ते हीन । पर इन पंडित भेद प्रवीन ॥
प्रथमहि जिन चैत्याले जाइ । तब उद्दिम प्रारंभै आइ ॥७८॥

कै प्रतिमां पूजै निज गेह । तब भोजन सौं पोषै देह ॥
उत्तर दिसि सनमुख सुखथान । पाक्षिक जैन करो थर जान ॥७९॥

कीजै सामाइक त्रिन काल । मूलमंत्र जपिये सुविसाल ॥
राग दोस दीजै छिटकाय । पंच परमगुर निज सुखदाय ॥८०॥

संजम तरवर कैसो आंहु । सुभ भावना करी मनमांहु ॥
तिहता [illegible] भांवी सार । [illegible] न जहां बहु विस्तार ॥८१॥

एक मास मैं चउदह वार । कीजै व्रत मन सुभ विचार ॥
बक्षा मरण रैंन परवास । पान सुगंध भोग अभिराम ॥८२॥

इंद्री पोषन कीजे जाय । इनकी संख्या कीजै राय ॥
ऐसी विधि ते बाढै धर्म्म । नासै सकल पाप अरि कर्म्म ॥८३॥

पुनि वर्जित श्रावक बहुवास । सब जे रोग लीन मन पास ॥
च्यारि प्रकार धांन जो देइ । मनवांछित फल सोय लहेइ ॥८४॥

द्वारापेखन करै निहारि । [illegible] ॥
करै सोधि कर [illegible] । [illegible] श्रावक सोइ ॥८५॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥८६॥

[illegible] ॥
हाइ हाइ [illegible] । [illegible] अंतर करो ॥८७॥

मिथ्यात्व [illegible] ॥
ए बारह व्रत विविध प्रकार । या संसार मांहि [illegible] सार ॥८८॥

कहै मुनिंद सुनों श्रीपाल । इनतें कर्म बढे अनिवार ॥
हरष्यौ नृप इह सुनियों जबै । पराविधि मुनिवर पूछ्यौ तबै ॥८९॥

श्रीपाल द्वारा प्रश्न

दोहा

भो ज्ञान दिवाकर परमगुरु, गुन रत्नाकरि जानि ।
हमैं भवांतर है जिसे, तैसैं कहौ बखांनि ॥९०॥

चौपई

कौन कर्म करि कोढि भयौ । क्यों मैं सिद्ध चक्र व्रत लयौ ॥
क्यों हूं पर्‌यौ समद में जाइ क्यों भुजबल तिरयौ निकुताइ ॥९१॥
कहौ कर्म्म स्वांमी मो तनौं । भांड विगोवौ कीनौं घनौं ॥
कवन कर्म्म ते मेटियौ सोंहि । यह संसौ मेरैं मन होहि ॥९२॥

मुनि द्वारा प्रश्न का उत्तर

यह सुनि मुनिवर भाखै तबै । सुनि श्रीपाल कर्म्म निज सबै ॥
भरत क्षेत्र सब सुक्ख निधान । कार्म कोटियन परवान ॥९३॥
तामैं रत्न चंपापुर जांनि । बन उपवन करि सोभित मांनि ॥
जह श्रीकेतराउ बलि बंड । विद्याधर सोहियै प्रचंड ॥९४॥
विद्या जानैं अति चतुरंग । कुल बल रूप सौरंग अभंग ॥
तसु भामा श्रीमती सुजांन । सब अंतेवर में परधान ॥९५॥
अह निसि पिय मन रंजन करन । रूपवंति सीमति मति हरन ॥
जैन धरम पालन परवीन । पात्रहि दान भक्ति अति लीन ॥९६॥
अंनह दिन नृप ताहि समाग । गयौ जिन मन्दिर मन कल्यांण ॥
महामुनिस्वर वंदौ जाइ । फिर ताढिग बैठ्यौ सुख पाइ ॥९७॥
मुनि सु प्रसंन भयौ तिहवार । ताख्यौ सावन धर्म विचार ॥
पुंन्य पाप जैसौ फल आहि । कह्यो प्रगट राजा सौं चाहि ॥९८॥
सुनि नृप मनमैं हरष्यौ जांनि । जैसी मुनिवर कह्यौ बखांनि ॥
आनंद्यौ राजा घर गयौ । जैन धरम धारैं सुख भयौ ॥९९॥
बहुर्‌यौ अशुभ उदै भयौ आइ । श्रावक व्रत दीए छिटकाइ ॥
जोवन मद श्रीमद भयौ राउ । भयौ विकल कैं कहूं बढाइ ॥१००॥

मिथ्या कर्म उदै भयौ तास । [illegible] गुर मिथ्या को पास ॥
कबहुं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] ॥१०१॥
[illegible] [illegible] ॥
मुनिवर एक [illegible] [illegible] ॥१०२॥
सहे परीसा [illegible] । [illegible] बीती [illegible] ॥
हेम पटल सौं रहियो [illegible] । रवि आकार न [illegible] ॥१०३॥
[illegible] [illegible] । [illegible] कोप [illegible] ॥
ताहि देषि तिन [illegible] कियौ । [illegible] कोढी [illegible] लियौ ॥१०४॥
सागर [illegible] । ताकी मन [illegible] ॥
पुनि करुना [illegible] मन आइ । [illegible] निकसायी [illegible] ॥१०५॥
कछु [illegible] । [illegible] मन्दिर [illegible] ॥
अंनह दिन बन गयौ तुरन्त । देष्यो तिन मुनिवर [illegible] ॥१०६॥
पर मत तु [illegible] मुनिराउ । [illegible] आइ ॥
घोर वीर तप षीनौं अगु । भरयौ धूरिसौं वीसैं अंगु ॥१०७॥
रत्नत्रय व्रत ध्यावैं चित्त । मास एक पिछ आहार तिमित्त ॥
आवत हौ सो नगर मभार । देषि राइ दुष कियो अपार ॥१०८॥
बोल्यौ मुनिवर सौं तिहवार । तैं कत षोई लाज गंवार ॥
नांगौ भयौ फिरत बेकाज । काया मैली अति बेसाज ॥१०९॥
मार मार करि उठियौ ताहि । पसिवर तैं सिर काटौं याहि ॥
बहु उपसर्ग ताहि कौं करयौं । बारंबार [illegible] उचरयौ ॥११०॥
प्रति हास्य कियौ ता तनौं । [illegible] कहु [illegible] ॥
[illegible] [illegible] । ताहि [illegible] ॥१११॥
महा पाप [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] [illegible] । मुनि [illegible] ॥११२॥
कबहुं जलमें [illegible] । [illegible] ॥
यह [illegible] । [illegible] ॥११३॥
कौन पाप [illegible] । [illegible] ॥
महा [illegible] । [illegible] ॥११४॥

दोहा

यह [illegible] ॥
निंदा अपनी करत सो, [illegible] ॥११५॥

चौपई

राजा आय गयौ तिह बार । पहुच्यौ सो रांनी दरबार ॥
जो देखै तो बिलखी थाइ । पायौ दूखन अनुपम ताहि ॥११६॥

प्रान पियारी ए वरनारि । कारनं कहा सु कहहि विचारि ॥
हसइ न बोलैं औ मुरझाइ । रांनी कहि भिरतंत सुनाइ ॥११७॥

बोली एक चेटिका तबै । राजा बात सुनौं यह सबै ॥
तुम श्रावक सुत दीयो जाहि । तुम मुनिवर निंदे वनमांहि ॥११८॥

घर जल मैं दीने डरवाइ । करि उपर्ग तबौ लिए कढाइ ॥
काहू मोसौं कहियो आइ तातैं । चौंकि रही मुरझाइ ॥११९॥

यह सुनि राउत लज्जित भयो । अपनी चूक जांनि परनयो ॥
बार बार जंपै है प्रिया । मो पापी अकर्मं सब किया ॥१२०॥

जो तैं अशुभ उदय भयो आइ । सेए मिथ्या गुर के पाइ ॥
ताकी सीष नीकै सुंनि लई । नाठी सुमति कुमति अति भई ॥१२१॥

हूं पापी पातिक कौ मूर । हौं गुन हीन महा बड़ कूर ॥
हौं अभिमान महा मद भरो । देषत अंध कूप मै परो ॥१२२॥

तुम सौं कहा कहौं हो साखि । नर्क पथ तैं लै मो राषि ॥
रांणी बचन सुणे ए जबैं । दयावत ह्वै बोली तबै ॥१२३॥

स्वांमी तुमी सब अशुक्ती करी । धर्मकथा मन तैं बीसरी ॥
मुनिवर निंदे अति दुषदयो । मुंनि कै मोहि महा दुष भयो ॥१२४॥
अब तुम सुंनहु धर्म की रीति । बहुत न्याई मति राख्यो प्रीति ॥
जिन सासन गुर निंदै कोइ । अवनी नहुंगति जांनि है सोइ ॥१२५॥
जो पापी निंदै बहु भाइ । सो हिहर्षि करि नर्कहि जाइ ॥
पंच प्रकार सु देषहि दुष । किंचित कबहूं न पावै सुष ॥१२६॥

सो प्रानी पीडिये कुघाट । कंपित सूली दीजे बाट ॥
पुंनि उपल मैं डारियै सोइ । मूर भैट जब ताकी होइ ॥१२७॥

बहुदूषो उपजै ताहि शरीर । बहु दुःष पावै प्रांनी धीर ॥
संडासनी तन तोरैं मारि । नोचैं ताहि देह बहु मारि ॥१२८॥

मारैं रांध ताकी मुष भरैं । कुंभपाकनि मुष्टं कूं धीकरैं ॥
बहुदहालि अति पुतरी लाइ । बैठावै धर थांड बनाइ ॥१२९॥

परजिय पालन लेहु सुव एहु । भोग करहु पाछें जदि लेहु ॥
कछु जीव बति करहु संताप । सो कहिहु मोंत किसौ ही पाप ॥१३०॥

तै जिन अरु सेवकी तन धरयौ । मैं सेवन मुनिवर नहीं डरयौ ॥
तैं मुनिवर निंदे अनिवार । तिन कारन दुख भुंजे अधिकार ॥१३१॥

तैं पर इरूयौ सीलव्रत भांनि । तू सेवक पापिन की खांनि ॥
यह दुख सुंनि जाहु संसार । करहि धरम सुख पंचि सम्हार ॥१३२॥

सुंनि स्वामी नरकहु दुख सह्यौ । तो सौं मैं सु प्रकास्यौ कियौ ॥
या भवमें कछु पुंन्य उपजाइ । सुंनि पै जिनवर व्रत लै जाइ ॥१३३॥

यह सुंनि राजा निपट अयांन । पहुच्यौ जाइ जिनेसुर थांन ॥
तहां मुनीसर देख्यौ धीर । गुण की निधि अरु गुंण गंभीर ॥१३४॥

ध्यांन धरण निसुण उदास । बंदे चरण कमल सुख आस ॥
जंपै राउ जोरि हैं हाथ । हौं पापी अति सुनि हौं नाथ ॥१३५॥

बहुत पाप मै कियौ बिचारि ।नरक पडते लेहु उबारि ॥
धर्म पयासि पंचव्रत सरन । अबहूं आयौ तेरी सरण ॥१३६॥

श्रीपाल द्वारा पूर्वभव में सिद्धचक्र व्रत ग्रहण

यह सु नि मुनिवर भयौ दयाल । सिद्ध चक्र व्रत लै भूपाल ॥
तासौं होइ पापको छेद । ताकी जुगति सुनौं यह भेद ॥१३७॥

कातिक फागन मास असाढ । स्वेत पक्ष सब सुख की बाढ ॥
अष्टमी दिन उपवास कीजिए । वसु दिन सिद्ध चक्र पूजिये ॥१३८॥

अतह निसि जागरन करेइ । दांन सुपातहि सो पुन देइ ॥
वसु दिन सील बरत धारिए । भेदाभेद मिथ्या टारिए ॥१३९॥

पुनि उजोवंन करै धरि भाव । करै प्रतिष्ठा पाठ बनाव ॥
अथवा सांतिक विधिकौं करै । श्री जिन पूज करै मौ हरै ॥१४०॥

भजिया सारी दीजै आनि । पुस्तक दीजै मुनिवर पानि ॥
सुंभार झारजल दीजै सोधे । आठ अमोल करो है दिवै ॥१४१॥

श्रीनाणाहर भाख्यौ व्रत एहु । करै जीव सुख मुंचे सिव गेहु ॥
यह सुंनि राउ जिनेस्वर बंदि । सिव संयुक्त सुख पायौ अनंदि ॥१४२॥

याकी सुद्ध मन वच काय करार । सुनी सिद्ध चक्र सुख भाय ॥
तीन बार सौ देइ प्रवानि । पावन व्रत मारग सुख खानि ॥१४३॥

कुंकुम अरु कपूर घर गारि । चंदन लेइ पवित्त निहारि ॥
अरु अखंड अक्षत बहु लेइ । उज्जल पुंज मनोहर देइ ॥१४४॥

धर केवरो केतुकी माल । चंबेली अरु बेली गुलाल ॥
चंपक जुही मालती भार । अवित्तसुगंध अंबुज मन्दार ॥१४५॥

नाना विधि के पहुप अपार । पूजैं भरी अंजुरि सुभ सार ॥
षटरस नईवेद सुभ जोइ । बहु पकवान चढावैं सोइ ॥१४६॥

कपूर दियौ तहां धरैं प्रजारि । बहु किस्नागर खेवैं वारि ॥
नानाविधि फल पूजैं भाउ । जल गंधाक्षत पहुप बनाउ ॥१४७॥

नईवेद दीपक अरु धूप । सुंदर फल तहां धरैं अनूप ॥
देइ अर्घ पूजैं सुभ चित्त । सिद्ध जत्र आराधैं नित्त ॥१४८॥

पुनि उजवन करैं धरि भाउ । करी प्रतीष्या धर्म सहाउ ॥
पूज्यो निमित्त आइकैं जबै । संन्यासह तनु छाड्यो तबै ॥१४९॥

दोहा

दिव्य देउ सुरपद भयो । भुंज्यो सुष अधिकार ॥
आउ मुक्ति चैं आइयो, सो तू है श्रीपार ॥१५०॥

चौपई

सुनि श्रीमती अनोव्रत धारि । पहुती सुर्ग देह तजि नारि ॥
तहा तैं चै आइ गुन भरी । सोई है मैनासुन्दरी ॥१५१॥

अरु ए देषि सात सै अंग । पूरब मित्र जु रहते संग ॥
मुनिवर सौं तैं कुष्टी कह्यौ । तातैं कुष्टी व्है दुष सह्यौ ॥१५२॥

तैं मुनि जलवोरन उचरयौ । तातैं तू सागर मैं परयौ ॥
दयावन्तह्वै काढयो सार । ताही तै तैं पायौ पार ॥१५३॥

जो तैं भिष्ट भिष्ट करि चयौ । तातैं भाड डिगोवो भयौ ॥
असिवर सौं मुनि मारन कह्यौ । तातैं त्रास महा तैं सह्यौ ॥१५४॥

पुव्व भवातर सुनि हो राइ । दुःष सुष यहै भ्रम छिट जाय ॥
यह सुनि मुनि बंद्यो श्रीपार । व्रत आचरयौ सुष अधिकार ॥१५५॥

उपदेश के बाद गृहागमन

आदि अंत पूरब भव सरन । दुःष बिनासन सुभगति करन ॥
बारंबार नवायौ सीस । घर आपनैं गयौ नर ईस ॥१५६॥

सिव चक्र धारावै चित्त । जैन धरम प्रतिपालै नित्त ॥
पुत्र कलित्र मित्र सुख ठाम । करै राज चक्री समान ॥१५७॥

इच्छित काम भोगरस लेइ । दीनानु धरि मान धरेइ ॥
नाटिक नवे वेद धुनि होइ । सब राव पारै नृप सोइ ॥१५८॥

दुरजन वसि कीए बसि बंक । हय गय रथ लीये बहु संक ॥
इन्द्र तुल्य सुख जाइ न गिन्यौं । महाराज सब ही विधि बन्यौं ॥१५९॥

बहुत काल गयो इह रीति । वसुधा सकल करी वसि जीति ।
गज गुंजरैं महामयमंत । हय हींसैं देषियै अनन्त ॥१६०॥
सेवैं पाइ बहुत नर पाल । निति प्रति आवै सरस रसाल ॥
अष्ट सहस सुंदरि भोगवै । जा प्रताप महि मंडल तवै ॥१६१॥

बांचै बुधजन काव्य पुरान । गुनियन जन को राषै मान ॥
गुनियन जन राषै दरबार । पावै हय गय विभौ अपार ॥१६२॥

वैराग्य भाव उत्पन्न होना

एकहु दिन आसन बिहसंत । गोहुंका बैठियो सोभंत ॥
उलकापात भयो अति जांम । देषत ही चित चिन्त्यौ तांम ॥१६३॥

ज्यो चितत यह भयो विलाय । त्यौंही सो विभूति सब जाय ॥
राज भोग धन जोवन गर्व । ऐसे ही सो जैहै सर्व ॥१६४॥

पुत्र को राज्य देना

यह मनमैं चितवै नरेस । सो उदास मन भयो असेस ॥
धनपाल सुत लयौ बुलाय । कह्यौ राजभार लै सुष पाइ ॥१६५॥
ए त राज पालौ धरधीर । हम निज काज सवारैं वीर ॥
यह सुनि बिलष्यौ नृपन कुंवार । एहु वचन तैं कह्यौ असार ॥१६६॥
बालापन सुख अजहूँ न जानि । हम तुम बिन सुख जानै न जांनि ॥
क्यौं निहचिंत न कीयो मोय । राज भार हौं नाहीं जोय ॥१६७॥
तुम बिन राज न मोपै होय । अहसुत को देवो बोझ ॥
तासौं राव कहै सुनि धीर । कुल कारन उपजी वर वीर ॥१६८॥
पूत न गहै पिता को राज । कहा सरयो तिन जाये काज ॥
जे सुत पिता सुख नहि देहि । तब कुटंब को भार न लेहि ॥१६९॥
अरु जे सुत कलंक नहि हरै । ते कुल माहि जनम न करहि ॥
ता सुत जाये ही का सूत । तातै जानौ मन्यो अपूत ॥१७०॥

जननी भार धरैं दस मास । दुर्जन हरै न ताकी त्रास ॥
बाचिग जाकी आस न करे । ते सुत गर्भ मांहि किन मरे ॥१७१॥

तुमतो सब लायक गुन सार । सीस लेहु राज को भार ॥
लज्जित व्है जु नवायौ सीस । अति रूपो देष्यौ नर ईस ॥१७२॥

यह सुनि कुंवर कियौ थिर चित्त । राज भार तब लयौ पवित्त ॥
राइ हरष सुत कौ मुष चाहि । राज पट्ट बांध्यौ सिर ताहि ॥१७३॥

कहैं राऊ सुनि कुवर सुजान । नीकैं करि सिख लै परवान ॥
सील भार जे पंचहि बंध । पररव नीकौ देषत अंध ॥१७४॥

मिथ्या दरसन देषन जांहि । लोचन सफल सदा सरमांहि ॥
विषै राग कबहु नहि सुनैं । मिथ्या कथा न मनमैं गुनैं १७५॥

मर कबहुं न सुनै परपीर । तेइ सफल श्रवनसुनि बीर ॥
नाना विधि के पहुप अपार । जिन की अति सुवास अधिकार १७६॥

तिन ते प्रमुदित होइ सुचित्त । नासा सफल जानियौ नित्त ॥
कबहू हीन बात नहि चवै । कबहुं गुन आताप न लवैं ॥१७७॥

स्वाद प्रमाद न मानै सोइ । रसना सफल मानियै जोइ ॥
सुरत संग नहि बंछै चित्त । इंद्री सफल महा सुचि नित्त ॥१७८॥

दया भाउ मनमै राषियौ । मधुर बैन सबसौं भाषियौ ॥
न्याय पंथ पर लिए न जानि । तजिए नही धर्म की बानी ॥१७९॥

सुष रहियै माया के पास । पुन्यवंत सो रहै उदास ॥
पिसुन बात सुनियै नहि कान । जीवै जै न दीजियै जान ॥१८०॥

पर उपगार कीजिए प्रीति । बोलै सांच राज की रीति ॥
कबहुं लोभ न कीजे चित्त । परधन परदारा परमित्त ॥१८१॥

बहुत देस पुर पट्टन जिते । भुजबल जीति कीए बसि तिते ॥
सुत संतोष चित्त मति करौ । बैरी बिभौ भषा मति धरौ ॥१८२॥

बहुत सीष दीन्ही अधिकार । पापन बन पग धारे सार ॥
बन गछत जानियौ नरेस । धायौ पुरजन सकल असेस ॥१८३॥

कोऊ रुदन करैं बिलषाइ । कोऊ बिलसैं अति दुषपाइ ॥
कोऊ कहै बुरी अति भई चंपापुर की सोभा गई ॥
दयावंत सब सुष की धाम । रूपवंत मानैं सुर काम ॥१८४॥
महाबली भुजबलि उदारि । बल कुलीन दान करै बिचारि ॥
राजरीति धर्मवंसी राम । नहि मंडलमैं जाकौ नाम ॥१८५॥

जाकै राज सबै सुख लहै । कबहू दुख दारिद न लहै ॥
जाकै राज दान जब भए । कबहु कारज हीन नाहीं भए ॥१८६॥

जाकै राज सकल जन भजे । जाकै राज भोग रस रसे ॥
जाकै निवासी कुल धर नार । कामिनि धरयो सील को भार ॥१८७॥

जाकै राज न मूसै चोर । जाकै राज न व्यापै घोर ॥
जाकै राज बढ़यो परिवार । दुखी दीन जनको आधार ॥१८८॥

जाकी कहै कथा सब कोइ । ऐसो दुखी भयो न होइ ॥
वे गुन सुमिरै अरु लालिचाहि । नरनारी घर घर सिखवाहि ॥१८९॥

मैनासुंदरी द्वारा दीक्षा ग्रहण करना

मैनासुन्दरी जिनवर काज । धरियो धरी जिनेश्वर लाज ॥
आठ सहस भामिन जे थांन । तेऊ संग भई परवांन ॥१९०॥

सकल परिग्रह सुख छिटकाइ । चाली श्रीपाल की माइ ॥
पुरवासी और नरनारि । दिष्या कारन चली विचारि ॥१९१॥

कोटीभट वन पहुच्यौ जबै । महा मुनिस्वर देख्यौ तबै ॥
वंद्यौ ग्यांन धरन परवेस । लाग्यो अस्तुति करन नरेस ॥१९२॥

जय जंगिमन जलजहु के मांझ । जय दुर्गति मारन परचांझ ॥
जय जय सिव रवनी वलहार । जय जय रत्नत्रय धर धार ॥१९३॥

विषयन वन भूरत भव अंत । जय जय गुण रत्नाकर संत ॥
जय जय सर्व दोष दुख हरन । जय भव जलनिधि तारन तर्न ॥१९४॥

जय जय मोह धार भव राज । जय जय कल्याणक सुख साज ॥
जय जय कोह वडवानल नीर । जय जय निर्मल मतधीर ॥१९५॥

जय जय कोह मान हत वीर । जय जय नय कुंजर हरि धीर ॥
जय जय अष्ट कर्म दुख नास । जय जय केवल ज्ञान प्रकास ॥१९६॥

जय जय सुर नर सेवै पाय । जय जय केवल कारन राइ ॥
जय जय सुर नर सेवै वृंद । जय जय करुणा रस जिनचंद ॥१९७॥

जय जय सकल कुमत मुनि राइ । जय जय सुर नर सेवत सुभाइ ॥
जै जै अमाकांत सुख कंद । जै जै अष्ट मदहर सुर वंद ॥१९८॥

दोहा

मो गुन सागर सरलगुन, वरनत पार न होहि ॥
या संसार समुद्र में, बूडत राखो मोहि ॥१९९॥

चौपई

मो कौं व्रत दीजै सुभसार । जो चहुंगति कुल छेदन हार ॥
यह सु ंनि मुनिवर जंपै एह । धनि तु जिन यह कीयो नेह ॥२००

श्रीपाल द्वारा मुनि दीक्षा ग्रहण करना

बहुरयौ तू भव दुष न लहैं । आमन मरन सबै भी दहै ॥
यह सु नि श्रीपाल जीय धर्यौ । छिमा छिमंतर सबस्यौ कर्यौ ॥२०१॥

मित्र भाव सबसौं परगासि । राग रोस दोउ छिय नाषि ॥
पु ंनि सेहुर मणि भूषित सीस । छिनमैं लयौ उतारि नर ईस ॥२०२॥

ककन कु ंडल दीए डारि । भू ंके वस्त्राभरण उतारि ॥
पंच महाव्रत पर चित्त दियौ । पंच मुठि सिर लु ंचन कियौ ॥२०३॥

बाह्याभ्यतर सुध सभयौ । अति निर्ग ंथ भयौ गषु गयो ॥
जो हौं सब सुष सेवन जांनि । तिन दिष्या लीनी परवांनि ॥२०४॥

कु दपहू रानी सुभ चित्त । अजियौं कौ व्रत लियौ पवित्त ॥
मैंनासु ंदरि सब सुष कर्न । दिष्या लीनी जिनवर सर्न ॥२०५॥

बछाभरण भोग सब गर्व ु । छिनमैं छांडि दियौ तिह सर्व ु ॥
रैनमंजूसा अर गुन माल । तिनहू दिष्या लई गुनाल ॥२०६॥

ि तरेह पीमा परवांन । और ज अंतेवर कछु आन ॥
दीक्षा सवनि लई घर भाउ । माया को सब तज्यौं उपाउ ॥२०७॥

और जु हुते सातसै अंग । दिष्या तिन हूं गही अभंग ॥
जो कछू राज मित्त है और । दिष्या सबनि लई तिहू ठौर ॥२०८॥

तब श्रीपाल भ्रमैं बनराइ । महा मुनिसर भयौ सुभाइ ॥
ताके सिर परि ग्रीषम भान । महा तपैं को कहै अमान ॥२०९॥

बर्षा सीत परैं असरार । सहै दुष मनमैं अविकार ॥
कृष्णागर बहु कु ंकुम वारि । तन चरचतो निहारि निहारि ॥२१०॥

सीत तुसार छाया ता देह । तपमै तो जान्यौ अति नेह ॥
चालै महाहूरा की छांह । इन्द्री बन डाल्यौ छिन माह ॥२११॥

दिढ चरित्र धर्यौ जिय जोइ ।अठावीस गु ंन धारैं सोई ॥
निज पद आरावैं गु ंन राउ । भ्रमैं अकेलो चित्त शुभाउ ॥२१२॥

देइ जोग बन भीतर जाइ । बहुत सहै उपसर्ग सुभाइ ॥
धरैं ध्यांन अति धीरो चित्त । ठाढो मांनौं मेर पवित्त ॥२१३॥

मास एक दिन लेइ अहार । सहै परीसह बाईस सार ॥
पावस रित द्रुम तरि सौं रहै । ग्रीषम रित गिर धरि दुष सहै ॥२१४॥

सीत काल सावर के तीर । ध्यान देइ दुष सहै सरीर ॥
बहुत भई अति पीनी देह । छांडे सबै सुष भव नेह ॥२१५॥

हिम पटल तन छायौ ताहि । सब सुष लहिए ताप न चाहि ॥
एक ध्यान ठाढौ सो रहै । कोऊ ताकौ भेद न लहै ॥२१६॥

कोऊ कहै चित्र निरमयौ । काहू तरु पाहन कौ बयौ ॥
कोऊ कहै काठ की देह । मन वच क्रम ऐसैं थिर नेह ॥२१७॥

बनचर जीव न भौ मन धरैं । ताकौं देह घसैं सुष करैं ॥
पंषी बैठे मुष उडि जांहि । ताकी संक न कछु करांहि ॥२१८॥

हंस तूल्य की सेज्या वीर । जो सोवंतो साहस धीर ॥
गिर कंदरा सैन सो करै । कछुन दु:ष अपने मत धरै ॥२१९॥

जो चलतो बहु दल बल साथि । हय उपरि जो चलतो गाजि ॥
जिनहि सुखासन चलतो राउ । अब तांहि चलतो धरि पाउ ॥२२०॥

ताके सिर पै ग्रीषम भांन । महा तपै को करै बखान ॥
वर्षा सीत परै असरार । सहै दु:ष मनमैं अधिकार ॥२२१॥

कुन्नाकार बहु कुंकम गारि । तन चर्चंती निहारि निहारि ॥
सो तुषार छायौ ता देह । तबते मन भायौ अति नेह ॥२२२॥

अहु बहुक विध रमतो जोह । सहै परीसा बाईस सोह ॥
मन वच काय विचारै चित्त । ध्यावैं एक सदा भव मित्त ॥२२३॥

दोहा

श्रीपाल मुनि को कैवल्य प्राप्ति

तप कठिन मन दृढ़ कर, कियौ करम कौ नास ।
ताकौ उपज्यौ विमल पद, केवल ग्यान प्रकास ॥२२४॥

चौपाई

गंधकुटी की रचना

आसन कंपे देवनि तणे । आए सब सुर जै जै भणे ॥
धनपति निमाप्यौ सुभथान । गंधकुटी रचियौ परवान ॥२२५॥

कंचन मनि रतननि सौं जरी । अति रवनीक विराजै खरी
उभय चमर ढोरैं सिर छत्रु । सो संपइ बंछिमौ महंतु ॥२२६॥

तीन प्रदक्षिणा दे सुर राइ । भयौ करन प्रस्तुति थरि भाउ ॥
जै जै अष्ट कर्म निरदलन । जय जय प्रभु त्रिभुवन के सरन ॥२२७॥

जय जय श्री मंडल परमेस । जय जय मुनिगन व्रत उपदेस ॥
सिद्ध चक्र फल पावन देउ । जै सुर नर असुरनि कृत सेउ ॥२२८॥

जनम जरामृत नासन हार । जै मिथ्यामत मंडन झार ॥
जै जै सीतल पावन नीर । जै जै प्रभुनासन भव भीर ॥२२९॥

जै जै काम कंज हीम पूर । जै जै अघतम नासन सूर ॥
जै जै पंच महाव्रत धारन । जै जै मोहबली बल हारन ॥२३०॥

जै जै कोह सिंघ हत वीर । जै जै धम्म धुराधर धीर ॥
जै जै चौगय कंद निकंद । जै जै जगमंजन दुह दंद ॥२३१॥

जै जै भारज तम सुम संत । जै जै मुकित वधू वरकंत ॥
जै जै धरन धराधर सेस । जै जै भासुर मन हर भेस ॥२३२॥

जै जै ग्यांन कोस मुनिराइ । जै जै त्रिभुवन जीव सहाइ ॥
जै जै सम्यक दरसन सूर । जै जै लोह महीरुह पूर ॥ २३३॥
इह विधि स्तुति करि अनिवार । इन्द्र आदि सुर नरअपार ॥
धन विधि सुरलोका गए सवै । निज थानह मुनि बैठ्यो तबै ॥२३४॥
लोयालोय पयासै सोय । निरमल बांनी ताकी होय ॥

भव्य जीव प्रति बोधै जैन । मिथ्यातिमर विनास्यो तेन ॥२३५॥
सिद्ध चक्र व्रत प्रगट्यौ करयौ । राग दोस तिन सब पर हरयौ ॥
धर्माधर्म प्रकासक संत । भाष्यौ जिन व्योहार महंत ॥२३६॥

निर्वाण प्राप्ति

सुर नर पसु पंषी मन जिते । जिनवर मंगल गावैं तिते ॥
कर्म घातिया चूरैं सवै । वीरय काल भयौ कछु जबै ॥२३७॥
पुंनि श्रीपाल निमल पद भयौ । अमर मुक्ति तिय सौं भयौ ॥
अठ्ठ महा गुन पाई सिद्धि । परमातम भयौ सहि रिधि ॥२३८॥
जनम जरा तिन चूर्यौ मर्न । सो भयौ स्वामी त्रिभुवन सर्न ॥
समकित ग्याण दर्स वीर्य सुमंहत । अवगहण अगुरलघु अव्याहत ॥२३९॥
सिद्ध विराजै जीति निर्वान । सुख अनंत निवसै तिहु थान ॥
सुर नर मन गंध्रव धरि भाउ । आराधै मलमैं करि चाउ ॥२४०॥

दोहा

सिद्ध चक्र व्रत प्रगट करि, पंच महाव्रत गहि ॥
श्रीपाल मुक्तिहु गयो, सब सुख सकल निवारि ॥१४१॥

इति श्रीपाल चरित्र महापुराणे भव्यसंघ मंगल करणं ।
बुधजन मन रंजन, पातिग भंजन सिद्धचक्र विधि सुखहरनं ।
त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्लकृतं ।
बहु राजकि किनय जग जस विमल बहु विभूति को बरनि कहे ।
पुर पट्टण सर्व परहरिगच्छं पंचमहाव्रत सार गहं ।
सुभ ध्यान उपायो त्रिभुवन गायो कोटीभट्ट सो मुक्ति गयं । ११६४॥

चौपई

मैनासुन्दरी की तपस्या

पुनि मैनासुंदरि व्रत लीन । करै महातप वन अति पीन ॥
सही परीसा कही न जाइ । नाना विधि को कहूं बनाइ ॥ १॥

कंचन बरन देह भीतरी । कुंकम मंडित ही पल धरी ॥
कामातुर रहती पिय संग । सो वन बसी सहै दुख अंग ॥ ॥

अति सुवास कुंकम रस नारि । भूषन बहुत पहरती नारि ॥
सरद महल रहती सुखवास । कुसुम सेज सोवती उल्हास ॥ ३॥

दीपक जोति बहुति ही जाहि । सुख रहती रैन दिन माहि ॥
मंद पवन बहती दिन राति । कुसुमनि को बीजती सुहाति ॥ ४॥

धाप प्रात खोलरै सुजान । बसी तिमसिही दिन मान ॥
भीम बदन पहुचती सरीर । बहती तहां लोचन की नीर ॥ ५॥

अंजन मंजन भूषन साज । तन पहुचती प्रीति प्रिय काज ॥
अंबुज दल रहती कर सदैं । रहती पायकनि परि पग धरैं ॥ ६॥

खाती अति सुगंध कण सार । तक लवंग करती अतिसार ॥
सो ठाढी गिर परि सुकमाल । सिर पर तपै भान तिहकाल ॥ ७॥

पालिक पर रहती मन चाउ । भुवि परि भुसि न धरती पाउ ॥
कोमल कमल नैन अधिकार । पग नेवर पहरै झुनकार ॥ ८॥

बहि उपरि सुवती सुकमाल । तरु तल बैठी बनी बराल ॥
ध्यान सकल चिंतती तिह काल । कायोत्सर्ग रहती बहु भाइ ॥ ९॥

इह विधि जिन चैत्यालै जाइ । मुनि बंदती सयल सुखपाइ ॥
अब सो बन मारग पग धरैं । ग्रीषम रिति सिकता पर अरैं ॥१०॥

सरदै सोमवदन विकास । मल निवारती देषिय पास ॥
ग्रीषम महल महा परभात । हो ती मलिन सीत कै घात ॥११॥

हिम पटलनि करि छायौ सोइ । पंडुर बरन कहै सब कोइ ॥
इह विधि कष्ट सहै वर नारि । नाना विधि को कहै विचारि॥१२॥

संन्यासहि तिन तज्यो सरीर । तिज परजाइ छेदियौ बीर ॥
अच्युत स्वर्ग देव भयौ तेह । अपछरि कोटि भई ता गेह ॥१३॥

बाईस सागर आउ प्रधान । विलसै सुष को कहै बषान ॥
बहुर्यो चै जैहै शिव थान । ह्वै है सो परमेस प्रवान ॥१४॥

कुंद प्रभा रानी सुभ चित्त । वैही विधि तप चर्यौ पवित्त ॥
तप छांड्यौ केवल पद जोइ । तै ही सुरग भयौ सुर सोइ ॥१५॥

रैनमजूसां तप अति कर्यौ । पहूती सुरग महा सुभ धर्यौ ॥
करयौ महातप और ज नारि । सुभ गति सब को भई विचारि ॥१६॥

इह सिरि सिद्धचक्र फल सार । सोभव दुःष विनासन हार ॥
सब ही जीवनि कौं है सर्न । जनम जरा नासन सुभ कर्न ॥१७॥

भो मगधेस सुनौं धरि भाउ । जहां श्री सिद्धचक्र व्रत थाउ ॥
ऐसी विधि श्रेणिक नर पार । गनहर पैं सुनियौ सुभसार ॥१८॥

मनमै कह्यौ व्रत धरि साउ । नाना विधि मन उपज्यौ चाउ ॥
मन बच काय बंद्यौ जिन नाहु । पहुंतो नगरी बढ्यौ उछाहु ॥१९॥

हय गय रथ अरु दासी दास । अतुल अधिक बहु भोग विलास ॥
करै राज सौ इन्द्र समान । कीरति जाहि मंडल परवांन ॥२०॥

दोहा

भुंज्यौ सुष संसार को, श्रीपाल इन्द्र समान ॥
सिद्ध चक्र व्रत पारि करि, अमर्यौ मुकति मिलान ॥२१॥

चौपई

सिद्ध चक्र व्रत का महात्म्य

अरु नर नारी उत्तम सोइ । सिद्ध चक्र आराधै जोइ ॥
मन की भरम देइ छिटकाइ । पूर्जं अंकहि थिर मन लाइ ॥२२॥

जल चंदाक्षत पुहुप अनूप । नैवेद दीपक अरु शुभ धूप ॥
फल नाना विधि अरघ चढाइ । अष्ट प्रकारी पूज कराइ ॥२३॥

ताकैं रोग सोग नहिं रहै । ब्याधि सब दारिद्रनि रहै ॥
पुत्र कलित्र वियोग न होइ । भूत पिसाच दुखवैं कोइ ॥२४॥

डाइन साइन जोगन जाति । वे नसांय नावैं दिन राति ॥
इनको भै न ताहि संचरै । जो को सिद्धचक्र व्रत धरै ॥२५॥

नैन निरंध नैन हूँ लहै । रसना हीन बैन पुनि कहै ॥
श्रवन हीन सब सुनैं सरूप । कुष्टी तन सौं होइ अनूप ॥२६॥

कनक बरन तन ताको होइ । मन बच क्रम व्रत पालै सोइ ॥
सुष अपार भुंजै ससार । पावैं हय गय अगम अपार ॥२७॥

पावै रतन हीर मनि चंद । पावै हेम पेम सुष कंद ॥
अंतेवर अपछरा उनिहारि । पावै इंद्र पु मनह अकारि ॥२८॥

होहि दास पर वासि घने । सेवैं पति महि मंडल घनैं ॥
दत गहै तिन मानैं हारि । भाइस नैंक न सकई टारि ॥२९॥

भुंजै सुष जो मनमैं धरैं । इन्द्र समान राज सो करैं ॥
अति महिमा को कहै बढाइ । निहचै सो नर मुकतिह जाइ ॥३०॥

श्रीपाल जैसो फल लह्यौ । कवि परिमल्ल प्रगट करि कह्यौ ॥
भविजन सुनौं सुफल तिम जानि । यह व्रत आदरवौ परवांनि ॥३१॥

एक चित्त राखै मन ध्यान । सुख विधि उपजै सौभ्यान ॥
या संसार सयल सुख लहै । बहुरयौ मुकति पाइ सुष लहै ॥३२॥

काव्य

उग्रं गोपगिरी गंभीरमकरं सर्वं वरं पूजितं
जं धीरं हस्तिमवरं मदकलं माणान्वं दुर्जयं ।
तन्मध्ये श्रीमानसिंह अधिपते भूलोकपत्र पंकते ।
तन्राज्यं सुरनाथ तुल्यमचितं तत् जैन संकमते ॥३३॥

सुजस रजत भूरलो नामेन चंदिमवं ।
तत्पुत्रो गुणे राजदास विपुल मुक्तं च शीलवं सदा ॥
तत् सुतकुलदीपकस्तु प्रकट नाना चकरत्नो बुधः ।
तत्पुत्रं परिमल्ल धर्मसदन काव्यं इदं कीयते ॥३४॥

ख्याति चौपई

गोपगिरि गिरि बहु उत्तिम थान । सूरवीर तहां राजा मान ।
ता आगें चादन चौधरी । कीरती सब जग में बिस्तरी ।।३५।।

जाति बरहिया गुन गम्भीर । अति प्रताप कुल राजै धीर ।।
ता सुत रामदास परवीन । नंदन आसकरन सुभदीन ।।

ता सुत कुल मंडन परिमल्ल । बसै आगरे मैं करि सल्ल ।।
ता सम बुद्धि हीन नहिं आन । तिन सुनियौ श्रीपाल पुरान ।।३७।।

ताकी छांह कछु मति भई । तब श्रीपाल कथा बरनई ।
कीनी चौपई जाय बखांन । नवरस मिश्रित गुनह निधान ।।३६।।

होइ अशुद्ध जहां पद हानि । फेरि संवारो कवियन जांनि ।।
बार बार जंपोकर जोरि । बुध जन मोहि देहु मति थोरि ।।२२२२।।

[1]नंदौ गुरु जे गुरा के मूर, जिन ते होयमान आपूर ।
नंदौ जिनबानी सोहनी, जाते सुरगति होय अति घनी ।।

नंदौ कविकुल गुनह निवासु। जिहि पुरानु प्रगट्यो सुखबासु ।।
नंदौ पण्डित करै बखान नंदौ श्रोता लोग सुजान ।।

नंदौ जैन सभा चिरकाल, नंदौ जीवदया प्रतिपाल ।
देव कथा को अर्थी भवै. जिनवर धरम आराधी सबै ।।

जो भव दुख विनासन हारू, जो त्रिभुवन के जीव सिंगारू ।
जो त्रिभुवन वर मंगल करन, आदि अंत जीव को सरन ।।

जो शिव रमणी को वर भयौ, जो जिनदेव सभा को जयौ ।
ताकी कथा निरन्तर भई, कवि परिमल्ल कथा वरण ।।

थिर मनु कथा सुनै जो कोई, मन वांछित फल पावै सोइ ।
अरु जो पढ़ै पढावै सोय, ताके कोतै असुभ न होय ।।

अरु जो नर नारी व्रतु करैं, सो चहुं गति को भ्रमणु हरैं।
भव्यनको उपदेस बताय. निहचै सो नर मुक्ति हि जाय ।।

इति श्रीपाल कथा परिमल्ल कृत भाषा चौपाईबंध संपूर्णं

1 यह पाठ मूल प्रति में नहीं है ।

छप्पय

नगर आगरे मधि रहे जालमचंद मांही ।
संवति पैंसठि साल जेठ सुदि दसमी मांही ।
लिख्यौ चरित्र [illegible] एक मैं ।
निजु पर हेत कै काज मिटै कोपादिक थी कै ।
यह ग्रंथ बांचो सुनी, सील छिमा धीरज गहै ।।
सुभ गति [illegible], कर्मकाटि शिवपद लहै ।।

।। श्री ।।

मिति पौस सुदि १० दीतवार सं. १८८९ ।।

समाप्त



कवि धनपाल

धनपाल कवि अब तक हमारे लिये अज्ञात एवं अपरिचित हैं। कवयित्री बाई अजीतमति के समान प्रस्तुत पुष्प मे ये दूसरे कवि है जिनका यहां परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। धनपाल कवि की रचनाओ का संग्रह टोंक जिले के प्रमुख वैष्णव तीर्थस्थल डिग्गी नगर के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक गुटके मे उपललब्ध हुआ है। लेखक ने जून१९८३ मे जब नगर के शास्त्र भण्डार के सूचीकरण का कार्य किया तब इस महत्वपूर्ण कवि की रचनाओ का पता लग सका।

धनपाल प्राचीन कवि देल्ह के सुपुत्र थे। ये वे ही देल्ह कवि हैं जिनकी अब तक बुद्धि प्रकाश एव विशाल कीर्ति गीत नामक कृतिया उपलब्ध हुई है। दोनो ही लघु रचनायें हे। इनके एक पुत्र ठक्कुरसी बडे अच्छे कवि थे जिनकी अब तक १५ कृतियां प्राप्त हो चुकी है। कविवर ठक्कुरसी का विस्तृत परिचय एवं उनकी कृतियो के मूलपाठ हम श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के दूसरे पुष्प मे दे चुके हैं।[1]ठक्कुरसी के परिचय के आधार पर धनपाल कवि संभवत. देल्ह कवि के दूसरे पुत्र थे। इसलिए ये भी ढूढाड के प्रसिद्ध नगर चम्पावती के रहने वाले थे। कवि जाति से खण्डेलवाल दि० जैन एव गोत्र से पहाड़िया थे। धनपाल कवि ने अपनी अधिकाश कृतियों मे अपने बडे भाई ठक्कुरसी के समान अपने आप को "देल्ह नंदन लिखा है।

समय—कविवर ठक्कुरसी का समय हमने संवत् १५२० से १५९० तक का माना है धनपाल ठक्कुरसी के छोटे भाई थे इसलिये इनका समय संवत् १५२५ से १५९० तक का माना जा सकता है। स्वयं कवि ने अपनी कृतियों में रचना काल काल का उल्लेख नहीं किया इसलिये उक्त समय ही ठीक जान पड़ता है।

कृतियां—धनपाल कवि की ठक्कुरसी के समान अधिक रचनायें तो उपलब्ध नही हो सकी हे लेकिन एक ही गुटके में उपलब्ध कवि की रचनायें निम्न प्रकार हैं—

1. देखिये—कविवर बूचराज एवं उनके समकालीन कवि
   लेखक एवं सम्पादक—डा० कस्तूरचंद कासलीवाल, पृष्ठ सं. २३८–२९५

१. मुनिसुव्रत जिनवन्दना
२ नेमिजिन वन्दना
३. वर्धमान गीत
४ आदि जिन गीत

इस प्रकार गुटके मे कवि की चार लघु कृतियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के अन्य शास्त्र भण्डारों में हो सकता है धनपाल कवि की और भी रचनाओं की उपलब्धि हो जावे। उक्त चारों कृतियों का परिचय निम्न प्रकार है:—

१ मुनिसुव्रत जिन वन्दना :—

कवि की यह एक ऐतिहासिक वन्दना है जिसमे राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित केशोराय पाटन के प्रसिद्ध जैन मं में विरा. भगवान मुनिसुव्रतनाथ की वंदना का वर्णन है। वर्तमान मे केशोराय पाटन नाम से प्रसिद्ध नगर पहिले पाटन नाम से और इसके पूर्व आश्रम पत्तन नाम से प्रसिद्ध था। स्वयं कवि धनपाल ने पाटन को अतिशय क्षेत्र लिखा है जहां भक्तगण वदना के लिए आते रहते है और अपनी मनोकामना पूर्ण करते रहते हैं। ऐसे पाटन नगर में मुनिसुव्रतनाथ का अतिशय क्षेत्र है जिसकी वन्दना के लिए मुनि आर्यिका, श्रावक श्राविका सभी आते रहते हैं। इसके पश्चात् कवि ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ के पिता सुमति राजा, माता पद्मावती एवं उनके लाञ्छन कछुवे का उल्लेख किया है। इसी तरह उनके शेष जीवन का भी छन्दों मे उल्लेख किया है। पूरी वन्दना चार छन्दों मे पूर्ण होती है और अन्त मे कवि ने अपने पिता एवं स्वय के नामोल्लेख के साथ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की कृपा की याचना की है :—

पद कमल सेवित देल्ह नन्दन धनपाल विनती करहे।
मुनिसुव्रत जे मोल माथ तव भवजल पार करो ॥४॥

अर्थात् कवि के समय से भी भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दर्शनार्थ सपरिवार आने की परम्परा थी कवि ने उक्त वन्दना को राग मलार/मल्हार में लिखा है।

२. नेमि जिन वन्दना—

कवि की यह दूसरी ऐतिहासिक कृति है जिसमे भगवान नेमिनाथ की वन्दना की गयी है। इस गीत में जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी आमेर के दि० जैन मन्दिर सांवला बाबा के (नेमिनाथ स्वामी) स्तवन के पश्चात् नेमिनाथ स्वामी के माता पिता, जन्म स्थान, तोरण द्वार से लौटने की घटना, राजुल व स्वाम

गिरनार पर्वत पर तप, कैवल्य एवं निर्वाण कल्याणक का वर्णन किया गया है। १५वीं शताब्दि में आमेर के सांवला बाबा के मन्दिर में स्थित नेमिनाथ स्वामी की मूल नायक प्रतिमा अत्यधिक प्रसिद्ध एवं अतिशय युक्त मानी जाती थी। कवि ने जिसका निम्न प्रकार वर्णन किया है :—

> जाह्नि नाम लीया दुरित नासौ, गुणह गणत न पार।
> अंबावती प्रतिव्यंब, शोभिता स्याम वर्ण गहीर।
> वन्दहु सुभ वियहु नेमि जिणवर, दीह अटु शरीर ॥१॥

इस वन्दना मे पांच छन्द हैं। कवि ने इस गीत मे अपने आपको वेल्ह तनय लिखा है।

३. वर्धमान गीत :—

यह कवि का तीसरा ऐतिहासिक गीत है। इस गीत में कवि ने जयपुर से १२ किलो मीटर दक्षिण में स्थित प्राचीन नगर सांगानेर के संघी जी के मन्दिर मे विराजमान महावीर स्वामी की स्तवन के रूप मे भगवान महावीर का माता पिता, गर्भ, तप कैवल्य एव निर्वाण स्थान पावापुरी का उल्लेख किया है तथा गौतम आदि ग्यारह गणधरों का एवं अन्य घटनाओ का वर्णन किया है। गीत में पांच छन्द हैं। सांगानेर मे संघी जी के मन्दिर का निर्माण १२वीं शताब्दि में हुआ था। मन्दिर अपनी कला एवं शिखरो के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है।

४. आदि जिन गीत :—

यह कवि का चौथा गीत है जिसमें प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का का स्तवन कियागया है कवि ने टोडारायसिंह के दि.जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा को अपने युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण लिखा है। गीत के शेष भाग में इसी तरह कावर्णन है जैसे उक्त तीन तीर्थंकरों के गीतों में वर्णन किया गया है।

इस प्रकार चारों ही गीतो मे कवि ने स्थान विशेष के मन्दिरों में विराजमान प्रतिमाओं का नामोल्लेख करके उनमें इतिहास का पुट दिया है। कवि का मुख्य निवास चम्पावती था लेकिन वहां के किसी मन्दिर की प्रतिमा का उल्लेख नहीं करके पाटन (केशोराय) आमेर, सागानेर व टोडारायसिंह के मन्दिरों के महात्म्य का वर्णन किया है।

भाषा—गीतों की भाषा अपभ्रंश प्रभावित राजस्थानी है। कवि का मुख्य कार्य क्षेत्र ढूंढाड़ प्रदेश था इसलिये गीतो की भाषामें ढूंढारी भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

गीतों के मूल पाठ

मुनिसुव्रत जिन बल्लभा

रागु मल्हार

सकल जिरोसर पणउ सरसैं धरि ध्यानो जी ।
ए जह पाटणु नगर भलै तहुं अतिशय मानो जी ।
इक मानु प्रतिसय पेमु जाणिवि भविक जन वंदे घणा ।
ए तुरिय संघ आनंद उपजै होइ महोछा जिरा तणा ।
परत्यासु पूरैं विघन चूरैं प्रगट जिरावर जाणि जे ।
पाटण मामकि सुथिर बैठैं सुव्रता जिन वंदिजै ।।१।।

ए जो सुमति नरेसर नंदरा पदमावती मातो जी ।
तसु लछनि काछिव सोहैं स्याम सरीरो जी ।
इक स्याम वर्णहि प्रति मनोहर देखतां मनु मोहिए ।
इंद्रादिकह जामरा महोछा मेर सिहरां सोहए ।
गायंति किन्नर अमर अछरि आणि माय सम्मपए ।
वीसमै जिरावर वांदि सखी हे मनह वंछितु अप्पए ।।२।।

ए जहि जाणैं हो जोवनु वंतु भवै वैराग्यो जी ।
ए जहि जीतै हो मदन भयंकर उपसम रागो जी ।
उपसम रागा मदन जिहैं पंच आश्रव टालए ।
दसरा णारा चरित्तमय जीव णास केवल पालए ।
दश अठ गणहर मलि धाविहि समोशरण सज्जए ।
मनसुव्रतां जिन चरण वंदे दुरित सयलां भज्जए ।।३।।

ए जो बसु गुरा मंडित जिणवर मुकति दातारो ।
चउतीसाति अमरां सोभिता गुणंह अपाराजी ।
अपार गुराह न पार वार्म विविध जीव हितंकरो ।
मनवच काय नरनारि सेवै जनमि जनमि सुखंकरो ।
पद कमल सेवित देवह सयल भवपास छिपा करो ।
मनसुव्रतां जे जात पांवै सदा संपसु त्याह घरो ।

२. नेमीश्वर वंदना

राग सोरठी

परणमो आदि जिणंदो जहि परणवां होइ अनंदो ।
गुण प्रगट करै निसिचंदो, हूं गाउं नेमिजिणंदो ।
गुण गाइसं श्री नेमि जिणवर, सयल सुख दातार।
जहि नाम लीया दुरित नासै, गुणह गणत न पार ।
अबावती प्रतिव्यंब शोभिता स्याम वर्ण गहीर ।
वंदहु सुभ वीयहु नेमि जिणु, दोइ अठु धनुष शरीरु ।।१।।

सूरीपुरह उपन्नो, राइ समद विजै सुत धन्नो ।
वर लक्षण गुण सपुन्नो, सिवदेवी कूषि रतन्नो ।
सिवदेवी माता उरि उपन्नो, सयल सुरपति आइया ।
ले मेर सिहरां करि महोछा, इंद्र आगै नच्चिया ।
तिहु ग्यान करि संजुत्त, दीसै सुन्दरा आकार ।
वंदहु सुभ वीयहु नेमि जिणवरु, जादम वंस सिणगारु ।।२।।

हलि सम्बविश गोविंदो, तु।मे उग्रसेणि घी मंगो ।
राजमती वरीय सुचंगो सा परणै नेमि जिणंदो ।
नेमि जिणवरु व्याहण चढिया, तोरणि तांम पराइया ।
हकारि सारथि नेमि पूंछा, जीव कांइ पुकारिया ।
ए भगति होइसी तुम्ह तणी राय उग्रसेणी अणाइया ।
रथु मोडि पाछे चलैं जिणवरु, आइ चढे गिरनारिया ।।३।।

सो जाइ चढे गिरनारे जहि तजीये राजमती नारे ।
सव् अथिर जाणि ससारो, धुणि धरै महाव्रत भारो ।
व्रत भारु ले छद्‌मस्तु रहिये लोयती यह पसंसीयै ।
वरदत्त घरि पारणं किये, प्रथम गणहरु आइयै ।
वाणीय सरस विसा कोमल, भवि जनह नमंसीये ।
वन्दौ हु शुभकियौ नेमि जिणवर, सब्वजीव अभौ दियो ।।४।।

छायाल गुणह संजुतो, बाइसमु जिणवर पत्तो ।
दश अठ दोश वे चत्तो, पुणु अठ गुणह संयुत्तो ।
तिहु लोक वंदित चरण जिणवर, संख लंछण सोभियो ।
गिरणारि गिरि निर्व्वाण थाणक अठमी पुहवी गयो ।
नरनारि जे गुण कहहि स्वामी, सफल जन्मह त्या तना ।
कवि बेल्हु तन बनपाल प्रणमि ते भेटियो मैय नेमि जिणा ।।५।।

२. वर्धमान गीत

रासु अलार

सकल जिणेसर ध्याउं, सरसै आधारे जी।
गुण गाउं श्री वीर जिणेसर बुद्धि अणुसारें जी।
गुणा गाइसुं श्री वीर जिणवरु, बुधि कै अनुसारि।
तसु नाम लीया होइ नव निधि भेटिया भवपारु।
सोनानवरि प्रतिबिंब सोभिता, हेम वर्ण शरीर।
बंदहु सुभ भवियहु वीर जिणवरु, सत्त हव सरीर ।।१।।

ए जो कुंडल पुरिहिं अवतरें भयेंऊ अनंदो जी।
राणी तिशला दे उवरि ऊपनो सिधारथ नंदो जी।
तिशलादे माता उरि उपना राय सिद्धारथ नंदणो।
तसु इन्द्र आगें आइ नच्चें देव दुंदभी वाजणो।
जिम मेघ गजित मोर नाचित चात्रिग करति अनंदु।
तिम पेखि भवियहु वीर जिणवरु, मेइसमउ जिणंदु ।।२।।

ए जो तीस बरस लघु जिणवरु, मुज्यो ग्रिह वासो जी।
पुणु ज्युण तिण समु जासिरु, लीयें वन वासो जी।
वनवासु ले व्रत भार धरियें, लोयतीयह जु हारीयें।
दश अठु दोसह रहितु स्वामी, जीव पणु ता धारीयें।
दोइदस बरिस छद्मस्त रहियें, इन्द्र आसणु कंपियें।
सो वर्धमान जिणंद बंदहु, सब भव खय कारियें ।।३।।

ए जो केवल ग्यानु ऊपाया, मुनिजन आया जी।
तह गोतम आदिहिं ग्यारा गणहर आया जी।
गोतम श्रोतम अरु निरोतम सयल गणहर आइया।
वाणीय कै परगासु हुवो, अमरगण जय कारीया।
सो अतिसै जिणु नमो भवीयहु चैतीसौ ती रायरू ।।४।।

ए जो तीस बरस फिरि जिणवरु संबोध्या मानो जी।
पुणु अंत कालु आयं जासिरु पूरा सुम ध्यानो।
सुभ ध्यान पूरा कर्म चूरा पंचमी गति पाइया।
पावापुरिहिं निर्वाण थानकु भव्यजन नसोसिया।
कवि वैसहु नदणु मनि अनंदणु कल्पपाल गाइया।
मह सयल बंछितु होऊ स्वामी वीर जिणु जै कारिया ।।५।।

।। इति श्री वर्धमान गीत समाप्ता ।।

४. आदि जिन गीत

राग गौडी

सो जिणसमरहु भावधरि जहि सु चाहो भवपार हो ।
मरु दे माता उरि धरै नाभि घरा अवतार हो ।
सो नाभि नदनु भविक वंदै. तोहा नयरि मझारि ।
पंचसै धनुष प्रमाण काया व्रिष लाछण धारि ।
सर्व्वार्थसिद्धि थे आइया ईसाक वंशह जाणि ।
अजोध्या नगरी भयो जिणु रिषभ गुण की खानि ।।१।।
जनम चैत्र वदि नवमी को कचनवरण शरीर हो ।

इन्द्र महोछे आइया, मेर न्हायो वीर हो ।
इकु मेर सिहरां हयो जिणवरु इंद्र नाचै बहु परे ।
सचीसइहथां हलेविणु, आणियो माता घरे ।
कुमरै पणे वखि लक्ष पूरब, तेसठि रजु करेइ ।
निवेउ पायो वेलि अपछरे सोयंतीय हसरेइ ।।२।।
आखातिजाहा पारणो धरि श्रेयांस नरेसहो ।
वरस सहस छदमस्तु भी केवल फागुण ग्यासिहो ।
फागुण ग्यारसी हुवा केवलु समोसरण बिराजये ।
व्रिषभ सेणह आदि गणहर वाणि दुंदभी गाजियो ।
तपु लक्ष पूरब जेणिपाल्यो छहै हरिहि नमसिवो ।
सो आदि जिणवरु वंदहु भवियहु धम्म मारग दसियो ।।३।।
इडक पाटक पूरणा पूरया ध्यान विचारिहो ।
गिरि कयलासह सिध हुआ अठ गुणह विचारिहो ।
कैलास गिरि निर्वाण थानकु अठ गुण सजुतीया ।
जोति मैं जोति समाय पैठा पठहि सुणहि ति धनुजिया ।
कवि देल्ह नदण सुगति मांगै धनपालह गाइया ।
श्री आदि जिणवरु नमौ भवियहु तुरिय संघ मनि भाइया ।।४।।

भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति

महेन्द्रकीर्त्ति नाम वाले एक से अधिक भट्टारक हो गये हैं लेकिन भट्टारक पट्टावलियों के अनुसार अब तक निम्न प्रकार परिचय मिलता है :—

(१) भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति — (१) अजमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य (सं० १७६१)

(२) ,, — (२) आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य (सं० १७९०)

(३) ,, — (३) ,, भ. देवेन्द्रकीर्त्ति (द्वितीय) के शिष्य (सं० १९३१)

(४) आचार्य महेन्द्र कीर्त्ति — (४) सूरत गादी के भट्टारक मल्लिभूषण के शिष्य (सं० १५७०)

उक्त चार महेन्द्रकीर्त्ति नाम वाले विद्वानो मे से कौन से महेन्द्र कीर्त्ति प्रस्तुत पदो के रचयिता हैं। जिस गुटके मे इन पदो का संग्रह मिला है उसमे भी कोई लेखन काल नहीं दिया। लेकिन गुटका १७ वी अथवा १८ शताब्दि मे लिपि बद्ध हुआ लगता है इसलिए प्रस्तुत महेन्द्रकीर्त्ति भ. देवेन्द्रकीर्त्ति (द्वितीय) के शिष्य तो नही हो सकते क्योंकि वे तो अभी १००वर्ष पूर्व ही हुए थे। सूरत गादी के भट्टारक मल्लि भूषण के शिष्य आचार्य महेन्द्र कीर्त्ति भी इन पदों के रचयिता नही हो सकते क्योंकि पदों की भाषा एवं शैली१६वीं शताब्दि जैसी नहीं है। अब शेष दो भट्टारक रहे एक अजमेर गादी के, दूसरे आमेर गादी के। डिग्गी नगर जिसमें प्रस्तुत गुटका संग्रहीत है वह आमेर गादी के भट्टारक का नगर न होकर अजमेर गादी के भट्टारक के अन्तर्गत आता था इसलिए प्रस्तुत पदो के रचियता भट्टारक महेन्द्र भट्टारक विद्यानन्द के शिष्य थे जिनका पट्टाभिषेक संवत् १७६१ मे हुआ था।

संवत् १७५१ में भट्टारक रत्नकीर्त्ति ने अजमेर में पुनः स्वतन्त्र भट्टारक गादी की स्थापना की थी और अपना पुनः पट्टाभिषेक महोत्सव आयोजित किया था। भट्टारक रत्नकीर्त्ति के पश्चात् विद्यानन्द (संवत् १७६६) में और भट्टारक

महेन्द्रकीर्त्ति स० १७६६ में भट्टारक गादी पर अभिषिक्त हुए थे ऐसा उल्लेख भट्टारक पटावलियों मे मिलता है। महेन्द्रकीर्त्ति के चार वर्ष पश्चात् ही संवत् १७७१ मे भट्टारक अनन्तकीर्त्ति का पट्टाभिषेक होने का उल्लेख मिलता है जिसमे महेन्द्रकीर्त्ति का समय संवत् १७६६—१७७३ तक (सन् १७१२ से १७१६) तक का निश्चित होता है और इसके आधार पर उनके सभी पद १८वीं शताब्दि के प्रथम चरण मे निर्मित लगते है।

महेन्द्रकीर्ति भट्टारक थे। पदो के मूल्याकन से पता चलता है कि वे आध्यत्मिकता की ओर अधिक रुचि रखते थे। अभी तक इनके जितने पद उपलब्ध हुए हैं लेकिन वे सभी पद भाव भाषा की दृष्टि से उत्तम पद हैं।

(१) भ्रमस्यू भूलि रह्यो ससार—प्रस्तुत पद मे कवि ने प्रत्येक अन्तरे मे उदाहरणो द्वारा यह प्राणी मोह मगन होकर आत्मा को किस प्रकार भूल बैठा है इसका अच्छा वर्णन किया है। यह प्राणी व्यर्थ ही मोह के वश होकर अपने आपको परतन्त्र कर लेता है और उलटे कार्य करने मे ही सुख मान बैठता है। यह मानव बन्दर, तोता, स्वान, सिंह, हाथी, हिरण आदि के समान विपरीत कार्य करने पर भी अपने आपको सुखी मानने लगता है और मृग तृष्णा के समान दिन रात फिरता रहता है।

(२) मेरो मन विषयाही स्यु राच्यो—पद में कवि ने मानव की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की है कि वह जीवन भर मृत्यु के अन्तिम क्षण तक स्त्री, कुटुम्ब, धन सपत्ति आदि में ही मगन रहता है और अपने आत्म कल्याण की ओर तनिक भी ध्यान नही देता।

(३) साधो अद्भुत निधि घर मांही एव साधो अद्भुत निधि घरि पाई—इन दो पदों में मानव को अपनी निधि को पहिचानने का आग्रह किया है। यह मानव अपनी आत्मा को भूलकर उसे अन्यत्र ढूढने का प्रयास करता हैं। जब कि आत्मा का शरीर मे तिलो मे तेल, काष्ठ मे अग्नि के समान वास रहता हैं।

(४) देखो कर्म्म की गति न्यारी—इस पद मे कवि ने रावण, मन्दोदरी, राम सीता, यशोधर राजा अभित देवी राणी, माता चन्द्रमती आदि के जीवन में घटित घटनाओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करते हुए कर्मों की विचित्र लीला का अच्छा चित्र उतारा है और अन्त मे भगवान जिनेन्द्र की आराधना में ही कर्मों के जाल से छुटकारा मिल सकता है इसका वर्णन किया है।

(५) सेवत विषय तृपति नहि मानैं—प्रस्तुत पद में कवि ने संक्षिप्त रूप में मानव स्वभाव पर प्रकाश डाला है कि वह संसार में विषयों के सेवन करते रहने पर अपने आपको अतृप्त मानता है और दिन रात उन्हीं के पीछे दौड़ता रहता है।

(६) सब दु.ख मूल है मिथ्यात—इस पद मे कवि ने मिथ्यात्व को ही मानव के जग मे भ्रमित होते रहने का प्रधान कारण माना है तथा पच्चीस दोषों को छोडने एवं पंच परमेष्ठी का ध्यान ही मिथ्यात्व को दूर करने एवं सम्यकत्व प्राप्ति का उपाय बतलाया हैं।

(७) करुणा करो भगवंत जिनेश्वर पय नमुं—यह पद भक्ति परक है जिसमें प्रभु भक्ति से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है इसका वर्णन कियागया है। जिनेन्द्रदेव की महिमा वेद भी बखान करने में असमर्थ रहे हैं इसलिए उन्होंने "नेति नेति" शब्द के द्वारा उनके महात्म्य को प्रगट किया है। वेदों के नेति नेति शब्दों का वैष्णव कवियों ने भी वर्णन किया है।

(८) "चेतन काहे भरम भुलाना" एवं चेतन चेतत क्यूं नहि मनमैं—इन पदों में कवि ने बहुत ही रोमांचक शब्दो में मानव को सावधान रहने का आग्रह किया है। वह प्राणी आत्म स्वभाव को छोड़ कर पर स्वभाव में लग जाता और रतन को छोड कर कांच के टुकड़े मे ही लुभाता रहता है।

इस प्रकार उक्त पदों के मूल्यांकन से पता चलता है कि भट्टारक महेन्द्र कीर्ति आध्यात्मिक संत थे जो अपने प्रवचनो एव साहित्य रचना केद्वारा सदैव समाज को नैतिकता एवं आत्म स्वरूप को पहिचानने का पाठ पढ़ाया करते थे। उनके सभी पदो मे आत्मचिंतन एवं आत्मज्ञान की जो धारा दिखायी देती है वह अत्यधिक स्वाभाविक है। ऐसा मालूम पड़ता है जैसे महेन्द्रकीर्ति को रात दिन आत्मज्ञान प्राप्त करने की चिंता सताती रहती थी और उसी चिंता को उन्होंने अपने हिन्दी पदों में व्यक्त किया हो। कवि के पदों मे महाकवि बनारसीदास के पदों की छाप दिखायी देती है तथा कबीर एवं दूसरे निर्गुण पंथी कवियों की झलक दृष्टिगोचर होती है लेकिन इतना अवश्य है कि कवि ने इन पदों में अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का भी अच्छा उपयोग किया है।

भाषा—महेन्द्रकीर्ति के पदो की भाषा राजस्थानी के समीप है। १८वीं शताब्दी में जिस प्रकार भाषा मे निखार आने लगा था वही रूप में हमें इन पदों की भाषा में दिखाई देता है लेकिन फिर भी राजस्थानी के शब्दो की बहुलता है स्युं, राच्यौ, माच्यो जैसी क्रिया पद शब्द राजस्थानी भाषाके साथ अपनी अधिक निकटता प्रदर्शित करते हैं।

भट्टारक महेंद्रकीर्ति रचित पद

१

राग आसावरी

अमस्यू भूलि रह्यो संसार ।
मोह मगन आतम गुण भूल्यो, भज्यो न जिनव्रत सार ।।भ्र०।।१।।
सीत व्यथा पीडित ज्यु मरकट, तापै गुंजा हार ।
ऊंधै मुख नलनी को सुवटा, कुंणै पटक्यो डार ।।भ्र०।।२।।
ज्युं नर मूढ राचि विसयामिष, मगन भयौ तिहुं काल ।
सुष को लेस कहू नहि सुपनै, नरक निगोद्यामार ।।भ्र०।।३।।
जैसे स्वांन मुसैं मंदिर मैं, केहरि कूप गुंजार ।।
फटक सिला मैं देषि आप गज, कीन्हौ दशन प्रहार ।।भ्र०।।४।।
ज्युं मृग वन मैं देषि भाडली, मानि सरोवर वार ।।
चहुं दिसि फिरयौ न पायो जलकरण, फूल्यो कांस गवांर ।।भ्र०।।५।।
पायकुटंब भयौ ग्रह धोरी, सब सिर धारयौ भार ।।
एकलडौ दुष सहै निरंतर, जामण मरण अपार ।।भ्र०।।६।।

२

राग आसा

मेरो मन विषयाहीं स्युं राच्यो ।
सुष को साज नही सुपनामैं, परत्रिय देखि देखि नाठ्यौ ।।
बनकी त्रिषा प्रीति वनितास्युं, देषि परिग्रह माच्यो ।।मे०।।१।।
जब लग पत न करै भवि प्राणी, अशुभ कर्म नहिं पाच्यो ।।
महेन्द्रकीर्त्ति तब कहा करौगे, नरक निगोदनि पांच्यौ ।।मे०।।२।।

३

राग सारंग तथा पौर

देखो मोह तणी अधिकाई, सो मोपै कहियन जाई ।।
जिह दुख दीयो अनादि ही कालहि, फिरि फिरि तिह लपटाई ।।दे०।।

इहै दुष्ट दुर्बलि दुखदाता, नरक निगोदि निसाई ।।
छेदन भेदन ताडन तापन, सूला सेज सुटाई ।।दे०।।२।।

चहुगति भ्रम्यो महा दुख पायो. पराधीन भयो भाई ।।
पर की संगति आपो छीजै, निज गुण सबै घटाई ।।दे०।।३।।

तातैं सम्यक दर्शन सेवो, भव्य जीव सुखदाई ।।
महेन्द्रकीर्त्ति तब होइ निरंजन आवागमन मिटाई ।।दे०।।४।।

४

राग आसावरी

साधो अद्भुत निधि घर मांही ।
इत उत फिरै करै नहि सोधी, अपनी जानत नांही ।।सा०।।१।।

जैसे मृग कस्तूरी कारण बनमें हिंडत डोलै ।
मोह मिथ्यात विकल भयो प्राणी, परम धर्म नहि तोलै ।।सा०।।२।।

घर पुरसारथ भोजन सीझा, परनी वनि कुं भटकत अंधा ।।
त्युं त्यौं जीव भ्रमत सुख कारणि, लागि रह्यो दुह धंधा ।।सा०।।३।।

सत्तर कोडाकोडी सागर, मोह महाथिति जाणी ।।
करण तीनि करि समकित राख्यौ, तब असल निधि जाणी ।।सा०।।४।।

सप्त प्रकृति उपशम करि राखी, तब तैं क्षायिक राई ।।
वेदक तैं विच घर गुण वेदै, यही मोक्ष की साई ।।सा०।।५।।

दर्शन मोह कीयो सत चूरण, त्रेसठि प्रकृति विनासी ।।
महेन्द्रकीर्ति प्रभु भयौ जिनेश्वर लोकालोक प्रकासी ।।सा०।।६।।

५

राग ग्रासावरी

साधो ग्रद्भुत निधि घरि पाई ।
तीं विनु भ्रम्यो ग्रनंत चतुर्गति, श्री जिनराज बताई ।।सा०।।१।।

ज्यु ग्रपना पुरुषां की थूणी, घणा काल की राषी ।।
बीजक सहीत पत्र ज्यों निकस्यो, सांप्रत भयो सुसाषी ।।सा०।।२।।

ज्यु परमातम देह भूमि मैं, त्यु कचन पाषाणे ।।
ग्रगनि काष्ठ तिल तेल ही वासो, यूं ग्रातम निधि जाणे ।।सा०।।३।।

ग्रष्ट कर्म्म रज भू ग्राछादी भेद विना नहीं पावै ।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण बल, सद्गुरु यतन लषावै ।।सा०।।४।।

सौ गुरु चौतिस ग्रतिसय जाके ग्रनन्त चतुष्टय सोहै ।
ग्रष्ट प्रातिहार्य प्रभु सोभित, भव्य जनन मन मोहै। सा०।।५।।

निकट भव्य सो महा उपसमी, भद्ररूप परिणामी ।।
महेद्रकीर्त्ति ग्रातम निधि परसैं,मुकति नयर पदगामी ।।सा०।।६।।

६

राग ग्रासावरी

देषो कर्मन की गति न्यारी ।
नही टरत कहौ नहि टारी ।।

रावन सरीखे सुभट महानर. कहै मंदोदरी राणी ।
सीता सती देहु रघुपती कौ, राज करौ ग्रती जाणी ।।दे०।।१।।

ग्रतेवर जाकैं सहस ग्रठारा रूप कला गुण सोहै ।
विद्याधर पुत्री ग्रति सुंदर, ग्रहनिश पिय मन मोहै ।।दे०।।२।।

राव यशोधर विष दे मारयो ग्रम्रित देवी राणी ।
चद्रमती माता की सगति, मिथ्या बुद्धि बषाणी ।.दे०।।३।।

ग्रौर ग्रसख्य भए महाराजा, तेहु कर्म वसि हारे ।
सम्यक् भाव विना जीव जेते, बहुगति मांही मारे ।।दे०।।४।।

इसौ जानि जिन धर्म्म ग्राराधो, हितू न दूजो कोई ।
महेंद्रकीर्त्ति जिन चरण शरण तैं जन्म मरण नही होई ।।दे०।।५।।

७

राग कानरो

परमेसुर निस्तारो ।
करुणा करि मोहि तारो हो प्रभु ॥परमे०॥
परमदयाल परमपद गामी, अघमोचन अघटारो ॥
वीतराग अरहंत जिनेश्वर, मुकति रमनि वर प्यारो ॥हो प्रभु०॥१॥
अधम उधारण सिव सुखकारण, भव्य जीव आधारो ।
महेंद्रकीर्त्ति कर जोरि वीनवै, आवागमन निवारो ॥हो प्रभु०॥२॥

८

राग कानरो

क्युं करि भक्ति करौ प्रभु तेरी,
अष्ट कर्म घन वैरी ॥हो प्रभु०॥१॥
मोह मिथ्यात महा रिपु घेरयो, छांडत लार न नेरी हो ॥
चहुंगति मांहि भ्रम्यो चिरकाल,तुम सरणागत हेरी हो ॥हो प्रभु०॥२॥
जिन अनंतगुण स्मरण,आत्म शक्ति सु सेरी हो ॥हो प्रभु०॥३॥
महेंद्रकीर्ति अरहंत ध्यान तै,मुकतिवधू अति नियरि हो॥हो प्रभु०॥४॥

९

राग कानरो

भव सागर भ्रमतो दुख पायो, मोह मिथ्यात महाविष खायो ॥
यो संसार समुद्र अपरमित, भव जल तरयो पार नही पायो ॥
काम क्रोध मद लोभ महामद, जन्ममरण जक चक भरायो ॥भ०॥१॥
चहुंगति बडवानल अति तापै, नरक पयास मांहि संतायो ॥
जैन धरम तह परम पयोहण, भव्य जीवनि मन भायो ॥भ०॥२॥
शास्त्र विवेक पाइ हिय राखी, समकित हित अति पवन सुहायो ॥
महेंद्रकीर्त्ति शिव रत्न दीपकुं, श्री जिनराज सुपंथ बतायो ॥भ०॥३॥

१०

राग कानरो

सेवत विषय तृपति नहि मानै,
मदन महारिपु कै मदपानै ।।
जैसे स्वान अस्थि चर्व्वण तैं चाटि रुधिर मनमै सुष जानै ।।

भ्रम वसि भूलि गयो आतमनिधि,मूढ और की ओर ही ठाणैं ।।से०।।१
निज स्वभाव तजि परसग राच्यो, मोह् विकल ममता चित आणै ।।
महेंद्रकीर्त्ति प्रभु सेइ जिनेश्वर, पूजैं तीनि भुवन के राणैं ।।से०।।२।।

११

राग केदारो

सब दुष मूल है मिथ्यात ।
जाके उदै जीव नही चेतैं करैं आतमघात ।।स०।।१।।

मोह् दर्शन नाम जाकैं घरैं प्रति उतपात ।।
छाडि दोष पचीस तम घन होइ समकति प्रात ।।स०।।२।।

पंच गुरु पद नाम ध्यायो, द्रिढ ह्वैं रहहै तात रमात ।।
महेन्द्रकीर्त्ति सेइ श्री जिनवर, होवौ निर्मल गात ।।स०।।३।।

१२

राग केदारो

महिमा अपार जाके गुणको न आरापार
जग को अधार इसो देव जिणदेव ध्याइये ।।

इन्द्रादिक देव जाकी, मन वचकाय करै सेव,
तीस च्यारि अतिसय बिराजमान गाइये ।।

अनत चतुष्टय प्रगट प्रतिभासै सदा,
आठ प्रातिहार्य महाविभूति पाइये ।।

अहो भव्य वृन्द तजि मोह् मान माया फंद,
बीतराग पद वंद निश्य चित्त लाइये ।।

१३

राग धनाश्री

करुणा करौ भगवंत जिनेश्वर पय नवु ॥
जिनगुण सिंधु अपार, पार कहि कैसे पावु ॥
इन्द्री बुधि मनहीन कहो प्रभु क्यू करि गावु ॥
मेरु चढण कु पांगुलो उदधि तरण भुज हीन ॥
पंछी उडै आकास मैं ताहि गिणै द्रिग छीन ॥जिने०॥१॥

गूंगो मुखि कुबरं, आलसी नभ कौ पासै ।
मूढ हलाहल भषै, अगनि ज्वाला मुख ग्रासै ॥
ज्युं सूर्य जल कुंड मैं, पकड्यो चाहै बाल
इसो सुभट नर कौन है जो गहि राखै काल ॥जिने०॥२॥

वीत राग सर्वज्ञ सिद्ध परमातम स्वामी ।
निर्विकार निर्दोष सुद्ध पद मोक्ष के गामी ।
निज भाषा स्तुति ये करै समवसरण तिरजंच ।
ज्यु जलनिधि जल तैं भरयो चिडी लेय भरचू च ॥जिने०॥३॥

दोष अठारह रहित देव अरहंत जिनेश्वर ।
अतिसय वर चौतीस दिव्य सोभै परमेश्वर ।
अष्ट प्रातिहार्य भले अनंत चतुष्टय पाय ।
त्रेसठि प्रकृति विनासिकै भए त्रिभुवनपति राय ॥जिने०॥४॥

जिनवर रूप अनंत कह्यौ क्युं मनही समावै ।
नेति नेति कहै वेद नाहि कछु अंत न आवै ।
अपनी ममता मारिको रहै अंतरि लौ लाइ ।
मैसै मिटै कुबुद्धी की तब दरसन दे आइ ॥जिने०॥५॥

जाको सम्यक् ज्ञान ध्यान रज कर्म विनासै ।
सकल तत्व को रूप परम होए परकासै ॥
चिदानंद चिद्रूप है चिद्विलास चिद्धाम ॥
महेंद्रकीर्ति मनि नित बसो सिव पावै बिसराम ॥जिने०॥६॥

१४
राग सारंग

चेतन काहे भरम भुलाना ॥टेक॥
सहज स्वभाव राचि निज अपनो छिन मैं सिव पुरि जाना ॥चे०॥२॥
छाडि अमौलिक रतन अनोपम, काच की किरच लुभाना ॥चे०॥३॥
दुष्ट अनिष्ट मिथ्यात महा विष, रचि रचिभेष धराना ॥चे०॥४॥
स्वपर विवेक महा सुष कारण, सेवो समकित राना ॥
सहज यतन परगट होइ असे, ज्युं कंचन पाषाना ॥चे०॥४॥
जन्म जरा कहू मरण न व्यापै,सुद्ध रूप ठहराना ॥
महेंन्द्रकीर्त्ति तव अंतर कैसो जल कण सिंधु समाना ॥चे०॥५॥

१५
राग सारंग

चेतन चेतत क्यूं नहिं मनमैं ।
मोह प्रमाद महापद पीयो छक्यो धरणि घर बन मे ॥
यो जड रूप कर्म को दाता, राचि रह्यो तू तनमे चे०॥
षट्‌रस भोजन बहुविधि पोषो, तो हू नहीं गुणगनमैं ॥
प्रबल मिथ्यात घटा है आडी, सूर्य लषै ना घन मैं ॥चे०॥२॥
बिनु समकित ज्यु तत्व न भासैं, कहा भयो जोजनमैं ॥
महेंद्रकीर्त्ति कस्तूरी कारणि, ज्युं ढूंढत मृग बन मै ॥चे०॥३॥



देवेन्द्र कवि

१७वीं शताब्दि में जितनी संख्या मे हिन्दी के जैन कवि हुए उतने इसके पूर्व कभी नही हुए। देवेन्द्र कवि ऐसे ही कवि थे जो १७वीं शताब्दि के प्रारम्भ मे हुए और जिन्होंने हिन्दी काव्यों के लेखन मे अपना नाम प्रशस्त किया। वे इस भाग में जिस प्रकार बाई अजीतमति, धनपाल, एवं भट्टारक महेंद्रकीर्ति अब तक अचर्चित रहे हैं उसी प्रकार देवेन्द्र कवि भी नामोल्लेख के अतिरिक्त शेष दृष्टि से अचर्चित कवि ही रहे हैं जिनका विस्तृत परिचय यहा प्रथम बार दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि का प्रथम बार नामोल्लेख मैंने राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची पंचम भाग मे किया था। और उनकी अब तक उपलब्ध एकमात्र कृति यशोधर रास का उल्लेख किया था। इसके पश्चात् किसी भी विद्वान ने उनका कहीं परिचय दिया हो वह मेरे देखने में नहीं आया। अभी जब मैं नवम्बर ८३ में परमपूज्य आचार्य धर्मसागर जी महाराज के दर्शनार्थ एवं वहां के शास्त्र भण्डार की खोज मे प्रतापगढ (राजस्थान) गया तो जूना मन्दिर के शास्त्र भण्डार यशोधररास की एक प्राचीनतम पाण्डुलिपि मिल गयी जो अपने रचना काल के ६ वर्ष पश्चात् ही लिपिबद्ध की गयी थी। इस प्रकार देवेन्द्र कवि ऐसे चोथे अचर्चित कवि हैं जिनका यहां परिचय दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि के पिता बुधेव विक्रम थे जो स्वयं भी कवि थे तथा अपने नाम के पूर्व कवि उपाधि लगाते थे। वे जैन ब्राह्मण थे इसलिए बुधेव शब्द का प्रयोग करते थे। देवेन्द्र के पूर्वज अनन्त पंड्या थे जो भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं शिष्य ब्रह्म जिनदास द्वारा सम्बोधित हुये थे। अनन्त पंड्या का राजाओं की तरह सम्मान था। उसने सम्यकत्व की आराधना की थी तथा जीवदया व्रत का पालन किया था। कुतुबुखान की सभा में उसने जैन धर्म की प्रभावना तथा सर्प को घड़े में डाल दिया था। यही नहीं अनेक जिन मन्दिरों का निर्माण

तथा जीर्णोद्धार कराया था [1] तथा प्रतिष्ठा विधान कराये थे ।

अनन्त पंड्या के कउजी पुत्र हुए जो अत्यधिक उदार स्वभाव के थे । इसकी एक पुत्री पद्मावती थी जिसके पति का नाम धरणीधर था । ब्राह्मणो के चोबीस कुलों मे वह विशिष्ठ माना जाता था । धरणीधर के दो पुत्र थे जिनमें जेष्ठ पुत्र विक्रम तथा कनिष्ठ पुत्र गंगाधर थे । गंगाधर जैन न्याय के विशेष ज्ञाता थे तथा सम्यकत्व से सुशोभित थे । उसे सौभाग्य से जगत से विरक्ति हो गयी जो बादमे भट्टारक विसालकीर्ति के पट्ट मे देवेन्द्रकीर्ति के नाम से विख्यात हुए । उन्होने कर्नाटक प्रदेश मे जैनधर्म की बहुत प्रभावना की थी और जैन राजाओ द्वारा पूजित हुए थे ।

विक्रम [3]त्रिविध आगमो के ज्ञाता थे इसलिए वे विक्रमभट्ट के नाम से विख्यात थे । महीपाल कीर्ति उनके शिक्षागुरु थे । विक्रम की पत्नि का नाम अजबाई था जो शीलवती एवं गुणवती थी । देवेन्द्र उसी का पुत्र था । भगवान जिनेन्द्रदेव का वह परम उपासक एव जैन शास्त्रो का परम ज्ञाता था ।

देवेन्द्र कवि थे । उन्होंने कितने ग्रन्थो की रचना की थी यह तो अभी ज्ञात नही हो सका है लेकिन उनकी एक मात्र रचना "यशोधर रास" का रचना काल

---

१ धन धन जिनदास ब्रह्मवाणी, सा० प्रतिबोध्या ब्राह्मण राज तो ।
अनन्त पडया नाम भलूं, ।सा०। जाणे जेह ने राज समान तो ॥५९॥

तीणें आदरयो समकीत रत्न ।सा०। यत्र जीवदया प्रतिपालतो ।
अट सर्प दीव्य करयू ।सा०। कुलूलक्षांत सबा विसालतो ॥६०॥

२ जैन धर्म तिहा थापीयो ।सा०। व्यापीयो जस अपार तो।
बिंब प्रासाद उद्धार करया ।सा०। तस सुत कउजी उदारतो ॥६१॥
तस पुत्री पद्मावती ।सा०। धरणीधर तस कंत तो ।
चौबीसा ब्राह्मण कुलि ।सा०। सोहि महीमावंत तो ॥६२॥

तस पुत्र दोये पवित्र ।सा०। विक्रम गंगाधर नाम तो ।
जैनवादी विद्या तिला ।सा०। समकित रतन सुहामनो ॥६३।

गंगाधरे तप उद्धरयो ।सा०। भाग्य सौभाग्य समुद्र तो ।
विसालकीर्ति पाटि हूंवा ।सा०। देवेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्रतो ॥६४॥

अकंलक सूरी सीघासने ।सा०। कर्णाटक देस प्रसीध तो ।
जिनधर्म तीहां उद्धरयो ।सा०। जैन राजादिक पूजा कीधतो ॥६५॥

३ विक्रम भट्ट विक्षात तो ।सा०। सील समकित गुण खाण तो ।
तस वि पुत्र वीशारद ।सा०। देवेन्द्र वासुदेव जाण तो ॥६६॥

संवत् १६३८ आसोज सुदी २ शुक्रवार है। "रास की रचना महूआ नगर (गुजरात) हुई थी और वह भ० वादिचन्द्र आदेश से लिखी गयी थी[4]।

देवेन्द्र कवि भगवान मुनिसुव्रत नाथ के परम उपासक थे इसलिए ग्रंथ का प्रारम्भ उन्हीं के मंगलाचरण एवं समापन भी उन्हीं के स्मरण से किया है। यशोधर रास ६ अधिकारों में विभक्त है तथा वह प्रबन्ध काव्य के रूप में है। कवि ने रास का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया है इसके पश्चात् सरस्वती वन्दना की गयी है और "गासूं यशोधर रास" के रूप में रास रचने का संकल्प व्यक्त किया है। स्याद्वाद प्रकाशिनी जगन्माता शारदा के स्तवन के पश्चात् चौबीस तीर्थंकरों का २४ पद्यो में स्तवन किया है और फिर तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या का उल्लेख करते हुए भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् होने वाले तीन केवलियों[6] एवं पांच श्रुतकेवलियों[7] केनामों का स्मरण किया है[8]।

श्रुत केवलियो के पश्चात् विशाखाचार्य आदि दश पूर्वधारी एवं नक्षत्रादि ११ अग के पाठियों का भी स्मरण किया है। इसके पश्चात् आचार्यों को स्थान दिया है जिसमे कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामि समन्तभद्र, पूज्यपाद, जिनसेन, अकलक, एवं गुणभद्र जैसे आचार्यों का उल्लेख एव गुणानुवाद किया है।

एकादशांग सुजाण नक्षत्रादि सोहामणाए।
अनुक्रमि श्री कुंदकुंद पंच नामि कोडामणीए ॥२०॥

जिन चरण कमल सेवि ।सा०। करि जिन शास्त्र अभ्यास तो।
४ संवत् १६ आठ त्रिसि ।सा०। आसो सुद तीज वीजि शुक्रवार तो।
रास रच्यो नवरस भरयो ।सा०। महूआ नगर मझार तो ॥

५ अवनी अनोपम रूप, वादीचंद तस पाट सोहिए।
वादी सयल सणगार। भवी अण जन तणां मन मोहिए ॥२१॥

दोहा

एह गच्छपती आदेस थी, रास रचेवा आज।
उद्यम मांड्यो मन रली, सजन आनन्दह काज ॥१॥४॥

६ अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्माचारज केवलीए।
अंतिम केवली जाण, जंबूस्वामि कीरती भलिए ॥१६॥

७ श्रुत केवली वली पंच, पंच संसार दुःख हरए।
विष्णुनंदि मिम होय, अपराजित जिजित स्मरए ॥१७॥
गोवरधन गुणवंत, जाणी भवी मन उद्धरेए।
भद्रबाहु बहु भेद, चन्द्रगुप्ती संशय हरेए ॥१८॥

उमास्वामी मुनि संत समन्तभद्र भवि आतिसोए ।
प्रतिबोध्या सिवकोटि कीध स्वयम्भू गुणनिलोए ।।२१।।

पूज्यपाद प्रसीध जिनसेन सासने चंदलोए ।
अनोपम अकलक वीर घरि कीध जीतवा भलोए ।।२२।।

गुणभद्रादि अनेक पूर्वाचारज बहु हुवाए ।
हो ध्याऊं घरी भाव काम वांछित सिद्ध थवाए ।।२३।।

कवि ने आचार्यों के पश्चात् भट्टारको की परम्परा का उल्लेख किया है जिनमे भ० पद्मनन्दि, विद्यानन्दि मल्लिभूषण, लक्ष्मी चन्द्र, वीरचन्द्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचन्द्र, वादिचन्द्र के नाम गिनाये हैं । ये सभी भट्टारक बलात्कार गण की सूरत शाखा के भट्टारक थे । इस प्रकार यशोधर रास ऐतिहासिक तथ्यो का भाग बन गया है ।

भगवान महावीर का समवसरण जब विपुलाचल पर्वत पर आया तो श्रेणिक महाराज पूरे प्रजाजनों के साथ उनकी वन्दना को गए । उनका हृदय से स्तवन किया और गौतम गणधर से यशोधर के जीवन वृत जानने की अपनी इच्छा प्रकट की इस प्रकार कवि ने प्रथम अधिकार काव्य की भूमिका के रूप मे प्रस्तुत किया है जिससे पता चलता हैकि कवि में काव्य निर्माण की विलक्षण प्रतिभा थी ।

दूसरे अधिकार से नवम अधिकार तक यशोधर की जीवन कथा दी हुई है जो अत्यधिक काव्य-मय भाषा एव शैली में लिखी गयी है । कवि के पूर्व मे जितने भी यशोधर के जीवन पर काव्य, रास एवं चरित्र लिखे गये थे उनसे कवि परिचित था या नही इस सम्बन्ध मे तो हम कोई प्रकाश नही डाल सकते क्योंकि स्वय कवि ने अपने पूर्ववर्ती किसी भी कवि का नामोल्लेख नहीं किया जिन्होने अपभ्रंश संस्कृत एव हिन्दी मे यशोधर काव्य/रास/चरित्र लिखे थे लेकिन कवि ने यशोधर की जीवनकथा लिखते समय उसी परम्परा का निर्वाह किया है जो उसके पूर्ववर्ती कवियो ने किया था । लेकिन सभी प्रसंगो का वर्णन करते हुए कवि ने अपनी काव्य कौशल का प्रदर्शन अवश्य किया है । इससे काव्य मधुर एवं सरस बन गया है । वैसे भी स्वय कवि अपने रास को नवरस युक्त रचना कहा है । और "रास रच्यो नव रस भर्यो " जैसे शब्दो का प्रयोग किया है । यहां हम कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं :—

नगर म नारी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि सुन्दरिय पर भवरे झूमते थे और जब वे उन्हें उड़ाती तो उनकी करधनी शब्द करती थी । उनके मधुर शब्दो को सुन कर स्वय कोयल लज्जित हो जाती थी ।

भमर बारंता कंकणु बलके, सारस सरस सुणंत तो ।
कोयल नारी भवय सुरणीयतु, ताकी वचन कर्णत सु ॥६७॥

कवि ने एक ओर श्मशान का जहां बीभत्स वर्णन किया है वहां उद्यान का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है। इससे पता चलता है कि कवि की वर्णन शैली सामान्य रूप से अच्छी थी।

बीभत्स वर्णन :—

चीहाभकाए उठ्या बहु धूम, अर्ध दग्ध कलेवर पड्याए ।
ठाम ठाम ए पड्या बहुत, बली पशू मांस एह्नां भडाए ॥२॥

विकसयाए मुख दीसि दांत, तु ंबली ए वरणी रडवडीए ।
सीआलीयांए ताणे तास, आकाशे पुष लेई उडैए ॥३॥

कूतरा एक लागी अपार, वढता माहो माहि इह कहिए ।
वायस ए करकें बहठ, कागिए बणू कल बली रहिए ॥४॥२०॥

प्राकृतिक सुन्दरता —

वाडी बन ठाम ठाम, कपूर कदली कोमल दिसी हेलो ।
नालकेर खजूर, पूग तरणां तरु भर ही वेहेल ॥८॥

ताल तमाल हे ताल,सरल सोहि सज्जन समाहेल ।
कोमल मध्य रसाल, देवदारु आदि उलमा हेल ॥६॥

तज पत्र नागबेल एलची सभी फले करी हेल ।
जायफल लंवगह बेल, मरी बेल कि झूमके भरी हेल ॥१०॥

कवि ने यशोधर रास में सूर्यास्त एवं चन्द्रोदय दोनों का वर्णन किया है। जिनके वर्णन से प्रबन्ध काव्य की महत्ता में वृद्धि होती है। सूर्यास्त वर्णन का एक उदाहरण निम्न प्रकार है :—

अस्ताचले रे सूर आवंतो जाणीयो ।
निज शीर परि रे मुकुट समो करवायो ॥४॥

पश्चिम दिशि रे रवी आविह्न वारातडी ।
पंखी तरणा रे शोक अति करे बापडी ॥५॥

गिर अंतरे रे रवि रहरा मान पामयू ।
उत्तम मेरे को तिरा एक शीस नमावयू ॥६॥

व्यभचारिणी रे गमन गोख रींसि करी ।
रवि उपरि रे देखाडि आखि रातडी ।।७।।२३।।

उक्त पद्यों मे सूर्यास्त होने पर वह किसको कैसा लगता है इसका सामान्यत अच्छा वर्णन मिलता है ।

इसी तरह कवि ने चन्द्रोदय का भी अच्छा वर्णन किया है ।

पूरब दिशी रे गुफा थको ए नीसरी ।
गगन वनै रे संचरयो शशी कैसरी ।।२२।।

किरण नखे रे अधकार गज विदारयो ।
जाणे तारा रे मुक्ताफल विस्तारयो ।।२३।।

शशी सीतल रे अमृत मय कहि वाउ तो ।
लांछन मसि रे हर दह्यो काम जीवाड तो ।।२६।।

इस प्रकार यशोधर रास में और भी कितने ही अच्छे एव काव्यमय वर्णन है जिनसे रास के काव्यत्व मे वृद्धि होती है ।

लेकिन यह भी कहा जाना चाहिये कि कवि की वर्णन शैली अन्य कवियो से एकदम भिन्न है । वह प्रत्येक वर्णन मे अपनी छाप छोड़ना चाहता है लेकिन इसमे वह पूरी तरह से सफल हुआ है यह सन्देह युक्त है ।

भाषा—कवि गुजरात का रहने वाला था और गुजरात में ही रास की रचना की गयी थी इसलिए रास की भाषा पर गुजराती भाषा एवं शैली का पूरा प्रभाव है । छन्दो का प्रयोग एवं शब्दो का चयन दोनों मे गुजराती का प्रभाव द्योतित है । महाकवि ब्रह्म जिनदास ने जिस शैली का प्रयोग किया था और उसी शैली को यहा कवि देवेन्द्र अपनाया है । १६वी १७वी शताब्दि मे गुजराती शैली का हिन्दी कवियो पर पूरा प्रभाव रहा । इसीका नमूना यशोधर रास में देखा जा सकता है ।

छन्द—रास मे दोहा छन्द के अतिरिक्त और भी भास छन्दों का उपयोग किया गया है । हमे आज एक भास में कितने ही पद मिलेंगे साथ ही दूसरे भास आणदानी भास हेलांनी (१३), भास नारे सुआनी (१५), भास ब्रह्म गुणराजनी (१६), भास चौपई (२४) भास भमारुलीनी भास रासनी (३१), भास साहेलीनी (३६), भास वसन्त फागुणनी (४६), भास भूपाल रागनी (५३), भास भद्रबाहुनी (८१) भास पदुलसडीनी(८४) भास जीवडानी (६८) आदि भासों का छन्दोंके रूप मे प्रयोग किया है । कवि

मे चौपाई जैसे स्वतन्त्र छन्द को भी ढाल चोपाई कर छन्द का प्रयोग किया गया है। हां दोहा के आगे पीछे ढाल का प्रयोग नही किया है।

रचना स्थान—जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि यशोधर रास की रचना महुवा नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी थी। [1]नगर धनधान्य एवं सुवर्ण से ओतप्रोत था। वहां वणिक समाज के पर्याप्त संख्या मे घर थे। बड़े बड़े वाडी एवं बगीचे थे जिनमें विभिन्न प्रकार के फलो फूल थे। नगर में श्रावकों की अच्छी बस्ती थी जो दान पूजा व्रत अभिषेक करने में बड़ी रुचि रखते थे। वहां बड़े २ विशाल जिन मन्दिर थे इस प्रकार जिस नगर (महुआ) मे कवि रहते थे वह अपने समय का उत्तम नगर माना जाता था।

तेह देस माही सोहि महूआ नयरी वसतंतो।
धन कण कणयर तने भरी, महाजन नवसय महंततो ॥७॥
ब्राह्मण वेदने अभ्यासे नाहि पूर्ण नदी मांही तो।
अवर वरण घणा वसि सा॰ नित नित होय उछाहतो ॥८॥
सिंहपुरा कुल मंडण मांहि वारिया श्रावक वसंततो।
दान पूजा व्रत अभिषेक, बहुपरि धरम करंततो ॥१२॥१३॥

महुआ नगर के मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभु स्वामी की थी। मन्दिर मे धरणेन्द्र पद्मावती की प्रतिमा भी थी जिनके दर्शनमात्र से भूत पिशाच की बाधा दूर हो जाती थी मन्दिर के बहार क्षेत्रपाल भी पूजे जाते थे।

महुआ नगर में अनेक श्रावक थे जिनमे संघवी नाकर नन्दन, संघवी शिवदास संघवी दाभाई, साह नाहानकुल चांदलो, संघवी जगा, जयवंत संघवी, हंसराज सुत साह कंआरी, नाहुन सुत मांगजी, माणजी आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय थे जिनके नाम कवि ने ग्रंथ प्रशस्ति में गिनाये हैं। इन सबने यशोधर रास की रचना मे विशेष प्रेरणा की थी।

संघवी नाकार नंदन ।सा०। संघवी सोहि सिवदास तो।
भूपाल कुल सोहावरु ।सा०। संघवीदा भाई गुणराम तो ॥३९॥
साहा नाहा नकुल चांदलो ।सा०। दा भाई दान दातार तो।
सांघवी जगा कुल मंडण ।सा०। जयवंत सघीव उदारतो ॥३९॥
हंसराज सुत साहा कुंअर जी ।सा०। नाहुन सुत मांगजी सुचंगतो।
माणजी आदि संघ सावरकी ।सा०। रास रच्यो मन रंगतो ॥४०॥

---

१ तेह सन्दूरपती आदेश थी, महुआ नगर मझारतो।
चंद्रप्रभ चैत्यालय रास रच्यो सुख कारतो ॥

देवेन्द्र कवि भट्टारक सकलकीर्ति के आम्नाय में होने वाले भट्टारकों—सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति, शुभचन्द्र, सकल भूषण, सुमति कीर्त्ति एवं गुणकीर्ति जैसे भट्टारकों एवं ब्रह्म जिनदास एवं उनके शिष्य शांतिदास ब्र. हंसराज एवं ब्र. राजपाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बड़े प्रभावित थे इसलिए कवि ने उनका साभार उल्लेख किया है। कवि के समय मे ब्रह्म शांतिदास थे जिनके उपदेश एव प्रेरणा से कवि की धर्म एव साहित्य रचना की ओर प्रवृत्ति बढी।

यशोधर के जीवन की लोकप्रियता

यशोधर राजा का जीवन जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। द्रव्य हिंसा के स्थान पर भाव हिंसा भी कितनी पाप बन्ध का कारण बनती है यही इस काव्य का मुख्य सदेश है। इसलिए महाकवि पुष्पदन्त से लेकर देवेन्द्र कवि तक निम्न कवियों ने अपनी शैली एवं भाषा मे यशोधर काव्यों की रचना करके यशोधर के जीवन का एक कीर्त्तिमान प्रस्तुत किया :—

१	जसहर चरिउ	महाकवि पुष्पदन्त	अपभ्रंश	६ वीं शताब्दि
२.	यशस्तलक चम्पू	सोमदेवसूरि	संस्कृत	शक संवत् ८८१
३	यशोधर चरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	,,	१५ वीं शताब्दि
४	यशोधर रास	ब्र. जिनदास	राजस्थानी	१५ वी शताब्दि

मूल सघ भारती गच्छ पयनदी मछ राय तो।
तेह पाटि सोहे दिनकर सकल कीरति गुण ठायतो ॥५०॥

भुवनकीर्त्ति भवि विख्यात, तस पाट सार सणगार तो।
ज्ञानभूषण ज्ञानदायक, गोयम सम आचार तो ॥५१॥

विजय कीरती गुरु गच्छपती, वचन सीधी मुनि हंसतो।
तस पटोधर सुभचन्द्र वादीस्वर वर वंसतो ॥५२॥

हूवड कुल वडं साजनं, सकल भूषणो गुन पायतो।
वादीय मान मर्दन षट् दर्शण वादी रायतो ॥५३॥

तेह पाटि सुमती कीरती सूरी, तेह पाटि उदयो भाण तो।
भवीया कमल विकासवा, गुणकीरती गुरु जाणतो ॥५४॥

एह गच्छपति तणि अन्वय, ब्रह्मचारी जिनदास तो।
शांतिदास तस पट धर, ब्रह्म हंसराज गुणवासतो ॥५५॥

राजपाल ब्रह्म तेह पाटि, सांपति श्री शांतिदास।
तेह उपदेस धनघोर श्री जिनधर्म उल्लास तो ॥५६॥

५.	यशोधर चरित्र	आचार्य सोमकीर्ति	संस्कृत	संवत् १५३६
६.	यशोधर रास	,,	हिन्दी	,,
७.	जसहर चरिउ	पं. रइधू	अपभ्रंश	१५ वीं शताब्दि

कविवर देवेन्द्र के पश्चात् संस्कृत एवं हिन्दी कवियों की ओर भी यशोधर काव्यों की रचनायें मिलती है जो उनकी जीवन कथा की लोकप्रियता की द्योतक है। देवेन्द्र के यशोधर रास की वही कथा है जिसका हम अकादमी के पंचम भाग में सार दे चुके हैं फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए यशोधर रास का संक्षिप्त सार यहां भी दिया जा रहा है।

कथासार

भारत क्षेत्र के आर्य खण्ड में योध देश था जहां की प्राकृतिक सुषमा निराली थी तथा प्राणीमात्र निर्भय होकर विचरण करते थे। राजपोर नगर में महलों की पक्तियां एवं मन्दिरों के शिखर दूर से ही नगर की भव्यता एवं सुन्दरता का प्रदर्शन करते थे। नगर में सभी जाति के लोग रहते थे। योध देश के राजा मारिदत्त था जिसका राज्य वैभव निराला था। वह अत्यन्त प्रतापी राजा था। एक दिन उसी नगर में भैरवानन्द नाम का एक जोगी आया जिसके हाथ मे त्रिशूल था। वह डमरू बजाता तथा वनचरों की हिंसा करने में आनन्द मानता था। उसने नगार मे आते ही अपने ज्ञान विज्ञान के सम्बन्ध मे अनेक बाते बतलाई तथा कहने लगा कि उसे राम लक्ष्मण, पाण्डव आदि दिखलायी देते हैं और वह जनता को भी दर्शन करा सकता है। जोगी को राज दरबार मे बुलायागया जहां उसने राजा को प्रभावित कर लिया और जब राजा ने आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करना चाहा तो उसने चण्डमारि देवी की भक्ति एवं उसके आगे थलचर जलचर एवं नभचर जीवों के युगलों की बलि आकाशगामिनी विद्यासिद्धि के लिए आवश्यक बतलाया। राजा ने अपने सैनिकों को तत्काल सभी प्राणी युगलों को लाने का आदेश दिया। चंडमारी का मन्दिर पशु पक्षी युगलों से भर गया। हिंसा का घोर वातावरण बन गया। मन्दिर में चीत्कार एव चिल्लाहट के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा। इसके पश्चात् भैरवानन्द ने कहा कि जब तक मानव युगल को बलिदान के लिए नही लाया जावेगा तब तक विद्या सिद्ध नहीं होगी। राजाके आदेशानुसार उसके सनिक चारों ओर दौड़े और मार्ग में जाते हुए एक ब्रह्मचारी एवं एक ब्रह्मचारिणि को पकड़ कर देवी के मन्दिर में ले आये।

राजा मारिदत्त वहीं था। मानव युगल और वह भी साधु के वेश में तथा सुन्दर तथा कान्तिमान देह युक्त शरीरधारियों को देखकर राजा आश्चर्य चकित

हो गया। नगर के बाहर तीन दिन पूर्व ही दिगम्बर जैन मुनि सुदत्ताचार्य का संघ आया था। आचार्य के तपोबल से चारो तरफ हरियाली छा गयी थी। उसी संघ के ये दोनो साधु एवं साध्वी थे जो आहार के लिए नगर में आ रहे थे।

राजा मारिदत्त जैसे ही नर युगल का वध करने के लिए तलवार सम्हालने लगा, दोनों साधु साध्वी ने राजा को आशीर्वाद दिया तथा उसके दीर्घजीवन एवं यश की कामना की। राजा उनके वचन सुन कर उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ और अल्प वय मे ही साधु जीवन अपनाने का कारण जानना चाहा। ब्रह्मचारी ने राजा से कहा कि वह इनके सम्बन्ध मे जानकर क्या करेगा क्योंकि वह स्वयं तो पाप बुद्धि मे फसा हुआ है। राजा ने तत्काल तलवार छोड दी और उनसे पूर्व भाव जानने के लिए आतुर हो उठा।

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्यो तेणि वार।
कर युगम जोडी करी, करी कोपनो परीहार ॥३॥२४॥

इसके पश्चात् ब्रह्मचारी ने निम्न प्रकार कथा प्रारम्भ की :—

भारत देश के आर्य खण्ड मे अवंती प्रदेश था जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था। उज्जयिनी उसकी राजधानी थी जो सभी तरह से सम्पन्न नगर था। जिसका कवि ने बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है। वहा का राजा था यसोध जो क्षत्रिय वंश भूषण था। राणी का नाम चन्द्रमती था जिसकी देह का निर्माण मानों स्वय विधाता ने ही किया था। कुछ समय पश्चात् उसको पुत्र रत्न की जब प्राप्ति हुई तो चारो ओर आनन्द छा गया। राजकुमार का नाम यशोधर रखा गया।

नाम जसोधर तेह वीऊए, बहु पिरि करि उछाहतो।
रतन जडित भूषण भलाएं, पहिरवी धरि ऊमाहतो ॥२३॥३२॥

पाच वर्ष का होने पर राजकुमार को पढने भेजा गया जहां उसने सभी विद्याए सीख ली। न्याय, व्याकरण, छन्द, अलकार तर्क संगीत, ज्योतिष, आदि सभी शास्त्रों मे पारंगता प्राप्त की। युवा होने पर उसे युवराज पद से सुशोभित किया गया। युवराज के विवाह का प्रस्ताव लेकर बराड देश के राजा सालिवाहन के पास भेजा। उसकी पुत्री का नाम अमृतमती था। जब अमृतमती का लग्न लेकर वहा का मंत्री उज्जयिनी आया तब अनेक प्रकार के उत्सव किए गए। पत्रियां लिखी गयी और सहस्त्रों कुटुम्बी जन एकत्रित हुए। नाच गान एवं संगीत समारोह सम्पन्न किए गये। उज्जयिनी से बारात बाराड देश गयी जहां उसका इतना अधिक स्वागत हुआ कि लोग आश्चर्य करने लगे। दहेज इतना अधिक दिया गया जिसका

री कहि।मालवीर।श्री ललमीगणि संचारकहि।मां सन संग्रहे आकार ना ओ तिन
मानि। वर्ष २०५ जाते। श्री कलसेन आचार्य। आपुलीग ज्ञानोत्थापना की।श्री। बीक्र
मपक्षि। वर्ष ५२६ गते। श्री पुज्यपाद शिष्य वज्रनंदी द्राविड संघनी स्थापना की। श्री
वीजा जैनाचारी मनीन मानि। श्वेतांबर मान थुन मुक्ति वीक्रम पक्षी वर्ष ७५३
विनयसेन शिष्य कुमारसेन। सन्यास भंग करी। नि। काष्ठासंघनी स्थापना की। श्री
कडता। वमरनी लीधी। स्त्री निर्मुल पीछी। क्षुल्लक नि वीरचर्या।।
७ ६ स्य श्रुतक हि। वीक्रम पक्षी वर्ष २०० जाते। मथुरायां रामसेने माथुरी
गच्छनी स्थापना।। नाकी ओ अने पीछी। या दर्शन देसे। वि देसे। पुस्तिका वतीन
रे। बारवड मुनीना। तेन करी स्थिति। पीलिसंघ वीक्रम पक्षी वर्ष १८००
तेकी या वीपरीत करी स्यात्। संवत् १६५० वर्षे पंचमा ओ लसा तंब
२ अजीतमतीनी गक मर्म दीया द्दें।

बाई अजीतमति द्वारा संवत् १६५० में लिपिबद्ध मूल पांडुलिपि के एक पृष्ठ का चित्र

य सुय श ऽकारा ॥ तो ॥ श्री सिंघनें मंगलकरो ॥ ५४ ॥ सो जिनसूरवे आसतो ॥ ७२ ॥ वस्तु ॥ जिन चोवीसत
णाम्हर नमी तपाय ॥ राय जसोधर तेह तणो ॥ रास रच्यो मे सार नी र्मल ॥ सरे स्वती माय प्रसाद ॥ थी ॥ श्री गु
रु तणो महि माय उ छ ॥ अक्षर मात्र पद स्वर ॥ ओछो अधिको होय ॥ आदर योक बी सुधकरो ॥ क्षमा कर
यो सहु कोय ॥ २ ॥ १ ॥ श्री रस्तु ॥ स मदान सील गुण स्रते ॥ संघः यत्र यो मनेनंद स्त्रे तद नंतवर्द्धि महि ॥
नाद्द द्वे व सदू भासा नः ॥ श्रीवरु कलवाक स्तुभा क्लिस्ट मानापी: कवी श्वः सतां स दु र्मः किल वर्द्धतां चिर
नद ॥ जैलोदयो लक्ष्मा ॥ ५४ ॥ इति श्री यशोधर महाराज चरित्रे रत्नाचूड अमरतो का मनि केदे स्वर्गे
वो श्री वि क्रम सुत देवें द्र चिर वीत ॥ यशोध यशोधर राऊ आदि सर्व भव यथा क्रम स्वर्ग गमनो नाम सर्व
मो ऽधिकार ॥ यशोधर रास संपूर्ण ॥ अरहंत ॥ ॥ संवत् १६४४ वर्षे भाद्र वा सुदि २ स्रगो ॥ अथेह ग्रन्थ
गुर्वास्तव्य ॥ उदाच्य ज्ञातीय राउल सोमनाथ सुत वीश्वनाथ ॥ लीखतं ॥ स्तुमं भवतु ॥ ॥ ग्रंथ संख्या
यो श्री सलिसूया ॥ श्लोक २५०० ॥ श्री ॥ पा ॥ ठा ॥ ठा ॥ आ ॥ ना ॥ अर्थ ॥ वा ॥ सु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ श्री

यशोधर रास की संवत् १६४४ की पांडुलिपि का अन्तिम पृष्ठ

कोई पार नहीं था। विवाह के पश्चात् राजा यशोध ने राजकुमार यशोधर को पूर्ण रूप से योग्य मान कर उसका अपने ही हाथों से राज्याभिषेक कर दिया।

राजा यशोधर राज्य करने लगे। रानी अमृत मती भी जीवन का आनन्द लेने लगी बसन्त ऋतु आने पर बसन्तोत्सव मनाया गया तथा राजा एवं रानी वन क्रीड़ा करने गये। कवि ने बसन्तोत्सव का सूर्योदय एवं सूर्यास्त दोनों का अच्छी तरह वर्णन किया है। कुछ समय पश्चात् रानी का महलों नीचे रहने वाले कुबड़ा से प्रेम हो गया और वह एक रात्रि को राजा को सोता हुआ जानकर पूरे शृंगार के साथ अकेली ही उसके पास चली, राजा भी जग गया और उसके पीछे पीछे चलने लगा। वहां राजा को यह देख कर महान् आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार एक रानी दुर्गन्ध युक्त कुबडे की मिन्नत कर रही है। एक बार तो राजा ने अपनी तलवार से उसे मारना चाहा लेकिन बाद में उसने स्थिति को देख कर वापिस पलंग पर सो गया। कुछ समय पश्चात् रानी भी वहीं आकर सो गयी।

यशोधर राजा को जब दुस्वप्न की शान्ति के लिए एवं सुख समृद्धि के लिए देवी के सामने जीवों का बध करने के लिए उसकी माता चन्द्रमती ने बहुत समझाया लेकिन राजा ने कहा कि हिंसा करने से पाप लगता है, नीच गति का बंध होता है। उसकी माता ने एक आटे का कूकड़ा बनाया और उसी का बध करने का आग्रह किया राजा ने माता की बात मानली और आटे कुकड़े का बध कर दिया। इस से यशोधर ने बहुत पश्चाताप किया और गृह त्याग कर तपस्वी बनने का निर्णय लिया। रानी को जब यह मालुम हुआ तो वह रोने लगी और बिना पति के जीना ही व्यर्थ समझा। उसने राजा से प्रार्थना करी कि वह एक बार उसके यहां आहार लेवे उसके बाद दोनों ही तपस्वी बन जावेंगे। रानी ने राजा को एवं माता चन्द्रमती को विष के लड्डू खिला दिये जिसके कारण राजा वैद्य २ करता हुआ मर गया। इसके पश्चात् रानी ने रोना पीटना प्रारम्भ किया। और प्रजाजनों को ऐसा आभास करा दिया जैसे राजा की प्राकृतिक मृत्यु हुई हो। यशोधर की मृत्यु से सारे नगर में शोक छा गया। राजा की ५०० रानियों में से कितनी ही स्वतः ही मर गयी। कुछ ने वैराग्य धारण कर लिया। राजा का दाह संस्कार कर दिया गया। ब्राह्मणों को खूब दान दिया गया।

ठाम ठाम थी ब्राह्मण बाम्या, बहुमेर दान देवाय ।
धन कांचन कण कुम कपड़ा, मणी वस्त्रादि अपार ।।१।।

गज अश्व रथ भी महीसी, धावि वृक्ष दीधां दान ।
अन्न कापड़ दीधे माहिया, बहु भोजन मिष्ठान ।।२.।

इसके पश्चात् राजा यशोधर एवं माता चन्द्रमती के भवों का क्रम प्रारम्भ होता है। राजा यशोधर मर कर स्वान हुआ और चन्द्रमति मोर हुई। एक दिन मोर च द्रमती रानी के महल की छत पर था। वहा से उसने रानी एवं कुबडे को कुकर्म करता हुआ देख लिया। मोर ने कुबडे को अपनी चोंचों से घायल कर दिया यशोमती ने मोर को पाला था जिसने लपककर मोरनी की गर्दन दबोच ली जिससे वह तत्काल मर गयी। कुत्ते को बनमे दोडते हुए बाघनीने खा लिया। इसके पश्चात स्वान मर कर सर्प हुआ तथा मोर मरकर सेहलु हुई। जब सेहलु ने सर्प को देखा तो उसकी पूछ पकड कर चबा लिया। अगले भवमे सेहलु मर कर बडा मगर हुआ और सर्प रोही (ससुमार) हो गया।

एक दिन राजा की नर्तकी तलाब पर नहा रही थी तभी उस मगर ने उसे पकड लिया। जब राजा को समाचार मिला तो मगर को पकड़ने का आदेश हुआ। अन्त मे उस ससुमार ने मगर को पकड लिया और लकडी मूसल आदि से उसे खूब मारा। वह अत्यन्त वेदना के साथ मर गया और नगर के समीप ही बकरी हुई। कहा यशोध राजा की रानी और कहा बकरी का जीव। लेकिन यह सब कुकड़े को मारने से गति प्राप्त हुई। रोहित मर कर बडी मछली हुई। जिसे तल २ खाया गया फिर वह मर कर बकरा हुआ। बकरा मर कर पुन: उसी बकरी के गर्भ से बकरा हुआ। बकरा मर कर पुन भैंसा हुआ। जिसे वरदत्त बणजारा भार लादने के काम मे लेने लगा। वे फिर दोनों मर कर मुर्गा मुर्गी की की योनी मे पैदा हुए। उन दोनो को मुनिराज से धर्मोपदेश सुन कर जाति स्मरण हो गया तथा व्रत ग्रहण किए।

तव भइमे बेहू कूकडे, सुणयू धरमनि भवांतर सार।
जाति समर उपनू सही, भइमे पण लीधा वरत भवतार ॥२३॥१०२॥

दोना मुर्गा मुर्गी प्रसन्नता से कू कू कर रहे थे तभी राजा ने दोनो को शब्द भेदी बाण से मार दिया। फिर वे ही कुसुमावली रानी के गर्भ से पुत्र पुत्री के रूप मे पैदा हुए। जिनका अभयरुचि एवं अभयमति नाम रखा गया। कवि ने यशोधर एवं चन्द्रमती के भवो का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

अमृताथि जसोधर चन्द्रमती मारया, मोर कुतरा भव भव भागो ॥२४॥
तीहा थी मरी सिहिलो सांप हवा, वली रोहीत ससुमार।
चन्द्रमती छाली हुवा तेह गर्भीराय छाग हुवो बे वार सा०॥२५॥
चन्द्रमती महीष योनि पइया तहां थी कूकड़ा हवा बेहू।
कुतीम कीवहि साफल पाम्या, भवि समता नही छेहू ॥सा०॥२६॥

यशोधर एवं चन्द्रमती की पूर्वभवों की कहानी सुनकर कोटवाल एवं मारीदत्त राजा भयभीत हो गए और उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर निम्न प्रकार विचार प्रकट किये :—

आज चिन्तामणि रत्न मैं पाम्यू, पाम्यो धर्म कल्प वृक्ष।
जिनवाणी जिनवर सासन, जिरिण जाण्यो ते दक्ष।।सा०।।३६।।१०३।।

राजा यशोमति एक दिन वन में गया वहां सुदत्ताचार्य मुनि ध्यानस्थ बैठे थे राजा ने मुनि दर्शन को अपशकुन समझा और मुनि के ऊपर ५०० कुत्ते छुड़वा दिये। लेकिन मुनि की तपस्या से कुत्ते शान्त होकर बैठ गये। तब राजा तलवार लेकर मुनि को मारने चला। उसी समय उसे कल्याणमित्र मिला जो मुनि की वन्दना के लिए वहां आया था। राजा से उसने मुनि वन्दना के लिये कहा लेकिन राजा ने कहा कि उनके दर्शन तो अपशकुन है। कल्याण मित्र ने राजा को बहुत समझाया तथा कहा नानत्व तो सरल स्वभावी, त्यागी एवं शुद्ध परिणामी होने का लक्षण है। उसने कहा कि ये कलिंग नरेश सुदत्तराज हैं राजा और कल्याणमित्र ने उनकी वन्दना की तो मुनि ने धर्मवृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद दिया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा वह अपने किये पर पछताने लगा। उसने अपना घात करना चाहा लेकिन आचार्य श्री ने उसकी मन की बात जानकर रोक दिया। राजा मुनि से बड़ा प्रभावित हुआ।

इसके पश्चात् मुनि ने यशोधर राजा एवं चन्द्रमती के पूर्वभवों की कथा कह सुनायी तथा एक आटे के मुर्गे का वध भी कितने जन्मों के लिए दुखदायी होता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उसके पुत्र पुत्री हैं बतलाया। राजा को तत्काल वैराग्य हो गया तथा अभय रुचि को राज्य देकर पांचसौ राजाओं के साथ मुनि बन गया। इसके पश्चात् अभयरुचि एवं अभयमति ने भी जिन दीक्षा धारण करली मारिदत्त राजाको उक्त सब वृतान्त सुनकर वैराग्यभाव उत्पन्न हो गए। सुदत्ताचार्य ने उसके भी पूर्वभवों का वृतान्त सुनाया। इसके पश्चात् मुनि दीक्षा धारण कर स्वर्ग प्राप्त किया। चण्डमारी देवी के पुजारी ने भी हिंसावृत्ति छोड़ कर जिन दीक्षा धारण करली। देवी के मन्दिर को स्वच्छ कर दिया और जीव हिंसा सदा के लिए बन्द कर दी सुदत्ताचार्य ने समाधिमरण करके १६वां स्वर्ग प्राप्त किया। अभयमती एवं अभयरुचि ने भी कठोर तप साधना द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया।

यशोधर रास

1. रचयिता — देवेन्द्र कवि
2. रचना काल — संवत् १६३८ (सन् १५८१)
3. रचना स्थान — महुआ नगर (गुजरात)
4, लिपि काल — संवत् १६४४ (सन् १५८७)
5. पाण्डु लिपि प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रतापगढ़ (राज०)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री सारदाई नमः । श्री गुरुभ्यो नमः ।

वस्तु छन्द

मंगलाचरण

श्री मुनिसुव्रत जिनवि नमेवि, सेव करे जसु सुर निकर ।।
गणहर मुनिवरे जेह पूजिय, तीर्थंकर वीसमो जयो ।।
भवीअण जेह वचनेहि रंजिय, छयतारतीस गुणि मंडियु ।।
खंडीयो कुमत असार ।
सो जिनवर मगलकरो, त्रिभुवन तारण हार ।।१।।

दूहा

श्री जिन वदन कमल थकी, प्रगटह वीस प्रसीध ।
सरसती सरस वचन दीयु, हंसगामिनी मति बुद्धि ।।१।।

गुणगरूआ गुरू ध्यायसूं, पायसु सुमति सुभास ।
सयल सजन आनन्द करो, गासूं यशोधर रास ।।२।।

त्रै नयन पूजित त्रिभुवने, विख्याता त्रिनेत्र ।
वेणा पुस्तक धारिणी, जयमाली अक्ष सुविचित्र ।।३।।

विविध वाछित वरदायिनि, स्याद्वादिनि जगमाय ।
सेवक जननें सारदा, वाछित करो पसाय ।।४।।

आस असोवरणी

भवीयण जण आनंद काज, तीर्थंकर देव ।
चोवीश जिनस्तवु जूजू आ बहु भावसूं हेव ॥१॥

चौबीस तीर्थंकर स्तवन

प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ, नाम्यो जेणि काम ।
धर्म कर्म प्रगटी करी, पाम्यो सिव ठाम ॥२॥

अजित जिनाधिप विजित कोह, मोह मच्छर वारण ।
केवल बोध सुवचन दिव्य, भव्य दुरित निवारण ॥३॥

सम्भव संभव्यु भव्य पुण्य, पुण्यम ब्रसि सम सुख ।
त्रिभुवन जन उद्धरी करी, करी शिववधु सुख ॥४॥

अवनी अनोपम अवतरयु, हरयो मिथ्याअन्धकार ।
अभिनन्दन जिन जाणे भाण, जाणे कमल विस्तार ॥५॥

सुमति तीर्थंकर सुमति दान, मान वारंण केसरी ।
तत्त्वप्रकाशी सिव थयो, जयो जो जिनि बहुपरी ॥६॥

पद्मप्रभ जिन पद्म भास, भाषा जित जलधर ।
धर्मामृत रसि सींचीया, भवीयाजस्योत्कर ॥७॥

मरकत कांति सुपार्श्वदेव, देवेन्द्रश्री वंदीय ।
अष्टकाल वसु सिसुपरिए, बसि सुवर्ण सूचीय ॥८॥

चन्द्रप्रभ जिन पति हुवो, नमो अवनी चन्द्र ।
कुमति कमल कोमलाणो सावु, वाम्यु हरख समुद्र ॥९॥

पंच कल्याणे पूजीयो, जयो जिन पुष्पदन्त ।
तनु जीत शारद चन्द्र कुंद, कुंद को कसी दंत ॥१०॥

सीतल सीतल वचन बंध, बंध सप्त तरंग ।
वाणी गंगा प्रक्षालया, भवीयां अंतरंग ॥११॥

श्रेयं बहु दायक श्री श्रेयांस, हंस एयण सरोवर ।
सुर नर फणधर करीं प्रसंस, संसार क्षयंकर ॥१२॥

वसुशायक वसुपूज्यंस, पूजीत पितृवास ।
वासुपूज्य वन पूजीय, कीधु काम विनास ॥१३॥
विमलजिन प्रभु विमल करण, रंजण सुखदायक ।
वचवत आठ रहित प्रभुक, श्री वर्द्ध जगनायक ॥१४॥

अनंत अनंत सुगुण गीलो, तिलो त्रैलोक सोहैं ।।
अनुदिनु जिहूं अनुभवुं, तहां बहुत उछाहैं ।।१५।।

धर्म धोरंधर धर्मनाथ, पाथो निधि गंभीर ।
अनंत चतुष्टय मन्दिरो, जेव र राय र धीर ।।१६।।

शांतिकरण जयो शांतिदेव, सेवि सुर विद्याधर ।
षट खंडाधिप कोटि काम, नमी रूप मनोहर ।।१७।।

कुंथु आदि जीवहू दयाल, जिन कुंथु समर्थ ।
मिथ्यामत तम विघटयो, प्रगटयो परमार्थ ।।१८।।

अर अभ्यंतर बाह्य लक्ष, लक्ष्मी करी मंडित ।
चतुरानन चतुरपणि, थणुं तेव पडीत ।।१९।।

सुर मुकुट स्थित मल्लिमाल, पूज्यो पद पकज ।
काम मल्ल प्रति मल्ल मल्लि, जिनगत सल्य वज ।।२०।।

सुव्रत संवृत सुव्रत जिन, दिन दिनपती शसी ।
करय प्रदक्षण मेरू समो, सम दम कीयु वसी ।।२१।।

नमि जिन नमीत सुरेंद्रवृंद, कुंद चंद जसोज्वल ।
तप्त सु कांचन सदृसु वर्ण, कर्ण सुखद जेह स्वर ।।२२।।

धर्म महारथ जैसो नेमि, नेमि जदुकुल मंडण ।।
सामल वर्ण जिनाभिराम, काम कुमति विहंडण ।।२३।।

नील वर्ण तनु पार्श्वस्वामि, कामिनि रती दूर ।।
फणपती पूजीत जित मदाष्ट, दुष्ट कमठह चूर ।।२४।।

वर्धमान जस वर्धमान, त्रिभुवनि विस्तरयो ।
कलियुग मांहि सौख्य कूप, उपकारज करयो ।।२५।।

वस्तु

ए चोवीस जिन. जिन त्रिभुवन ईश ।
अतीत अनागत सहीत सदा, वादू हूं हैये भाव आणीय ।।
संसार सायर तारण, कारण सहू मंगलह जाणीय ।
वेहेरमाण बीसे सहीत, सहीत वचन सुखदान ।।
श्री संघह मंगल करो, त्रैलोक्य नुत विख्यात ।।१।।

रास चौसठीनी

गणधरों की वन्दना

भाव भगत सहीत, हित भवीयण तणु ं मनिधरीए ।
गणधर वरणवूं सार, संख्या सहीत भली परिए ।।१।।

वृषभसेन छे आदि आदि जिनह चोरासी हुवा ए ।
अजीतह गणधर नेऊं, लेऊं गुण सिंहसेन जवाए ।।२।।

संभवनि सत पंच, सहित चारुषेणादिक ए ।।
वज्रनाभि आदि होय अभीनंदन सतत्री अधिक ।।३।।

सुमति एक सो सोल, चामर मुख्य गणाधिप ए ।।
पद्मप्रभ सत एक, दस सुवज्र चामर भू स्वामी ।।४।।

पचाण ं छे सुपार्श्व, गणपति बलपूर्वक सणो ए ।।
त्राण ं चन्द्रप्रभ देव, दत्त प्रमुख सदा भणो ए ।।५।।

अठयासी पुष्पदत, संत विदर्भादिक सहीए ।।
अणगारादि गणेस, सीतलनि एकासी कहीए ।।६।।

कुंथु प्रधान श्रेयांस, सत्योत्तर सत्यें भणोए ।।
छासठ श्री वासुपूज्य, पूज्य धर्म आदि गणुए ।।७।।

विमल पंचावन मेह, धीरा मेरू प्रादि कह्या ए ।।
गणेन्द्र अनंत पंचास. प्राशाजयि जयार्य लह्याए ।।८।।

त्रयतालीस गरीष्ट, अरीष्टसेनादिक धर्मनिए ।।
छत्रीस शांति चक्रेश, चक्रायुध आदिसमंदे ए ।।९।।

ध्यांऊं, पांत्रीस गणेन्द्र, कुंथु संभू स्वयं प्रमुख ।
अरनि त्रीस गणेश, कुंभ मुखच्याहं होइं सुख ।।१०।।

अठ्यावीस विसाख, पूर्वक गणिमल्लिनि भणाए ।
मुनिसुव्रत नि अढार, मल्लिमुख सही गुरा निभाए ।।११।।

गणधर सत्तर होय, सुप्रभादिक नमिनायक ए ।
नेमि जिननि अठार, वरदत्तादि वरदायक ए ।।१२।।

दशदिसि यश कीय वास, पासनि दश स्वयंभू मुख ए ।।
गौतम आदि अग्यार, वीरनि विख्यातित सुख ए ।।१३।।

एवं कारें वाणि, गणधर संख्या चौदशो ए ।।
बावन पावन होय, कोई बापक मित अभ्यासो ए ।।१४।।

जिम लह्यो सौख्य अपार. पार पाम्यो संसार तणो ए ॥
रोग वियोग विणास, भास ए कवि देवेन्द्र भणिए ॥१५॥

केवली एवं श्रुतकेवली

अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्माचारज केवलीए ॥
अंतिम केवली जाणि, जबू स्वामी कीरती भलीए ॥१६॥
श्रुत केवली वली पंच, ससार दुख हरिए ॥
विष्णुनंदि मित्र होय, अपराजित विजित स्मर ए ॥१७॥

अंग व पूर्व के ज्ञाता

गोवरधन गुणवत, वाणी भवी अण उद्धरे ए ॥
भद्रबाहु बहुभेद, चन्द्रगुपती ससय हरे ए ॥१८॥
दसपूरव धरधीर, विसाख आदि मुनीवर हवा ए ॥
जिनशासन उद्योत, सबल मिथ्यात निवारवाए ॥१९॥
एकादशांग सुजाण नक्षत्रादि सोहामणाए ॥
अनुक्रमि श्री कुंदकुंद, पद्मनामि कोडामणा ए ॥२०॥

आचार्य वन्दना

उमास्वामि मुनि संत, समन्तभद्र भवियां तिलो ए ॥
प्रतिबोध्या सिव कोटि, कीध स्वयंभू गुणनिलोए ॥२१॥
पूज्यपाद प्रसीध, जिनसेन सासनें वंदलो ए ॥
अनोपम अकलंक वीर, धीर बौध जीतवा भलो ए ॥२२॥
गुणभद्रादि अनेक, पूर्वाचारज बहु हुवा ए ।
ते ध्याऊ धरी भाव, कामवांछित सिद्ध थवा ए ॥२३॥

भट्टारक वन्दना

अनुक्रमि श्री पद्मनंदि, पुण्यकंद पदोधक ए ॥
देवेन्द्रकीर्ति सुमूर्त्ति, भवीयणनि उद्धव करो ए ॥२४॥
विद्यानंदि मुनेन्द्र, तेह पट कमलदिवाकर ए ।
मल्लिभूषण माहंत, वचन सिवगुण आकर ए ॥२५॥

लक्ष्मीचंद्र मुनिचंद्र, तस पद कमलि कुमि कक ए ॥
वीरचन्द्र विख्यात, मन्न त्यजि जस विस्तरयु ए ॥२६॥

ज्ञानभूषण सुरूप, भूप सहू मानि घणुं ए ॥
लाड न्यात सणगार, शांति मूर्ति गौतम भणुं ए ॥२७॥

तस पाटि उदयोचन्द्र, प्रभाचन्द्र सोहामणो ए ॥
वादि सरोमणि वीर, हुंबड कुल कोडामणो ए ॥२८॥

अवनी अनोपम रूप, वादीचंद तस पट सोहि ए ॥
वादी सयल सणगार, भवी यण जन तणां मन मोहि ए ॥२९॥

रास रचना का संकल्प

दूहा

एह गच्छपति आदेसथी, रास रचेवा आज ।
उद्यम माड्यो मन रली, सजन आनंदह काज ॥३०॥

लघु गुण देखी पर तणो, गिरि सम लेखि जेह ॥
बहू नीज गर्बह नही, कहीभि सज्जन तेह ॥१॥

सज्जन प्रशंसा

सुजना मन माखण समूं, जे कहि तेह अजाण ॥
पर संतापि सज्जन तपि, माखण एह गुण हांण ॥२॥

सजनासा करसेलडी, सुनू सुगंध सुधूप ॥
वाटीय पीलीय छेदीयु, दाखो नदाखिक रूप ॥३॥

सज्जन नेंबली बांसली, भलो अपना अलि बंध ॥
छेदा भेदां बहु परी, मधुर वचि सु अबंध ॥४॥

सज्जन रचता कर थकी, करया जे परमाणु ॥
ते परमाणुं करी रच्या, मेघ चंदन चंद्र भाण ॥५॥

पावस ऋतु घन ऊपवरें, दीजे चन्दन चन्द ॥
सजन सदाए ऊपकरि, बहु जन नयणानंद ॥६॥

सज्जन कसौटी कोठडी, दिन दिन दीठ वेध ॥
दुर्ज्जण दूरें दीसि रवे, आयम पछो एक वेध ॥७॥

सजन सरीसो क्षण भलो, नही वरस खल साथ ॥
आंबा भली क्षण छाहुली, न भली बाउल साथ ॥८॥

साधु साथि सादज सुखद, नहीं चिर खल खल सूं वाद ॥
अमृत तणो स्परस जु भलो, न भलो विष आस्वाद ॥६॥

दुज्जण मलि नीपाईउ, अरे विधाता जाण ।
काच विना मणि केम लहे, तम विण दिवस वखाण ॥१०॥

दुजणा चूहड दोए समा, दोस्रो दय संतोष ॥
अधारो अवगुण गमि, ऊओति होइ रोष ॥११॥

मात थकी दूज्जण भलो, रखे वखोडो कोय ॥
मात धोयि मल करी करि, दूजण जीभय धोय ॥१२॥

मने नलो मुख मीठडो. मूक्यो दूज्जण दूर ॥
कठिण सिला सेवा लसू , लर्पास भाणू ऊर ॥१३॥

भण्यो गण्यो पण अवगणो, दुज्जण घणुं घणू दूर ॥
मणि मंडित सूं नव्यहरि, प्राण फणी अति दूर ॥१४॥

नीचु न मणो दूज्जणो, देषी विस्वास म आण ॥
जिम नमतो नीचो भीलडो, बाण मूंकी हरि प्राण ॥१५॥

विनय करो अर्द्धचन्द्र करो, तेहू पण खल नडे सोय ॥
सिर पर धरो पाए हण्यु, पण फणी डसतो जोय ॥१६॥

घणूं सीखव्यो विनहस्तव्यो, खल न मूंकि दुष्ट अंस ॥
दूधे धोईयि जोहू बगूं, काग न होइहूं हंस ॥१७॥

खल पुखतो घरडो हवो, तोहू दुष्ट पणूं न जाय ॥
फल पाकां इन्द्र वारणीनां, किमे न मीठा थाय ॥१८॥

दुज्जण जीवो वरस सो, जेह तापि सहू कोय ॥
सूधि मारग संचरि, उत्तम मज्झम लोय ॥१९॥

सूकर दुज्जंण दोए जणां, उपकारी महि मज्झ ॥
सूकर सेरी सूकवि, दूज्जण दोस विसूऊ ॥२०॥

गुणग्राही सज्जन सदा, दुज्जण दोस ज जोय ॥
ए एहू नोखि सभावडो, दोषम देसो कोय ॥२१॥
सज्जन दूरथी विन दुहि, जम मलयो दहिकाय ॥
बेहू दाहक गुण सम हुवा, कुही किम भेद कहिवाय ॥२२॥

मूलग उपकारी सदा, सज्जन दुज्जन बेउ ।
तेह भणी सबला जाणीयि, भला बट साथि तेउ ।।२३।।

दोष लीयिसी तेय जो, करो कवित्त कवि कोय ।।
जूउका तणि अर्थे करी, वस्त्र न मूकि कोय ।।२४।।

सुकवित्त सुकवी करय, सुणी, को एक पामि उल्लास ।
कामिनि नयन कटाक्ष थी, करय असोक विकास ।।२५।।

तुच्छ छे मुझ मति अति घणू, घणू प्रेरयो गुरु भास ।
रास रचूं एह तेह भणी, को मम करसो हास ।।२६।।

विनय प्रदर्शन

श्रोता मन सुध थिर करी, सुणज्यो त्यजी प्रमाद ।
जोडंतां पद दोहलूं, मम धरसो अनुवाद ।।२७।।

सूप समो श्रोता भणो, गुण किहीयो एके जाण ।
दोष त्यजे दूर करी, गुण आदरि वखाण ।।२८।।

चालणी समवली जाणीयि, श्रोता बीजा भेद ।
दोष राखें हृदि दृढ करी, गुणकेरो करें छेद ।।२९।।

एक नर काईं लहि नहीं, सभा मांडाहो थाय ।
मिहिष पडयो जिमि मादणि, आखूं नीरडोहो थाय ।।३०।।
गुण आसाह आगल गुणी, करे ते विस्तार ।
दूर थो अलि कंज गुण लहि, भेक न लहि विचार ।।३१।।

भरत रासनो

जम्बू द्वीप भरत क्षेत्र वर्णन

जबू वृक्षि उपलक्षीयो ए, लक्ष योजन जंबूदीपतु ।
दोए चंदा दोए दिनकरा ए, करय उद्योत जेम दीप तु ।।१।।

सकल दीप सायर माहें ए, महीय मध्यें एहतु ।
लक्ष योजन ऊंचल थयो ए, कणय गिरि नाभि तेहनो ।।२।।

नाम सुदर्शन तेह कह्यु, ए, ज्युं हो सवे कोई वि हुतो ।
अपछराशु सुरि सेवयो ए, थयो एक सोळ जिन नेहतो ।।३।।

पंचोत्तर योजन उन्नत ए, सत योजन आयाम तु ।
योजन पंचास विस्तारें कह्यो ए, तारय भवीआ सुठाम्मतु ॥४॥

कनक कलस करी मंडीयो ए, मंडीयो कुमतिनी मानतो ॥
मानस्थंभ आगल भलाए, भली घटा निशान तो ॥५॥

सिखर ध्वजा घूघरी घणं ए, घमकि पवन संयोग तो ॥
लहुलहिं गयनें दूरथी दीसे ए, दीठि दुरति वियोग तो ॥६॥

कनकमय रतने जड्या ए, अष्टमंगल सहित तो ।
रतनवेदी रली आमणीए, मणीमय बिंब समेत तो ॥७॥

पंचसे धनष ऊनत सणो ए एक सु आठ प्रमाण तो ॥
पत्रवरण किरणें करीए, जी कीया कोटी भाण तो ॥८॥

अमर असुर विद्याधर ए, चारण मुनी करे सेवतो ।
पंच चूरण स्वस्तिक करीए, करय पूजा नित देव तु ॥९॥

पंचामृत अभिषेक होइ ए, होइ त्यांहा नाटारंभ तु ।
अमरी किंनरी जिन गुण गायिजिए, नाचि नाचि रंभ तो ॥१०॥

ताल कसाल मादल भला ए वाजि अनेक वाजित्र तो ॥
भवीअण जन भावि भावनाए पूजय जिन जग मित्र तो ॥११॥

तेह मेरू दक्षण दसिए, दीसय भरत सु क्षेत्र तो ।
गंगासिंधु विजय करीए ए, सोहि खट खंड विचित्र तो ॥१२॥

आरज खड तिहा जाणीयिए, जाणे स्वर्गह खंड तो ।
मगध देश तिहा भलो ए, सहू देश माहि प्रचंड तो ॥१३॥

मगध देश वर्णन

पुण्य तीर्थे करी अलकरयो ए, गंगा यमुना मध्यतो ॥
ठाम ठाम मुनि तपि बलिए बने बनचरछि अवध्य तो ॥१४॥

सरोवर छे जीहां सोहामणाए, आमणा कमल विस्तार तो ॥
परिमलें बाध्या भमरलाए, करयते रण झणकारतो ॥१५॥

निरमल जलि करी पूरीयांए, हूस करें स्वर सार तो ॥
सारस चक्रवाकी सणो ए, कलीरव करय अपार तो ॥१६॥

वनवाडी विवध परी ए, फिरफेर तरु अर वृक्ष तो ॥
आंबा आंबली आमलीए, अशोक अवती अति भुक्त तो ॥ १७॥

बोलो वकुल बली वलसरिए, कदंब चंपक कुरंट तो ॥
वाडी सींचे बा बालकाए, गांवती झाके अरहिंट तो ॥१८॥

रेहेंट चीत्कार नीसि सरो ए, कूल पूरेसि एह तो ॥
कवण चतुर नर मानतां ए, पाखि विक ती न पेह तो ॥19॥

जाई जूई जासू अणीए, सोवन केतकी कोड तो ॥
मोगरा मालती मचकुंद ए, पाडलीनि अशोक तो ॥20॥

नालिकेर नानारंग ए, नारंग नें नागवेल तो ॥
कमरख कोठां केवडा ए, केवडो वलिखि केल तो ॥21॥

दिशि दिस द्राक्षा मंडप ए, तपि छाया प्रचूर तो ॥
पन्थीयडा पंथ चालता ए, संताप नें करि चूर तो ॥22॥

लींबू जांबू जंबीरडाए, बीजोरा बहुभेद तो ॥
रायण आदि अनेक तरु ए, देखता जाय खेदतु ॥23॥

क्षेत्र दीसि धान्य तणाए, नीपना अनेक प्रकार तो ॥
रान्यय कुणबी कन्यकाए, गावह सरस अपार तु ॥24॥

ते सुणें वनि वणी हरणलीए, वेधी नचरि लगार तु ॥
वीसय वेध्यांबली हरणाला ए, तुहु आइ वनह मझार तु ॥25॥

बालकाने नयने वीकीया ए, लाजीया तेणी वार तो ॥
पथी आ गान सुणी करी ए, सांभरी आवे नीज नार तो ॥26॥

वदन नीहाल जता बापुडाए, कुही नवि सकय लगार तो ॥
एहवी गति विषई तणीए, वीसरि विवेक विचार तु ॥27॥

नयर पाल्हणपुर जती भलाए, खेटक कर्बट नाम तु ॥
भरया धण कण करी घणं ए, कणय रयण अभिराम तु ॥28॥

अनेक लोक तीहां वसिए, हुसए ते देवनी अपार तु ॥
रूप सपना चतुर पणिए, महाजन विविध प्रकार तु ॥29॥

वन वन गिरि गिरि पुर पुरे ए, कनक तणा चतीयतु ॥
जिन प्रासाद सिखरबंध ए, देखी हरखें भव्य जीव तु ॥30॥

ठाम ठाम मुनीवर दीसिए, देतां उपदेश तो ।
नरनारी सणगार करीए, जिन पूजी सुविशेष ते ॥31॥

घांधि मुनीने नीरमलाए, स्वामी वखाण करि सार तु ॥
च्यार वरण लोक पूछी ए, देश सुधर्म विस्तार तु ॥32॥

दूहा

कटक नदी सिखर हस्यो, मांग नही अण एक ॥
कटक मंडित कर नार तस्यां, रवी गिर वंश विवेक ॥1॥

नीत राखें नृप अति घणं, लोक अनीत विकार ॥
ए आचार्यें मोटूं अछे, डाहा लहि विचार ॥२॥

इत्यादिक सोभा सहीत, सहू सुहीतकारी देश ॥
भवी अण जन सहु साभलो, नयरह सुगुण कहेस ॥३॥

भास भमाडलोनी

राजगृह नगर वर्णन

राजगृह नगर छि रुवडुं तो भमाडली ।

तेह देश माहिं बीसालतो, पायल फरतो ऊंनत तो ॥भ ॥
सोनातणो सोहितालतो ॥१॥

राता रतन को सीसे अकघा तो, गगन किरण विस्तार तो ॥

मध्या नें रवी तावडतो ॥भ०॥ रातडी होयि जोहां सार तो ॥२॥
नील रतन करी वेषीउं ॥तो भ०॥ कही एक नीलो होय तो ।
रवी जाणे नील गिरि परी ॥तो भ० ॥ ऊग्यु एक अण तेय नो ॥३॥
अलि करी पूरी खातीका ॥तो भ०॥ वीटी रहि पोर मान तो ॥
जाणे लोभिणी सापिणी ॥तु भ०॥ राखी रही एक निध्यान तु ॥४॥
पिर पिर पेलीयि पेषणा ॥तो भ०॥ पोढी पोल पगार तु ॥
मोटी मेडी मतवारणां ॥तो भ०॥ बारणां वज्र सूं सार तु ॥५॥
हाट श्रेण सोहामणी ॥तो० भ०॥ साहि मेडी श्रेण तो ॥
धवल हर ऊन न घणा ॥तो भ०॥ सात भूमि सोहि तेण तो ॥६॥
नर सुंदर सुरपति समा ॥तो भ०॥ भूषण पिहिरि बहावनु ॥
लीला लिहिर बहि वारीआ ॥तो भ०॥ दान पूजा करि भावतु ॥७॥
कल्पवृक्ष जिम सोहीआ ॥तु भ०॥ भला भोग भोगवें चंग तु ॥
घरि घरि मोहुछव होय ॥तु भ०॥ होइ नित नवारंग तु ॥८॥
मोटां मेडी मालीया ॥तु भ०॥ विस्तरि अगुर सुधूप तु ॥
चूआ चंदनति कस्तूरी ॥तु भ०॥ परिमल महे महे रूप तु ॥९॥
बरास कपूर बली एलची ॥तु भ०॥ पान बीडा अखंड तु ॥
भोगी भला सुख भोगवि ॥तु भ०॥ नहीं त्याहां पाप पाखंड तु ॥१०॥
मंदरि नारी पदमनी तु ॥भ०॥ रूप सोभाग सोहंत तो ॥
हाव भाव अनेक परी ॥तो भ०॥ कंतह चीत हरंत तो ॥११॥
मलपती चालि गजगामिनी ॥तो भ०॥ बीछीआ नेउर नाद तु ॥
करकंकण चूडी रूडी ॥तो भ०॥ खलकती पांकघोवाद तु ॥१२॥

कटी मेखला घिरणी घूघरी ॥तो भ०॥ चमकि कसीही अपार तो ॥
बासे बूटी हाथीयो ॥तो भ०॥ उरवर सांकिहार तो ॥१३॥

कोटि चंपा टोडर तुमभावली०॥ झूमणुं झूलकि रसाल तु ॥
नाके मोती अनोपम ॥तो भ०॥ काने भबुकि झाल तु ॥१४॥

खरो चांदलो मोती भरयो ॥तो भ०॥ पीपल सोहिवाल तु ॥
सेसफूल रुडी राखडी ॥तो भ०॥ आंखडी झिमणी आलि तु ॥१५॥

दान सील तप भावना ॥तो भ०॥ करय मंगल गीत गान तु ॥
पात्र विविध नें मनरंगि ॥तो भ०॥ दे बिनीत दान मान तो ॥१६॥

जिन भुवन तिहा भामणां ॥तो भ०॥ सिखरबद्ध उत्तंग तो ॥
धज तोरण कनक कलस ॥तो भ०॥ वाजित्र बाजि सुरंग तु ॥१७॥

जिनवर बिंब सोहामणा ॥तो भ०॥ महोछव होयि गुणमाल तो ॥
मुनीवर तत्व पुराण सूं ॥ती भ०॥ कहिधर्म कथा विशाल तो ॥१८॥

वाडी वन तीहां सोहीयां ॥तो भ०॥ फल फूल सहित अपार तु ॥
सुडा साद सोहि घणा ॥तो भ०॥ भमरा रणझणकार ॥१९॥

वाड वडा सेलडी तणा ॥तो भ०॥ यंत्रे पील्या रस देयनु ॥
झापेघा सही उपगारि ॥तो भ०॥ कृपण तणा एह भेयतो ॥२०॥

आंबा रान रली आमणा ॥तो भ०॥ सोहि तांहा सुखकारतो ॥
कोएल करय टहुकडा ॥तो भ०॥ विरहीनि दुःख अपार तु ॥२१॥

सरोवर सोहि जल भरया ॥तो भ०॥ कमल कुमुद सहीत तो ॥
हंस सारस सरस बोलि ॥तो भ०॥ चकवा चकवी सुमीत तो ॥२२॥

ते नगरीनु राजीउ ॥तो भ०॥ श्रेणीक राय सुजाण तो ॥
रूपि मनमथ जीतीउ ॥तो भ०॥ परतापिं सुभाण तो ॥२३॥

सयल सजन आनंद करू ॥तो भ०॥ जाणे पूरण चन्द्र तु ॥
राज लीला अखण्ड करी ॥ तो भ०॥ जासो दूजो इन्द्र तु ॥२४॥

न्यायवन्त गुण आगलो ॥तो भ०॥ याचिक भी कल्पवृक्ष तु ॥
समकित रयणें मंडीयो तो भ०॥ अपपुहुन गुणि दक्षि तु ॥२५॥

तस मन रंजन कवडी ॥तो भ०॥ राणी चेलणा नाम तु ॥
सीलवती गुण रूपवती ॥तो भ०॥ रूप सोभाग्यनो ठाम तो ॥२६॥

समकित व्रत करी मंडीत ॥तो भ०॥ बोलन मोल्यो ज्ञान तो ॥
एक जिह्वा हूं किम कहू ॥तो भ०॥ बहू गुण तणो निधान तु ॥२७॥

जिम रुक्मिणी सूं माधवो ।।तो भ०।। रोहिण सूं जिम चंद तो ।।
तिम चेलणा सूं श्रेणिक ।।तो भ०।। राज करे सुख कन्द तो ।।२८।।
जिम रती सूं मकरध्वज ।।तो भ०।। इन्द्राणीसूं जिम इन्द्र तु ।।
तिम चेलणा सूं श्रेणिक ।।तो भ०।। राज करि सुख समुद्रतो ।।२६।।

वस्तु

श्रेणिक राजा २ करे तिहा राज, भोगवि सुख सोहामणो ।।
धर्मवन्त बली न्याय पालय, पर उपकार करय घणो ।।
प्रजा तणों सन्ताप टालय, जिनवर धरम करि भलो ।।
अनेक भूप करि सेव, समकित गुणे करी मंडीयु । सेवे श्री गुरुदेव।।१।।

भास माल्हंतडानी

एक बार राजा श्रेणीक ए महालंतडे । सभा बिठी गुणवत ।।
सुणे सुन्दरे । सामंत अत्री मडयो ए ।मा०। सहित विद्वज्जन सत ।सु० ।१।
चमर ढालि वारंगनाए ।मा०। जाणि गंग कल्लोल ।।
करवली कंकण रणझुणिए ।सु०। नयण चालि अती लोल ।।२।।
गज अवगाह गजगामिनिए ।मा०। आंदोलि वारोवार ।।
सिर धरि छत्र सोहि भलूए ।मा०। नीर्मल यस विस्तार ।।सु०।।३।।
अनेक अत्री नृप परवर्यो ए ।मा०। नक्षत्र सू जिम चन्द्र ।।
मालि भाव सभातणो भलो ए ।सु०। सहश्राक्ष जिम इन्द्र ।।सु०।।४।।
सांभलि कवीनी कवि कला ए ।मा०। काव्य कतूहल चग ।।
क्षण एक षटदर्शन तणाए ।मा०। वादीयां वाद आरंभ ।।सु०।।५।।
सा री ग म प ध नीसप्त स्वर ए ।मा०। तान मानादि संगीत ।।
सुधा गगावती नृत्यकी ए ।मा०। नृत्य जोवि वीर बाल ।।सु०।।५।।
बदी जन बीरद बोले ए ।मा०। छद प्रबंध कवित्त ।।
दान देवि मनवांछीत ए ।मा०। वन धन ए नृप रीत ।।सु० ।।६।।

वनपाल का आगमन

तीणि अवसिरि एक आवियो ए ।मा०। वनपाल राज दुआर ।।
राज आदेशथी हरषीयो ए ।मा०। पोहोतो सभा मझारि ।।सु०।।७।।
फल फूल भेट मूंकी करीए ।मा०। वीनव्यु राय वीर नाथ ।।
घन वन तह्म पुण्यि करीए ।मा०। समोसरण अभिराम ।।सु०।।८।।
विपुलाचल अति रूवडो ए ।मा०। महावीर जिन अवतार ।।
आव्या अतीह सोभणाए ।।सु०।। भवीमण तारणहार ।।६।।

वनवाडी बहु महमहीए ।।मा०।। फल फलू तरां बहु फूल ।।
एकि वारि प्रगटयाए ।।सु०।। वाय सुगन्ध अनुकूल ।।१०।।

कोयल करि टहुकडाए ।।मा०।। हुकडा भमर गुजार ।।
मयरि किनरी मणझराए ।।सु०।। रासडा वाजि सार ।।११।।

साढी बार कोडी वाजीनए ।।मा०।। मादल ताल कंसाल ।।
भेरी भूंगल भणूं महमहीए ।।सु०।। सरणाई साद रसाल ।।१२।।

अमर किनर खग फणधराए ।।मा०।। करय ते जय जयकार ।।
विमान विठा विद्याधराए ।।सु०।। आवया जाग अपार ।।१३।

राजा श्रेणिक की प्रसन्नता

ते वाणी सुणी नृप हरषीए ।।मा०।। सींचीउ अमृत धार ।।
सिंघासण थकी उठीउए ।।सु०।। चाल्यो सात क्रम सार ।।१४।।

वीर देसि विवेकसूंए ।।मा०।। नमयो राय उदार ।।
वनपालनि पसाय दीयोए ।।सु०।। सहू भूषण बलिहार ।।१५।।

आनन्द भेरी उछलीए ।।मा० ।। वांदवा वीर जीणंद ।।
राजा चाल्यो कटक सूंए ।।सु०।। अंतउरी सूं आणंद ।।१६।।

श्रेणिक का समवसरण के लिये प्रस्थान

हाथी घा बहु सणगारीयाए ।।सु०।। घमघमि घूघर माल ।।
घंटा घणू टकार करीए ।।मा०।। सूंडि मोती जाल ।।१७।।

कानें हेम चमर धर्याए ।।मा०।। अंबाडी भला कार ।।
पंच वरण वस्त्र पहिरियाए ।।सु०।। सुंभट हाथी हथियार ।।१८।।

जगमग भाला झल हलिए ।।मा०।। बिठा अंकुश धरी हाथ ।।
कनक लगांम मोती जडयाए ।।सु०।। कंठ चमर सोहि साथ ।।१९।।

तुरग चालि चमकताए ।।मा०।। रतन जडीत पलाण ।।
गजविसी राय चालीयुए ।।सु०।। चेलणा सहित सुजाण ।।२०।।

[illegible] लोक सहूए ।।मा०।। नर नारी धरीय उछाह ।।
[illegible] चाली करीए ।।सु०।। उच्छक हवा मानो माहि।।२१।।

[illegible] ।।मा०।। सेरी समर्द जल'प ।।
हर्षि [illegible] ।।सु०।। बीकाथि आंबो पंथ ।।२२।।

हार तुटि केसि छूटिए ।।सु०।। फाटि चीरनो रंग ।।
माट पडि कोली कोबेए ।।मा०।। गोरडी मकीय सुचंग ।।२३।।

भवि भोला भला भवीमाए ।।सु०।। आवी आवीदया काज ।।
वीर स्वामीनि मन रलीए ।।सु०।। साथे सामग्री समाज ।।२४।।
श्रेणिक राजा भि देषियो ए ।।सु०।। समोसरण भवतार ।।
गज थको हेठो उतरयोए ।।सु०।। जाणि विनय भवतार ।।२५।।

दूहा

सनि सनि राय चालीयो, भानद भंग न माय ।।
छत्र चमर विण गुणनिलो, सुधो मन वच काय ।।१।।

मानस्तंभ का वैभव

मानस्थम्भ शोभा घणी, मान निवारण दीठ ।।
बीस सहस पग थारीया, चढता हरष पईठ ।।२।।
गढ सरोवर वली खतीका, फलवाडी बहु फूल ।।
कांचन गढ वाद वापिका, जन्तु रहित भतूल ।।३।।
भमरी किनरी भपछरा, करय ते नाटक साल ।।
उपवन वाडी फूलि फली, रतन वेदिका विसाल ।।४।।
पच वरण धज लहलहिं, मणीमय गढ उत्तग ।।
कल्पवृक्ष पकति भली, उन्नत भाम्बा भभग ।।५।।
रत्नस्तूप तेज झगमगि, मगमगि धूपह कुंभ ।।
हर्मावली हरषवीयि. दीसि नही किहीं दंभ ।।६।।
नीर्मल फटक तणो सुणो गढ उन्नत भभिराम ।।
बार सभा तिहां रूवडी, भवीमां करे विश्राम ।।७।।
प्रथम सभा मुनिवर तणी, कल्पनारी बीजी होय ।।
भर्जिका सभा त्रीजीसणो, चोथी योतिक स्त्री जोय ।।८।।
पचमी वितर कामिनी, छठी नागिनी जाण ।।
नागतणी सातमी सभा, भाठमी व्यतरनी वखाण ।।९।।
नवमी योतिक सुरतणी, दसमी सुर कल्प वास ।।
भग्यारमी नरवर सभा, बारमी तिर्यंच निवास ।।१०।।
बाघ गाई गज सिंह सु, सर्प नकुल सुविचार ।।
ग्राम सिंह मृग हय महिष, करि हंस मार्जार ।।११।।
वातर मीढा मोरडा, गरुड भेरग भतीव ।।
समली सिंचाणा सेहली, नेह लागा त्याहां जीव ।।१२।।
जात वैर छांडी करी, कूर जीव तहां जात ।।
भूष तरस पीडा नही, नही भाणी मन भ्रांति ।।१३।।

आंधला नयरो देखिए, पांगला चालि पाय ॥
गूंगा सूधा चालिए, मूंका जिण गुण गाय ॥14॥

रोगीयडा निरोग होइ, कोढी निर्मल काय ॥
बिहिरा गुण श्रवण सुणी, समोसरण मही भाय ॥15॥

पोल छत्रीस सोहामणी, बणी तोरण गुणमाल ॥
ठाम ठाम मोती झूंबकां, मेढी जालीयां सुविसाल ॥16॥

सूत्रधार तिहां धनपती, सुरपती आज्ञा तास ॥
एक जिह्वा केम वर्णवूं, समोसरण सुख वास ॥17॥

बार सभा मध्ये सही, भव्य सिंहासन रंग ॥
बैठा जिनवर निर्मला, चतुरांगल उत्तंग ॥18॥

बैठा स्वामी सोहामणा. चोवीस अतिसयवंत ॥
प्रातिहार्यज सोहामणा, हरषु राय महंत ॥19॥

भव्य प्रदक्षणा देई नम्यो, पूजेवि अष्ट प्रकार ॥

कर जोडी जिन वीरनि, स्तवन करि विस्तार ॥20॥

जात प्रभ्यपुवीसनी

महावीर स्तवन

वीर जीनिस्वर त्रिभुवन तार । जय जय स्वामी जगदाधार ॥
पाप संताप निवार ॥ 1॥

नाथ वंस तणो संणगार । सिधारथ राय सुत अगि सार ॥
प्रीयकारणी मल्हार ॥ 2॥

कुंडलपुर धरयो अवतार । वरस मेघ कनक मणिधार ॥
नवषटमास अपार ॥ 3॥

सुरपतीइं जिन अंके धरयो । चोणी काय देवि पर वरयो ॥
सुरगिरि पिर संचरयो ॥4॥

अनेक उछाह मंदरगिर पामी । आया पंडु सिला पर स्वामी ॥
सुर सुरपति सिर नामी ।.5॥

एक योजन मुख वदिणमिवाण । आठ योजन गंभीर बखाण ॥
आगम कह्यो प्रमाण ॥6॥

सहस अष्टोत्तर कुंभ सज करया । खीर सायर निर्मल जल भरया ॥
इंद्री तेडकि करे धरया ॥7॥

जय जय करंता जिन सिर ढाल्या । जनम जनम ना पाप पखाल्यां ।
सहस्र नयणे नीहाल्या ।।८।।

एक सहश्र आठे सुभ लक्षण । सणगारि इन्द्राणी विचक्षण ।।
ईक्षण सुखद सरूप ।।९।।

स्तवन गीत नर्तन सुखदात । वीर नाम त्रिभुवन विख्यात ।।
पूजा जिन मात तात ।।१०।।

कही वृत्तांत आप्यो तब बाल । बाजि मादल ताल कसाल ।।
नाटक रच्यु रसाल ।।११।।

नित नित सुरपति सेवा आवि । वस्त्र काल भूषण पहिरावि ।।
अमरी किनरी गुण गावि ।।१२।।

तनु भव भोग विरक्त जाणी । लोकांतक देवे स्तव्यु वखाणी ।।
जय जय करता वाणी ।।१३।।

सुरपति सिबकां सू लेई चाल्यो । वनि वसी सिद्ध नमन सभाल्यो ।।
स्वामी संजम पाल्यो ।।१४।।

घात कर्म गिरि वज्र समान । प्रगट्यो निर्मल केवलज्ञान ।।
तनु तेजि जित्यो भानु ।।१५।।

धनदत्त रचित तह्य सभा सुसोहि । त्रिभुवन जन केरां मनमोहि ।।
जगि तुह्य सम नही कोहि ।।१६।।

असोक वृक्ष सोहि सुखकार । पुष्प वृष्टि सुर करि उदार ।।
दुंदुभी नाद विस्तार ।।१७।।

चोसठ चमर अमर तुझ ढालि । दिव्य ध्वनि धर्मने प्रजू आलि ।।
भामंडल सुविशाल ।।१८।।

रतन जडित सिंहासन दीसि । छत्र त्रय सुर धरि जेहे सिसे ।।
दीठी सहू मन हीसि ।।१९।।

छाया रहित चतुर्मुख स्वामी । पुण्य फलि तुझ महुरति नामी ।।
रक्ष राक्ष शिवगामी ।।२०।।

मोह राक्षस भुक्षथी मुझ राखो अनेक जीवने प्रलय जे आखो ।।
मुकती मारग मुझ दाखो ।।२१।।

राग द्वेष मोटा विखाण । डसया दीय आप संताप ।।
टालो तेह विष व्याप ।।२२।।

मन उदयो मिथ्यात महागह । संसार कूपें नाखें आगह ।।
निग्रह तेहनो कीजि ।।२३।।

काम पारधी मुझ मृग ने रंजाणि । नारी नयण शर केरे संधाणि ।
तुझ विण कोण राखी जाणि ।।२४।।

आसा नदी सागर संसार । लोभ मगर मुखें पडयो गमार ।।
राख तूं जगदाधार ।।२५।।

विषय गहन इन्द्री गज रुद्र । तृष्णा अगन ज्वाला अति क्षुद्र ।।
तिहां थी राख समुद्र ।।२६।।

दोष कंटक भव वन मझार । गर्भ पिसाच अमरादि अपार ।।
ते मुझ फेरो निवार ।।२७।।

डाकिनी साकिणी भूत विताल । वाघ सिंघन नाठि विकलाल ।।
तुझ नाम ध्यांता दयाल ।।२८।।

जगि मंगल कारी वीर जीणेंद्र । प्रभाचन्द्र वादीचन्द्र गणेंद्र ।।
स्तवि विजय देवेन्द्र ।।२६।।

दूहा

एणी पिरि वीर जिणवर तणुं, स्तवन करी सुजाण ।।
गणधर गौतम आदि करि, गुनी वांद्या सुवखाण ।।१।।

मनुज सभा माहि बीसिउ, भाव सहित गुणवंत ।।
धर्म कथा रस सांभली, दीव्य धुनि जयवंत ।।२।।

योजन मान सु विस्तरी, वाणी अमिय समान ।।
प्रगटी वीर वदन थकी, निर्मल जिम हिय भान ।।३।।

तत्त्व पदारथ सांभली, पाम्यो परमानन्द ।।
पुनु श्रेणिक सभा थकी, वंदीया गौतम गणेंद ।।४।।

भाव धरी मन माहिं घणुं, पूछि कथा विचार ।।
राय जसोधर तेहनी, कहो स्वामी कथा संचार ।।६।।

श्रीमंतो जिननायकाः शुभ चतुर्विंशतम् महाग्रर्थकाः ।।
त्रैलोकेश्वर पूजिता, जिनवराः सद् पंचकल्याणकाः ।।
अर्हन् श्री परमेष्ठिनः सुखकराः सत्प्रातिहार्याष्टकाः ।।
श्री देवेन्द्र मुनिकमलस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगलं ।।१।।

इति श्री यशोधर-महाराज-चरित्रे रासचूडामणी काव्य प्रतिछन्दे भूदेव कवि श्री विक्रमसुतदेवेन्द्रविरचिते श्रेणिक समवशरण आगमन महावीरस्तवन श्रीगौतम प्रश्नकरणो नाम प्रथमोऽधिकार ॥१॥

द्वितीय अधिकार

भास हेलीनी

यशोधर राजा की कथा

गौतम स्वामी देव । मधुरीय वाणी उच्चरया हेल ॥
दंत किरणें करी हेव । जनमनना तिमिर हरया हेल ॥१॥

सुणो श्रेणिक सुविचार । राय जसोधर कथा तणो हेल ॥
एह्वि दया अडार । छेदहुसि मिथ्यातनो भणो हेल ॥२॥

प्रगटि दया अपार । पुण्य होय एह सांभलि हेल ॥
पाप तणो निरधार । मन तणा संसय सहु टले हेल ॥

योध देश वर्णन

जंबूद्वीप मझार । भरत क्षेत्र भावि जणो हेल ॥
आरज खड तेह ठाय । योध देश कोडामणो हेल ॥४॥

कुकुंट पाति गाम । ठाम ठाम सोहि रुवडा हेल ॥
अनेक लोक विश्राम । सजन वसि धर्मी घणा हेल ॥५॥

गिरि कंदरा वनमाहि । हाथी हींडि तिहा मलपता हेल ॥
सीतल तरुवर छांहि । हाथणी सूं रहींडि खेलता हेल ॥६॥
कहीं एक हरीणा रान हरी नें भय नाहा ठां फरि हेल ॥
मुनीवर धरवां ध्यान । तेहि तणो आश्रम अनुसरि हेल ॥७॥

वाडी वन ठाम ठाय । कपूर कदली कोमल दीसि हेल ॥
नालकेर खजूर । पूग तणां तरु अरही से हेल ॥८॥

ताल तमाल हें ताल । सरल सोहि सजन जस्या हेल ॥
कोमल मध्य रसाल । देवदारु आदि उत्तमा हेल ॥९॥

तज पत्रज नागवेल । एलची लवी फलें करी हेल ॥
जायफल लवंगह मेल । भरी वेलडि भूमके भरी हेल ॥१०॥

द्राख मंडप विसाल । छाया फल करी संक हेल ॥
पंथीयडा तीणि काल । भूष तरस तह विसरयां हेल ॥११॥

सरोवर नीर्मल नीर । कवल पोयणे घणुं मडींईयां हेल ॥
आवां वनह गंभीर । देखी माननी मान छंडीया हेल ॥१२॥

भमरा रण झणकार । होइ कोएल ना टहुकड़ा हेल ॥
कामनी कंत सहीत । सुणता अमृतना घूंटया हेल ॥१३॥
खेलि कंत सूं तेह । नेह भरणं रि तेजड़ा हेल ॥
रूप सोभागह गेह । गायव सरस गीत गोरडी हेल ॥१४॥
ता अनेक ताणे देश । निपजी सरस सोहामणा हेल ॥
गाम गाम सुविसेस । गिर सरवा ध्यान द्रम घणां हेल ॥१५॥
जिणवर तणा प्रसाद सीख रे । ध्वजा मण्ड लहलहिं हेल ॥
घंटा भणेंकरी साद । गर्व न करो स्वर्ग इम कहि हेल ॥१६॥

राजपोर नगर वर्णन

तेह देश मझार । राजपोर नगर छि अति भलूं हेल ॥
अमरावती जिम सार । काही पाताल करी संकल्पो हेल ॥१७॥
ऊंत तणा आवास । रास रमे रामा रूपडी हेल ॥
कत सूं गोठ विलास । हाथ चालंतां खलाके चूडी हेल ॥१८॥
रतण तणी छि भीत । नीज प्रतिबिंब ने देखीयो हेल ॥
कंत सूं मांडि खंत । अवर नारी सूं प्रेम लेखियो हेल ॥१९॥
आंगण रतनमि भूमि । निश तारा प्रतिबिंबिया हेल ॥
मोती ऊपनो भ्रम । हंस चरता विलखा थया हेल ॥२०॥
दीसि पडया मोती । तेहवें पण हंसनव्यवहरि हेल ॥
कुकुरिण छे तर्‍यां होति । सहीते सज्जननें ते हेयो नहि हेल ॥२१॥
श्रावक सुजन अपार । दान पूजा करि सणी हेल ॥
पात्र प्रतीसय सार । पंचाचर्य होइ घणो हेल ॥२२॥
उपवनाह्यि उरांग । खड़ो कली निर्मल अलि भरी हेल ॥
पीठी परिमल रंग । फूल महिमहि तिहा बहू परी हेल ॥२३॥
जल क्रीडा करि नार । कंत सरीसी सोभागिणी हेल ॥
ते नगरी मझारि । दीसि नही को दो भागिणी हेल ॥२४॥
नर तिहा जाणे इन्द्र । रूप संपदा जोबने सुखि हेल ॥
गुण लक्षण समुद्र । धरम घणो छि तेह तणो हेल ॥२५॥
अवर मिथ्याते लोक । वरजइ व्यापार तीहा नसि हेल ॥
नही कोहनि दुःख सोक । धन कण्य तेह तणि उल्लसि हेल ॥२७॥
राजभुवन उत्तंग । कनक कलश ध्वजा सोहीयो हेल ॥
फाटक मंडप बहु रंग । रतोत्सव जनि मोहीयो हेल ॥२७॥

जाणें नृप कर एह । प्रगट प्रतापि धीर धरयो हेल ।।
लाल रतन तणा तेह । तोरण सोभालंकरयो हेल ।।२८।।

मारीदत्त राजा

मारिदत्त श्राहां राय । राय अनेक वणं सेवीयो हेल ।।
पुण्य प्रताप सुठाय । जिणि प्रजा लोक निर्भय कीयो हेल ।।२९।।

गज घोडा असंख । रथ पाला पार नहीं हेल ।।
चौदह विद्या सुलक्ष । च्यार नीति तेहनीछि हेल ।।३०।।

सौम्यगुणि जिम चंद्र । प्रताप गुणि सूर जाणीयि हेल ।।
लीला गुणि जम इंद्र । रूपि कामवखाणीइ हेल ।।३१।।

मनें घणुं मिथ्या भाव । क्रूर मतीछि अति घणी हेल ।।
तेह तणी नारी सुभाव । रूपवंती नामि सही रूपणी हेल ।।३२।।

तेह सरीसो राय । राजपालि वयरी विण हेल ।।
विषयासक्त सभाय । धरम न करि एक क्षण हेल ।।३३।।

दूहा

नगर में भैरवानन्द जोगी का आगमन

तेणि अवसरि नयरी मांहि, जोगी आव्यु प्रचंड ।।
भैरवानंद नाम तेह तणुं, बोलि बात वीतंड ।।१।।

अनेक जोगी बीहामणा, दीसि तेहवि साथ ।।
शस्त्र त्रिशूल आदि करी, आयुध छि तेह हाथ ।।२।।

डम डम डमरू डाकलां, बजावें बीकराल ।।
सिर सींदूर लाबी जटा, कहावें ते खेत्रपाल ।।३।।

जोगी नागाछि केटला, राखि चरड्या अंग ।।
हरण चमर पिहिरि केटला, बाघ चर्म पिर रंग ।।४।।

कछोटी यावली केटला, बाबरी झांट अटाल ।
हाक दीइ एक दूरंधरा, जीव तणा तेह काल ।।५।।

भास नारेसूआनी

जोगी का रौद्र रूप

जीव हंसक ते पापीया । नारे सूआ ।। हींडिवम खेलंत ।।
चक्रनाले घणुं फेरवी ।।ना०।। बनचर प्राण हरंत ।।१।।

अद्धं चंद्र फरसी धरि ।ना०। आणे मन तणी डाढ ।।
मगमान करि मस्तू ए ।ना०। हाक करि बनी गाढ ।।२।।

हाथे अपलना खापरा ।।ना०।। लोह कछडी करि उन्ही ।।
जीभि धारि ज्वाला पीयि ।।ना०।। भागी भाकाहारि देह ज्ञान ।।३।।

गुपत खडग के तावहि ।।ना०।। गरल केतला चीकमाल ।।
लोह कुडीला कडी धरि ।।ना०।। बली छुरी विकराल ।।४।।

कोटें शींगी बजावता ।।ना०।। दुर्धर शींगडा नाद ।।
शंख बजावि ते सवि ।।ना०।। मांहो माहि करि वाद ।।५।।

भखि भांग धतूरडो ।।ना०।। राता नेपाखि देह ।।
तुंबडी पत्र घणा धरि ।।ना०।। भीष मागि गेह गेह ।।६।।

केटला कोट कांथडी ।।ना०।। चीवरा माला हार ।।
चीथडायु टोप शिर धरि ।।ना०।। केटला शिर जटा भार ।।७।।

काली मूद्रा धरि केटला ।।ना०।। फटक मूद्रा वेहू कांन ।।
लडथडता हींडि घणू ।।ना०।। गावि करि गीत गांन ।।८।।

हाथें दोरणां कूचरणां ।।ना०।। रीछडा केतला हाथ ।।
चीत्रा वाघ बचां घरणा ।।ना०।। केटला मांकडा साथि ।।९।।

किनरी जंत्र बजावता ।।ना०।। लेतां गोरख नाम ।।
विखय बाह्या भूला भमि ।।ना०।। पाप मिथ्यातनो ठांम ।।१०।।

जोगणि साधि साकोतरी ।।ना०।।डाकिणी शाकिणी भेद ।।
जाणे वालती व्यंतरी ।।ना०।। नाक तणा तस छेद ।।११।।

अस्थि तणां काने कुंडल ।।ना०।। संखलाना गलि हार ।।
अस्थि तणां हाथे कडा ।।ना०।। कोट सीगी तणगार ।।१२।।

व्यंताल काल पंचाक्षरा ।।ना०।। वेडा वेटक अनेक ।।
कामण मोहण उच्चाटणा ।।ना०।। कूड कपट परिपेख ।।१३।।

विषयी विकनी जुवारीया ।।ना०।। जूठा बोला लपाट ।।
जार्ये भूला पर भोलवि ।।ना०।। ते किम पामि सुवाटि ।।१४।।

एह तर जोगी जोगिण गली ।।ना०।। देखो मीरपानंद ।।
लोकमानि मिथ्यातीया ।।ना०।। विवेक नहीं मतिमंद ।।१५।।

जोगी द्वारा रावण विभीषण आदि को देखने की गर्वोक्ति

लांबू कूंच नख मोटेरडा ।।ना०।। मोरख पीछनां छत्र ।।
लोक पूछि वात ते कहि ।।ना०।। फाकम बोलि विचित्र ।।१६।।

रावण लंका राजियो ।।ना०।। दीठो बभीषण साथि ।।
ब्रह्मा ईश्वर देखीआ ।।ना०।। जमीयो लक्षमी साथ ।।१७।।

हरी सूं मीठी करी गोठडी ।।ना०।। कोधी बलभद्र साथि ।।
पांचे पांण्डवा मानता ।।ना०।। मत्रबलिमाहारी भाख ।।१८।।

रामलक्ष्मरणे वषाणीयो ।।ना०।। सीताम्मि पूजा कीध ।।
अनेक राणा राय राजीया ।।ना०।। ते मूढ वादि प्रसीध ।।

मारीदत्ते वात सांभली ।।ना०।। तेडाव्युते ततकाल ।।
ते आव्यु ऊतावलो ।।ना०।। साथ जोगी बिकराल ।।२०।।

रायि आवंतो देखीयो ।।ना०।। साहामु चाल्यो लागु पाय ।।
कर जोडी राय बीनवि ।।ना०।।आसरिष करो पसाय ।।२१।।

जोगी किहि राय सांभलो ।।ना०।। सयल वीद्यामू पाश हू ।।
तूसूं तो राज देऊ ।।ना०।। रूसूं तो सवि वीणास ।।२२।।

तंत्र मत्र यंत्र घणा ए ।।ना०।। पिर पिरथाऊंवाद ।।
विद्या आकाश गामिनी ।।ना०।। विद्या अडुलीकरणादि आद ।।२३।।

राजा द्वारा आकाश गामिनी विद्या प्राप्ति की इच्छा

तब राजा आचभीयो ।।ना०।।बोल्यु मधुरीय वाण ।।
आकाशगामिनी मुझ दीयो ।।ना०।। विद्या तम्हे सुजाण ।।२४।।

जोगी द्वारा उपाय बतलाना

जोगी किहि राजा सांभलो ।।ना०।। विद्या सीझवा ऊपाय ।।
चडमारीजे देवता ।।ना०।। तेहनी भगत जो थाय ।।२५।।

थलचर जलचर नभचरा ।।ना०।। जीव जुगम आणेवि ।।
देवी आगलि हिंसतां ।।ना०।। ततक्षण तुसि देवि ।।२६।।

दीइ विद्यानभ गामिनि ।।ना०।। अवर घणेरी रध्य ।।
दुर्मक्ष रोग मरकीटलि ।।ना०।। सकटटलि प्रसीध ।।२७।।

रायते वचन प्रमाण यूं ।।ना०।। मूकपरिण अपार ।।
कुर्गुरि भोलव्या जीवडा ।।ना०।। कुरण न पडि संसार ।।२८।।

ते नयरी दक्षण दिसा ।।ना०।। चंडमारी विख्यात ।।
देवीकूर कुकर्मिणी ।।ना०।। वाहलो तेहनि जीव घात ।।२९।।
हिंसा विण ते पापणी ।।ना०।। करि अनेक उत्पात ।।
राजादिक मिथ्यातिया ।।ना०।। समय करि जीव घात ।।३०।।

पशु पक्षियों के युगलों को लाना

देवी मठ राय आवीयो ।।ना०।। लोक सहीत प्रजाल ।।
देवीनें पाए पडयो ।।ना०।। मनलाउ जणी वार ।।३१।।

थलचर जीव

तीन जुगम तिहां आणीयां ।।ना०।। कूकड छाग वराह ।।
हरण रोज ससा सांबरां ।।ना०।। महेष मतंगज गोह ।।३३।।
रीछ चीता वक मावक ।।ना०।। सेहेला नकुल सीयाल ।।
साप सरड पल्ली बामणी ।।ना०।। माजरि स्वान विकराल ।।३४।।
खर करभा वृषभादीक ।।ना०।। वनचर आण्या अनेक ।।
समलि सीचांणा सारसा ।।ना०।। हंस वायस वली भेक ।।३५।।

नभचर जीव

मोर चकोर लवारडां ।।ना०।।कोयल कीर कपोत ।।
चकवा चकवी पारेवडां ।।ना०।। टीटिंग घूहड घोत ।।३६।।
महुसी सोलीआ चडगीआ ।।ना०।।कोंच मेंरड कुकड ।।
एह आदि नभचर घणा ।।ना०।। वांषवालवास किकड ।।३७।।

जलचर जीव

मछमगर जलमांणसां ।।ना०।। करचला काचबा सूर ।।
जलहस्ती आदि जलचरा ।।ना०।। बहु आण्या ते कूर ।।३८।।
मठ पाचलि ते बांधीया ।।ना०।। जपता करि पोकार ।।
भूख तरष अति पीडीयां ।।ना०।। भयकरी कांपि अपार ।।३९।।
धुरघुं दासिह अणी यही ।।ना०।। वाछ पाडया ठाम ठाम ।।
पापी हुंस कलोकनि ।।ना०।। नरक आवाते काम ।।४०।।

दूहा

खड्ग ऊघाडो झलकतो, वीज तणो झलकार ।।
केश कलापछि मोकला, जलधर सोभा धार ।।१।।

मानव युगल लाने की आज्ञा

कोटवाल राय तेडीयो, चंडकर्मा तस नाम ।।
मनुष्य युग्म आण्यु नही, ए हवू सू तुझकाम ।।२।।

राय नम्यो भयभीत तदा, कोटवाल ततकाल ।।
मनुष्य युगमनि कारिणि, जण मोकल्या जिम काल ।।३।।

ते चाल्या ऊतावला, दोहो दशधामि धीर ।।
तीणि अवसरि तिहां आवया, मुनीसागर गम्भीर ।।४।।

भास सामेरी माहिपण कहीयि, केदारा माहिपण कहीयि

सहीली

मुनीचर्चा

एक आत्मा ध्यान मन धरे । राग द्वेष दोए परहरि अनुसरे ।।
त्रण्य रत्न अति नीरमलाएं । सहीए ।।१।।

त्रण्य गारव त्रण्य सल्य टालि । त्रण्य गुपति मुनिवर पालि ।।
अजूआलि । त्रण्य आगमि करी त्रिभुवन ए । सहीए ।।२।।

च्यार कषाय विहडणो । च्यार बंध कीय खडणो ।।
मंडणो च्यार संघ तणो घण ए ।।सहीए ।।३।।

पंच आचारिज रंजीउ । पंच आश्रव बल भजीउ ।।
गंजयो पंचइंद्रीय दल दुरधरोए ।।सहीए।।४।।

पच संसार दु ख वारण । पाचमी गति सुखकारण ।।
तारण पंच परम गुरुनित ध्याइए । सहीए ।।५।।

षटकाय जीवरक्षण । सटद्रव्यूनूं कहि लक्षण विचक्षण ।।
षटदर्शन जन जन प्रतिबोधवाए ।।सहीए।।६।।

षटकालनी स्थिति लहि । श्रावकनां षटकर्म कहि ।।
मन माहि सात तत्व चिंतन करें ।।सहीए।।७।।

सात भय थकी बेगलो । सात गुणस्थान ऊजलो ॥
नीरमलो सांत वांत दांत गुण जेहनोए ॥सहीए॥८॥

आठ ध्यान करे आगलो । आठ मूकि मद कलमलो ॥
सोहो जलो धीतये आतमा निधि धिन ए ॥सहीए॥९॥

आठ महा सिद्धि दायक । आठ महा रिद्धि नायक ॥
गायक अमरी किनरी गुण जेहनाए ॥सहीए॥१०॥

नव नयनि नीरमल जाणि । नवविध सील धरि सुख खांणि ॥
मन आणि केवल लब्धि गुण ए ॥सहीए॥११॥

मुनि का उपदेश

दश लक्षण धर्म प्रकाशि । दस धर्म ध्यान अभ्यासे ॥
अति भासे । दश विधि जस विस्तोरो ए ॥सहीए॥१२॥

अग्यार प्रतिमा उपदेशि । लहि अग्यार अंग विसेसि ॥
नीसेसें बार अंग श्रुत पाठक ए ॥सहीए॥१३॥

बार भेद तप आचरि । बार अनुप्रेक्षा मनधरि ॥
विस्तारि । बार वरत श्रावक तणाए ॥सहीए॥१४॥

तेर प्रकार चारित्र धारी । चौद मल तणो निवारी ॥
क्षयकारी । पनर प्रमाद नो अति घणु ए ॥सहीए॥१५॥

भावे सोले भावना । सत्तर संयम पालि पावना ॥
सोहामणा । यम नीयम चार धुर लगि ए ॥सहीए॥१६॥

अठार सहस्र भेद सील राखि । उगणीस जीव समास भाखे ॥
नाशेय । दुष्ठ दोष वीहामणाए ॥सहीए॥१७॥

वीस मार्गणा भेद कहि । एक वीस थोगुण सवि गुण वहि ॥
अंगे सहि । बावीस परीसह धुरंधराए । सहीए॥१८॥

चोवीस जिन दिन दिन ध्याइ । पंचवीस कषायनि न बीठाय ॥
कविराय अनुदिन गुण एह मुनी तणाए ॥सहीए॥१९॥

धरत मूलगुण अठावीस । पाठक गुण धरे पंचवीस ॥
छत्रीस । के अथवा रत्न गुण अलंकरया ए ॥सहीए॥२०॥

एह आदि गुण अति घणां । एह गुरुने बे सोहामणा ॥
भामणा । गुरु गुण गावें देवेन्द्र कीर्तिए ॥२१॥

दूहा

पांचसौ मुनियों के साथ सुदत्ताचार्य का आगमन

पांचसै मुनीवरें परवरयो, वरयो संयम श्रीचंग ॥
सुदत्ताचारज नाम तेह तरणु, तप संयमे अभंग ॥१॥

नगर समीपें आवीया, मुनिवर स्वामि सुजाण ॥
अनेक वृक्ष करी अलंकरयो, दीठो तब उद्यान ॥२॥

वन की शोभा

आंबा ऊनत अति घणां, मोरया तेहां अपार ॥
कोएल कुहू कुहुका करें, सुणता काम विकार ॥३॥

मालती मंदार मोगरा, फूल तणा मकरंद ॥
गूंजता भमर भमि भला, वायु वाय अति मंद ॥४॥

सेवती सोवन केतकी, पाडल परिमल पूर ॥
वेलतणा घर पिर पिरह, करन पसारय सूर ॥५॥

भूख दुखीया दुःख वीसरि, सुखीया होइ सुख सूर ॥
हुइ व्यरहणी दुखि दूखणी, जेह भरतारथि दूर ॥६॥

फूल पगर पसरयां घरणु, फलवली पत्र ठाम ठाम ॥
नीरतणां नीझर तिहां, व्यापय विषयने काम ॥७॥

ए मुनिनिजू गतुं नही, वन बहुराग सचीत्त ॥
अवर स्थानक नीहालवा, चाल्या मुनी सुचित्त ॥८॥

भास कन्हगुणराजनी

मसाण वर्णन

ते मुनीए । चालया आम । ताम मसाण दीठो घणोए ॥
मडा तिहां ए अस्थि अपार । रौद्र दीसि बीहामणो ए ॥१॥

बीहायकाए । ऊठ्या बहु धूम । अर्धदग्ध कलेवर पडया ए ॥
ठाम ठाम ए पड्या बहुत । गली गयू मांस एह्वां मडाए ॥२॥

विकसयाए । मुखदीसिदांत । टुंकलीए घणी घणीरह बही ए ॥
सीआलीयांए ताणे तास । आकाशे गृध लेई उडे ए ॥३॥

कूतरा एक लभि अपार । बढता माहोमाहि डहडहिए ॥
वायस एक रंके बइठ । कामिसा घरां कलगली रहिए ॥४॥

अजवल्यां ए काष्ट संभार । हाक प्रकमां सवी आलीयो ए ॥
देषीउ ए अति घणो रौद्र । कायरनो मन कांपीयो ए ॥५॥
तिहां बहुए घरी करी सोक । लोक बहु बापडारडे ए ॥
याहीं आए मोहना तेह । बाप बाप कही मही पडिए ॥६॥

श्मशान की भय नकता

वीर वीर ए । एक कहंत । माता सुत नारी नाम लीयिए ॥
लेडोए साथि सजन । बाहाजाने इम नहीं मूंकीइ ए ॥७॥

एणी पेरें ए । ए करीअविलाप । मोहीया रडेते बापडा ए ॥
करता ए अती घणं, रीव । पामये अतीही संतापडा ए ॥८॥

निशसमे ए भूतजोटींग । क्रूर रूपि हाक घु करि ए ॥
डम डम ए डमरू पाडा हांक । डह डहि नाद कायर डरें ए ॥९॥

वाघ सिंघ ए महिस्वना रूप । बावरी कांट बीहामणा ए ॥
झब झबे ए खडग तेह हाथ । स रमतां भूत भूमि मणा ए ॥१०॥

डाकणी ए व्यंतरी क्रूर । सीकोतरी हींडे घसमसीए ॥
देषीअ ए कलेवर भूर । हृडहडाट हेडंबाहसें ए ॥११॥

सिरचिण ए बड बाड धासंत । भणवण फिर भण ऊछलिए ॥
ठाम ठाम ए ऊकता जाण पूला अगनी तणां बलें ए ॥१२॥

जोगटा ए साधि व्यंतरा । तू बलीजन्य टोली करी ए ॥
राषिए अनेक नैवेद । होम करय बह्नि परी ए ॥१३॥

एहवूं ए अति विकराल । मसाण दीठो मुनीवरि सहीए ॥
होइए वैराग्य बुधि । अपवित्र माटि रहि नही ए ॥१४॥

श्मशान में ध्यानामग्न होना

ज्याहां थी ए पडिते दृष्टि । प्रासुंक ठाम ते जोईयो ए ॥
सांभलीयि ए रडिते साद । साधु संघाष्टक होहीयो ए ॥१५॥

मोटीए सिला अपार । तेह ऊपरि आसन करयो ए ॥
पडिकमें ए बहु सुजाण । ईर्यावहि कायव धरयो ए ॥१६॥

पडले ही ए बेठा ठाम । आवश्यक करे आपणो ए ॥
कोइ भणें ए धंम ने पूर्व । कायय निश्चिय कोडामणो ए ॥१७॥

हिंसा तणो ए कारणीय दीव । चोविहार सवे उचरयां ए ॥
संतोष ए करी निसल्य । ध्यान मोक्षकरी अलंकरया ए ॥१८॥

अभयरुचि एवं अभयमति का गुरु के पास आना

तीणें समे ए मुनीवरे दीठ । अभयरुची अभयामती ए ॥
नाहा नडां ए नव दीक्षत । मुखे कोमलाणां अती ए ॥१९॥

आणी अए करुणा भाव । वदय वचन सुदत्तगुरु ए ॥
तेडीय ए दीधि आदेश । वच्छ यथा सुख तम्हे करो ए ॥२०॥

लागीया ए तेह गुरु पाय । काय स्थीती काज चालीयां ए ॥
जोडली ए ब्रह्मचारी तेह । ईरीयापंथ नीहालीया ए ॥२१॥

तेणें समिए सेवके तेह । ब्रह्मचारी युग देखीया ए ॥
रूपि ए सोहि अपार । काम रती समलेखया ए ॥२२॥

युगल को देखकर विभिन्न विचार

माहोमाहि ए । करयते वात । आत आपणा थया श्रम टल्याए ॥
लक्षण ए रूप विख्यात यात कारणि जोइता मल्या ए ॥२३॥

पामसे ए देवी बल आज । काज राय तणुं सीझसे ए ॥
देखीयए युगम सरूप । भूप आपण प्रति रीझसे ए ॥२४॥

सांभली ए किंकर भास । भाषा कोमल अभयरूचीए ॥
बोलीयो ए बेहेनर साथ । हाथ रासो मन करो सूची ए ॥२५॥

सह गुरु ए कह्युं बहु पेंर । परीसह जीकवो तप फल ए ॥
तेह भणीए थरीय समाध । काय त्यजी थाउ नीमलए ॥२६॥

संसार स्वरूप

जीवनें ए भमतां संसार । पार रहित दुःख ऊपनि ए ॥
नरके ए सातें माहि । कांहि सुख नहि नीपजे ए ॥२७॥

भूख तृषा ए पाडिए रीर । नीर अन्न रती नवि मल्योए ॥
छेदें तनू ए नारकी पाप । आपको जीवको टलवल्योए ॥२८॥

वली भम्यो ए वार अनन्त तिर्यंच गती जीवडो ए ॥
विहितो ए भार अपार । सार बहुणो रडवडयो ए ॥२९॥

भूखिए तरसें अ दुखी उदास । भास आकंद करि वलीए ॥
छेदन ए भेदन आद । दुःख जाणे तें केवली ए ॥३०॥

---

१. अन्य रचनाओं में ब्रह्मचारी के स्थान पर क्षुल्लक क्षुल्लिका पाठ मिलता है ।

मांनव ए भवे मझार । आरत रौद्र ध्यानें पडयो ए ॥
दारीद्र ए रोग वियोग । भोग भूलो कामें नडयो ए ॥३१॥

देवगतीए माहि अयाण । मानसीक दुःख व्यापीयो ए ॥
देखी सुख ए अमरह्नरीध । बींहीयो मन मही कांपीयो ए ॥३२॥

एणी पिरिए चोगती मांहि । एह जीव भमयो दुखि भरयो ए ॥
भोलो ऐ भोलव्यो भूर । कुगुरु कुदेवन ऊधरयो ए ॥३३॥

पुण्यनिए योगि जाण । वाणी जिन तणी पामीयो ए ॥
श्रीगुरु ए तणेँ पसाय । तेहनें सीर नामयो ए ॥३४॥

पामयो ए श्रावकाचार । सार लघु दीक्षा भलीए ॥
प्रतीमाए भेद इग्यार । धारक हवा मनें रलीए ॥३५॥

भव भव ए लहीइ प्राण । पण समकित व्रत नवि मलें ए ॥
इम जाणीए तिम करो मात । भ्रात भय जिम टलिए ॥३६॥

ले से ए जीवराय दीक्ष । दीक्षा सीक्षा लेसे कोनहीए ॥
ते भणीए । देहेन सुजान । आणो मन जिनपदे सहीए ॥३७॥

तव बोलीए बिहिनी बोल । बन्धु सुणो वाणी मुझ तणीए ॥
पूरव ए भवे सणो भ्रात । हिंसा कीधी बीहामणी ए ॥३८॥

पीठनो ए कूकडो एक । देवी आगल हण्यो ए ॥
तेह फलिए । पांमयांए दुःख अतीव । भव सातिते मुझकले ए ॥३९॥

एक हवि ए लाधु धर्म । कल्पद्रुम चिंतामणी जसो ए ॥
समीकीत ए कर सूं जतन । मन एहनो संसय किसो ए ॥४०॥

इन चींतीए मन दृढ कीध । लीध अणसण दोए परीए ॥
जीवूं भए तो पारणूं जाण । नही तो आ अणसण अनुसरीए ॥४१॥

दूहा

सिपाहियों द्वारा अपने बाणे करना

दूक देई घायल करया, तेणि सेवकें तेणी वार ।
बेहू भालता भीतवे, अनुप्रेक्षा भेद बार ॥१॥

क्रूर काम नकरे घणु, कीत्या सोहि सार ॥
मेघ पटले जिम वीटीयो, कांति सूं चन्द्र उदार ॥२॥

भास हींदोलडानी

देवी मठ की भयंकरता

दूर थो देवी मठ तदा । दीठो दुर्गम बिसाल ॥
पाषल फरतो उपवन । हींदोलडारे । अनेक तरु छिरसाल ॥१॥

केसू आसू वन तीहां । रातडा असोक अपार ॥
जाणे भयभीत वसंतडें । ही०। भेटण मांस विस्तार ॥२॥

महूडां मोरथा बहू त्यहां । फलगलि बारबार ॥
जाणें रडि देवी भयें । ही० । वसत मूके आसू धार ॥३॥

काला जाबू फले करी । काला वृक्ष तमाल ॥
देवी भेटण आवीया ।ही०। जाणें पिशाच विकराल ॥४॥

ताड तणा तरु उन्नत । ताड फल स्याम विशाल ॥
देवी मलूआ बहु रूप धरी ।ही०। जाणें ईस गलि रूडमाल ॥५॥

खजूरी नारी अली । घडीयां बांध्यां छेय ॥
देवी मलवा सजथीया ।ही०। मद्य घडा सिर लेय ॥६॥

फूला दीसि 'मधू' तणा । माखी भमे अपार ॥
जाणे देवी कारणें ।ही०। मूका मांस तणा भार ॥७॥

ठामे ठाम चणोठडी । रातडी दीसि भोय ॥
देवी पूजवा कारणे ।ही०। अभक्ष थाल भरथो जोय ॥८॥

फूला तिहा वली चांपला । पीला पेखीया जेह ॥
देवी कोपि कांपता ।ही०। जाणो पिंजर हूवा तेह ॥९॥

कोयल सूडा सारसा । बोलि भमर गूंजार ॥
जाणें बीहना भयकारी ।ही०। स्तवन करिज अपार ॥१०॥

मढ गढनिको सीसडि । मौणस माथां भाड ॥
जाणें जाता जीवने ।पी०। बावने जूहर्ते राड ॥११॥

अनेक जीव मढ पाखलि । बीध्यलि बही बार ॥
भूख तरस पीडया धणू ।ही०। करय पोकार अपार ॥१२॥

मद्यपान करि जोकटा । अंगोटा गलि चंग ॥
वायि संख सीगी सीगडां ।ही०। कली कली करिय उतंग ॥१३॥

डम डम डमरू डाकलां ।ही०। तबली ताल कंसाल ॥
रणभेरी रण काहल ।ही०। तुर बाजि विकराल ॥१४॥

मठ का आंगन

दीठो देवी मढ आंगणो । मांस रुधिर ठाम ठाम ।।
अजीसूं जाणे देवी जमी ।ही०। माची तणा विसराम ।।१५।।

रुधीर तणा दीधा छडा । मढ फरती भव बार ।।
जीव मस्तके चोक पूरया ।ही० । रुधीर हाथा मढ बार ।।१६।।

मस्तकनी तोरण रच्यां । बीजनी बानर बाल ।।
पंखी पीछ पसू पूंछड़ा ।ही०। ठाम ठामें बांध्या विकराल ।।१७।।

रायनि नफरें हुकम दीयो । दीठो राय यम काल ।।
मोकले केश कोपि भरयो ।ही०। भबकि हाथे करवाल ।।१८।।

राति आंखि जाणे राक्षस । जाणी केर यमदूत ।।
वल वसतो जाणे व्यंतरो ।ही०। जाणे भयंकर भूत ।।१९।।

जाणे क्रोधनो पूंजलो । जैसो अधरमी चित्त ।।
जाणे पापनो पोटलो ।ही० दीठेए होय भयभीत ।।२०।।

भैरवानंद जोगी

भैरवानंद जाणे भैरवो । बसमो वीर वंताल ।।
खडग काली कोटी गडो ।ही०। नयण जाणें अग्नि ज्वाल ।।२१।।

देवी का रूप

देवी दीठी बीहामणी । सकत त्रिशूल छि हाथ ।।
रुंडमाला गलि ललकती ।ही०। बिठी छि संघनाथ ।।२२।।

लांबी जीभ छि रातडी । राता मोटा दांत ।।
डह डहती मुख पसारती ।ही०। बाघेण नी होइ भ्रांत ।।२३।।

कोडी सम मोटे रडे । फाटे डोले जोय ।।
अनेक जीव हणावती ।ही०। परतख मरकी होय ।।२४।।

हाथ काती मद्यूं कांपती । कांपती कोपि अपार ।।
मद पीइ नरनूं वली ।ही० हीकोत्तरी भयकार ।।२५।।

अभयरुचि अभयमति को देखकर राजा द्वारा विचार

ब्रह्मचारी राय देखीयो । भजीयो काम स्वरूप ।
केए इंद्र स्वर्ग तणो ।ही०। के मही माहि महा भूप ।।२६।।

के पैयालनो राजीयो । के गणपती के चन्द्र ।।
के ब्रह्मा के ईश्वर ।ही। के हरी के बलभद्र ।।२७।।

के मंदी के नल कहूं । नलहूं रूपह पार ।।
सक्र कहू के सुरगुरु ।ही०। सूरवीर उदार ।।२८।।

कालिका जाणे सरस्वती । रोहणी लक्ष्मी होय ।।
इन्द्राणी उर्वसी कहूं ।ही०। नागकुमरी के जोय ।।२६।।

कि सावित्री सीता कहूं । तारा मंदोदरी एह ।।
गौरी के अंजनी कहू ।ही०। रूप न लाभि छेह ।।३०।।

रूप लक्षण बहु गुणनिलो । कला अनेकह ठाम ।।
मारीदत्त नृप पूछए ।ही०। कहो तुह्म कवण सु नाम ।।३१।।

राजा द्वारा प्रश्न

कवण गाम थका आवीया । मात तात कुण ठाम ।।
अकल रूप ए अनोपम ।ही०। कवण मो हो साल सुधाम ।।३२।।

दयाधर्म तुह्म जय करो । त्रिभुवन माहे जे सार ।।
आशीर्वाद दें उच्चरे ।ही०। मारिदत्त अवधार ।।३३।।

काम तम्हारू तम्हे करो, मम पूछो अह्म वात ।।
अह्म वृत्तात दयामय ।ही०। तह्मने गमे जीवघात ।।३४।।

साधु युगल द्वारा उत्तर

अ धा आगलि नाच बु । बिहिरा आगलि गीत ।।
पापी आगलि धर्मकथा ।ही०। कहिता होइ विपरीत ।।३५।।

गिहेला सूं गुण गोठडी । उसर भूमे बीज रोप ।।
गिर सिर नील पेर लेडवूं ।ही० तिम अह्म वचन निरोप ।।३६।।

दूहा

मारिदत्तके हृदय में दयाभाव आना

दया भरी अह्म गोठडी, रुचे नहीं राय मान ।।
पीतज्वरी मन रूचि नहीं, साकरनि दूध पान ।।१।।

इम जाणी निज हित करो, अह्म ने म पूछो आज ।।
जेहनि जेहवी गति सही, तेहेनि तेहवी मति राज ।।२।।

खड्ग का त्याग

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्यो तेणी वार ।।
कर युगम जोडी करी, करी कोपनो परिहार ।।३।।

ब्रह्मचारी प्रति बोलियो, विनय सहीत उदार ।।
कहो कथा तह्यो रूबडी, स्वामी दया भंडार ।।४।।

ब्रह्मचारी तब बोलीयो, वाणी अमी समान ।।
भी भो भूप भलो भणो, साधु साधु तह्म वाण ।।५।।

धर्म बुद्धि सही जीवमें, पुण्य बिना नहीं होय ।।
सुरग मुगति सुखकारणी, राय विचारी जोय ।।६।।

कथा कहू ँ राय रवडी, ग्यानी कहो विस्तार ।।
तेह ब्रह्म पण प्रणसरी, भव साते मझार ।।७।।

भास चोपई

भरत क्षेत्र वर्णन

एहज जबूदीपज माँहि । सुरमहीयो मंदर तू ँ चाहे ।।
पाडुसिल्या चीहो सही तनु ँ जोय । जिनवर जनम कल्याणक होय ।।१।।

चीहो वनें व्यतर किनर वास। देवी देवी रमये जिहाँ रास ।।
परदक्षणा योतकी करें सदा । सास्वतो अचल चले नहीं कदा ।।२।।

तेह दक्षण दिशि भरतह क्षेत्र । आरज खंड माँहि सुपवित्र ।।
देश अछि तीहा मोटो घणो । नाम अवती छि तेंह तणो ।।३।।

अनेक गिरी गहवर पर वरयो । अनेक महा नदीयि अनुसरयो ।।
मोटी अटवी वृक्ष असख्य । आछेकूर जीव तिहा लक्ष ।।४।।

चमरी गाय अछे ते घणी । पू ँछि ओम्य बुहारे तेह तणी ।।
झर झर मेघ छडो तिहां देय । देस महारायह पद लेय ।।५।।

चमर चमरीया मृग ढालंत । पाडला तरु फूल्या जे महत ।।
पंच वरण जाणे छत्र धरंत । अनेक ठाम दीसे जयवंत ।।६।।

किंनर गध्रब जाणे गीत गाय । देव अनेक सेवें जेम राय ।।
सूडा सारस सावजा साद । जाणें वदियन करें स्तुतिवाद ।।१७।।

अनेक फूल रचना तिहां होय । चोक पुरंता देवला जोय ।।
पोढा फल जाणे भेटणु ँ । वन देवता मू ँके नित घणु ँ ।।८।।

भोज पत्र आदि वलकल जाण । विचित्र वस्त्र सोभा वखाण ।।
विविध वेल मंडप घर भला । भमरा भमि किंकर केटला ।।६।।

कपूर वेल के लवीयि कपूर । कस्तूरीया मृग वीर कस्तूरि ।।
विचित्र रूप मही सोभिनार । वेश राय सम सोभे सार ।।१०।।

वलि ठाँम ठाँम बहु गाम । कूकडा कूकडा अति अभिराम ।।
गाम तणो नवि लाधि पार । जाणे भूपह जश विस्तार ।।११।।

अवन्ती देश वर्णन

दीसि दस दिश चरती फिरे । गोवाला साथि अनुसरें ॥
पूंछ उलालि धावि धसि । अवर कोहूने न व्यथाथि वसि ॥१२॥

महिषी मोटी धणी छिबली । जल दीठि पोहोचि मन रली ॥
भिस कुभामिनी भोला जीव । सही पाणी देखि हरषे अतीव ॥१३॥

गोवालिया सिर सोहि चूघडी । मयोर पीछनी मनोहर घडी ॥
गले लिलकि गूंजानो हार । सोमें लाकड़ी हाथ उदार ॥१४॥

फूल मुकुट सिर रहयो लली । मुख मधुरी वाथि बांसली ॥
गीत गाथि नाचि मन रली । सांभले हरण धणी हरणली ॥१५॥

वंस नाद सुणी डोलि सांप । भूख तरसनो न लेखे व्याप ॥
विसय वलूधो जीव गमर । न व्यलेखें सुख दु.ख विकार ॥ १६॥

पाछली राति तीहा गोलणी । दीही बलोणूं घूमे धणी ॥
कंकण खलकि ललके गोफणो । कटि चालि मटको तेह तणो ॥१७॥

राते रच्यो जे काम विलास । रखे वीसरू जाणी करय अभ्यास ॥
विलोणां गंभिर सांभली साद । जाणे मेघ तणो ते नाद ॥१८॥

नाचे मोरडा रची कलाप । मेहो मेहो शब्दह करि व्याप ॥
वन माहि मोरडी साथें रमे । जाणे आव्यो वरखा समे ॥१९॥

साल क्षेत्र भरयां नमी रहि । स्थल कमल ऊग्यां तेह महि ॥
वायु वसि हलावि सीस । परीमल जाणे बखाणि ईस ॥२०॥

सूडा साद करें सोहामणा । वनफल त्यजी तिहां भावि घणां ॥
बहू फूलत्यजी त्यहां भमर भमंत । रणभरण करता साल सेवंत ॥२१॥

अवर धान्य तीहा नीपजिइ घणां । परवत सम ढग होयि तेह तणा ॥
राखि कोय नही तेहनि । लेई जायि ओईयि जेहनें ॥२२॥

ग्रीषमे कठण कर सूरज तणो । राजा कर न कठिण तिहां भणो ॥
नारी पयोधर करें पीडाय । नही गाम राय करिसी वाय ॥२३॥

छत्रि दड नव्यलोक दडीयि । फूलें बध व्यलोक बंधीयि ॥
नारी अधर कामी करें खंड ॥ जीवह खंड नही परखंड ॥२४॥

भवन राय सरणागत तणो । न कोई गाम बन पालि भणो ॥
जीहा भला भमरा दीसिअपाट । नही लोक को हींडें कुवाट ॥२५॥

लंपट भमरा कमल बंधाय । नहीं लंपट को लोक कहिवाय ।।
नर मांहि चोर नहीं कुवटी । छिनारी चण् मन चोरटी ।।२६।।

द्राख मंडप दीसि ठाम ठाम । नागवेल वाडी अभिराम ।।
व्यरही जननि व्यापि काम । नारी सम दीसि आराम ।।२७।।

तीलक मंजीर पत्र वल्ली साथ । पातलडी दीयि तरुणा बाथ ।।
प्रवाल सूं उचे स्तन कुचका । विभ्रम छे मन तणी प्रचिका ।।२८।।

मदन संडित योगी सेवए । फूल रेणु उडणी सेवए ।।
पखी सारें चारणे गावे गीत । दीसे सह नामोहि चीत ।।२९।।

नाग केसर नारंग जंबीर । बीजोरा रायण बहु खीर ।।
फणस खजूरी नें नारकेर । फूलफल दीसि बहू पेर ।।३०।।

मालती मोगरो ने मचकुंद । मंदार मरुउ बकुलह वृंद ।।
एह आदिछि तरु वर लाख । पिर पिर पंखी बोलि भाष ।।३१।।

जाणे दीन दुखी भूखीया । तेडि तरु करवा सुखीया ।।
वाली नदी वहि तीहां पाट । अनेक खेत्र सींचिया माट ३२।।

सरोवर वाव कुआ गभीर । भरीया ते बहू नीर्मल नीर ।।
कमल नयण जाणे जूयि समूह । हसा नादें वखाणे सबूह ।।३३।।

नीत राखे राय लोक अनीत । देश अभय लोक अभयाचीत ।।
लोक माहि को खल न कहिवाय । तिल पीलंतां सही खलथाय ।।३४।।

कौतकमाल तणो होयि युद्ध । कटक युध तिहां नहीं होयि सुध ।।
फल सम समावें तरु अरखे विरुद्ध । तिहां नहीं लोक मांहि क्रोध ।।३५।।

जिन प्रसाद दीसि अति चंग । गिरी गिरी नगरे नगरे उत्तंग ।।
कनक कलस सोभा अंबरि । धूपरी सहीत धजा फरहरि ।।३६।।

अनेक लोक तीहां आवि यात्र । नव्य काल नाचे तिहां पात्र ।।
दुमि दुमि मदल ताल कंसाल । होइ नफेरी नाद रसाल ।।३७।।

अनेक फूल फल लेई पकवान । जिन पद पूजि सुजन सुजाण ।।
अनेक व्रत विधान आचरि । भवसागर ते हेलातरि ।।३८।।

चतुर्विध दान देवा सुपात्र । पर उपकार सफल करि गात्र ।।
मन वच स्थल भावएवं देव । लोक सह स्वर्गीजि निवेव ।।३९।।

धनद तिहां एक ग्रहां ग्रनेक । इंद्र घणा वर ग्राहां सुविवेक ।।
चतुर घणा नर सुर गुरु समा । घणी घणी सोम तीलोत्तमा ।।४०।।

सवे नार मर्त्ता उर्वसी । थिर थिर नार सुकेसी ग्रसी ।।
रंभा जाणी ऊर घणी मानवी । रंभा वन मंडित ग्रवनी ।।४१।।

सजल ग्रपछ्रा भूमि भावि भली । रसा कल्पवृक्ष छि घणावली ।।
मदारंभ साधर्मी घणा । पारजातक तिहां श्रौतकी भणा ।।४२।।

विबुध विद्वांसन जाणु पार । सहू घरि सुख संतान ग्रपार ।।
हरीचंदन चर्या बहु लोय । स्वर्गतो एक एक सहू जोय ।।४३।।

ग्रई.रावण सम गज नही मणा । ऊचाश्रवासरखा हय घणा ।।
सर्व लोक कवि कला निवास । नित मंगल गावें सुभ भास ।।४४।।

चन्द्रमुखी मंदहगति नार । गाम नगर पुर पाट मभार ।।
ग्रादित तेज ग्रनेक छे सूर । सवे सुबध ग्रती नही कूर ।।४५।।

नारी प्रति ग्रबोडे राहु । गूथी वेण केतु बहु चाहु ।।
ग्रनेक नवेग्रह मडीत लोक । स्वर्ग स्वर्ग करे ते फोक ।।४६।।

एक सुरु गुरु एक रवि एक चंद । राहु केतु एक बुध सुकेन्द्र ।।
एक मंगल माटिए देस । ऊंचा स्वर्ग नेंहसि विसेस ।।४७।।

ठाम ठाम बली सतकार । भूखा ने जमाडि ग्रपार ।।
केटला वस्त्र भूषण देयंत । भागण गायणनें गुणवंत ।।४८।।

नागवेल दल बीडी ग्रखंड । नारद तुंबर ग्रनेक प्रचंड ।।
नयण कटाक्ष नारी चालवि । मयण भूजग मडस्या पालवे ।।४९।।

ग्रधर ग्रमृत रस देई ग्रपार । मधुर वचन मंत्रोषधी चार ।।
ग्रमृत भरया स्तन कुंभ बहु सार । ग्रमललेलि मुगता फल हार ।।५०।।

घूग्रा मीठा गीत गाह्रा कवे । ग्रमरीनि नीज गुण हारवे ।।
सहू जन वदन सरस्वती वसे । स्वर्ग नें देस तेह कारण हसे ।।५१

वस्तु

देसह सोहि देस सोहि । ग्रती बहु एह । सवे देस माहि भलो ।
मध्यम छे पण ग्रति ही उत्तम । मध्य मेरु यम गिरिपती ।।
तारा माहि जैम चंद्रसत्तम । तिम सहू देस माहि ग्रवंती चंग ।
धन कण कणय रयणि घणू । मंडित ग्रतहि उत्तंग।।१।।

श्रीमंतः सकलांतबोधविमलाः सम्यक्तमुख्यैर्गुणै ।
युक्तावेऽष्टविशिष्ट सिद्धिकरणाः पूज्याः सुसार्वज्ञिता ॥
श्रीसिद्धाः परमेष्ठिनो भवभाग् श्रीमन्मायऽनन्तोत्तमाः
श्रीदेवेन्द्रसुविक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगलं ॥१॥

इति श्री यशोधर महाराज चरिते रास भूजामणी काव्य प्रतिछंदे
भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्र विरचिते मारिदत्तनृप
देवीमठागम बहु श्री मदभयरुचि प्रर्पिताऽभ्यंती देश वर्णनो
नाम द्वितीयोऽधिकारः ॥२॥ ॥छ॥

तृतीय अधिकार

भास ममाडलोनी

उज्जयिनी नगर

तेह देश माहि सोहि । तो ममाडली । नामे नगरी उजेण तो ।
नवतेरी नगरी भली । तो म०॥ अमर नगरी जीके तेण तो ॥१॥

उन्नत गढ सुभा तणों । म०॥ रतन जडीत को सीस तो म०॥
जग जोति करी जाणीयि । तोम०॥ तिलक अवनी कोसील तो ॥२॥
पाखल फरती खातिका ॥तोम०॥ निरमल भरयू छे नीर तो ॥
जाणे नवनी नागर नारी ॥तोम०॥ पेहरयो नीलो चीर तो ॥३॥

रातां नीलां कमल भलां ॥तोम०॥ जाणे भरत भरी भात तो ॥
ऊपवन उपें अनोपम ॥तोम०॥ फूल्याफि तरु बहु जात तो ॥४॥

फूल रेणु पवर तिहां ॥तोम०॥ आकाशे ऊडाडे वात तो ॥
जाणे पीलो पीछोडलो । तो म०॥ जाणे भमरा कालीभात तो ॥५॥

जाणे नगरी नायका । तो म०॥ ऊर्ध्व स्तन गढ भार तो ॥
लाजी आपण् धापरि ॥तोम०॥ करें करी वाजे राय तो ॥६॥

पेरवीयि पोलि पोळां पेरवलां तोम०॥ कनक सांकल लल काय तो ॥
मोटा माता हाथीया । तोम०॥ सांकल्या अनेक बंधाय तो ॥७॥

तलीया तोरण कनमयि ॥तो०म०॥ रतन तणा सुविसाल तो ॥
मेडी मोतीं कू'बका ॥तो०म॥ मोहोल मोटें मोती जाल तो ॥८॥
पोलि पासली पूतलो ॥तो०॥ चित्रामण छि अनेक तु ।
चोरासी आसन घणी ॥तो० म०॥ रूप काय लाख्य अनेक तो ॥९॥

विकट सुभट बिठा राषि ।तो० भ०।। आयुध अनेक प्रकार तो ।।
कोतक करता कामीयां ।तो० भ०। केता कोडि जूइ सार तो ।।१०।।

नगर मध्य राय थवलहरा । तो०भ०।। एक बीस खणा उतग तो ।।
कनक कलस कोडामणा ।तो०भ०।। सोभा दीसि अती चग तो।।११।।

रातां रतन रंग मडप उपरितु ।तो०भ०।। फटकत तणो सोहि थम तो ।।
पाखलि फरती पूतली । तो०भ०।। करय ते नाटा रभ तो ।।१२।।

जाणे प्रतापराय तणो तु ।भ०।। यश मंडिन सोहृत तु ।।
रतन मोती झूंबके करीतु ।भ०।। सभा मंडप सोहृंत तो ।।१३।।

महुल मोटा माननी तणा तु ।तो भ०।। पाखल फरती अनेक तु ।।
रतन मेडी रलीआ मणी ।तोभ०। रचयछि अनी सुविवेक तो ।।१४

भुपेउ राउ रडी ।तो भ०।। कनकें घडी जडी रत्न तो ।।
रतन पेटी अति उरडि ।तोभ०। वस्त्र भूषण नही यत्नो तो ।।१५।।

अ त पुर घर अती घणा ।तो भ०। भरया सामग्री अपार तु ।।
गुरव अवाली जालीया तु ।तो भ०। अगुरू सु धूप विस्तारतो ।।१६।।

माणिक चोक चतुर चहू टा ।तो०।।भ०। चुरासी दीसि दीसि च्यार तु ।।
हाट श्रेंण सोहि सारी ।तुभ०। भरा कीयाणा अपार तु ।।१७।।

उपलबद्ध मेडी घणी ।।तुभ०। पंचवरण मणी चग तो ।।
चित्रामण मोती सिर ।।तोभ०। रगत छि बहू रंग तो ।।१८।।

नाणोद श्रेण छि नवरगी ।तो भ०। नाणा अनेक प्रकार तो ।।
जह विरीउल जाणीइ । तो०भ०।। रतन तणा झलकार तो ।।१६।।

सोहू ठखामणी ।तो०भ०। सोना घडिया घाट जमायोत तु ।।
जडीया उस ग मलि जडि ।तो०भ०। बग्राहे दोसी भट दीसि भली ।।२०।।

वस्त्र अनेक छिभीण तो ।तो०भ०। बहू मूलक सेसा सालू ।।
पटकोल आदि अरवीण तो ।।

गधी भटे बहू पामीइ । तो० भ०। अनेक कीयाणां सार तो ।।
नेसटीइ नव नीध्य जाणो ।तो०भ०। अनेक ध्यान अपार तो ।।२१।।

अनेक वस्त व्यापारीया। तो०भ०। ठाम ठाम छि बजारि तु ।।
एणी पिरि मोटा चोहटां । तो०भ०। मूलि चतुर नर नारि तो ।।२२।।

अनेक वसि बिवाहारीया ।तो०भ०। वारवा दारीद्र जेण तु ।।
मागणिनि बाछीत दीयितु ।तो०भ०। लीयि कीरत सु गुणेण तो ।।२३।।

लाल वरणा पखाव तु । मनाउली । राती रतन नी माल तु ॥
हुसी करी कहि कंत ने ।तो०म०॥ राखी पिहिरवा मधु चीत तु ॥२४॥

फटिक कपोलि चंदन ।तो०म०। राते किरण वेष्यू ओपतो ॥
कंत भामनि मरष् उमटनि ।तो०म०। कु कु आलीय विलोयतो ॥२५॥

नील रतन मयकुडी तो म०॥ चोरकी सणगारिक कायतो ॥
नीली चिरसो सामली आणी ।तो० म०। चोली बली बली पीठी लाय तो२६

फटक तणां प्रर भींतरे ।तो०म०॥ नारी पीठी प्रतिभाय तो ॥
पोठ करिते गोरडी ।तो०म०। सही परमणी वेरिण रूप तो ॥२७॥

रीस करिते ऊपरि ।तो०म०।उत्तर नहीं बोधि कांव तो ॥
किरीसाणी सुभ ऊपरें ।तो०म०। के कंतेनु हुवीमाव तो ॥२८॥

कहीं राता रतन तणो ।तो०म०। उरेहि रचवा थई माल तो ॥
रात आणी रंग रस भरी ।तो०म०। वाल्हि कत रसाल तो ॥२९॥

पीला रतन नी तुरडी।तो०म०॥सामली कंत प्रति आय तो ॥
परनारी करी लेखवी ।तो०म०। तरण आदर तो संकायतो ॥३०॥

चन्द्रकांत नीलक बड़ा ।तो०म०। चंद्र किरण मलि आय तो ॥
झरमर धार अमृत झरे ।तो०म०। सारद मेघ वखाण तो ॥३१॥

फटिक गोखतणि आलीयि ।तो०म०। चन्द्रना किरण प्रसारतो ॥
चोली भामनी लेवा धसि ।तो०म०। आणी मोतीहार तो ॥३२॥

हार बिना बलघी हुवी । तो०म०। हासु करि तव नाथ तो ॥
हार देखी बली सांचलां ।तोम०। बावरि नही तहां हाथ तो ॥३३॥

प्रभात ऊभा पेढी उलीया ।तो म०॥ बिठी चंद्रमुखी बाहि तो ॥
पुण्यम दिन प्रहण कालि ।तो०म०। भूलो गवनें भमें राहुतो ॥३४॥

ठाम ठाम कटकेपी तो ।म०। संधि पकणी लेण ठाम तो ॥
संदेह थी चन्द्र तणु तो ।म०। जणु एक प्रहण न थाय तो ॥३५॥

फिर फिर बाकी बोरली तो ।म०। माती रमें सही घर बाय तो ॥
हाथ करें तासी बीधि तो । ।म०। प्रेम पोखि बीधि बाव तो ॥३६॥

हींडोलि बसु हींचकितो ।म०। गावती बीक रसाल तो ॥
कविता वेजी बोयशी तु ।म० हार अति त्रिभुवनमाल तो ॥३७॥

माहे बेठोहि मही डोलारितो ।भ०। हीचती अबला काल तु ।।
मगसी करती मामनी तो ।भ०। भला भोग भोगवि रसाल तो ।।३८।।

चूम्रा चंदन कस्तूरी तु ।भ०।। पीठी परीमल अंबतो ।
रमत करि रत्नी भामणी तु ।।भ०।। नर नारी बहु रंग तु ।।३६।।

को गोठ करे कर लेहेकते तो ।भ०। चिबूके घरंती हाथ तो ।।
नयण कटाक्षे गोरडी तो ।भ०। रिझवि तेह निज नाथ तु ।।४०।।

बालाकते करें करी तु ।भ०। नीवी छोडंता लाजी नारि तु ।।
रतन दीवा नव्य उलवाय तु ।भ०। करे जेह कमल प्रहार तु ।।४१।।

एणी पिरि भोग भोगी भला तो ।भ०। भोगवता जाणे इन्द्र तो ।।
रतन सोगठे बेलतां तो ।भ०। बोहोत्तर कला समुद्र तो ।।४२।।

बत्तीस लक्षणेऽलकरा तो ।भ०। नगरी तणा सहू लोक तो ।।
रोग शोक दीसि नही तु ।भ०। पुण्य तणा फल जोयतो ।।४३।।

नारी दीसि पदमनी तो ।भ०। बोलती मधुरी वाणि तु ।।
मुख परिमल भमरा भमितो ।भ०। नयणे सलणी आण तु ।।४४।।

बीछीया सोहि रतने जडया तो ।भ०। झंझरनु झमकार तु ।।
रतन मेखला कटि खलकती तु ।भ०। घूघरीनु चमकार तु ।।४५।।

चपकली मोतीहार तु ।भ०। पतकडी जडी अतूल तु ।।
मुख तबोल अधर राता तो ।भ०। नासिका मोती अमूल तो ।।४६।।

झालकाने खरी खीटली तु ।भ०। फूली राखडी सिसफूल तु ।।
वेणी गोफणो वाखि अणी आली तु ।भ०। भमेरते कांम त्रसूल तु ।।४७।।

कर ककण चूडी रूडी तो ।भ०। विहरखा वीटी हाथ तु ।।
घाट ऊठी चाली मलपती तो ।भ०। सेरीये सही अर साथ तो ।।४८।।

अमर ठाम ठाम धूपतो ।भ०। अगुरू न दीसि लोक माहि तो ।।
अवीनय नही वली को दीसि तो ।भ०। अविनय अगनी तु चाहे तो ।।४६।।

अवीभव नहीं को वसि तीहा तो ।भ०। अवीभव मेरवज होय तो ।।
मलीनांबर कुमती नही तो ।भ०। मलीनांबर निसि जोय तो ।।५०।।

द्वीज दूसि संडज नही तो ।भ०। द्विज संडनी नारी उच्ट तो ।।
वादि बढचूं नही तु ।भ०। वाद वीणा सही गोष्ट तो ।।५१।।

राति चोर नामवि नही तो ।भ०। नारीनां वस्त्र हरि नाहू तु ।।
केली करता को जन नही तो ।भ०। कंतसूं निसी मांहितू ।।५२।।

कठन पशु स्त्री सम विचेतो ।भ०। नही ते कठिण वचन तो ॥
वांके भमरंहि कामीनी तो ।भ०। वांकू नही तेह मन तु ॥५३॥

मंदगति छी मानवी तु ।भ०। मती मंद नही तेह तु ॥
अठर कटी हि दूबंली तु ।भ०। नीतंब दुबले नहीं तेह तो ॥५४॥

काला केश भमर सभा तु ।भ०। काना गुण नाम होइ तु ॥
नीची नाभि हि नार नी तु ।भ०। नीची रमत न ब्यजोय तो ॥५५॥

वेल मालंषि विटपी सुं तो ।भ०। नारी बीट सुं न संग्य तो ॥
कुलांबि जाय पंथी पशू तो ।भ०। अथ्य नर नारी कुमग्य तो ॥५६॥

अनेक लोक तीहा वसि तु ।भ०। धन कण रयण मडीत तो ॥
अनेक कला कुसली काइ तो ।भ०। बोलता चतुर पंडीत तो ॥५७॥

वनवाडी सुं सरोवर तो ।भ०। कमल छाया भरचा नीर तो ॥
पालिनी हालि कतूहली तो ।भ०। चतुर नारी गंभीर तु ॥५८॥

सही समाणी साहेलडी तु ।भ०। गोरडी करती नीर तु ॥
सिर घट घट एक हाथ सुं तो ।भ०। आवती भरवा नीर तु ॥५९॥

कनक कुंभ वायु वसि तो ।भ०। भोंभो भाखय भासतो ॥
सही नारी संगें रसीया तो ।भ०। कोसनो हि विकृत नीवास तु ॥६०॥

नारी ठमण गमन तणी तु ।भ०। ऊभा जूह हंसराज तो ॥
मोतीयडा चरवा त्यजीय तु ।भ०। जाणे नत्य शीखवा काज तु ॥६१॥

पेखि पंखी शाखा विरठा तु ।भ०। नारी नयण वितान तो ॥
फल खाते ते वीसरया तु ।भ०। ते सोभा लेवा धरि ध्यान तो ॥६२॥

देखी नारी मुख चांदलो तु ।भ०। विकसि कमल मेलाव तो ॥
नारी नयण कमलें वीकया तो ।भ०। आवे जाणे कोमलाव तो ॥६३॥

नारी नयण चपल पणुं तो ।भ०। नासी वनी मालड़ो जोय तो ॥
चंचल पणुं आपणुं छांडीयतु ।भ०। थाये बांकडो जोय तो ॥६४॥

बीहीनी बोलि बेटली बाला तो ।भ०। ऊभसी वचन अपार तो ॥
सास बंधें कमल रवची तो ।भ०। भमरें बीटी तेणी वार तु ॥६५॥

भमर भारतां कंकण भलके तो ।भ०। सारस सरस सुर्णत तो ॥
कोयल नारी वचन सुणीय तु ।भ०। जाणी वचन न भणंत तु ॥६६॥

भमर वारंता कंकण खलके तो ।भ०। सारस सरस सुणंत तो ॥
कोयल नारी शबद सुणीय तु ।भ०। लाजी वचन न भणंत तु ॥६७

चतुर नरनि नीहालती तु ।भ०। भरतां घट न भराय तु ॥
निज अवगुण नविलेखती तो ।भ०। घट पेर रोस कराय तो ॥६८॥

नारी भरी करी चालती तु ।भ०॥ चालती नयण विचित्र तु ॥
जाणे लक्ष्मी चालती तु । चालती चतुरनां चीत तु ॥६९॥

हसिते उत्तर वालती तु ।भ०। मालती कंबहु ओढ तो ।
ताली देकरि बालकी तो ।भ०। झींकनी बाहुडी रोखती तु ॥७०॥

सोना कंकण कूमती भालीतु ।भ०। पालली भचका मोकली तु ॥
भारन लेखती सही साहामीतु ।भ०। बडी बार बात करि कोडतु ॥७१॥

वीध्य वणी कमलें भरीयतु ।भ०। सामला रतन ना थंभ तु ॥
नीलरतन पगथारीया तु ।भ०। भरी छि निर्मल अंभ तो ॥७२॥

देखी नारी मुख चंद्रमां तो ।भ०। रोबि चकवी अपार तु ।
वियोग भय राति लेखती तो ।भ०। श्याम किरणि अंधकार तु ॥७३॥

कूपि कूपि यंत्र नाटो नवा तु ।भ०। नीर नि फेरावि नार तु ।
करि चीतकार फेरा माटि तु ।भ०। जाणें ते रोवै गमार तु ॥७४॥

कणु कुण नर फेरव्या नहीं तु ।भ०। नारी नयन विक्षेपे तो ॥
कर धरया कोण नव्य फरें तु ।भ०। एछिवात संक्षेप तु ॥७५॥

जीहां कुआ कृपण गुण तु ।भ०। बसे घच देई नीर तु ॥
दोरें बांधी काढीयितो ।भ० हठि करी तेह नीर तो ॥७६॥

लोक मांहि को तेहवा नहीं तो ।भ०। कृपण धन संपि थाय तु ॥
पीडया स्नेह न को त्यजे तो ।भ०। तिल पील्या स्नेह थाय तु ॥७७॥

जिन चैत्यालां जिहां घणां तो ।भ०। उन्नत सीखर छि तास तु ॥
कनक कलस धज मह लहि तो ।भ०। बिंब छि कोड रवि भास तु ॥७८॥

सीखर पासि सिंह देखी तु ।भ०। चंद्रमो हरण डरंत तो ॥
तेह माटि चंद्र नमी करी तु ।भ०। दखण ऊत्तर फीरंत तो ॥७९

संत सजन श्रावक वसा तु ।भ०। तित भाति जिम व्याप तु ॥
सदाचार नारी वसे नारी तु ।भ०। पूजी सफल करि पाप तु ॥८०॥

पंचवरण वलके घणु तो ।भ०। नगरी मांहि धज कोड तु ॥
जाणे अयीनें तेडती तो ।भ०। नाखु दारिद्र मोड तु ॥८१॥

दूहा

एणी विधि वरणी सोहामणी, उजेणी शुभ नाम ॥
कनक रत्नें भंडार भरयां, सघन तणो विश्राम ॥१॥

पापलि फरतां पुरी घणां, वाडी नगर कही तास ॥
फूलें फलीयलि माहूटडो, शुभन तणो घणो वास ॥२॥

भाल रासनी

उज्जयिनी का राजा यशोध

ते नयरीनु राजीए । गाजीयो ज्यासें मृगेन्द्र तो ॥
प्रबल प्रतापि अंजीयो ए । सेवी मनिक नरेंद्र तो ॥१॥

नाम जसोध तेह जाणीयिए । अमीय वंश विख्यात तो ॥
हस्ती हय रथ छि घणा ए । लक्षि अनेक बहू भांत तो ॥२॥

सामंत सभी सीटीयोए । सुभट सेवंता कोड तु ॥
रण भोम्य जय लक्ष्मी वरयो ए । वैरीतणा मान मोड तो ॥३॥

सोमगुणि जाणे चन्द्रमाए । प्रताप गुणि जाणे सूर तो ॥
वैरी मद मच्छर त्यजिए । कोमलता रण सूर तो ॥४॥

सहस्त्राक्ष जानि गुणि सही ए । क्रूर गुणि यम रूप तो ॥
दान गुणि धनपती समोए । रूपगुणि रती भूप तो ॥५॥

जाणे दस लोकपाल तणा ए । विधाता रच्यो तेह ऋजतो ॥
देय विवेक अति विस्तारयोए । सोहाग्यु नारी संयतु ॥६॥

लक्ष भट कोटिमंडिए । प्रजपालो राय सोहंत तु ॥
ग्रह तारादि कोडीयो ए । जाणे चन्द्र महंत तो ॥७॥

रानी चन्द्रमती

तस कामिनी गजगामिनीए । भामनी कनक सुदेह तु ॥
पंकजवदनी नामि चन्द्रमती ए । रूपतणि छि रेह तु ॥८॥

बोलती कोमल अनती ए । नडी कोमलतोधि नीच हूआ तो ॥
मेह सरीखी कीजलीए । तिम शीलि छि एम जाण तु ॥९॥

हरीचंदन विलेपन समीए । हरती राय संताप तु ॥
मणी सम हृदय धरिजवए । होइ कामकणी विषय व्याप तु ॥१०॥
अनेक शृंगार करि धणू ए । वेलाडि सबन सीकारतु ॥
जाणे मोहण वेलडी ए । मोहती रायनि अपार तु ॥११॥
जिम नि धान ना कुंभने ए । भोगी गमूं किजगारतु ॥
तिम राणानि राजा भोगीयोए । मूकीम सकि घडी बार तु ॥१२॥
चन्द्रमती गुण था हालतीए । बालती मूं जाणे फूल तो ॥
बहुगुण जाण राणो सणोए । भमर समो मनूं कूल तो ॥१३॥
चन्द्रमती जाणे पदमनीए । राती नृप गुण वृंद तो ॥
कनक वरण सती कोमलोए । राय जाणे मकरंदतु ॥१४॥
चन्द्रमती मांबा मांजरीए । मत्त कोकिल समोराय तो ॥
रंग रमंतो रस भरयो ए । कुंजि मधुर सुठायतो ॥१५॥
चन्द्रमती जाणे सुभ मती ए । संपदालाभ सम नृपतो ॥
सुख संतोषि पूरीयोए । भोग्य सोभाग्यनु रूपतो ॥१६॥
चन्द्रमती जाणें सिधि समीए । साध समो जाणे नर नाथ तु ॥
प्राण योगि प्रेम अती घणोए । राज्य भोग वि राणी साथ तो ॥१७॥
न्यांय प्रजानि पालतु । सुकवि विद्वांस विश्राम तो ॥
कामधेनु कल्पवृक्ष समोए । पूरतो वांछित काम तु ॥१८॥
नवरस नांटक नव नवाए । नित नित्र जोवि रसाल तु ॥
हस्ती कुञ्जादि अति बलीए । मेघ महीष विकराल तु ॥१९॥
एणी पिरि राजा सुख भोगविए । करय ते पर उपकारतु ॥
मान मोडी वैरी तणाए । धन मणी भरया भंडारतु ॥२०॥
धर्म करि जिणवर तणोए । दांन पूजा अवतार तु ॥
सह गुरु वाणी सुणि भलीए । करि रूडो आचार तु ॥२१॥

पुत्र जन्म

ते देह कूखि हूं ऊपनो ए । कुंवर सुलक्षण बखाण तु ॥
बीज चन्द्रयम सोहीयो ए । दिन दिन वाध्यु सुजाण तु ॥२२॥
जनम समय दांन दीयुं ए । कनक रतन नीधांन तु ॥
पक्षी पशु बहु छोडयाए । छोडया बहू बंदी वान तु ॥२३॥

यशोधर नाम रखना

नाम जसोधर तेह दीठए । बहू पिरि करी उछाह तो ॥
रतन जडीत भूषण भलाए । पहिरावि भरी उमाहतो ॥२३॥

क्षण हरखि अणइ हसिए । माडि क्षण क्षण आलतो ॥
राय राणी नीज मन रलीए । वेलावि लेइ बाल तु ॥२४॥

रतन तणू वहूं आगणूं ए । पूरयू मोती चौक तु ॥
घसमसहीडूं रीझती ए । चोक आंजी करू कोकतु ॥२५॥

बली बली रचे मोडि बलीए । मोती साथीया भरया रत्न तो ॥
अनेक सजन लीधि फरिए । करय ते अती घणूं यत्न तु ॥२६॥

कुमार का बाल्य काल

कुंमर सहीत हीडूं खेलतु ए । जाणे नागकुमार तु ॥
अमर घणे जाणे परवरयोए । इन्द्रनो जयंत उदारतो ॥२७॥

पंच बरसनो मोटो हूवो ए । कुंमर हूं जसोधरराजि तो ॥
महोछव करी पाठक घरिए । मुंक्यो भणवा काज तो ॥२८॥

अनेक प्रकारि शास्त्र भण्याए । शस्त्र तणो अधीकार तु ॥
धनुष विद्या आदिक करीए । सीषवीयो अपार तु ॥२६॥

विद्याध्ययन

व्याकरण छंद अलंकारए । तर्क छह दर्शन भेव तु ॥
सामुद्रिक संगीत सहीए । सालिहोत्र गज भेव तु ॥३०॥

न्याय नाटक नृपनीत घणी ए । वास्तु शास्त्र सूत्रधार तो ॥
जोतीक वैदक रूवडी ए । रत्न परीक्षा वीचार तु ॥३१॥

काम शास्त्र कोक कतूहल ए । आसन चोरासी प्रकार तु ॥
धनुर्विद्या शस्त्र चालवाए । धर्मशास्त्र सुखकार तु ॥३२॥

दंडनीती मयी सहूए । चाणक्यकी चतुरसतो ।
वार्ता कीका विवेक बहू ए । चूक पंच प्रपंच बखातो ॥३३॥

राजनीति निपुण थयोए । अनेक कला विलास तु
कुंमर तणा गुण देखीया ए । सहू जन हुयो उल्हास तु ॥३४॥

कालज सींटली माला कुंडलाए । मोहिम तीही अपार तु ॥
मदन कमल सिर भमर लाए । जाणे करवं प्रसाव तु ॥३५॥

अष्टमी ससी समी सोहीयोए । भालस्थल झलकेय तो ॥
मल्लयुगल विधिये रच्योए । ससि दो खंड करेय तो ॥३६॥

नयन जाणे दोय माछलां ए । लावण्य जलिकरि खेलतु ॥
अथवा चपल गुणि करीए । भमरा तणों.ए बोल तु ॥३७॥

कर्ण दीसि कोडमणा ए । जाणे अनोपम राय तो ॥
नयणह सीम थापी रह्या ए । मोती भरवणनो ठाय तो ॥३८॥

सुक चचू सम नासिकाए । अथवा जाणे तील फूल तु ॥
भमरी मयण धनुष समीए ॥ हर हाथनूं ग्रसूल तो ॥३९॥
कठ जाणे हरी हाथ नो ए । शख मडीत त्रय रेख तु ॥
हृदय वीशाल कूअर तणू ए । लक्ष्मी वसवा वीसेष तु ॥४०॥

अमुलक मुक्ताफल तणो ए । उर वर हार लसत तो ॥
राजलक्ष्मी विवाहनें ए । वरमाला सम सोहंत तो ॥४१॥

लाबा भुज भुजग समाए । जाणे पराक्रम रूप तो ॥
भुज अद्‌भुत बल पीडीआ ए । बीहीना सेवे बहू भूप तो ॥४२॥
रतन जडीत कंकण घणू ए । कनक सांकला संजुत्ततो ॥
उन्नत खंध खभा भणू ए । भूषरा धरण अद्‌भूत तू ॥४३॥

कटिलंके जीत्यो सिंहलो ए । वली मृगराज अभीमान तो ॥
महाराज राज प्रताप जाणी ए । लाजीयो गीयो तेहरात तो ॥४४॥

जंघा कनक थंभा जसी ए । वाटली कोमली चंग तु ॥
कमल जीत्यां चरण तलेए । लाज्या जल करं संगतो ॥४५॥
रूप सोमथि हू आगलोए । लावण्य जल तणो कूप तु ॥
जसोध राजा मझ देखीयो ए । मनोहर मनोहर रूप तो ॥४६॥

दूहा

युवराज पद प्रदान करना

तब राजा मन रीझीयो, चीतवे चतुर सुजाण ।
अनेक मोहोछवि थापीयो, युवराज पद बखाण ॥१॥

वीवाह मोहोछवि कारणें, उद्यम करी अपार ।
मंत्री पाठव्यो आपणो, देश वराड मझार ॥२॥

एलापोर नगर भलु, अमरावती सम जाण ॥
राजा राज करि तीहां, सामल वाहन सुख खाण ॥३॥

दूहा

सालकी राणी तेह तणी, रूप सोभा बनि रेहु ।।
ससी वयणी मृगलोचनी, अनेक कला गुण गेह ।।४।।

ते बेहु कूखि ऊपनी, अनूपमती तेह नाम ।
कुंमरी मतीहूी कांतामणी, रूप योवन गुणठाम ।।५।।

ते मंत्री रायनि मल्यो, राय दीधो बहुमान ।
कीधी वात वीवाहनी, आपी सेष नीधान ।।६।।

लेख वांची भाव जाणीयो, आणीयो राय आनंद ।।
चंद्रिका सम ए कुंमरी, यशोधर कूंमर ते चन्द्र ।।७।।

इम बोली महोछव करि । नीश्चय वचन ते कीध ।।
कुंकुम केसर छांटणां, श्रीफल फोफल दीध ।।८।।

वाने मंत्री पूजीयो, लगन लेई करो चंग ।।
मत्री उजेंणी आवीयो, रा प्रति कह्यो सहू रंग ।।९।।

भास वीवाहलानी

युवराज का विवाह

रंगभरी वीवाह मनो । घत मणो गाज्यो उछाह ।।
धवल मंगल बहुं गावता । पूर्व लीधां करी उमाहु ।।१।।

मंडप थंभ रचना तणा । करी बणा वीसि महंत ।।
फटकमणा कनी भोखला । पाट वीचीत्र दीसंत ।।२।।

पंच वरण रचना तणा । करण विस्तीर्ण वीसाल ।।
परवाली तणां गालीया । वालीयां मोती माल ।।३।।

तोरण नील रतन तणां । कनकनि मतीहूी मयार ।।
चमर ठाम ठाम बांधीया । वीहि ताहां फूलहार ।।४।।

चोक रतन तणा भलांकि । जवनि मोतीनी दाम ।।
कनक कलस बहू सलकि । बहूकि अंबर ठाम ठाम ।।५।।

नीत उत्सव रचना करी । चोरीना बांधीया सार ।।
बहुकोति वहुं आव्यो । तोहीत वेदकरन पुनीभार ।।६।।

ठाम ठाम कंदोली करी । अनेक ठिकाणा राय ।
पकवान घिर पोंडी दीहि । बंधोई बजारनी ठाम ।।७।।

अनेम प्रकार जमण तणी । सामग्री भरया भंडार ॥
कामनी मंगल गावती । कुंअर तणा गुण विस्तार ॥८॥

सजन सगा आवि घणा । रायाराण नही पार ॥
साहा मां मानदेई करी । आणे ए नगर मझार ॥९॥

वाजित्र वाजि बहु परी । ताल कंसाल रसाल ।
मादल दुमी दुमी वाजिए । डम डमि ढोल वीसाल ॥१०॥

सरणाई साद सोहामणा । भामीणी भंभा वाजत ।
झीमी झीमी झल्लरी मुंगल । नफेरी गगन गाजत ॥११॥

झण झण करि वेणा घणां । तण तण रबाब समाज ।
तत आनंद सुरिवर घन । वाद्य चतुर्विध वाज ॥१२॥

संगीत शास्त्र प्रमाण ए । गायण गायसो छाजि ।
तान मानदीक सुं मूर्छना । नटवा गर्व सूं गाजि ॥१३॥

आणे रंभा तीलोत्तमा । उत्तम अपछरा निहराचि ॥
पात्र नाना विध नाचे ए । हस्त कमाल आणावि ॥१४॥

ताता थेई थेई बोलती । ठविण ठवि पद छंद ॥
नाटक साला नाचंता । तिहां उछे प्रति छंद ॥१५॥

भमरी देयंता मेखला । घूघरी नूं घमकार ॥
नयन कटाक्ष नीहालती । चालती कुंडल झलकार ॥१६॥

फूले काहोयि पोढी परे । घरे घरे मगल सार ॥
राज मारगि शेरी चौहटां । सोहतां चीवामण उद्वार ॥१७॥

घिर घिर गुडी ऊछल । पंच वरण धज सोहि ।
पवनें पताका लहिकती । पुरी आणे नाचीती मोहि ॥१८

तलीया तीरण झगमगे । सोहिए रंभा सुथंभ ॥
ठामे ठामे तान गान सूं । नाचि नाना विध रंभा ॥१९॥

रतन जडीत गलि हांसलो । हांससुताभी अमूल ॥
मोती तारिख मरचीआरणि । पाखर अतीही अतूल ॥२०

कनक घडी रतने जडा चोकडी उंचिलगाम ॥
हेम पलाणछि खवडूं । खवडी सोभा सुठाम ॥२१॥

मोतीय झवका झूबता । फूमतां हीरना दीसि ॥
पगे नेउर झमकार । हिंसारतो हय घणां दीसि ॥२१॥

राय राणा महाजन बहु । बहु लेकी दीधा कोल ।।
श्रीफल कोफल पूर । कपूर केवाय सू सू पान ।।२२।।

केसर कपूर छांटणा । अति वणो चूआ चांपेल ।।
तिलक करी मोती चोटियां । अबीर नाखि करे गेल ।।२३।।

ढोल नीसाण घ्रू घू किए । घू किए रीघू तुणी मान ।।
सणगार सू गजगामिनी । कामिनी करि गीत गान ।।२४।।

मोती थाले वधावी करी । कॉर उतरयो तेणी वार ।
सजनिहु पोढि मजलयो । मारोवसत मझ्झार ।।२५।।

कुंकुमे पूजी वधावीओ । हय गलि टोडर लालकि ।।
घूघर माल कनक तणी । चालतडां चरणं चलकि ।।२६।।

तवहूं बहू सणगारयो । भारयो सणगार भार ।।
रतन मुगट अति झलकि । ललकि कुंडल सार ।।२७।।

नल वट दीउ पिरचवं । सिरि अलांचि जमाजोत ।।
आंजी आखडी पदम पांखडी । पव कडी कीरणे उद्योत ।।२८।।

विभिन्न उत्सव

मांमला म न मुक्ताफल । ललकिडरयर हार ।।
रतन जडित बाजू बिहिरखा । करें बीटी बेहु अपार ।।२९।।

कटि तल के कटि मेखला । रतन पाडली सोहि पाय ।।
सहथी भारा अलवार । पालनु पार नही पाय ३० ।।३०।।

गज अवगाह चमर ढले । रमणीआ सिर बहू छत्र ।।
पंच वरण धज फर हरि, पटकूल तणी अ विचित्र ।।३१।।

वाजीव नाद संभ्मल करी, घिर घिर नारी उछाह ।।
वरजो वरघि कारणी । साथ करि वाहोवाह ।।३२।।

एक ओवी मोतीहारणी । चोरडी बीटीने पायं ।।
चालंती चांपो वजो । बू खिजे मोती चंपाय ।।३३।।

एक आभूषण करी तीन । मदीय ऊजावली पाव ।।
कानें कंकण करें कुंडल । पिहिरणी मलीय संकाय ।।३४।।

एक बालका सलाकाकरी । आंबीडं नयनहि एक ।।
जोवा आवतें ऊजावली । विकल गिणोहि वीवेक ।।३५।।

एक चावंडु मूकी बालक । बालका जोवानि जाय ।।
पोहानि चानें वीचे सेरडी । लोपक नीर कोम कीजाय ।।३६।।

एक ममती सांचि छोकरां । कूरयरघू बलगूआई मांहि ॥
बिहिलांजमो ओईचि भूंभू ।म। पंपू मालती बोलि वाण ॥३७॥

एक मेलती वाछरू । कूतरू बांधीऊं ठांम ॥
दोहीसूं पछि कही चालती । वाछरु नूं सरघूं तब काम ॥३८॥

एक रावती रावणूं । लूण घणूं घाली मान माहि ॥
दाल वघारी अलूणी । सलूणी वेगि बर चाहि ॥३९॥

एक प्रीसती भरतारने । बारनि भिखारिनि माबि ॥
भारी नाखी बर जोवती । सही घरनि मने भावि ॥४०॥

मेडी ओवि सबे पदमनी । पदमनी साख भरत ॥
भमर भमि मुख परीमलि । कमलनी शोभा धरत ॥४१॥

मचकुंद मोगरो मालती । माहालती लाजा बधावि ॥
जय जय वाणी उच्चरें । जिहां वर मारगि आवि ॥४२॥

एणी पिर फूलि काहोयि । जूयिकोवि देवी देवी ।
जसोधर राजा सुत परणीइ । वरणना कोणि कहेवी ॥४४॥

दूहा

इत्यादिक उछव घणा, नित नित जमणवार ॥
मागण जननें देवता, वांछीत दान उदार ॥१॥

जान सजाई होइ घणूं, हय गय रथ सुविसाल ॥
पाला पार न पामीइ, पालखी बहु गुणमाल ।,२॥

भास चूलडी

हाथी बहु सणगारयां । कनक सांकलि घण भारथा ॥
घंटा तणी टणकार । घूघर मालाना झमकार ॥१॥

अंबाडी रूडी दीसि । रतन कवल सोहि जीसि ॥
सीदरें रच्या सीसे । मोती जाली मनहीसि ॥२॥

अंबाडी धज लहिके करी । कांन वद बिहिके करि ॥
तिहा भमरा झणकार । अंकुस सहीतकुंतार ॥३॥

अनेक कुंअर तीहां बिइठा । रूपें रंमणी मन पिइठा ॥
चमर सोहे गज काने । दतूसल सीस बाने ॥४॥

थंभम गिरि वाग्रीं चालता । भारि भरणी झुलंता ।।
मलपता महीमल माहोलि । ऊंची झूक हूलालि ।।५।।

आजालीय घोड़ा जाति । बबर तुरुक्कीय भाति ।
नानायुज खिविनीठ । वायुवेगी खिवीपीत ।।६।।

घोडा मलि छि कांबोज । पाणीपंथी छि पीरोज ।।
पचकल्याण पारसीक । बाह्लीक बलीया कच्छीक ।।७।।

गंगा जल गुण जाणं । हासला घोर बखाणं ।।
एह आदि आण्या घणा घोडा । सणगारया नहीं थोड़ा ।।८।।

रतन जडया हेम पलाण । पाखिलि पाखर बखांण ।।
हरीनां घणां फूमतडा । मोती प्रवाला ना झलकडा ।।९।।

मखी आरणि मोती ललकि । लगाम चोकडे मणीझलके ।।
क्षुरि खेणी खोणी भाण । रजि रूंध्यो रवि भाण ।।१०।।

रथ रूडा वस्ति भरया । घोरीयडा घोरि जोतरया ।।
केटला राजा बैठा रथ । जूता घोडा समरथ ।।११।।

अनेक राजा तीहा बिइठा । सुरवीर सुभट गरीठा ।।
घतीय तिहा हथी आर । छत्र चमर के नहीं पार ।।१२।।

पचवरण लिहिकि धज्ज । चिम्ह छि उलखवाने कज ।।
पाला चसि थइ मज्ज । अरी भण भय करी भज्ज ।।१३।।

पंचवरण पिहिरया वस्त्र । घरयां बहुवीध शस्त्र ।।
एणी पिर चतुर्वीध सैन्य । राम जसोध सुधन्य ।।१४।।

हस्ती उपरि । बिइठा सार सांथि सहू परिवार ।।
एणी पिरि चालिए जांन । मघकीघू संगल बीवान ।।१५।।

हस्ती उपरि बिइठा बाण । नारीदत्त सुणो वाण ।।
छत्र चमर चली सोभ । पजलि नाचिए रंभ ।।१६।।

ढम ढम ढोल भ्रुकि बैरी मानसह चुकि ।।
भों भों भंगल नाद । सरणाइ सुभ साद ।।१७।।

दालसी कनकवि सोहि । पणीय सीधा मन मोहि ।।
कटक चकमकी चाल्यो । मही कंपी सेष हाल्यो ।।१८।।

गिरीवर घणा द्रमद्रमया । ग्रह तारा भ्रमे समया ॥
नदीय सायर उलटया । वाघ सीध दूरथ टया ॥१९॥

तब पाम्यो वराड देश । भनेक सोभागु नीवेस ॥
आवयो जाणी नरेस । अमित पूजा करि बीसेस ॥२०॥

ऊनत तरु बाये ह्रालि । आतनि जाणी वाम वालि ॥
तरू वेल थी फलफूल । आणे वधावि अतुल ॥२१॥

रतन सिला छि ठाम ठाम । जाणे आसनदि अभिराम ॥
सरोवर नीर नीझरण । अमोलणा दीयि चूयि चरण ॥२२॥

पिर पिर तरु भर फलया । जाणे भेटणा आगल घरया ॥
द्राक्षा मंडप ठांम ठांम । आंननि दीयि जाणे विश्राम ॥२३॥

श्रीफल फोफल लवंग । कपूर एलची दिए चंग ।
चंदन तिलक तसु दाधि । इक्षु खंड रस राखि ॥२५॥

तरशा अक्षु रस पीवाय । भूखा अनेक फल खाय ॥
सेलडी पशूनि नीराये । दूध दही पार न थाये ॥२६॥

टूकडां टुकडा गाम । लोक सजन ना विश्राम ॥
नगर पाटण पुर भाभा । धनयणि घणां प्राजा ॥२७॥

मंजलि मजल चालतां । चौविध सैन्य महंत ॥
एला नगरीयि आव्या । सहू सजन तणि मन भाव्या ॥२८॥

जान वधामणी मानि प्रसीध । पंचपसाय रायि दीध ॥
वन उद्योतें ऊतरया । सूत्र वारि घर करया ॥२९॥

मंडप मोटा विसाल । पटकूल तणा गुण माल ॥
जान सासँ यानि कानि । वाजित्र बहूपरि वाजि ॥३०॥

हय गय रथ सूं असंख्य । पाला चपल छिलख ॥
राजथं सभ्रम साथ । साहामो आवि नरनाथ ॥३१॥

जन नि दीधला मान । श्रीफल फोफल पान ॥
छांटणां तीलक अबीर । कीधु विनय गंभीर ॥३२॥

नगर प्रवेस इम होवि । नर नारी बरजि जोवि ॥
कहिए आचंभ रूप । जाणी किएं नर भूप ॥३३॥

चंद्र नरेंद्र नागेंद्र । सूर सुर सुरके चन्द ।।
के अवतरयो ए काय । गुण लखण केरो ठाम ।।३४।।

जाणे न्यायनो अमोह । दीठि कपनि थोह ।।
जाणे प्रगटयु धर्मी धर्म । एणी पिरि करि वरणो मर्म ।।३५।।

नगरी पोलि प्रकार । सात खणा घर अपार ।।
पहुटा चौकिहू बाम्बु । नारी फूलि बंबाम्बु ।।३६।।

भेटी गुलसू दीवार । चोवि बहुवीप नार ।।
नगरी सोभा महंत । वज तोरण झलकंत ।।३७।।

चंदन छाया धीमाम । जाणे नगरी हुवि सकाम ।।
गूढी लहिकि सहूरावि । जाणे नगरी हरषि नाचि ।।३८।।

रतन तणी जगा जोत । निशी पणि करो उद्योत ।।
राय बलहरहि रूठो । जाणे नगरी नारी नो मूठो ।।३९।।

कारंजे नीर झरए । जाणे अभोषण करए ।।
पांजरि पोपट पढिए । जाणे विनय मुक्त दृढए ।।४०।।

नगरी मांहि सुभ ठाम । थान उत्तारा विश्राम ।।
सबल हरे सहू उत्तरयो । मानवी मंगल करयो ।।४१।।

दूहा

स्नान विलेपन शुभ हवां । हुवो सहुरीता चार ।।
लगन दिन मानें वरी । नमशि न चाडि नार ।।चा।।१।।

रतन जडीत आसन धरयुं । मानक मोती चोक ।।
कनक कलश वशुं जलि भरया । पल्लव आंबा अशोक ।।२।।

नारी नवरंग चीर सूं । बाजणी आलोचार ।।
सबे सोही सणगार सूं । जाणि पथाका नाट ।।३।।

ढाल फागुणी

रागवेलाउल

नारी नामें वारंवारे । जागि नव नेह ।
गुराये गुण गोरडी । चीतारे गेह ।।१।।

हीरा वेडे जिहुवि । हरखि हरखावे ।।
सणगार सूं सीगार दे । नवकि नरवावे ।।२।।

गोमादे गोरी गुणि । गंगादे गरवीसरी ।
ग्रादेसही सोभती । सीलें नही वर वी ॥३॥

भावल दे भावि भली । भोमादे भोली ।
चतुर चालि चगा दे । चग पंचरंग चोर चोली ॥४॥

मोहणदे माणिक मोहती । मह्लाणदे मोटी ।
लक्षमादे लक्ष्मी समी । लक्षणि नही खोटी ॥५॥

कमलादे कोमल वदी, कोडादे नही कूरी ।
रतनादे रलिग्रा मणी । ग्रछवा देजि छि छोटी ॥६॥

ग्राजादे ग्रावि ग्रलज्जइ । रस भरी रगादे ॥
वहलादे विहि वारणी । वाहाली कथवजादे ॥७॥

रुपादे रुपि रस भरी । रमादे रूडी ।
रंभादे रभा समी । करि सोभती चूडी ॥८॥

रगादे रग राषती । राजलदे राणी ॥
ग्रमरादे ग्रमरी जसी । वनादेवि वषाणी ॥९॥

वनादे वन देवता । वीरादे वारु ।
ग्रर्घादि ग्रवंकारी । रघादे रती सारु ॥१०॥

हासलदे हंस गामिनी । हसा दे हसी ।
सोभाग दे सौभागणी । प्रेमादें प्रसंसी ॥११॥

तेजलदे तेजि तपि । जसमादे जाणि ।
एणी पिरिनारी वहू भली । रुपगुण तणी खणी ॥१२॥

तिलककरी एक कामिनी । एक मोती चुहुटि जिएक ॥
सीख देती सोहामणीं । मीठू बोलती मोढि ॥१३॥

एक मोतीडे वधावती । एक नयन सुग्रं जि ॥
एक ग्राभरण पिहिरावती । एक हंसती रंजि ॥१४॥

एक ऊंडी पीडी करि । एक वीका कतारि ॥
एकज लूण उतारती । एक मंगल उच्चारि ॥१५॥

एम भली सोभागिणी । मगल गाए वा ।
सहुरीत होमि राय सुणो । चालु परणिवा ॥१६॥

वाजित्र वाजिवे हु परी । घणी नाचि पात्र ।
ग्रश्व विइठोहुग्रपतो । ढली चामर छत्र ।

अनेक अमी करी परवरयौ । बाल्यु तोरण बार ।
सालो सन्मुख रही वलि । भणा श्लोक विस्तार ॥ १८ ॥

प्रत्य उत्तर श्लोका भणा । अणयाणि उतंग ।
सुणावि नयर नर नारीनि । बाल्यु बहुरंग ॥ १९ ॥

वस्तु

अस अस्तरयो भण तणु । सार हार सुधार ॥
नगर मझार जस विस्तरयो सच्चानु
बंदी जीरद बोलि घणा । गायण गावि गीत मंगल ॥
दान देइ तब मन रली । राय असोक अपार ॥
तोरण रीतह विकहु ।मारीकरा अविचार ॥१॥

भास साहेलिनी

सालो मांडप भी आटलोए । सहेलिरे श्रीकृष्णो देइ दान ॥
मान तोरण आयलि कनकनुए । साहेलीरे सिंघासन सुं निधान ॥१॥
लीला श्रु बालबली नटकतुए । सा० । कमो रह्यो तेणीवार ।
पुंहुकबातणी सजाई लेइए । सा० । आवी पदमनी नार ॥२॥
मझाए बजावतीए । सा० । पुंहुकती चतुर सुजाण ।
धूसर मूसल आदि करीए । सा० । तरीउतार बखाण ॥३॥
गेवा सूत्र सांपड उतारतीए । सा० । जहिका सू सांचि हाथ ॥
पाट पाली नाकतारणतीए । सा० । हसयो तब सहू साथ ॥४॥
माहिरु घडा रतन तणु ए । सा० । सिंघासन पर कीध ।
हूं बेसारयो मामणीए । सा० । माडु अंतर पट कीध ॥५॥
कन्या आणी कोडामणीए । सा० । सोहामी सिणगारी रसाल ॥
मोती रतन फूल तणीए । सा० । कंठि घाली वरमाल ॥६॥
पंडित मंगलाष्टक भणिए । सा० । जोसी करि सावधान ॥
पर्व मधुर भासा दाखविए । सा० । भाखिए दिन निशीमान ॥७॥
शुभ महूरत लग्न सहीए । सा० । वेगि बजावी थाल ।
जय जयकार तब हुवीए । सा० । पड़ीया मंगुलके गांठ ॥८॥
कन्यावर हुवेबास होए । तब मलवो पुजराज ।
अंतपट दूरि किधाए । सा० । तबहूणी सबीस झांट ॥९॥

वेहूजण नयण मेलावडोए । सा० । हूवो तव मती सुविचाण ।।
माह्हो माही वेहू जण हरखीयाए । सा० । निश्चल पाम्यो एम जाणि।।१०।।
ढोल नीसाण प्रमुकीयाए । सा० । नफेरी भूंगल जोड ।।
भाट भटाई मजुं भणिए । सा० । गायन गायण कोड ।।११।।
कामिनी गीत गावि घणूए । सा० । बहुगुण यश विस्तार ।।
नयण विकार विस्तारतीए । सा० । हरखती अतिहि अपार ।।१२।।
कुंअर इन्द्र समो जाणिइए । सा० । कुंआरी इंद्राणी बखाण ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । आंलि घडी बींता सुजाण ।।१३।।
कुंअर जाणे चंद्रसमोए । सा० । कुअरी ते रोहणि जोय ।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । रखेरे यशोहि कोय ।।१४।।
कुंअर जाणे सूरज समोए । सा० । कुअरी प्रभावली सार ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । बन बन ए अवतार ।।१५।।
कुंअर जाणे काम समोए । सा० । रतीदेवी कुअरी विख्यात ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । भली रची एस निधान ।।१६।।
कुंवर जाणे ईश्वर समोए । सा० । कुंअरी गौरी समान ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । अनोपम अवनी निधान ।।१७।।
कुंअर जाणे नरहरि समोए । सा० । कुंअरी लक्ष्मीवान ।।
अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । बन बन ए अभिधान ।।१८।।
कुंअर जाणे बलभद्र समोए । सा० । कुअरी रेवती एह ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । रूप सोभागिनी रेह ।।१९।।
कुंअर जाणेए नल समोए । सा० । कुअरी दमंती रूप ।।
अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । रूप सोभागनो कूप ।।२०।।
माणिक उपि अघ्ती घणूं ए । सा० । हेम मूंदीपिरहोय ।।
अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । संयोग सोभति जोय ।।२१।।
यम मोती अमूलकए । सा० । गुणकरी अतिही सोहंत ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । संजोग मन मोहंत ।।२२।।
यम राजा बल रूपमुंए । सा० । राजनीति हुमिशाल ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । तिम संजोगि विशाल ।।२३।।
कंकणविरी बींत्या तह्म करिए । सा० । कठण लक्षण सुविचार ।।
कुंअरी कर कोमल बणोए । सा० । वेरे मांडर्ता अपार ।।२४।।

तहाँ कल्पतरु वृक्ष समीप । सा० । कुंमरी बैस परिवार ॥
तब बैसना मुख मन धरिए । सा० । उपकर पीढो अपार ॥२५॥

यमुना के साथ विवाह

एसी पिर मंगल मावताए । सा० । चोरी रतनमि थंभ ॥
नीला थंभ हीर तोरणीए । सा० । रचित कनकमि कुंभ ॥२६॥

चोरी सारि ब्राह्मण मनाए । सा० । अग्न थापी घृत होम ॥
मंगल काज कर्या सोहिए । सा० । बहु वर रोहणि सोम ॥२७॥

सालु सूप ताहीं रह्यो ए । सा० । लाजा मूंकि मूठमार ॥
वर बधू कर संपुट करिए । सा० । होमे अग्नि मजार ॥२८॥

पहिलूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
मलपता माता हाथी वर्या ए । सा० । दीइसा मलवाहन राय ॥२९॥

बीजूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
हींसता हय वर हींसला ए । सा० । दीइ सामल वाहन राय ॥३०॥

त्रीजूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
रथ समरथ परीधि भरयाए । सा० । दीइ सामन वाहन राय ॥३१॥

चूथू मांगल वरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
गाम पोर पाटण वसाए । सा० । दीइ सामल वाहन राय ॥३२॥

मांगल फरता बहु सोहिए । सा० । कुंमरी छि दक्षण हाथ ॥
मेरु प्रदक्षण देय तोए । सा० । जाणे सूरज प्रभा साथ ॥३३॥

सालो अंगुठ चांपतुए । सा० । सोहि मती अपार ॥
जाणे मन्म रूपे थी विमोए । सा० । काम पाय लागि विचार ॥३४॥

सप्तपदी वाते फिर करयो ए । सा० । कुंमर अंगुठा ताण ॥
गुरु आशिर उलंघयाए । सा० । सवीकर कुमुदनी जाण ॥३५॥

कन्यादान होय गएं ए । सा० । सयन सहु परीवार ॥
मोषन वांहिणी पार मही ए । सा० । दिव वाजन अपार ॥३६॥

सासू श्रीमी सोहागणी ए । सा० । सोना थाल कंसार ॥
कुंमरीय सावती मजवि ए ।सा०॥ को सीमा मोटेरा चार अपार ॥३७॥

माहिकर्या पीयि अंरी थएं ए ।सा०॥ हाथ वांधी ताहि कांन ॥
हाथ ताही वोरियमता ए ।सा०॥ हुकवा सवे सुजाण ॥३८॥

चन्द्रसाथि यम रोहणीए ।सा०।। सूर यम्पारानिस साथं ।।
अमृतमती सु तेम जमी ए ।सा०।। तह्यों जसोधर नरनाथ ।।३९।।

विसल्या साथि यम्या लक्ष्मण ए ।सा०।। राम जिम सीता साथ ।।
अमृतमती सू तम यमो ए । सा०।। तम्हे जसोधर नर नाथ ।।४०।।

सुलोचना सु जयकुमार ए ।सा०। भरत स्त्री रत्न सु हाथ ।।
अमृतमती सूं तम यमो ए ।सा०। तम्हे जसोधर नर नाथ ।।४१।।

अंजनी सूं पवनजमो ए ।सा०। सुग्रीव तारा साथ ।।
अमृतमयी सूं तम पयो ए ।सा०। तम्हे जसोधर नर नाथ ।।४२।।

सावित्री सूं ब्रह्मा यमा ए ।सा० श्री हरी लक्ष्मीय साथ ।।
अमृतमयी सूं तम जमोए ।सा०। तह्यो जसोधर नरनाथ ।।४३।।

एह आदि मंगल भननीए ।सा०। गावती गीत रसाल ।।
मिजमाडी कुमरी ए ।सा०। वार च्यार गुणमाल ।।४४।।

च्यार सोहासणी वधावयोए ।सा०। मोती माणिक तेणीवार ।।
गौरी सावित्रीयि अहिवा तनए ।सा०। कहि बली जय जयकार ।।४५।।

दूहा

एणी पिरि वेहेवा महोछव हावाए । हवु हरष बहुरंग ।।
रायकरि उलट भरी । पियहिरामणी उत्तम अंग ।।१।।

सोना पाट सोहामणो, मोती चुक पुराव ।।
अनेक सगा सज्जन बहु, विनय सहित ते वांय ।।२।।

भास रायवेसाक

राजा रक्ष बेठडा मेडीयिए । तिहा लवन लेवानी बोसीं तेडीयिए ।।

भास महाबलनी

पाट पाथरया पटोलडेए । तिहां राय बोलि बोल मीठडे ए ।।
माणे कराय कभाय घणीए । पीछोडी पागडी कनक तणीए ।।१।।

सेला सालू भूना झीणलाए । बहू भैरव परकाला भलाए ।।२।।

पीला पीताम्बर ऊपताए । रूप तारा कणा ससी झीपताए ।।
देवांग वस्त्र झीणां घणांए । फलवंश शोपी नव सुण्या ए ।।३।।

पंचवरण मसरू बहूए । कणबी अंग तिहां पिरि पिरि सहू ए ॥
मखमुल मुकबल सूक सकलाताए । एह आदि देखहू देसमी जात ए ॥४॥
नवरंग चीर पटोलडां ए । सांकी साडलाड पट चोलडांए ॥
फूंदा फीणां आएस मलांए । कमखा आदि सावटू सोहो जलांए ॥५॥
कडक कुंडल भला पिहिरयाए । हार चांठीया रतन माणक सरयाए ॥
एह आदि पिरभूषण बहूए । पिहिरामणी पिर बिसारया सहूए ॥६॥

बरात की पहरावणी

रायराणी मंत्रि घणाए । वर तात काका मामा भय्या ए ॥
भाई भतीजा पीत्राइऐ वा ए । मोहोसाल मासा मसी भाई भाए ॥७॥

वर माय मोसी काकी भलीए । वर बिहिन भाभी भावे भलीए ॥
एह आदि कुटुंब मिल्यो बहूए । पिहिरामणी काज बिइठा सहूए ॥८॥

राय दूधें पाय पखालतु ए । राणी साथि वीनय जाणें चालतु ए ॥
कुंकुम तिलक काढी करीए । वली पाय पीत्लित बहू परीए ॥९॥

एम सहू सजन पिहिरावया ए । वरबहूनि आभूषण दीयां ए ॥
बहू रीति मांडव वधावयो ए । वणू पाव लागी नि मनावयो ए ॥१०॥

कुंमरी कुंकुंटीला काढीयाए । भि माणक मोती चोढीयां ए ॥
वाजित्र वाजि तब घणी ए । हुइ मंगल मान माननी तीणां ए ॥११॥
जान चाली ऊतावली ए । राय आप्यु वलावा मन रली ए ॥
दासी दास साथि दीयां घणाए । सा विनय कीघा बहू तेह तणा ए ।१२।

मागण सहू संतोखया ए । घरि घरि पात्र कुम पोखीयां ए ॥
मंगल कलश ले चलती ए । वली ढोल नीसाण बजावती ए ॥१३॥
सगा सहू साथि संतोषा सवे ए । राय असोक जैन सुत परणीइए ॥
समकित दृढ देवेन्द्र विनय कीउ ए, गुरुभावु प्रशांसंदमन रलीइ ॥१४॥

भावेण पासी चांटला ए । घरमांहि घणा देह संपदला ए ॥
वोल कवें पाये पडयां ए । लाभ वापनि वन्यार मोहु जडयां ए ॥१५॥
जिनवर भुवनें वधामणु ए । कीधा पूजा अभिषेक घणा घणा ए ॥
संघ पूजा संघ वात्सल्य कर्यो ए । तिहां राय असोक जस विस्तरयो ।ए।१६
सजनें सहू बहुमानो कीधो ए । एह मान दान देहूनें दीघो ए ॥
विनय करी संतोषीया ए । राय राणा मोकला निज निर गया ए ॥१७॥

गुरवीसु प्रभाचंद मनि रली ए। वादी चंदनें सेवि जयदेव बली ए॥
राय जसोधर कोडामणो ए। राजभार धरयो सोहामणो ए॥
सामंत अनीयें परवरयो ए। सपतांग राज अलंकरयो ए॥१८॥

काल घणो राज भोगविए। रणि वैरीयनां दल जोगवि ए॥
प्रगट प्रतापि पूरयो ए। बहुदानें दुखीयां दुःख चूरयो ए॥१९॥

राज्याभिषेक करना

एक दीवसिहूं देखीयो ए। रायप्रबल प्रतापि लेखीयो ए।
राज्य देवा उद्यम करिए। बहू जोसी तेडी मुहूर्त धरिए॥२०॥

राय राणा तेडा वयाए। बहू भेट लेइ ते आवयाए॥
जलदेवता पूजी करीए। घणा कनक कलस आण्या जल भरीए॥२१॥

कनक सिंघासन आपीए। धरिए उछवि हु तिहारो पीयोए॥
मोतीय चोक पूरावयोए। नारी तिलक करी वधावीयो ए॥२२॥

वाजित्र वाजता बहू पिरिए। राय कलस हाथि लेइ करीए॥
सुभ लगनि सीर ढालीया ए। तव जय जय कार सहूयें कीया ए॥२३॥

पट्टबंध सीर बांधीयो ए। तव राय राणें आराधीयो ए॥
मुगट माथि काने कुंडल ए। तेजि जीत्या रवी ससी मंडल ए॥२४॥

कनकमाला मोती सोहिए। आमला प्रमाणि मन मोहिए॥
हाथ साकला राज मुद्रका ए। सोहासणि कीधी आरात्रिका ए॥२५॥

राय जसोध उभो रह्यो ए। मुझ आगलि कनक दंड ग्रह्यो ए॥
राय राणा आवंभीयाए। तव ऊभा रह्या आगे थंभीया ए॥२६॥

विनय करीय सोर्व वंदिए। लाज्यो हूं पीता वेली नीचे पडिए॥
राय मुझ वचन श्रीकारीयिए। राय राणा जुहार अवधारीयिए॥२७॥

राज्याभिषेक में विभिन्न देशों के राजाओं का आगमन

अंग नमी मूंके भेटणुं ए। वंगरायनि मांन दीधो घणुं ए॥
राय कुंतल केरल तणाए। एह नि दृष्टि प्रसाद कीजि घणाए॥२८॥
कोसल मगध देस राय नमें ए। एहनि प्रति नमीयि जो मन गमे ए॥
नमि कणड द्रवड वली ए। एहनें वचन कृपा कीजे वली ए॥२९॥
कलिंगराय निमें सीस दीवीयिए। नीकमरायनु जुहार तें लीजीयए।
नमन नयन वचन रसिएं। केता हींसि भूभंगि पोषि हसिए॥३०॥

मानीया राय मन पूजीयाए । राय राणी लिक हेमानकि गया ए ।
एणी पिरि राज हुं पालीयोए । राजा जसोध तणो भार वामीयोए । २१।

दूहा

राज जसोध ते नीर्मलो, राज पालि गुणमाल ।।
सल्य रहीत ते जिन तणीं, धर्म करे सुवीशाल ।।१।।

षट् कर्म्मंह श्रावकतणां, पालिते मन शुद्ध ।
समकित पालि निरमलु, भव्य तणी ए बुध्य ।।२।।

जसोध राय एके समि, बिठो सभा रसाल ।
अरी सिमुख जोयंता, दीठो पल्यो मोभाल ।।३।।

तव्य राजा मन चीतवि, तनुभव भोग विरक्त ।।
काल तणी स्थिति छि असी, करय विचार सुयुक्त ।।४।।

नमः

आचार्या: परमेष्ठिन सुतपसो नित्यावृताव्यक्ता: ।
पंचाचारविचारचारुचतुरा: सद्भक्तसौख्यप्रदा: ।।

सद्धर्मामृतवर्षहर्षकरणा भाक्काव्यविलापूता:
श्रीदेवेंद्रसुविक्रमस्तुतपदा: कुर्वंतु वो मंगल: ।।१।।

इतिश्रीयशोधर महाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिछंदे: ।।
भूदेवकवि विक्रम सुत देवेन्द्र विरचिते । यशोधराय वर्णन
यशोधर विवाह पूर्वक राज्याभिषेक वर्णनो नाम तृतीयोधिकार: ।।३।।

चतुर्थ अधिकार

ढाल माढ़वाहुनी

वृद्धावस्था का प्रभाव

राय भणिए पली छिकूयी ।
जाणे यम तणीए दूती ।
क्रोडी आवीए तेड्वाए ।।१।।

यमचा यौवन वन भग्गु रहयो,
काल महानल बैथि बह्यो।
रहीं बलभनो इम बालो ए ।।२।।

जाणे अथवा जरा ए राक्षसी,
तनू ससलव मांहां आवी वसी,
हसीत दांत सभी तेडीयए ॥३॥

देह तलावरोमावली झाड,
काल पीसाचि जाणे नाखूहाड,
वाडव कामनें वारवाए ॥४॥

सरीर दीसि जाणे मोटो वडए,
अनेक रोग पंखी आछिजड ।
वडवाई समा दीसोथि ए ॥५॥

सरीर जाणे सायर सरीखो,
रोग मगर दुःख लेहेरी परीखो ।
सख सीपोनी फीएण भलू ए ॥६॥

जाणे देह ए मोटी वाडी,
पली हाड तीहां भूकूं ऊभाडी ।
वीहाडया भोग सीआलने ए ॥७॥

जाणे जरा अथवा ए वेल,
सरीर वृक्ष पामी करे गेल ।
कील ततु सम एह भणो ए ॥८॥

रूप लावण्य ए धान्य असीयो,
विखय इंद्रि जाणे लूहसी लीनो ।
कीधो ढगए परालनो ए ॥९॥

अथवा जरा रूपिणी ए नारी,
परस्त्री रत पर कोपी भारी ।
केशवरी दात पाडती ए ॥१०॥

काला केसते अंधार घोर,
कुबटि पाडि वीलया चोर ।
भूर जरा उद्योत भला ए ॥११॥

मुहूं गरदु भणां होय रसाल,
बांकुतु दीसि विकराल,
चांडाल तलाव परिस्त्री त्यजिए ॥१२॥

नवयौवन देखि हूव आकर करी,
कुचनि स्थपि युगल कलशह धरी।
धरी कामनी एहवी कही ए ॥१३॥

कूकती कारनें दीवी सरखी,
स्नेह दीवे करि जाले हरखी।
पस वर पुरुषनि अनगरिए ॥१४॥

घोलानी माला केसराली कूड,
अनवलि भमि केसरी समो बूड,
किम धीरे नारी हरणचीए ॥१५॥

अथवा अवनी वनति ए बूड
भमि कूव जाणिए बूड।
घरवा दीहि नारी हंसलीए ॥१६॥

अवनी नदी कुच मगरनी थाल,
वांकी दाढ सीर उज्जवल भास।
पासि न आवि नारी माछली ए ॥१७॥

हाथें लाकडी चलंती कुच वांकी,
नीची नजर जवतो पसु पाको।
यौवन रतन नीहालतो ए ॥१८॥

धूंगि हाथ धरा वे लाठी,
अचेतन नी पलहीडि ना छूटी।
काठिन स्त्री केम चेतन ए ॥१९॥

कुच देह कर पसी पसी रह्यो,
लावण्य रस वरनारिं वहयो।
वहयो आसे जरा डाकिनी ए ॥२०॥

नयन करि मुख लाला वलए,
लोभ विलय वाघो बल मस ए।
करय तृष्णा कल नाहि कमो ए ॥२१॥

कुच हाथ वली सीस धूणावि,
चालिए कम देखि फरागनावि।
हूंनिजलए एकल्ली हवे कहिए ॥२२॥

राजा यशोध द्वारा चिन्तन

मिवल ी घणो रचयो आरंभ,
विचारी जूइ होंयि भाचम ।
कुंभ भरच् पापि आपणो ए ॥२३॥

कुटब काजि राज बिस्तार कीध,
तनु गोर्ले चीटी मंकोडा दीध ।
लीव कुगत दुःख में घणो ए ॥२४॥

मेघ पटल सम ए परिवार,
विघंटता नवि लागे बार ।
गवार फोकि जीव मोह् करिए ॥२५॥

भव वनि कालि सँह भीकराल,
मुख पडया जाणों जीव मृग बाल,
सबल सरण ते कुण राखेए ॥२६॥

समुद्र मध्ये वाहांणथी ऊडयो सूडो,
सरणि तेहनि जिम को नहीं रूडो ।
जीवडो कष्ट पडयो धर्म राखिए ॥२७॥

द्रव्य क्षेत्र भव्य भावनि काल,
पंचप्रकार संसार विशाल ।
काल अनंतो जीव दुःख सहिए ॥२८॥

मोह गत माहि जीव एकलु भमिए,
सुख दुःख काल एकलोनी गमिए ।
समय एक साथे को नहीए ॥२९॥

करम कलंक काया थकी भिन्न,
ज्ञान स्वरूपी आत्मा छि अंन ।
अनोपम तेजनो पूंजलोए ॥३०॥

असुची रुधीर मांस में देह,
हाड भरयूं कर्म चांडाल गेह ।
नेह देह सूं ग्यानी किम करिए ॥३१॥

दुल्लरण देह देह सम जाणो,
नहु बाध्यो अमाड्यो खंडाड्यो ।
अशरणु आपणुँ धरए ए जिन बोलिए ॥३२॥

लोअणी कुडी विकारी ओरडी,
मलमूत्रादिक असूचीनी कुरडी ।
गडीयो पासि कुम्भ अवतरिए ॥३३॥

पंच प्रकार आश्रव सत्तावन,
मलि पावन नें करि अपावन ।
धन्य ते जे एथी वेगुल ए ॥३४॥

आश्रवरोधन करय महंत,
गुपति वीषय जय व्रति गुणवंत ।
संतते संवर आदरिए ॥३५॥

तप करी कर्म करें जे जर्जर,
उभय प्रकारि करय जे नीर्जर ।
निर्जर थई मोक्ष ते लहिए ॥३५॥

घन रज्जु अभ्यासि त्रिताल,
पुरुषाकारि लोक विशाल ।
अनादि अनंत द्रव्यिं भरयु ए ॥३७॥

पार्जं संव मनुष उत्तम कुल,
दुर्लभ समकित जिन धर्म नीर्मल ।
निश्चल पालि ते धन धन एह ॥३८॥

त्रिकरण सूध करि दस धर्म,
सात तत्त्वनु जाणि मर्म ।
कर्महणी शिव ते लहिए ॥३९॥

एणी विरि चिंतवता अनुप्रेक्षा,
जसोधराय मन लेयि दीक्षा ।
दीक्षा लेयत उत्सव करिए ॥४०॥

राय सहु सुखमवन लीध,
साथि एक जब पुत्र थि अतीव ।
लीध दीक्षा राज पुत्र करीए ॥४१॥

यशोधर राजा एवं अमृता का जीवन

प्रजालोक हर्षित सहू, करिते मुझ गुणगान ।।
मारीदत्त मंत्रीचारीयि, जाणी पाम्यों नीवान ।।२।।

सामंत क्षत्री राय घणा, मंत्री आदि परीवार ।।
मझ तणी आगन्या सिर वहि, प्रबल प्रताप विस्तार ।।३।।

अनेक रायमि वश करया, रण अंगण करी झूझ ।।
उपचीता रीपू भीटीया, कोन लहि मुझ गुझ ।।४।।

सुष्ट ते माण मनावया, दुष्ट ते कीधु नाश ।।
मुझ नीसाण सुणतडां, रिपु वनमि पडि त्रास ।।५।।

अनेक राजा तणी कुंअरी, परण्यु हूं उतंग ।।
रूप सोभागि आगलो, तेह सूरमूं मनरंग ।।६।।

अमृतमती सूं अतिघणु, निसदिन रास विलास ।।
सुख भोगवू हू मनरली, करतां कुतुहल हास ।।७।।

अमृतमती कूंखे हवो, कुअर जसोमती नाम ।।
दिन दिन ते मोटो हवो, रूप विलास गुण ठाम ।।८।।

इम करता दीन बहु गया, आव्यु मास वसंत ।।
अष्टाह्निका व्रत आचरि, भवि जण लोक महंत ।।९।।

मास वसंतनी फागुणनी, राग अंदोला गुडी

लोक सवे उलसत, वसत सू आव्यु मास ।।
घिर घिर नारी कोय भणी, भामिनी गावि रास ।।१।।

मत्रीयि मझ मन जाणीऊं, आणीयो मन विवेक ।।
वसत क्रीडानि काज, साधि कटक अनेक ।।२।।

हाथीयि घाली अंबाडी, देवाडीय मंगल तूर ।।
निसाण नादे ऊमटयो, ऊलटयो सागर पूर ।।३।।

अनेक सुजात वखाणी, पलाणीया चपल तोरंग ।।
कीध धजा घणू सतरा, संचरया रथ उतंग ।।४।।

पालाचो सट बसमसि, बकमसि करि न अपार ।।
पालखी अनेक सुखासन, रासनि काज अपार ।।५।।

दूहा

अंत:पुर सज आवेए, पावेए मन आनंद ॥
बिसी सुखासन जलखी, सजीमा साथि वृंद ॥६॥

कंचूकीया अनुगामी, आगि कनक दंड धार ॥
चाढी चबलहर माहि ऊमाहि रसिकुविस्तार ॥७॥

राय चाल्यो तब खेलवा । खेलवान हि साथ ॥
हाथी घंटा चालि ललपती । जलमती हुआ नर आथ ॥८॥

अनेक राय मणुं मंडीयो । वंदीयु रीपु बलवान ॥
उडी रज जलण्या मही । रहीयो ऊंपाई भान ॥९॥

वसन्तोत्सव मनाने राजा का बाहर आना

राय चाल्यो तब जाणीयो । आणीयो लोकि आणंदो ॥
क्रीडा कर वा उछक हुवा । कि हिवा लागा नारी वृंद ॥१०॥

तहां आवु मझ आंगि । ए नारि दीधी सीख ॥
आगि नारी वली प्रेरीय । पिहरीय चीर सरीख ॥११॥

पिहिरा मोती भरी कांचली । कंचली सांजें संजेव ॥
बैठी करवा आभूषण । भूषणवा बहु वेष ॥१२॥

बीछीया पागडी घूघरा । नेउरनू झमकार ॥
हंस गामिनी चाली अंगल मेखला गु घमकार ॥१३॥

मोतीयुनु हार भलकि । हलिकि टोबर कंठे चंग ॥
एक दाणीउ वली पद कडी । जडीय हि रतने सुरंग ॥१४॥

बांहोडीयि सोहि सिहिरवी । सिहिरवी चंपाकली हार ॥
करवली कंकण चूडीय । रुडीय मुद्रडी सार ॥१५॥

नाके अमूलक मोती । पनोती कानें सोही झाल ॥
ललवट टीलूं जडाव । सोहावि ए पीअलवो भालि ॥१६॥

लियो फूली केव फूल । अमूलक राखडी वेण ॥
गोफण फूलककाथि । खोसीय चाहुडी केवा ॥१७॥

खेलवा चाल्या ऊमसि । घसमसि सहू नर नारि ॥
हार गलिथु तुटिए । छूटे आभूषण भार ॥१८॥

वगयीय सगर वगरी ठीय । हेठी थै नव्य सेय ॥
कही भमरी कहीं सांकलां । मेखलां छूटी पडिय ॥१९॥

बहूटा सेरी भूषणि भरी । पहिरी जाणे भूप नारि ॥
नीज स्वामी नें नरखेए । हरखी करि सणगार ॥२०॥

राए ऊद्यान जब दीठो । मीठु होइ पंखी नाद ॥
जाणी राय देखी आवतो । आवतु वन करि साद ॥२१॥

केसूअडा फूल्या रातडा । रातडा अशोक अपार ॥
आवां माजरे मोरीआ । मोरीया कुंद मदार ॥२२॥

पीला फूल्या रुडा चपक । नीप कदंब अतूल ॥
पाडल परीमल अवसर । पसरि पगार अमूल ॥२३॥

वसन्त बहार

परीमल वेध्यो जायने । जाइ नही अलीदूर ॥
रातडी पण णासू वने । सुंबनी पिरित्यजय भूर ॥२४॥

जूखडी जूइ वखाणए । आणिए केतकी चग ॥
मयण गज वतूसल । उज्जल केवडु रंग ॥२५॥

मधूक फूल्या फूली माधवी । बांधवी अली रह्यो श्रेण ॥
रूपि रूडी रूप मंजरी । मंजरी छि बहूतेण ॥२६॥

पारजातक रुडी रेवती । सेवती सोहि गुलाल ॥
कमल मलावली कैरव । रवकरि भमर रसाल ॥२७॥

बकुल छि परीमल गरुउ । मरुउ मोगरु चंच ॥
टगर अवती सीदूरीयो । छे बपोरीयो बहूरंग ॥२८॥

वलसरी वालो वसंत । दीसंत मनोहर रूप ॥
भमर भमि जाणे किंकर । तरु अर सेवि भूप ॥२९॥

आंबां वन बहु मंजरी । पिंजरी दीसि चंग ॥
कोयल करि टहूंकडा । टूकडी कूंजि सुचग ॥३०॥

तरु अर ताल तमाल रस । लिहीं ताल अपार ॥
रायण रातडा रुवडां । सूअडा सेवि विचार ॥३१॥

ऊडंती सूडा तणी श्रेणी । पुंबेरिय बीजंत रसाल ॥
घर वाली वधि बीजपरि । वसंत तणी कठमाल ॥३२॥

असोक श्याम बीजोरडी । अंबीरकी बंधू नाम ॥
नाग केसर नारंग । लवंग एलची तणी ठाम ॥३३॥

नालीकेरी करणा एम । रायण रही छिन वेव ॥
तुंबी फिरनि करमदी । मरम हरम तणी देव ॥३४॥

मंडप लीहा द्राक्षा तणी । प्रतीवणा छि गम्भीर ॥
नागबेल नवरंग । सोरंग सोपारी बीर ॥३५॥

फणस सफल्या मल्ला तकी । जातकी वाक चारोली ॥
वेलिय राय सूं रंग भरी । मलेवरी करि रोल ॥३६॥

अगुरकी केसर रसभरी । भरी भरी छांटि अपार ॥
मूठडी भरीय गुलालनी । लालना मुख परि सार ॥३७॥

अबीरी नाखती नयन पुरी । रस भरी हसती नरलाल ॥
मलती कमल करीहूं हणं । स्तन ऊपरि कुसमाल ॥३८॥

फूलभीडू हणि कलघरी । लखीकरी पडि मूने चंग ॥
वलि ऊठी धंधि आसंधि । रंगि रमि उत्तंग ॥३९॥

दोए कर भरी दोए अवली । हंसती सभी सोहंत ॥
तूबी सूं आणे वेणा वल्लभी । वल्लभ मन मोहंत ॥४०॥

एक करें पीडी बोधि पडी । पालवकी बीडी बाथ ॥
चंपाणी अमेलम रही । मुखे कहिमो भो नाथ ॥४१॥

एक अधरि मधु चंडीयि । मंडी रही चूर दृष्टि ॥
एक पयोधरि पीडीय । वेणी नासि करि कष्ट ॥४२॥

वेणी भरी एक रीति कहि । रहि रहि नवल नवल चोर ।
महारी नवला तनु कोमल । नवल नवीनूं किशोर ॥४३॥

कलकीका काम समती । रमती नाची चकोर ॥
बेल वेलिहिकी मधु वती, मधु अका मूंठीय तिम ॥४४॥

तक डालि एक वसगती । हींचती वारीवार ॥
घणी तीहां बाधी हींदोलडा । जोड लहीवि अपार ॥४५॥

तव कटी मेखला खलकती । धरती जाणे श्रुती सार ॥
गावती गीत रसाल । बिशाल ए रति अवतार ॥४६॥

डाले बलगी करे साचती । उठे बिसे बहू वार ॥
सुरत वीसरयो संभारती । करती नयन बिकार ॥४७॥

फणाभिर रही डाल खाचवा । सांचवा कुसुम अतुल ॥
कर्ते रसोली हसीवली । डाल ऊछली पडया फूल ॥४८॥

जाणेह सवूं देखी लाजीया । फूलिऊं पाव्युं आज ॥
डाल तालणता एक चीर खस्यो । हस्यो तब सही सहू राज ॥४९॥

फूल मुकुट फूल टोडर ' फूल पछोडियि राय ॥
फूल चरणा फूल चाटडी । गोरडी फूल हटाय ॥५०॥

जाणे प्रतक्ष ए बसंत । खेलंतो वनदेवी साथ ॥
वन क्रीडा करी नारसूं । मारिवत्त सुण नरनाथ ॥५१॥

सहू नर नारी बहू बोलि । खेले ए वनें वसंत ॥
चदेन केशर छांटणां । कुंकुम तिलक महंत ॥५२॥

फूल टोडर बहू परीमल । पसरे दस दिस सार ॥
परीमल लोभीया भमरा । रणझण करी अपार ॥५३॥

जल सूं खडो कली दीठीय । पीठीय फूल पगार ॥
वन क्रीडा श्रम फेडीय । तेडीय राणी सराय ॥५४॥

खल करी मुखपरी छाटता । खूंटता कमल सुवास ॥
माहोमाहि बणू भूवता । करतां हास विलास ॥५५॥

जल खेलें इम नीसरया । पहिरया वस्त्र विवेक ।
पहिरयां अनेक आभूषण । दूषण नहीं कंगि एक ॥५६॥

नगर आवा सहो सज थया । वाजियां विविध वाजित्र ॥
संभ्रम सहीत पुरी आवीया । सोभा दीसि विचित्र ॥५७॥

वस्तु

नवर मझारी । नगर मझारी । नृप सुविचार ।
वन क्रीडा करी आवीयो । [illegible] सूं सार मनोहर ।।
स्नान पूज जिन भोजन सकल वस्तु [illegible] सुखाकर ।
सोच आव्यु निय घर सहू करि आनंद अपार ।।
एणी पिर हूं राज भोगवूं । आरीयस अवधार ।।१।।

दूहा

अमृतमती रानी का कुबडे के गान पर आसक्त होना

एक समय अमृतमती, धवल गृह मझार ।।
सही घर सूं करि गोठडी, मीठडी चतुर अपार ।।१।।

तेणि ठामि सेवक अधम, कुबडो अति हि विसाल ।।
मालव पंचम आलवे, सुरांगि सुरसाल ।।२।।

तव ते गान श्रवणि पडयो, अमृतमती जिम पास ।।
दूती चतुर भली सदा, पठावी ते पास ।।३।।

कुरूप देखी पाछी वली, वीनवि चित्त अपार ।।
काम चरित्र अचिंत छि, दुस्सह काम विकार ।।४।।

देखं [illegible] अपच्छरा, होय विस्मय देखी रूप ।।
ते देवी कुबडु एहनि मन धरि, दुर्जय काम ए भूप ।।५।।

दूतीइ देवी वीनवी, देखि कुरूप अपार ।।
नीचनिकृष्ट निठोर तनु, तेह सूं मोह निवार ।।६।।

तव अमृतमति एम बोलीयूं, प्रांजिय सखी मन सध्य ।।
कुकुल कुरूप कुबडु कह्यो, जे काहि तेह कुबुध्य ।।७।।

वे हूंनि [illegible] [illegible] [illegible], त्रिभुवन [illegible] [illegible] ।।
तेह नर नितु जाणजे, कामिनीनि कामदेव ।।८।।

[illegible] जोवन [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] मन [illegible] ।।
[illegible] तो मन [illegible] [illegible], [illegible] नु [illegible] [illegible] ।।९।।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] एक [illegible] न [illegible] ।।१०।।

तब तेणवि तेसुं बाऊब्यूं, अवसर जोई रमेय ॥
मारीदत्त अवधारतुं, हुं नवि सहुए भेय ॥११॥

भास रासनी

राजा यशोधर का राज दरबार

दिन दिन प्रति राजपाल तो ए। करतो पर उपकार तो ॥
प्रजालोक नें सुखी करूं ए। होइ मुझ यश बिस्तार तो ॥१॥

एक समि सभा मडपि ए। मध्य उन्नत अद्रपीठ तो ॥
उज्वल रतन नो शोभतु ए। जाणे निज यश पीठ तो ॥२॥

परवालीना थंभ भला ए। मंडप ग्रती बिसाल तु ॥
फरती विचित्र वर्ण पूतलीए। रुडी नाटक मालि तु ॥३॥

तेह परि कनक सिंघासन ए। पचवरण मणी बद्ध तो ॥
अमूलक मूडा गादी भली ए। रचना अतिहिं प्रसिद्ध तु ॥४॥

तेणि अवसरिहूं आवीयो ए। सभा मंडप मझार तु ॥
सामंत मंत्री उठी नम्या ए। विनय सु करय जुहार तु ॥५॥

सिंहासन बिठो सोहीयो ए। यम उदयाचल सूर तु ॥
रतन कुण्डल तेजि करीए। कीधु तिमर ग्रती दूर तु ॥६॥

उलबद्ध घणा राजीया ए। उभा रह्या तेणी वार तु ॥
यथायोग्यनि सजालीया ए। ते जिणे कीधां जुहार तु ॥७॥

जेहनि बिसवा आग्राहती ए। ते बिठा सुविचार तु ॥
अनेक राणा उभा रह्या ए। कर जोड़ी तजी हथियार तु ॥८॥

नयण चलावि को नही ए। को नही चालि हाथ तु ॥
को नही आंगली चालवि ए। वात न करि कोय साथ तु ॥९॥

को माहोमाहि नव्य हसिए। नव्य करि कोय संकेत तु ॥
चरण चलावि को नहीं ए। को नहीं अठींगरा देय तु ॥१०॥

सीस हलावि कु नही ए। को नही सीस कराेय तु ।
कर कंपावय को नही ए। आंगलो कोय न मरोय तु ॥११॥

को कटका मोडि नहीं ए। को बंगाई न देय तु ॥
को खांसि खंखारें नही ए। को नही दे को नही लेय तु ॥१२॥

कोकि कोई जिहां नहीं ए । कोय न रोग अराम तु ॥
को किहिनि कवि नहीं ए । कोय न शोक वैराग्य तु ॥१३॥

को कवि कोकलाय नहीं ए । कोय दीहो न सेवायतु ॥
कोई स्तुति साचि नहीं ए । को काई नव्य काव तु ॥१४॥

प्रण बोलाव्यु बोलि नहीं ए । नवि कोलाहल थायतु ॥
बोलाव्यु बोलि वीर बई ए । वासेह कुसु पसाय तु ॥१५॥

को मूढि हाथ चालि नहीं ए । नव्य चमरी न चलाय तु ॥
बजावण वालिको नहीं ए । परतापिय कंप्या रांव तु ॥१६॥

चौवामण फिर सबे रह्या ए । लख भट कोटीभट वीर तु ॥
वाणे सवा चामर समी ए । वायु वीना वाह वीर तु ॥१७॥

छत्र उज्जल वीर सोभतु ए । कनक कलस उत्तंग तु ॥
गज अवगाह चमर भला ए । नीरमल अंग तरंग तु ॥१८॥

वारंगना ढालि घणी ए । दुह कंकण झनकार तु ॥
रुपि अपछरा जीपती ए । रूपि अतीही अपार तु ॥१९॥

अनेक राणानां भेटणां ए । आव्या सेव सहीत तु ॥
विनय सहीत मंत्री कांवए । राय सुणु वीर चीत तो ॥२०॥

सेव सुणी प्रति उत्तर ए । देयूं हूं वीर बुध्य तुं ॥
मंत्र वादि पुस्ती करुं ए । वाधि चमराव रीत्य तु ॥२१॥

क्षण एक कवित्त अलंकरचा ए । सुकवित्त तणां सणुं चंग तु ॥
क्षण एक वाद वीद्यासनाए । सोभतू मनि तणि रंगतु ॥२२॥

क्षण एक नव रस नाटक ए । बोऊ भेद संगीत तु ॥
सारीगमपधनी सप्त स्वर ए । अनेक ताल भली रीत तो ॥२३॥

मूर्छना भेद भला लहु ए । नटुआ नचावि पात्र तु ॥
ताता थेई थेई ऊचरे ए । नाचती नौके वाव तु ॥२४॥

क्षण एक भाट भणीत भलाए । कवित्त कर्या सुरसाल तु ॥
वीर रस विविध परि ए । निज पराक्रम गुणमाल तु ॥२५॥

इन्द्रजाल वीर वाचके ए । अंग साचक कला कोक तु ॥
वरुण साचक थावतू कोड ए । नडुकुरा जनकुल कोड तु ॥२६॥

मल्लयुद्ध क्षण एक जोई ए । मत मतंग यूद्ध तु ।।
मींढा महीष कूकड़ा जीऊए । ते वढि हि जती कूच तु ।।२७।।

इम करतां कतूहल ए । गुण संगीत सभा मांहि तु ।।
कलपतरु चिंतामणी ए । कामधेनु मऊ मांहि तु ।।२८।।

दान देखी लहू लाजीए । अमृतहवां इम आरण तु ।।
सारद चन्द्र कुमुद समु ए । यश विस्तरयो वखाण तु ।।२६।।

दूहा

विरह वर्णन

तेणि अवसिरि मुझ सांभरी, अमृतमती सुवीचार ।।
रूपयोवन गुण देह तणा, जीतु रदय मझार ।।१।।

वीरह व्याप्यो मुझ मती घणो। क्षण एक रहुए न जाय ।।
अमृतमती गुण अमृत सू , न्हाो हुं चित्त लगाय ।।२।।

विरह संतापि व्यापयु, मझ कोमल अतीकाय ।।
अमृतमती गुणचन्द्रका ए । रहयो हृदय लगाय ।।३।।

विरहतणी घणी वेदना, तब उपनी मुझ देह ।।
अमृतमती गुण रुवड़ा, रसाय रस पिर रच्यो सनेह ।।४।।

विरह तणु अति दुःसहू , हृदय पिंड्क साल ।।
अमृतमती गुण शस्त्रधर, वैद्यनि कांठ विसाल ।।५।।

वीरह दावानल तनुबले, लागो अति विकराल ।।
अमृतमती मेघ पयोधर तदा, व्यांऊ अती ही रसाल ।।६।।

विरह तृषायि व्यापीयु, हु बापीड अपार ।।
अमृतमती गुण चीतबु , जाणें जलधर धार ।।७।।

विरहए मातो मतंग जो, तनु पाटण भजेय ।।
अमृतमती गुण अंकुसि, चितवरवी गंजेय ।।८।।

विरह भुजंगम मुझ नडयो, वेयण वीसहकुं व्याप ।।
अमृतमती नूं मनकरू, नाभ मंत्र तणु जाप्य ।।६।।

वीरही वीछी विसं व्यापयो, मझ शरीर मझार ।।
अमृतमती गुण ऊष धी, धरी करू सीतकार ।।१०।।

विरह अंगारि हु बीयो । हुं बालपाक कपूर ॥
अमृतमती नाह बन गयौं, पीतम हुं सुख सूर ॥१२॥

ढाल बहुरंगलानी

अमृतमतीना गुणधरणाए । महालिलदे ।
पीतम अतीही मरणाए । सुण सुन्दरि ॥
विरहवेषण अण उपसमिए । मा० ।
हृदय बसीयिम बाल्ह । सु० ॥१॥

चरणें कमलघणां जी कीयाए । मा० ।
लाजी थाकी उजलि वास ॥सु०॥

गजवली गमनें जीकीयो ए । मा० ।
देह बनें रह्यो उदास ॥सु०॥२॥

घूटण विरह हणवे भलाए । मा० ।
जंघा कनकमय थंभ ॥ सु० ॥
जघन जाणे करी कर सोभा ए ॥मा०॥
जीके रंभा अदंभ ॥सु०॥३॥

अमृतमती सौन्दर्य वर्णन

कटाक्षके जीत्यो सिंह लोए ।मा०। लाजयो गयो वन ठाय ॥सु॥
पीछा परभव पामीयाए ।मा०। दूर देसांतर जाय ॥सु०॥४॥

मध्यवली उपरि सोहिए ।मा०। रोमावली वन जाण ॥सु॥
मयण मतंग जम चुयाए ।मा०। नाभी ए दह बखाण ।सु०॥५॥

कनक कलस जाणे उपताए ।मा०। अमृत भरया शुभ जोय ॥सु०॥
पीन स्तन मुखि सेब कन ।मा०। जाणे मुद्रा दीधी होय सु०।६॥

अथवा पयोधर जाणुं सोहिए ।मा०। रखे लागे एह दिदृष्ट ।सु०।
इम जाणी करयो सिर सांकल ए ।मा०। चतुर विधाता बृष्ट ।सु०।७॥

अथवा कनक कलस परि ए ।मा०। पीन स्तनभर सोहंत ।सु०॥
कमल डोडा सम स्तन जाणुं ए ।मा०। उपरि भमर मोहंत ।सु०॥८॥

चकवा चकवी जोडलू ए ।मा०। एहवा स्तन रसाल ॥सु०॥
मुख चंद्र देखी मन लजीए ।मा०। जाणे रोमावली सेवाल ।सु०॥९॥

अथवा हृदय सिव संकर ए ।मा०। पोतव जाणे जाण ॥सु०॥
स्तन उपरि बे स्यामीकार ।मा०। मुखमाहि काजल बखाण ॥सु०॥१०॥

पातली मारए जाडए ।मा०। कोमल स्नीए कठोरए ।सु०।।
स्यी सुमुखी स्तन कालमुखाए ।।मा०। बाहेर काढया काटि तेश ।।११।।

कठिण कालमुखा बर्णुं होइए ।मा०। पण पर्यि त्यजि न लयार ।सु०।
कठिण थंड नही छूटीयिए ।मा०। कृपणणु जाणो विचार ।सु०।१२।

जाणे कनकनी विष बडीए ।मा०। पातलडी भली वेल ।।सु०।।
गिरिपर होइ पण कोतकए ।मा०। वेल परे गिरि वेल ।सु०।।१३।।

लावन्ये सांच्यो कनक तणो ए ।मा०। प्रमृताए दयसा जोड ।सु०।
वेल वीलां लागां लहूंए ।सु०। ए मक कौतक कोड ।सु।१४।

केटली स्तन सोभा कहूं ए ।मा०। जाणो ए मोटा राय ।सु०।
पासमुद्र हूं कर ग्रह्यु ए ।मा०। तेहनिमि कर देवाय ।।सु०।१५।।

कनक दंड समा भुज कहूं ए ।।मा०। कल्पवल्लीनुं वितान ।।सु०।
लांबी पांमली वली कोमल ए ।मा। कर पालव समान ।सु०।१६।।

कंठ सोभागी रेखसूं ए ।मा०। देखीय वर्ण सुवर्ण ।।
संख डकयो जलि जै पडयो ए ।मा०। लाज्यु हृदय विचीर्ण ।।१७।।

हडवटी छूदणुं कि मसूं ए ।मा०। चंद्रमाहि जसुं नक्षत्र ।।
दांत दाडिम कुली कहूं ए ।मा०। रतन के मोती पवित्र ।।सु०।१८।

नासिका मसिए सुक लहू ए ।मा०। बेठो मोती चरेय ।।सु०।।
कान पासि ए भमिर धनुं ए ।सु०। ग्रह्यु सूक कोंडयो पण नडरेया ।।१९।

अधर पाकांटी ग्रूरडा ए ।मा०। दांत दाडम कली जाण ।।सु०।।
ए माहि पहिलूं कहनें ग्रह्युं ए ।मा०। बरधई चीते वखाण ।।सु०।२०।

आखडी कमलह पांखडी ए ।मा०। बाजी कि अणी बाल ।।सु०।।
अथवा राता कमल भसूं ए ।मा०। काला भमर किलोलाल ।।सु०।२१।

अथवा मछ युगम समीए ।मा०। रहीआ लावन्य सर मांहि ।सु।।
धीवर देखी पीडा धरे ए ।।मा०।। ए बहु अचर्य ठाह ।सु०।।२२।

लोचन सोभायए गंधीयाए ।मा०। खंजन बली चकोर ।सु०।
धनि भमंता हींडता ए ।मा०। नाचते चैय चोर ।।सु०।।२३।।

अर्थ चांद समो सही ए ।सु०। तेह भालस्थल होय ।सु।
नयण बाण भमरी धनु ए ।मा०। सांची कंपावय लोय ।।सु०।२४।।

कोन ए काम हींडोलडा ए ।मा०। अथवा वचन सुन पास ।।
केस चारे जीकया मोरका ए ।मा०। तेणि चल्ल जरद चनवास ।।सु।।२५

जाणे कनक लसी पूतली ए ।मा० पातली कोहल मेख ।।सु०।।
ससार सुख माहि झूलू ए ।मा०। मैएह यू कर्के पेख ।।सु०।२६।।

यमलायमल मैथि करिए ।मा०। अस्वए अमृता कटाक्ष ।सु०।
अरणविनय चोका थीर होइए ।मा०। अमृता केरा अभिलाष ।।सु०।२७।

बाटला कोमल पीरोसला ए ।मा०। चोका अमृता करए साथ ।सु०।
रतन मोती परवालडाए ।मा०। अमृता बीला ए काथ ।।सु०।२८।

माला मेयल मोटका ए ।मा०। ए मर्भ मन न सोहाय ।सु०।
अमृता बीला एष लिखू ए ।।मा०। तब आया मीरी ठाय ।सु०।२६

रथ आसे एगी हिंटीया ए ।मा०। दारकरि मती कूर ।।सु०।।
रथ रीष मर्भ मन मम्यू ए ।मा०। अमृता मती रिहि रंब ।सु०।३०।

अनेक राणा राय देखसू ए ।मा०। भंडार सहीत ए राज ।सु०।
अमृतमती नारी विणए ।मा०। एणि मम्भसू सरि काज ।।सु०।३१।

दूहा

अेणी पिरि चींता आकुल्यो, सांकलयो जिम नाग ।
अंतर मदें नयन तरें, पण उठवा नहीं लाग ।।१।।

तेणि अवसिरि दिनकर सही, लोक बांधव इम जाण ।।
अस्ताचल सन्मुख थयो, जाणे मूक करुणा आण ।।२।।

ढाल भूपाल रागनी

सूर्य अस्त होने का वर्णन

दिनकर रे आथमतु हुवो रातडो ।।
निशि नारी नु रे, जाणे कि कुंकुम चोखडो ।।१।।

जिम आथमतो रे, तिम ते वरणु रातो थयो ।।
सही महाजन रे, रोगमु कि कष्ट पडयो ।।२।।

यम ऊगतो रे, तिम आथमतु रंग हुवु ।।
सहि सज्जन रे, मन सुख दुखे समसुख करयो ।।३।।

अस्ताचलें रे, सूर जातो जाणीयो ।
निज सिर परि रे, मुकुट धर्यो बनायो ।।४।।

पश्चिम दिशि रे, एवी आवि हुवी रातडी ।
पंखी तस्तर रे, बौल करि करि बातडी ।।५।।

दिन अंतरे रे, रवि घणुं मान पामयूं ।
उलक नेंरे, कोसि एक सीस न नामयूं ॥६॥

व्यभचारिणी रे, गमन रोवे रीति चढी ।
रवी उपरे रे, देषाडि आंखि रातडी ॥७॥

जाणे तेहस्यापेंरे, सूरज अस्तांगत गयो ।
अबला तणि रे, स्यापें कोहोनो नही क्षय थयो ॥८॥

जेह उदय थीरे, धर्म कर्म चालें घणो ।
तेह आथमे रे, जाणे शोभा काल तणो ॥६॥

रवि आथमेरे, कोमलाणी वणी पदमनी ।
देषी नव्यसकिरे, आल मीची रही घणी ॥१०॥

निज मीत्रनो रे, दु ख देखी अती दुर्धरो ।
दुखीयो थाय रे, कोण नही ते उधरो ॥११॥

रवि आथमे रे, कमल माहि भमरो रमि ।
सही कामनी रे, निचसूं संग करिसिमि ॥१२॥

कमल तणी रे, सोभा तव क्षय पामीई ।
जिम व्यसनी रे, विद्या सरीली वामई ॥१३॥

भमे भमरा रे, दीन थया विलखे घणू ।
जिम विद्वास रे, कुजन माँहि पामे दीन पणू ॥१४॥

अंधकार ए रे, लोकनि पीडि पापीयो ।
जिम कुस्थिती रे, भूप घणुं लोभि व्यापीयो ॥१५॥

सहू लोकनारे, नयन तदा नीफला होवां ॥
जिम कृपणनाए, जनम वली धन सोचवा ॥१६॥

तव दीवी रे, ठाम ठाम घणुं प्रगट ई ॥
अंधकारनी रे, व्याप्त ते वारें विघटई ॥१७॥
जिम जिनवाणी रे, ज्ञान कीरणि करी व्यापती ॥
घणू करी रे, मिथ्या तीमरनि का पती ॥१८॥

चन्द्रोदय वर्णन

तीणि अवसरि रे, ऊग्यो पूनम चांदलो ॥
पूरव दिसा रे, नारी सिर जाणे चांदलो ॥१६॥

जाणी उज्जवल रे, पूंज दीसि कपुर नो ॥
छे समरथ रे, ताप निवारवा सूर नो ॥२०॥

पूरब दिसें रे, ए नारी मुक वखाणं करे ॥
सभी श्रीफलरे, चखत तारा तंदुल भरे ॥२१॥

पूरब दसि रे, गुफा श्रको ए नीसरी ॥
गगन वनें रे, संचरयो शशी केसरी ॥२२॥

किरण नखे रे, अंधकार गज विदारयो ॥
जाणे तारा रे, मुक्ताफल विस्तारयो ॥२३॥

उग्यु चांदलु रे, मदनीयि जाणे चाकडी ।
काम सापनें रे, जमाबि कीरणें लाकडी ॥२४॥

अथवा ससि रे, जाणे नीसाणा नोखंडो ।
बांण छूटवारे, घसिए काम पुलंदको ॥२५॥

शशी सीतल रे, अमृत मय कहिवाडतो ।
लांछन मसिरें, हर बह्यो काम जीवाडतो ॥२६॥

देखी व्यरहणी रे, संताप पामी अतघणी ।
चन्द्रप्रति रे, कहिवा लागी तेह भणी ॥२७॥

शशी सीतल रे, दाह सकल ए किहां हुती ।
केहर गले रे, विसलणी हवि संगती ॥२८॥

सायर माहि रे, वडवानल थी सीखीयो ।
तूं कलंकीय रे, दोसाकर जड लेखीयो ॥२९॥

तूं कुमुदनी रे, साथि केलि मन रली ।
गोत्र वालीयि रे, परस्त्रीनि जवे बली ॥३०॥

मथासके रे, अमृत पीता परिविब तु ।
तूं नाशव रे, परनारी मुख, चंबनु ॥३१॥

सायर मथीरे, कोर्के दैवि कमाड्यो ॥
वडई वांचण रे, सायर कुल तिलवाचीयो ॥३२॥

मंदर संगि रे, सिहिदिसि नहीं चंपावलो ।
अमरत तणी रे, आ वासीसि ना पीवाडीयो ॥३३॥

एणि परें रे, ग्यारहणी सखी सूं झीलती ।
संजोगणी रे, किरण लागि घणं रीझती ॥३४॥

दूहा

तव मैं सभा सज्जन सहू, आवेस्या नीज ठाम ।
हू उठ्यो उतावलो, मनिम्हा अमृता नाम ॥१॥

रतनदंड करतीणि समि, कंचुकी आव्यो जेम ॥
अमृता अवासि पधारीयि, हरष उपनो मुझ तेम ॥२॥
भूख्यो दिन विच्यार नु, पंचामृत लहि जेम ॥
तरसो सीतोदकि लहि, हरष उपनु मुझ तेम ॥३॥

तावडि घणं संतापगो, फलो तरु लहि जेम ।
विनयवली दान गुण लहि, हरष अपनो मुझ तेम ॥४॥

रूपवंत निवली भण्यो, भण्यो विनय गुण जेम ॥
विनय वली दान गुण लहि, हरष अपनो मुझ तेम ॥५॥

दूध वली साकर भली, मूदी भली मणि जेम ॥
घन अथि निधि पामयो, हरष उपनु मुझ तेम ॥६॥

श्रीमत. परमेष्ठिनो भूशमुपाध्याया: कृताध्यापका: ॥
शिष्याणां प्रतिशिष्यकादिमुनिनामेकादशांगानि च ॥
पूर्वाण्येव चतुर्दशादृतगुणाचारा: पठंत: सदा ॥
श्रीदेवेन्द्रसविक्रमस्तुतपदा: कुर्वन्तु वो मंगल ॥१॥

इति यशोधरमहाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिछंदे
भूदेवकवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते
वसतक्रीडाराजसभास्थिति प्रवटित विरहपट्टराणीवर्णन
सूर्यास्तचन्द्रोदयवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकार: ॥४॥

पंचम अधिकार

ढाल आसंवरी

क्रीडा वर्णन

तबहुं चाल्यो रंग भरी । आणंबारे । मध्यबपल परमाहि लो ।
मंगरक साथि सही ।आ०। पोल कनंकी चाहितो ॥१॥

हु बइसो देखी भोमि ।आ०। मालयो इन्द्र अनेक तो ।
कोयो देव निपुण प्रव ।आ०। विनय सहित सुविवेक तो ॥२॥

बीजी भोम सोहामणी ।आ०। नील रतन तणी सार तो ॥
कंचीत आंसू बीलालीवर ।आ०। पामसी सामय उदार तो ॥३॥

तीजी भोम देव कहु ।आ०। पीला रतन में ओपती ॥
अंबमारतणी थंभ सार ।आ०। सुलतां हरष बहु होय तो ॥४॥

चुथी भोम बहुमानसु ।आ०। स्याम रतन मय जाणसु ।।
रतनदीप झबके घणा ।आ०। जटयो सुरक्षतां बंस जाए तो ॥५॥

राता रतन तणी पांचमी ।आ०। जड्यो हु सुरसालतो ॥
ज्याहां मोती ना झूमका ।आ०। राता जाणे परकालतो ॥६॥
फटिकतणी छठी कही ।आ०। दीठी निज प्रतिछायतो ॥
जाणे हरषवि मलो मलो ।आ०। क्ली जणे थंभ न माय तो ॥७॥

सातमी कही सोहे घणी ।आ०। पंचरतन मय थंभ तो ॥
पंचवरण स्वस्तिक घणा ।आ०। अनेक चितामण रंग तो ॥८॥

तीहां चढ्यो हु रंग भरयो ।आ०। भरयो कुवारकी हाथ तु ॥
सहीं सहुए जय जय कीयो ।आ०। तिहाथी चाल्यो सहु साथ तो ॥९॥
आठमी भोम अनोपम ।आ०। उपरि अनेक चित्रामतो ।
राता रतन भीत घणी ।आ०। अमूल रतन मया काम तु ॥१०॥
तिहां चढ्यो हु बलमसी ।आ०। हर्षित वदन हुवो आस तु ।
जाणे नीवान में पामीहु ।आ०। अथवा अमृत वरजासु तो ॥११॥

अमृतमतीइ जाणे तू ।आ०। मंदिरे पधारया राय तु ॥
चंद्रा वदनी बबकावती ।आ०। पावनी साहामी उछाय तो ॥१२॥

वीछीयडा झमकावती ।आ०। नेवर नो ठमकार तु ॥
हंस गमनी जाणे हंसली ।आ०। हु हंसमति पावे सार तो ॥१३॥

कटी मेखला खलकावती ।आ०। पावनी विछुवंकतो ॥
गजगामिनी जाणे हसतीनी ।आ०। हु हसती प्रति बलकुंकतो ॥१४॥

रयन मातो चमू नणी रही ।आ०। चीचंव जाणे चमू खीमतो ॥
मसीर आवती रखे चूडली ।आ०। कटी कसी नाहि वीहु नमतो ॥१५॥

चरचर हार मिहिकावती ।आ०। खलकावती चूडी हाथ तो ॥
सुवती हे चिहुं वा वसि ।आ०। लेखिये साहु सुहावतो ॥१६॥

नयण बाण धरां ताणती ।आ०। नयण मोमावती सूर तु ॥
बदन शशी एह देखतां ।आ०। विरह संताप गयु दूरतु ॥१७॥

काने कुंडल झलकावती ।आ०। सेसफूल फूलों उद्योत तो ॥
वेणी गोफणो लहिकावती ।आ०। राखडी रतनहु जोतसो ॥१८॥

वदनें मुख गुणगावती ।आ०। आवती जय जय वाण तु ।
आवती हुं आलंबीयो ।आ०। लेई चाली करताण तु ॥१९॥

रतनपलंग छत्री आलो ।आ। हंसतूलका पडि रम तो ॥
कर धरी शेजि हे जिसू ।आ०। विनय सुं उभी उत्तंग तो ॥२०॥

।आ०। लीधी तव तेणी वार तु ॥ आलंदारे
चीर छाडता लाजती ।आ०। रतन दीवे फूतकार तु ॥२१॥

विफलथया कमलें हव्या ।आ०। तेहूं नवीयानंद देखाय तो ॥
मान मोडाइ माननी ।आ०। रही मुख सूं तनु लावतो ॥२२॥

भेद चुरासी आसन ।आ०। कीधो तव संभोग तो ॥
नख दीधा जे स्तन परी ।आ०। काम प्रसस्ति जाणे जोग तो ॥२३॥

अधर लंडते ऊपतु ।आ०। कांमध्वजाए लांछन तु ॥
हृदय हृदय मुख परीमुख ।आ०। तनु करी भीडयो तस तो ॥२४॥

गाढ आलंघन देयतां ।आ०। मनपरि तनु महां पेठतो ॥
विपरीत सुरत खेलतां ।आ०। बीजपेर चपल ते दीठतो ॥२५॥

अमृता मालती महालली ।आ०॥ हू भमरो इम जोयतो ॥
अमृता जाणे कमलणी ।आ०। हूं मकरंद सम होयतो ॥२६॥

अमृता चदन छोडूउ ॥आ०। हूं भोगी इम जाण तू ॥
अमृता सरस तलावडी ।आ०। हू मेगल बखाण तु ॥२७॥

अमृता जाणे वीजली ।आ०। हू वली मेघ समान तो ॥
अमृता जाणें मीठी झाखडी ।आ०। हूं जाणे मडपवान तु ॥२८॥

अमृता ए कल्प वेलडी ।आ०। हूं कल्पवृक्ष विचार तु ॥
अमृता रती रमती रूडी ।आ०। हू कामह अवतार तु ॥२९॥

इम सुरत सुख भोगवतां ।आ०। परसेवजल लीनतो ॥
हू सुतो तव रंगभरी ।आ०। अमृता कंठे कर दीन तो ॥३०॥

तेण गुण जाण क्षण बीतवू ।आ०। सुरतकला प्रेम भाव तो ॥
अधर भार उपर नीद्रडी ।आ०। आव बाल सहे लावतो ॥३१॥

प्रभात समय हु कुंअर ते ॥भा०॥ पामी अंकमल राय, भार हु ।
अमृत पिव हु पिव कहूं ॥भा०॥ योग औषधू सुविचार तो ॥१२॥
राय ए नीझमल भयो भयो ॥भा०॥ जाणी नीसरी समे वेला हु ॥
भुजपंजर थी चंचली ॥भा०॥ कोजलीथी वय न मरु हु ॥१३॥

दूहा

अमृतमती का कुबड़े के पास जाना

तब हु मने प्रार्थीयो, एणी वेला किहां जाय ।
अबलाए चली एकली, कुण कारण कुण ठाय ॥१॥
तब सेज्यायु उठ्यो, चाल्यो हुं तेहु साथि ।
उठी अंधार पछेड लो, खडग धरयुं निज हाथ ॥२॥
सनें समें ते नीसरी, कपाड युगम उघाड ।
मारीवस भवधारिये, रही कुबडो उठाड ॥३॥

भास जीवडामी

रागवेलाउ, नगर चूलारा हो लोक नी चालि ।

कुबड़े के शरीर का वर्णन

कालो कोढी कसमसो हो । कठिला काजल वांन ॥
लूघो कांयल समान । काग केरी चांच मुख्यो हो ।
नारी अनरथ कूरडी ।हो। नारी नासे संसार हो जीवडा ॥१॥
हो जीवडा कूड कूड नारी नीचार ॥
पग आंमली ठाम नही हो । फूटी घूटण मान ।
घूहडनी पिरि घर भरि हो । चालतु रीछ समान । हो जीवडा ॥२॥
उभे चूतरा जब बेसें हो । तबह माथा देखाय ॥
कोट केवी दीसि नही हो । योम माथा छि सहाय ॥हो जी० ॥३॥
रोम जसा कांटा समा हो । बांच ए बाउल कांग ॥
पेट मोटुं र ढोल सबो हो । पिर पिर पाथाल जाय हो जी० ॥४॥
कटीरांफडा मूल समी हो । हैया मुयें सख्यो फाड ॥
हाथ सूका मोटी नसा हो । पुनु सब बसयु फाड ॥होजी०॥५॥
पीहु कस्या काठ वंच सामा हो । दांतो कटनी समान ॥
कोढि मांगिड पडे चल्यो । जाणे हु डंक संस्थान ॥हो जी० ॥६॥
कान कोहुरी जाणे सुपडां हो । नाक नाकिस्सी गु टोप ।
पडे काणो नीवर बोला हो । चालति दीसि अक हो । जी० ॥७॥

आंख ऊंडी कुंडी घडी हो । सघरी केवल आणाय ।
पांथरिए परए पापी त्यथो हो । ए नोपली मेहु वाव ।होजी ।।८।।

दांत बखर दांता समा हो । कांई बाहिर काई माहि ।।
मुख दुरगंधे रहिवाय नही हो । होठ तणी नही माहि ।।हो जी० ।।९।।

कपाल ऊडूं सीप समू हो । वही वली सीसमुं भाल ।।
माथूं जाणे कागि दूंण्यू । कोह्या कस्य सुवाल ।।हो जी०।।१०।।

हाथीनि सूंनि हाथ बल्या हो । बांगसी वली मई बांए ।।
जाणे बल्यु ए थांभ हो । मारिवल सुणो बाण हो जी० ।।११।।

कह्यु कूतरो निकाने कीडा । मुंडो नि सूयाल ।।
ममताने अक्षा बोलु हो । तेहनूं मोटुं वाल ।।हो जी ।।१२।।

पगफाटा जिम भांखडा हो । हलना पडया बाहाल ।
पायतला सी जागव्यु हो । तेऊ यो जिमकाल ।।हो जी०।।१३।।

रानी का कुबडे से निवेदन करना

राणी परती बोलियो हो । कठण बचन बीकराल ।
का असुरी आवई हो । झोटें झाली ततकाल ।हो जी० ।।१४।।

धीगे थपोई ढीकें करी हो । पगधरी ताणी चाहि ।।
कुंअली पातली लह्वी जिम हो । चंद्रकला नितराहे ।हो० ।जू ।।१५।।

वली बोल्यो ते कुबडो हो । कायन बोलि नार ।
शिरनामी पाये थरू हो । तुम मन मांहि बिचार ।।हो जी० ।।१६।।

हास सहित बोल सांभली हो । ते वली बोली वाए ।।
राय ते मुरु घेरह आवयो हो । तेरिए बार लागी जाए ।हो जी० ।।१८।।

राजा जो पहरो भरि हो । तो न चीतहूं नार ।
स्वामीनी तो भगत करुं हो । मभयो कोप निवार ।हो जी० ।।१९।।

हूं तुझ पगनी वांएो ईहो । तुं मुझ हे या हार ।
हूं तुझनी दासी समी हो । तूं मुझ कांम अवतार ।।हो जी०।।२०।।

हूं तुझ ऊजीठा समी ए । तूं मुझ मुख तंबोल ।।
हूं कूं पतंग तूं मझ मन हो । वरुणरंगे था बोल ।।हो जी०।।२१।।

तूं मुझ मर्मे करकंकण हो । हूं मुझ चरण-हुरेस ।।
तूं मुझ कोटि काठलो हो । को पग कवच मरेस ।।हो जी०।।२२।।

तूं मुझ सिरै केसफूल बनो हो । तूं मुझ चोफली वेस ॥
तूं मुझ किकर किकरी हो । कोपतें कवण गुणेस ॥हो जी०॥२३॥

तूं मुझ कंठ टोडर बनो हो । मुझ गुण तुझ वे वेस ॥
गुणसागर तूं नाही ताहो । कोपतें कवण गुणेस ॥हो जी०॥२४॥

तूं मुझ जीवतो जीवन हो, तु मुझ योवन वेस ॥
तूं मुझ तनु सणगार सही हो, कोपतें कवण गुणेस ॥होजी०॥२५॥

तब ते कुबडी हरखीयी हो, जाणी नारी अंतरंग ॥
ते नारी तेणि पावरी हो, जोग भोगवि मनरंग ॥होजी०॥२६॥

तब हूं मन मांहि चीतवूं हो, धिग धिग नारी एह ॥
हूं सरीखो राय परहरी हो, नीच सूं मांडयो नेह ॥होजी०॥२७॥

नारी चरित्र

नारी चरित्र सागर अगु हो, कोय न जाणि पार ॥
हाथ धरें पण थीर नही हो, पारा रस सम नार ॥हो जी०॥२८॥

नारी नदी बेहू समी हो, सहजें नीचा संग ।
कोय उपनी सागर वरी हो, मल भरयो तुछल सूं रंग ॥हो जी०॥२९॥

वनें दावानल दीपयो हो, सूकूं नीलूं नव्य कोय ॥
तीम कामनी कामें बली हो, ऊंच नींच बव्य अवलोय ॥होजी०॥३०॥

नारी निबली वेलडी हो, ए बेहु एक समान ॥
मोटा तरुनि अवयली हो, बाड कांकरा पिरमाव ॥होजी०॥३१॥

नदी घणी सागर ते मलि हो, तो हु ते अलो अपार ॥
नारी नर बहुसूं रमि हो, तुह तुहि तुपत लगार ॥होजी०॥३२॥

जिम काम अन बनमें भसतो हो, तोहू न हो संतोष ॥
तम नारी बहु नर साथि हो, रमतां अधिक होइ सोस ॥होजी०॥३३॥

न्यायें नारी ए दूर्नि पनि हो, न्याय पालि कवि पाय ॥
साहसिक झूठी चिकिति हो, माया तणी निवास ॥होजी०॥३४॥

कूड कपट कूड तणी हो, नारी ए मोटी खाण ॥
बापडा नर नै डोलवती हो, भूमि मोहे पाश ॥होजी०॥३५॥

नारी चोकली वेलडी हो, नारी वनरुच आप ॥
नारी नरकनी वाटडी हो, नारी चीजा आपाप ॥होजी०॥३६॥

नारी बाघण वन वसती हो, नारी अमुखी नीवान ॥
नारी प्रत्यक्ष राक्षसी हो, वसती मन तनु मात ॥होजी०॥३७॥

नारी पापनु पोटलो हो, नारी लोभनु पुंज ॥
नारी नामि व्यतरी हो, खाती नरनि भुंज ॥होजी०॥३८॥

दूहा

नारी अन्या देषी करी, कोप उपनु अपार ॥
ए बेहूनि हणिहूं हणू, हैयि एहवू बिचार ॥१॥

राजा द्वारा तलवार निकालना और पुनः शान्त होना

खड्ग काढयो पडी आरयो, वली वीचार मन लीन ॥
आ अबला अवध कहीं, ए कुबड़ो मृत दीन ॥२॥

एह हण्यो मझ ऊपज सहसि, काई न सीझ सि काज ॥
खडग साहमू वली जोइउं, मारिवत्त मणो राज ॥३॥

भास नरसूआनी

खड्ग के गुण

तव खडगह गुण चीतवूं ए । नारे सूआ रण आंगण वीकराल ॥
अरी दल मलि अती घणुं ए । जाणीइ कोप्यो काल ॥१॥

रणभेरी रणकाहल ए ।ना०। वाजि जव रण तूर ॥
तव मझ हाथि उलसतो ए ।ना०। आणे रोमाञ्च्यो सूर ॥२॥

चपल तोरंगम वाय वेगी ।ना०। चपल सावकहूं अपार ॥
सनाहि हुं जाणी मेघलो ए ।ना०। खडग बीज झलकार ॥३॥

खडग ए जाणें तीरथ ए ।ना०। धारा बहु नीर ठाहि ॥
द्विजनि देता धन तनू कापी ।ना०। अरि हरि हरि करी नाहि ॥४॥

खडग जाणें राहु संमुए ।ना०। कालो तेह वीकराल ॥
मूक्यो अमि वेरी तणुं ए । ना०। राजमंडल ततकाल ॥५॥

खडग जाणें सही मेघलो ए ।ना०। धारानल वरसाव ॥
मीना बीना वलो नाहा तता ए ।ना०। राजहंस कोलरे जाव ॥६॥

खडग जाणें जम जीभडी ए ।ना०। लल लल लांबी होय ॥
मोटा कुटा सोंटा वेरीडाए ।ना०। सुभटां चाटती जोय ॥७॥

प्रताप वंश्वानरि मजलगिए ।ना०। खडगए मोटी धास ॥
हुं सुरसही अरी इम कही ए ।ना०। बीज कांकि चाटि ऊवास ॥८॥

खडग करि बरचो सूबिह ए ।ना०। पाखि भरी भए सवाद ॥
वैरी रुधीर पीअंतडाए ।ना०। सीव सूणी नवाखि संवाद ॥९॥

खडग ए तेजनो पूजलोए ।ना०॥ झबकि झबकि ए सूर ॥
तेज सही नहीं सकिए ।ना। नयणि फीरि नील सूर ॥१०॥

खडग ए मोटो दीवडो ए ।ना०। अरीयण सोखि मंग ॥
तेज तेहनूं सहि नही ए ।ना०। पडि वैरी पतंग ॥११॥

खडग दीवा काजल रेखाए ।ना०। काजी रणांगणि जोय ॥
तेह देखी अरीहणं मुख ए ।ना०। काला कुरूपी होय ॥१२॥

रुधीर भरयो हय गय तरीए ।ना०। रण सायर गरजंत ॥
तीहां विरोदल बूडयाए ।ना०। खडग एम करंत ॥१३॥

खडग खडके सुंयि ग्रम ग्रमह ए ।ना०॥ कम कमि कायर कोड ।
पडघाथि गीरीवर प्रसिए ।ना०। अकबर वानूं वाथि कोड ॥१४॥

खडग सहूखि संजोगथी ए ।ना०। ऊठि अग्नी फूलींग ॥
सग्राम सेन रुधीरि सींचू ए ।ना०। प्रताप बीज वावू चंग ॥१५॥

खडगमांहि प्रतिबिंबऊ ए ।ना०। हूं सोहू रण भोमि ॥
जय लक्ष्मीवर वाजणेण ।ना०। नील वहिन बीटयो जिम ॥१६॥

गिरी करी कुंभस्थल ए ।ना०। मैंयगा सडंग कारिख ॥
मंगलकाजि ए लडयनि ए ।ना०। मोती वडें हयुं स्नान ॥१७॥

हूं ए हवो प्रतापियो ए ।ना०। लडयए हवो विसाल ॥
किम हणं एहि करी ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥१८॥

राजा का चिन्तन

कोप्यों युह बहु सिहलो ए ।ना०। पण नव्ह हणि सीआल ॥
तिम हूं कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडोए अबला बाल ॥१९॥

कोप्यो सूर संग्राम माहिए ।ना०। न होय ना हालानो काल ॥
तिम हु कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२०॥

प्रचंड वायु तृण नव्ह ऊखेडे ।ना०। वेतस पाडिक बाल ॥
तिमहु कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२१॥

दलणासूं हाथी कामिनहीए ।ना०। वे पाडि गिरीवर माल ॥
तिम हू कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२२॥

नागनकारयो वीर सूं वडिए ।ना०। स्वान सूं युद्ध होयि बाल ॥
तीमहू कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२३॥

फूफूतो फणपती जेम ए ।ना०।। अवयँ नही अल अयाल ।।
तिम हू कोप्यो किम हुणं ए ।ना०। कूबडो ए अवला बाल ।।२४।।

विद्या विनोदी वादीआए ।ना०। जबसुं न जंपि विसाल ।।
तिम हू कोप्यो किम हुणं ए ।ना०।। कूबडो ए अबला बाल ।।२५।।

अगी आक पेर नम्य कोपें ए ।।ना०। चंद्र तेज से रसाल ।।
तिमहू कोप्यो किम हुणं ए ।ता०। कूबडो ए अबला बाल ।।२६।।

अंद्रवज गीरीवर मोडे ए ।ना०। नम्य ऊकरडा पराल ।
तिमहू कोप्यो किम हुणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ।।२७।।

एम वीचारी चीत्त सुं ए ।।ना०।। बजन कीधु पडी मार ।।
पेखी चरित्र पाछु वल्यो ए ।।ना०। आम्यो उपरडे तेणीवार ।।२८।।
मोहि आवास लेख्यो प्रतिभीमि ए ।ना०। स्वर्गतणु आकार ।।
हवें साते नरक सम लेखीए ।ना०। तूं भारिदस अवधार ।।२९।।

देख्यां सू तो चींतवू ए ।ना०। नारी चरित्र अनेक ।।
रक्ताराणीयि जे रच्या ए ।ना०। सुणो श्रेणिक सुविवेक ।।३०।।

रक्ता राणी का कथानक

कोस्यल देस छे रुवडो ए ।ना०। साकेता पोरी जाण ।।
देवरति राजा तिहा रूवडो ए ।ना०। तस रक्ता राणी वखाण ।।३१।।

रजे रमन्ते रस भरी ए ।ना०। रूपयोवन फल जेम ।।
राणी रूपि राय मोहीयो ए ।ना०। अवर न जाणि जेय ।।३२।।

अनेक राजा उलगें आवि ए ।ना०। क्षत्रीय केरी कोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३३।।

सामंत मंत्री मती भलाए ।ना०। सभा आव्या कर जोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।

महेता मोटा महूतरा ए ।ना०। बेसे दफतर छोड ।
राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३५।।

हाथी घोडा रथ घणा ए ।।ना०।। पाला बहु करे कोड ।।
रारा रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३६।।

ठाम ठाम ना लेख घणा ए ।ना०। भेटणां आवि कोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३७।।
सीमाडी वेरी राजीया ए ।ना०। जाय वयर छुर मोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३८।।

परनारि परधान बांछयो ए ।ना०। मोहोल ते प्रावोय ॥
दूर थको राय दीठयो ए ।ना०। मधुरीय सु वचीत वाय ॥३९॥

राय वचन अवधारीइ ए ।ना०। दीनवे वहुतिक परीवार ॥
मोहोल देई संभालीवि ए ।ना०। देस प्रजा सुविचार ॥४०॥

दूर अथ्या देख्या जिम आपे ए ।ना०। चोरटा धसे घु अंधकार ॥
तिम स्वामी मोहोल वीना ए ।ना०। लोक पीडयि अपार ॥४१॥

मंदिर मोहटे म्हाली थाए । दीप विना दु:खकार ॥
तिम स्वामी मोहोल वीना ए ।ना०। लोक पीडयि अपार ॥४२॥

मंदिर सवलीयो भरयं ए । पुत्र विना दु:ख भार ॥
तिम स्वामी मोहोल विना ए ।ना०। लोक पीडायि अपार ॥४३॥

पुत्र पीडायि कुटंब घर्सं ए ।ना०। धन विण दु:ख विचार ॥
तिम स्वामी मोहोल विना ए ।ना०। लोक पीडायि अपार ॥४४

बहु सणगारी गोरडीए । ना० । विण नयणांजन सार ॥
तिम स्वामी मोहोल विना ए । ना० । लोक पीडाय अपार ॥४५।

देस सीमाडा राजीया ए । ना० । आंवि पाडए पुर गांम ॥
प्रजा उपरी दया करिए । ना० । मोहोल दीयो अभिराम ॥४६॥

तव राणीसूं विचारीयूं ए । ना० । राणी किहि सुणो राय ॥
तह्य दीठा विण क्षण एक ए । ना० । नव्य रहिवाय जीवाय ॥४७॥

तव राय प्रधान प्रति किहिए । ना० । संभालो तह्यें राज ॥
लोकनी रक्षा तह्यें करो ए । ना० । प्रह्मारि नहीं राज काज ॥४८॥

मंत्री किहि राज दूष घट ए । ना० । जनपोषी सवे संसार ॥
किम तेहनि दूष भाखयो ए । ना० । रावल हृदय विचार ॥४९॥

राय किहि राजयच नहीं ए । ना० । नारी सूं कि सुक काज ॥
किहि मंत्री दुख एण बणिए । ना० । तो राज मूंको राय ॥५०॥

तव नारी मोह्यो राजीयो ए । ना० । राय तजी सांवि नारि ॥
रतन मोती सांचि लीधाए । ना० । चाल्यो अटवी मझार ॥५१॥

रकांसू रंगि रवें ए । ना० । पंथि वनेरे वेस ।
यमुना नदी कांठि कपवन ए । ना० । तिहां उतरयो नरेस ॥५२॥

सीतलिक कर छांहीडी ए । ना० । रजा चोंपि वीरमोहोल ॥
बांस रायां तिहां वीसम्यो ए । ना० । तिहा भावीसे वेस ॥५३॥

बाडीयेंरेंहेटज हाकतो ए । ना० । पंगु अपंग अपार ॥
तेहनूं बांम कांमली थयुं ए । ना० । रत्ता वेची गमार ॥५४॥

तीहां अे पांगलो जोईयो ए । ना० । बोली नोलबले बार ॥
तु मुझ सु अगीकरिइ । ना० । तो हूं होऊ तुझ नार ॥५५॥

तब ब्रद्दी आवी राय कहुँ ए । ना० । बात करि वरी वेद ॥
राज विना किम कीजीयिए । ना० । बरस गांठना भेद ॥५६॥

राय कहि ते विध कहोए । ना० । कीजि अमणावार ॥
महोछवि तह्यानि वधावीइ ए । ना० । कोटि घालीयि फूल हार ॥५७॥

तव नवर लोकनो हो तरयुए । ना० । लोक अमें अपार ॥
रत्तायिहार रच्यो वलीए । ना० । पास सरचो विचार ॥५८॥

वली एकव्रत मांनीयू ए । ना० । तंतू व्रत एम जाण ॥
तांत आंणी तह्य बांध सूं ए । ना० । नदी कांठे दीऊ पग झांल ॥५९॥

राय रीझ्यो सामग्री मेजीए । ना० । अंगूठा कंठसूं तदी कंठ ॥
हसतीयि रायद्रुढ बाधीयो ए । ना० । पायहण्यो तेणे उलंठ ॥६०॥

पोतें तीलक करी वधावीयो ए । ना० । कंठे घाल्यु पास हार ॥
कंठे घाली ते ताणीयो ए । ना० । पास गलि बिहठो तै बार ॥६१॥

तव राय नदी माहि नाखायो ए । ना० । गई रत्ता पांगला पास ॥
चालि बीहिलो हवि जाईयिए । ना० । मम चूकसनीज आस ॥६२॥

तव ते शीयि आप्यो टोपलो ए । ना० । पांगलो शीर पेर लेय ॥
गाम गाम भमती फरि ए । ना० । सती सती एह कहिए ॥६३॥

लोक मानि अम्यानीया ए । ना० । पग पीलें शीर कुंकुलाय ॥
भली भली भोली भणिए । ना० । केता कहि माव जाय ॥६४॥

मायाविणी बुत्त भोगविए । ना० । पांगला सू दीन राति ॥
लोकय माडि करुन दीयिए । ना० । ए रही अहींयि बात ॥६५॥

तांत त्रोडी तेह माछले ए । ना० । राय तरी पाम्यो पार ॥
मंगलपुर राज पामीयो ए । ना० । राजपालि वीर्ण नार ॥६६॥

रत्ताआवी तेणि पोरें ए । ना० । लोक पाम्यो आणंद ॥
राजभुवनें तेडी वलीए । ना० । बोली तै करी दंभ ॥६७॥

राय बोलि ते उलखीयिए ।ना०। सही म सती यिम जाण ॥
भेव कही वीरक्त हूवो ए । ना० । संसार दुःख मनें आणे ॥६८॥

करीय पीतपू वीरवती तणू ए । ना० । राजग्रहे मनमित्र साहु ॥
कारित्री तस सुत दत्त नाम ए । ना० । मनी भूमि पुहपुरी माहि ॥६९॥

वीरवती कथानक

आनंद साहु तिहां वसिए । ना० । जिनवती तस नारि ॥
तस पुत्री सु वेवाहवीए । ना० । दत्तनामा कुमार ॥७०॥

वीरवती नाम तेह तणू ए । ना० । सुखि रहि परीवार ॥
एक समि साहा घरि गयो ए । ना० । घन पण गयो अपार ॥७१॥

दत्तकुमर दुःखी हुयो ए । ना० । पीहरि मूकी नार ॥
धन कार्ये ते चालयो ए । ना० । रत्नद्वीप तेरणी वार ॥७२॥

वीरवती मन्या करे ए । ना० । पाप कोई विकराल ॥
अंगारक सूं सुख भोगवि ए । ना० । ए वनी वसि घणो काल ॥७३॥

व्यसनी चोरी करंतणो ए । ना० । धरयो ते कोटवाल ॥
सूली दीधु ते पापीयो ए । ना० । पाप फल्यो तदा काल ॥७४॥

वीरवती नो जार सही ए । ना० वीरवती मोहि जाय ॥
तेह मल्वाविरण तेहनो ए । ना० । जीवन जाय वरवाण ॥७५॥

तेणि काह्यान्धु वीरवती प्रति ए । ना० । तुझ विरण प्राण न जाय ॥
वीरवती मलवा तणो ए । ना० । चींतवें तव ऊपाय ॥७६॥

तव उद्यम करी आवीयो ए । ना० । वीरवती भरतार ॥
सजन सहु आनंदीयू ए । ना० । हुउ श्री प्रोहोरणा चार ॥७७॥

निशि तेहु सूंता सेजडीए । ना० । सूतो नाहु लहेय ॥
वीरवती चाली जार मरणीए । ना० । हाथें खडग धरेय ॥७८॥

सहुलनच चोर कौतकी ए । ना० । एणी वेला ए नार ॥
कवरण ठाम जासिये जोऊं ए । ना० । पूठि चाल्यो तेरणी वार ॥७९॥

मढ्यांत चोर्सेसक सह्यो ए । ना० । सांभे चो फेरणु साकंत ॥
वलीक वांमली वडाईपडीए । ना० । वदनाईमि पण लक्ष ॥८०॥

वेगें मसारण माहि वेईए । ना० । जारवें नव्य पोहोचाय ॥
उवेर उवेर मदा धरीए । ना० । जार जातंची काय ॥८१॥

जार कहि मूकेन करीए । ना० । तेह मुखें अधर देवंत ॥
जीव गयो तेह चोर नु ए । ना० । जीकाया मुक तेह वंत ॥८२॥

पगथी मडांप सीषक्यां ए । ना० । पडी भोमे ते वार ॥
होट चोरनें मुखें रह्यो ए । ना० । नारी आवी घर बार ॥८३॥

नाह कह्युं ने सूती धणी ए । ना० । करी उठी पोकार ॥
ईणे होठ मफ खंड कीयो ए ।ना०। हुवो कोलाहल अपार ॥८४॥

परभातें राय जाणीयूं ए ।ना०। चीरवती भरतार ॥
चीरवई कही काढ्यो मारवाए ।ना०। नव्य कीयो न्याय विचार ॥८५॥

तव चोरें राय वीनव्यो ए । ना० । देखाड्यो मुंखनी छेव ॥
नारी चरित्र को नव्य लहिए ।ना०। कह्यो हुवो जे भेद ॥८६॥

तब रावें सेवक मोकल्या ए । ना० । चोर तणुं मुख जोय ॥
उष्ट काढी रायनें देखव्यो ए ।ना०। आचंभ पाम्या सहु कोय ॥८७॥

नारीनें दंड कीधो घणो ए ।ना०। साहूनें दीधूं मान ॥
गोपवती चरित्र कीतवूं ए ।ना०। नारीहत सुणो सुजान ॥८८॥

गोपवती कथानक

वर ध्यान देश छि रुवडो ए ।ना०। पलासग्राम पुर नाम ॥
सिंह बल अनीति वसे ए ।ना०। तस नारी अभीराम ॥८९॥

गोपवती नाम तेह तणुं ए ।ना०। रूपसोभाग अपार ॥
सिंहबल अनी तिहां गयो ए ।ना०। सेवा काजि विचार ॥९०॥

पदमपुर त्यांहा थी वेगल्यूं ए ।ना०। नृसिंह सेन तिहां राय ॥
वल्लभा राणी तेह तणी ए ।ना०। पुत्री तेहनें गुण ठाय ॥९१॥

सुभद्रा छिनाम तेह तणुं ए ।ना०। सोहि भली छी अपार ॥
सिंह सेवानि आवीयो ए ।ना०। सहस भट्ट भूंजार ॥९२॥

नृसिंह सेननें भेटीयो ए ।ना०। रायदीयुं बहू पान ॥
गाम ठाम दीधां भला ए ।ना०। कुंमरी दीधी निधान ॥९३॥

ते साथें सुख भोगवि ए ।ना०। वीसरयो ते नीज नार ॥
दीवस घणे तेणी जाणीयूं ए ।ना०। नाह तणो विचार ॥९४॥

तब ते कोप चढी घणुं ए ।ना०। आवी तीहां ते जोय ॥
भेद पाल्या सहु नाहना ए ।ना०। गोपवती क्रोधी होय ॥९५॥

घर उपरि चढी कहीए ।ना०। कतारी ऊरडी मांहि ॥
सोव कसीर छेदी लेईए ।ना०। विष आवी निज ठाह ॥९६॥

सिहुंबल तब चालीयोए ।ना०। नारी नूं वीर कव्य दीठ ॥
कमाड दीधा देसी करीए ।ना०। मनि आर्तध पईठ ॥९७॥

आलमूंजमेर आवसि ए ।ना०। इम कही नाहाठो ठाम ॥
चकित थयो मनि चीतवे ए ।ना०। आव्यो ते सिव धाम ॥९८॥

नारी कपटि वीनय करे ए ।ना०। स्नान भोजन प्रकाश ॥
अमता कोल करें घरीए ।ना०। राय आर्तज विचार ॥९९॥

तब ते भोगवती वदिए ।ना०। धन न आवि काय ॥
इम कही सिरसांसि ठवीए ।ना०। हवें थयो आवनि साथ ॥१००॥

पोकर करतो तब ना लघु ए ।ना०। हुसबो काढी तरवार ॥
सोर करंती रोवती ए ।ना०। कोसि हुम्बो भरतार ॥१०१॥

नारी नूं मांचूं भावयो हतो ए ।ना०। ते माटि मारयो बाल ॥
इम कही हर हर कही ए ।ना०। पीहर गई वली दुःख साला ॥१०२॥

वस्तु

एम चींतत एम चींतत । गई बहु रात ।
नारी रमी घरवी प्रथमसूं । सूती सुख पंजर पइठीय ।
मन कारण सुख दुःख तणुं । पछम एह भावंत मीठीय ।
पछे सौमल तव लमी । वसूं चेतनूं सूं अपार ।
इम रजनी भणी नागमी । नारिचरित्र अपार ॥१॥

भास–सोल सुपन नामी तनी

प्रभात वर्णन

मधुप गुंजित कुमुदनी सूं रातो । चांदलो जाणो नींदि पर्यो जातो ॥
रजनी नारी अति चतुर सुजाणी । चंद्रमु कीजाणि कलंकी जाणी ॥१॥

चंद्र झांखो नमतो हवो पाए । अंबर अति बलयो न मनाए ॥
जाती नारी कीहो कोसिर साथ । चंद्र रह्यो इम सही नीज ठाय ॥२॥

जाली राति रोती चकचई दीणी । कुमुदनी कमलणी थणी प्रसीनी ॥
पारके दुःखे सजन दुःख पावि । दुष्टनें [illegible] ॥३॥

वायु वाजि सुगंधी भीहो । कमल परागनें वासें भीनो ॥
नारी थणी नेत्र सुगंध झोला । पेड पेड पंखी डाल लखूणा ॥४॥

पूरब दिश कांई कांई होई पीली । रवि आवि बाट पीठी करें भोली ॥
तारा खीण थया थया आछे । उत्तम हीन राय पेर भलाछे ॥५॥

थिर थिर दीवा कांई नम्र बोहि । खीर्णन गुण जिम जन नम्र मोहि ॥
थिर थिर काम कतूहल बोता । ऊं आमरथा दीवा सील बोलंता ॥६॥

सूर आयवे तहां बल थयां सोम्या । रवि न करे ववनें थयु क्षोभ्या ॥
वाजे विविध वाजित्र रसाल । तेणि बाज्यो बली परभात काल ॥७॥

प्रबल बीरुद-सुभि बोलि बंदीयण । गीत गंभीर गुण गावये गायण ॥
बार बांध्यां वाला हाथीया बोलि । मद लोभी भमरा भला बोलि ॥८॥

पायगे पिरथिर हय रहया हींसि । बार सकल आगल पडया दीसे ॥
सूर ऊग्यो जाणे कुंकुम रोल । पूरब दिशि माटडीरंग बोल ॥९॥

अथवा उदयगीरी रातूं वन । पाकू दाडिम फल जाणे विचित्र ॥
सिरिवरें वानरा लेवा धाय । अरुण हाकंतो दुःखीयो थाय ॥१०॥

देवांगना पील्यो पूज्यो गिरिठो । उदयगिरि रवि राय बईठो ॥
रातां किरण करी सिरसूं प्रकार । सींदूर सेसता छेत राया पों तार ॥११॥

रांडी सिरसिया सम लेखें । लोक फोकि कुंकु करयो देखि ॥
रांडा एम मंडन ए करती । कुहुन कुहु किम नही व्यभिचरती ॥१२॥

सूर ऊगि पणि दुर्जन अंधा । प्रण मनगुण बोल वातणा धंधा ॥
दान पूजा धर्म सुजनें कराय । इम ऊग्यो रवी जाणीयो राय ॥१३॥

प्रातःकालीन क्रियायें

उठीअ जिन गुण चिंतन कीधूं । नीयो गीयि दंतधावन कर दीधूं ॥
मंगल स्नान आदि आचार । मुकुट आदि कीधो सणगार ॥१४॥

सवे सणगार सूं आवीय नारि । अमृता देवी कमल मुखपोख वारी ॥
कमलबाय भोगि पडी विचीत्र । कूमतु असंभम नारी चरित्र ॥१५॥

मने बीलखो पण भेद न दाखूं । दीक्षा तणुं मन केहेन न राखूं ॥
मंगल तिलक मानवि वधाव्यो । राज मंडील सभा माहिं आव्यो ॥१६॥

यशोधर का राजसभा में बैठना

रयण सिंघासणे बेठो तेणी वार । राय राणा मंत्री कीध जुहार ॥
जैन उपाध्यायनि दीधू मान । बेठी आसनें तब कीधूं आख्यान ॥१७॥

तत्त्व पदार्थ की जिनवाणी । जीवनी जीव सहीत सुखकारणी ॥
दीक्षा लेवानों मोदू उपावे । कुंवरनि लेवानी निज ठाय ॥१८॥

चन्द्रमती का आगमन

तीणि अवसरें चन्द्रमती माय । मावती देवी हूं लागो पाय ॥
दक्षण बांगि सिंघासणि बैठी । आसीस दीधि सुत देखी संतुठी ॥१९॥

जीवतु नंदन सुत चीर काल । मंगल नित नित होउ विसाल ॥
जयो जयो सुत पराक्रमें पुरो । सुत रक्षा करो जगतो सुरो ॥२०॥

चन्द्र सम सोम्य तुम भय करो चंद । मंगल नित नित करो आनंद ॥
बुध त्रिभुवणपती करो तह्म रक्षा । सुरगुरुसुक दीयो सुभ सिक्षा ॥२१॥
राहु शनैश्वर पीडा निवारो । केतु कल्याण सदा विस्तारो ॥
हरीहर ब्रह्मादीक सहू देव । दीयो आयुष्य घणां तुह्म देव ॥२२॥

खडग ताहारो अरी मण मदहारी । जयो जयो राज प्रजा सुखकारी ॥
राज ताहारु जयो सिंधु मर्याद । तूं चिरजीवो सुत आसीर्वाद ॥२३॥

दोहा

दीक्षा लेवा उपायने, वितथ वचन विस्तार ॥
माय आगल में बोलयूं । माय वचन अवधार ॥१॥

यशोधर द्वारा रात्रि स्वप्न का वर्णन

तह्मे जे आयु घणूं कह्य, किहां थी आयु विसाल ॥
रातें सपन में पेखयूं, राक्षस एक विकराल ॥२॥

हाथ त्रिशूल ग्रीहीयणों, बोल्यो करकस वाण ॥
कुटंब सहीत तुम क्षय करूं, वचन कहूं सुण जाण ॥३॥

दीक्षा लीधियो जीम तसी, तुमकूं आ जीवंत ॥
तेह भणी दीक्षा लेयसूं, जिम सुत आयु महंत ॥४॥

चन्द्रमती द्वारा देवी पूजन

चंद्रमती तव बोलयूं, देवी कोपी सुण ॥
विघन कुलदेवे ए घटता, सपन देखाडि विचित्र ॥५॥

चंडी चामुंडा कही, तुं ह जननी जगी जोय ॥
कालि कात्यायनी कही, कुल देवी अह्म सोय ॥६॥

ब्राह्मे हो तेह वासो नहीं, समकीत धरयूं आज ।।
करो जिन धर्म सदा वरो, केम वालि राज काज ।।७।।

देवी पूजा कीजिये, होइ विघन विनाश ।।
आई अंबा ए कही, तूठी पूरि आस ।।८।।

छाग महीख आदि जीवडा, बल दीजि सही राय ।।
आयु वाधि राज विस्तरये, विघन सेवि घटी जाय ।।९।।

साधुश्रीपरमेष्ठिनः सकरुणा बहुजीवरक्षाकरा ।
आत्तीयद् व्रतगुप्तिसत्समितिका वर्द्धक्रियाः सात्विकाः ।।

लोचास्नानविचेलको स्थितिमुखो पूजद्विजंकाशना ।
श्रीदेवेन्द्रसुविवेकस्तुतपदः कुर्वंतु वो मंगलं ।।१।।

इति श्री यशोधर महाराज चरिते रासचूडामणी नाम
काव्यप्रतिछदो भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते
कामकेलिस्त्रीदुश्चरिता दर्शन शोर्यान्वित
सज्जूर्णनप्रभातवर्णनो नाम पंचमोऽधिकारः ।।५।।

षष्ठ अधिकार

भास हींडोलडानी

यशोधर द्वारा देवी के सामने बली का विरोध करना

वचन सुनी हु बोलीयो; मात सुणो मुझ बात ।
उत्तम कुलना ऊपना हीदोलडारे । केम करीयि जीव घात ।।१।।

उत्तम मध्यम कुले कह्या, जीव हिंसा ना भेद ।
उत्तम जोई हिंसा करे ।ही०। उत्तम गुण होए छेद ।।२।।

जीव हिंसा वीघन टालि । ए मुझ वज्र समान
पर ना प्राण विघन करे ।ही०। विघन विशेष होयें मान ।।३।।

दीन दुखी जे बापडा । अन्न वस्त्रादिक रहित ।।
परभव जीव वध्या तणां ।ही०। फल वाण्यो इह चीत ।।४।।

आंधलां बिहिरां पांगलां । मूगा महिला जेह ।
जिनवाणी मांहि इम कह्या ।ही०। जीव हिंसा फल एह ।।५।।

कोढी कदपा रोगीया । इष्ट वियोगीया जेह ।
जिनवाणी मांहि इम कह्या ।ही०। जीव हिंसा फल एह ।।६।।

अभिमध्य वाधि रोम केम टधि । अथवा कठ्ठान सोम काज ।
काहा उत्तम जाणता ।ही०। अमेध्य कहो किम काज ।।७।।
विमन वाचामें कारखें । न करूं हींसा कर्म ।
वचन सुणी माय बोली सूं ।ही०। पुत्र मोह्यो जिनधर्म ।।८।।
नि: कर्म मार्गं बल गयो । न लहि वेदना भेद ।
कामें कर्ने जीव हिस्यां ।ही०। नही होये धर्म सू खेद ।।९।।
जीव हिंसा धर्मह होय । इम कहि खोटा लोक ।।
दान पूजा तप व्रत कीया ।ही०। जीव दया विणु फोक ।।१०।।
मुझ सूं आग्रह घणो करचो । एक जीव हणवा जाण ।
खडग काढयो तब आपणो ।ही०। देवामें आपणा प्राण ।।११।।
राय मोटे मुझ कर थकी । लीधो तब ते कृपाण ।
बिलखी थई माय एम वदे ।ही०। सांभलि पुत्र सुजाण ।।१२।।

चन्द्रमती द्वारा आटे के कुकड़े का वध करने का प्रस्ताव

मात पिता वचनहृतणे । अंगकीधि हुई पाप ।
पीठ नु दीजि कूकडो ।हीं०। जिम टालि सोक संताप ।।१३।।
लाजि हुं मुनि रह्यो । सांभली दीन वचंन ।।
वीनय करी मन गह करयो ।ही०। नीगम्यु धर्म रतन ।।१४।।
पीठनु कूकडो करावयो । जीव वीचीत्र अपार ।।
देवीमठ हुं चालीयो ।ही०। माय सहीत तेणी वार ।।१५।।
डम डम डमरू डाकलां । खडग तणा झणकार ।।
रण काहलबली वाजतां ।ही०। पोहोता देवी मठ बार ।।१६।।
चव्वन मास मधु आलको । अष्टमी मंगलवार ।।
देवी नमी हुं बोलीयो ।ही०। बली लेई करो चमत्कार ।।१७।।
खडग काढी कुकडो हण्यो । सबद हुओ असार ।।
आखे मुझ नि तेडती ।ही०। देवर्ले दुर्लभ नार ।।१८।।
माय कहे ए आदाका । लीये होय कल्याण ।।
जे जे मारें मिथ्या कह्यो ।ही०। तिनि करयो मि प्रमाण ।।१९।।
जेहेवी होय भवितव्यता । बुध्य तेहेवी होय ।।
कर्म अधीन मुझी जीवडो ।ही०। पापकरंतो न जोय ।।२०।।
कुंमर ते राज विलसतो । भोग्यु सर्व संसार ।।

रानी द्वारा यशोधर से प्रार्थना

तप लेवा जब चालीयो ।ही०। तब आवी ते नार ।।२१।।

तेह्यं तप लेवा चालता । मुझ नें सुं की लाज ।।
एकलडी गोरधार में ।ही०। मझ घरि रहें कुण काज ।।२२।।

एकलडा केम जाये सो । मुझनि नोसी संसार ।।
हु तह्य सरसी तप करूं ।ही०। सफल करूं अवतार ।।२३।।
मझ ऊपरि तह्य दया धरी । वचन न लोपु एक ।।
मऊ मंदिर भोजन करो ।ही०। पछि तब लेसुं वीवेक ।।२४।।

कुअर तणुं राज ओईनि । क्षमा तम कीजे राय ।।
पछि बेहु जण तप लेसुं सही । इम कही लागी पाय ।।२५।।

पतिव्रता जे कामिनी । कंत सुं तप लीधि सार ।।
तप करी फल हुं मागसुं ।ही०। भव भव तुम्ह भरथार ।।२६।।

आज तह्यं स्वामीनुहो तसी । छे हेलुं यमण यमो राय ।।
माय सहीत जमो मन रली ।ही०। प्रभाति आसुं वनठाय ।।२७।।
भोजन आग्न्या दीजियि । कीजीयि करुणा एह ।।
माया वचने हु मोहियो ।ही०। मान्युं वचन वलीतेह ।।२८।।
स्वपन न दीठ इम लेखवु । नीसी दीठं जे अन्याय ।।
नारी माया वन माहि ।ही०। पख्या कवण न भूलाय ।।२९।।

राय सहीत हूं चालीयो । भोजन काजे चंग ।।
जाणे जमेंहुं तेडीयो ।ही०। नारी मंदिर गयो रंग ।।३०।।

रानी द्वारा विविध पकवान बनाना

हरखीत हवी मायावनी । स्नान विलेपन दीध ।।
कनक थाल हेम बेसणूं ।ही०। प्रीसणूं हरष सुं कीध ।।३१।।

लाजा सेव सुंहालडा । फेणी सेंजोरी सार ।।
घेवर साकर फेणीका ।ही०। हेसमी लापसी अपार ।।३२।।

पूडा वडां मांडा वेडमी । घृत वली साक अनेक ।।
माय सही जमतु डरुं ।ही०। पण देवूं वीवध मीवेक ।।३३।।

आगमुं पाछमूं भाग करी । जाले करयो मुझ छेद ।।
अमुकी बुध्य करी रही ।ही०। बेहू मारवा विश भेद ।।३४।।

विकल सहित सुदर्शन कहि । आसी नाहाणी बाल ।।

विषयुक्त लाडू खिलाना

लाडू करो माजणो ।ही०। मोकलयो मुझ मात ।।२५।।

नाहू बंधीजे बापुरे । ते सही नारि कुनार ।।
पीहर केरी सुखडी ।ही०। श्री राजनि अवीचार ।।२६।।

प्रीछुं जो प्रागण्यां होय । हसी करी प्रीसो तेह ।।
आई जी सहुं आरोग सो ।ही०। थोडो एकलीयो एह ।।२७।।

एम कही मायने मुंकयो । बेहु जमयां मने रंग ।।
समय समय विष व्यापयूं ।ही०। दीसयूं अमि मुझ अंग ।।२८।।

राजा का सिंहासन पर जाकर बैठ २ चिल्लाना

चतू करी हूं उठीयो । बेठो सिंहासन जाय ।।
बंद बंद करी ओमि पड्यो ।ही०। तब नारी आवी धाइ ।।२९।।

राजा की मृत्यु होना

वस्तु

धाई आवी धाई आवी । तबहुते नार । रे रे कंत कसूं हवूं ।
इम कही पंथे वचन परी परी । केश कलाप विस्तारयो ।
धसमसीती पडी मुझ ऊपरि । आसूं बेव नीकमाल जि ।।
दंति कठ पीडेय । जीव गयी तेणि खणि । नारीयत सुखो सेय ।।१।।

ढाल वणजारानी

रानी द्वारा विलाप करना

वणजारे तब ते नारी आण । पापणी मिथ्या तणीं ।वि०।
वेई जसोधर नाम । रोमि ते मायामणी ।वि०। ।।१।।

जसोधर रे हुवि ए काल । जसोधर रे । सुर सणी हु राय ।।
उन्यो निवली माहम्नी । जसोधर रे । राय ए कमलणी जाण ।।
कुमलाणी ए सूं तुझ वम्यो । जसोधर रे ।।२।।

व्याप्यो हुवि अंधकार । हुं एकली किम रहूं ।ज०।
वापडी अबला बाल । विरहनी वेयणा किम सहूं ।।ज०।।३।।

तरं घर जणि विण वेस । हाथ कंकण विण किम रिहि ।।ज०।।
तिम सही अबला अजाण । स्वामी विना कहो किम सोहि ।।४।।

विनय विना यम शीष । विवेक विना जम वातडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । किम हूं सोगु बापडी ॥ज०॥५॥

तारा विण जिम चन्द्र । चंद्र बिना जिम रातडी ॥ज०॥
कंत बिना तिम नार । केम सोहूं हूं बातडी ॥ज०॥६॥

आंखडी विना यामि मुख । अंजन विण जिम आंखडी ॥ज०॥
कंत बिना तिम नार । केमहूं सोहूं बापडी ॥ज०॥७॥

दया विना जिम धर्म । श्रावक विण जिम आंखडी ॥ज०॥
कंत बिना तिम नार । केमहूं जीवु बापडी ॥ज०॥८॥

सरोवर कमल विहीन । कमल विण जेम पांखडी ॥ज०॥
कंत बिना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥ज०॥९॥

मुकुट विना जेम भूप । मणी विण वींटी कनक घडी ॥ज०॥
कंत बिना तिम नार । केमहू जीवूं बापड़ी ॥ज०॥१०॥

मोहुत बिना जीम प्रेम । प्रेम विना जिम भेटडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं बापडी ॥११॥

दान बिना जिम कीर्त्ति । कीर्त्ति बिना नर गोरडी ॥ज०॥
कंत बिना तिम नार । किमहू जीवू बापडी ॥ज०॥१२॥

परिमल विण जिम फूल । फूल फल विण वन जिसो ॥ज०॥
गुण विण हार विचार । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१३॥

पुत्र विना जिम वंश । हस बीना देह जसो ॥ज०॥
मद विण हाथी जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१३॥

वेद विना जिम ग्रन्थ । धन विन नवयौवनजसु ॥ज०॥
न्याय विना जिम राय । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१५॥

रामा विण जेम गेह । गेह सुपात्र बिना जसो ॥ज०॥
विद्वांस विणा सभा जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१६॥

कंठ बिना जेम गान । ध्यान क्षमा बिण मुनी जिसो ॥ज०॥
समकित विण आचार । नारी भव कंत बिण तसो ॥ज०॥१७॥

देवल विण जेम गाम । देव बीना देउल जसो ॥ज०॥
वाद कला विण शास्त्र । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१७॥

लवण बिना जिम पाक । घृत बिना भोजन जिसो ॥ज०॥
भाव बिना शुभ काम । नारी भव कंत बिण तसो ॥ज०॥१९॥

सील विना नर नार । कलि विना श्रीफल जसो ॥ज०॥
गुण विण उत्तम वंश । नारी जब कंत बिन जसो ॥ज०॥२०॥

एकलको नर नार । अकलानि नव्य नारसाइ ॥ज०॥
लीला भुवाल नरेन्द्र । बोल कहो एक वारणीयि ॥ज०॥२१॥

नाहानको जसोमती राय । तीस दीक्षामय दीक्षिति ॥ज०॥
क्षम तब करी बहु साथ । बालो दीक्षा लीधीयि ॥ज०॥२२॥

इन्द्र सभा तुम काम । कही त्यांहा तुं बोलावीयो ॥ज०॥
स्वर्गे महीए ह्वो राय । तेह भणी तुं गावीयो ॥ज०॥२३॥

हुवो तम्हनें स्वर्गवास । दीक्षा भाव तुम्हनि थयो ॥ज०॥
किम लेता तप भार । कमल कोमल तनु तहु तसो ॥ज०॥२४॥

तुं थयुं तुम्हनि नाह । रोग भणीतो आवीयो ॥ज०॥
पेट माहि हवुं दुःख । औसधुं मन न भावियो ॥२५॥

मम सरज्यो नहीं लाभ । तुं साधर्मी कम्यो नहीं ॥ज०॥
सामी भने वली स्वामी । एहे भी जोग मलि कही ॥ज०॥२६॥

भगतन जन्मि बैठी नाथ । ए मोटो रह्यो लोभक ॥ज०॥
वरत करी कहुं नाह । भव भव तुं वर वीतक ॥ज०॥२७॥

समकित धारी तुं देव । देवी पूजा कम करि ॥ज०॥
करुणावंत महंत । जिनवर धर्म तुं मनरमि ॥ज०॥२८॥

कपट करयुं देवी साथ । दीधो पीठनो कूकडो ॥ज०॥
कोल देवी कीधी ते माट । विषम वेखाडयो कूकडो ॥ज०॥२९॥

जिणजारा । रे पापणी दुष्ट तैं नार । रही गोति कंठह तसी ॥
लोक धायलि किहि रूप । मायावणी मिथ्यातणी ॥जि०॥३०॥

सासू मंगुठो वेष । मारी नें कांइ तह्यो सूं वयूं ॥जि०॥
रोग विना कोहो थाय । जीव तह्यारो कम गयो ॥जि०॥३१॥

परवपणा माटि जाण । कोलीयो कंठे कैसे रह्यो ॥जि०॥
थीक चीक थइ अवतार । जीव तह्यारो कर्मे वह्यो ॥जि०॥३२॥

कवण दीस हुवि तीव । देवीयो राय नहीं दुःख नी ॥जि०॥
बुधि विना किम होय । स्वस्ति पणुं वर सुख नी ॥जि०॥३३॥

तब हुवो [illegible] । मरण जसोधर पामवी ॥जि०॥

राजकुमार यशोमती द्वारा विलाप

साधि मोटा राणा राय । कुंवर जसोमति पामयो ॥वि०॥३४॥

हा हा तात तुं भाण । विरी तिमिर क्षय कारणो ॥वि०॥
हा हा तात तू चन्द्र । प्रजा संताप निवारणो ॥वि०॥३५॥

हा हा तात तू इन्द्र । लीला लक्षणि मंडीयो ॥वि०॥
हा हा तात नागेंद्र । भोग भरयो भलो पंडीयो ॥वि०॥३६॥

हा हा तात सुधीर । रण अगणें रीपू दडयो ॥वि०॥
हा हा तात तू वीर । सात्रु तणो भय खडीयो ॥वि०॥३७॥

हा हा तात कल्पवृक्ष । कामधेन चितामणी समो ॥वि०॥
हा हा तात तुझ दान । विलसो अनद दिन नीगम्यो ॥वि०॥३८॥

हा हा तात प्रचड । प्रताप पुंज तुं उत्तमो ॥वि०॥
हा हा पराक्रम पूर । सूर सुलि गगनें भम्यो ॥वि०॥३९॥

छत्र भंग हवो आज । राजभार कोण पेर धरयो ॥वि०॥४०॥

मांधाता नले राय । नघोष सगर आदि गया ॥वि० वि०॥
हरीहर बल चक्रवर्ति । काल आगल कोन थया ॥वि०॥४१॥

खल भलयो तबलोक । हा हा कार नयरे पडयो ॥वि०॥
आकंम्या सहु कोय । यचीतो रायनें जम नडयो ॥वि०॥४२॥

प्रबल वायु जम जाण । दुर्धर सायर जल भल्यो ॥वि०॥
तेम बाजारी लोक । लोटो तव क्षशोक भल्यो ॥वि०॥४३॥

नयरी लूटीय अपार । लोक बूंबा रव बहु करि ॥वि०॥
फाटि हाटनी श्रेण । बहुटो लूटाइ बहू पिरि ॥वि०॥४४॥

यशोमतीनी फरी आण । नगर लूटाशुं वार यूं ॥वि०॥
आव्या मोटा राणा राय । राय मरण अवधार यूं ॥वि०॥४५॥

रौद्र वाजि वाजिन्त्र । रण काहल बीहामणो ॥वि०॥
बूंबा रव हाहाकार । रीर पोकार करि घणो ॥वि०॥४६॥
संस्कार काजि राय । काढीयो तब मोटी परें ॥वि०॥

अन्तःपुर में विलाप

अंते उर ते वार । हा हा कार घणो विस्तरयो ॥वि०॥४७॥

एक रडि कहीं नाह । एक मूर्छा करी भोंयि पडि ॥वि० वि०॥
एके ते हैयु हणेय । एक भोंयि सूं शीर आफ्रुटि ॥वि०॥४८॥

एक ते फाडि चीर । नयण नीरें तनु सींचवि ॥वि० वि०॥
अरह दावानल व्याप । तनु बलते बालों बूझवि ॥वि०॥४९॥

एक त्रोडि मोती हार । एक ते कंकण मोडती ॥वि० वि०॥
एक भोंयि कूटती हाथ । एक ते आपण फोडती ॥वि०॥५०॥

एक ते चोली चूंथेय । एक ते वेणी छोडती ॥वि० वि०॥
एक सती थावा काज । हरी हरी कही हाथ जोडती ॥वि०॥५१॥

एक ते बलती जाय । ऊभी थई तनु नाखती ॥वि० वि०॥
एक बलबलती बाल । दैव दैव इम भाखती ॥वि०॥५२॥

विष खाती वली एक । एक कटारी चांपती ॥वि० वि०॥
पास घालती गलि एक । एक खडगि शीस कापती ॥वि०॥५३॥

केटली चाली समसान । चीहा मांहि झंपलावती ॥वि० वि०॥
जैन राजा तणीं बेय । केटली वैराग्य भावती ॥वि०॥५४॥

केटलीक दीक्षा लेय । प्रतिमा अग्यार केटली धरे ॥वि० वि०॥
पांचसि राणी जाण । एणी विधि मली दुःख करि ॥वि० वि०॥५५॥

जेहूनि बाल्या राय । मित्रवली सेवक घणां ॥वि० वि०॥
सांभली मरणनी बात । प्राण गया केता तणा ॥वि० ५६॥

केता कटारी करंत । केता मरंत विषखही ॥वि० वि०॥
केता पडया चीहा मांहि । माला साहामा चाल्या सही ॥वि०॥५७॥

केता खडगें सीस छेद । कमल पूजा केता करें ॥वि० वि०॥
केता साधर्मी राय । वैराग्य लेइ दीक्षा धरि ॥वि०॥५८॥

यसोधर हुवो संस्कार । स्नानादिक सहूए कर्क ॥वि० वि०॥
मोहो काणि मोटा राय । तीणि यसोमती आसनें धरयो ॥वि०॥५९॥

ब्राह्मणे दीधो आशीर्वाद । राय चीहा हुति करो ॥वि० वि०॥
ब्राह्मणनि दीधो दान हवें । यसोधरनि उद्धरो ॥वि०॥६०॥

तव यसोमती दीधि दांन । चीहा दीधी तव सुखकरणी ॥वि० वि०॥
पि काई नव्य तप । दूर थति नही वेगला थणी ॥वि० ६१॥

यशोमति द्वारा दान देना दूहा

ठाम ठाम थी ब्राह्मण मल्या, बहु पेर दान देवाय ।।
धन कांचन करण धृत घणा, मणि वस्त्रादि प्रपाय ।।१।।

गज अश्व रथ गो महीषी, आदि बहू दीधां दान ।।
वछ वाछरडी देवाडियां. बहु भोजन विधान ।।२।।

भूम्य सेय्या ग्रामज दीया, पाप घटादि विख्यात ।।
ब्राह्मण बहू परणावया, लहे नो जसोधर तात ।।३।।

तुला दान पिर पिर तणा, काल पुरुष यम भात ।।
कृष्णा जिन दासी दीधि, लहि जो जसोधर तात ।।४।।

तिल गुड हेम रूपा तणी, गाय दीधी बहू जात ।।
वृषभ महीष बहू लोह दान दीयूं, लिहिजो जसोधर तात ।।५।।

लासखां धोतीया करवता । जल कुंभहसी वात ।।
नित्य अन्न बहू गृह दीया । लह जो जसोधर मात ।।६।।

कुंभ कनक केरा करया । भरया सामग्री अपार ।।
राय जसोधर स्वर्ग थी । पामजो ए सुविचार ।।७।।

पणमे कांइ न पामयूं । मारीदत्त सुण राय ।।
दुरगती दुःखज पांमयूं । अचेतनि हिंसा पसाय ।।८।।

इम जाणी सुजनं सवे । त्यजों हिंसा सकल्प ।।
फल उत्तारण फल हनन । पूतलो तेह विकल्प ।।९।।

जीव वध्या ना पाप तणो । कोहो कोण हासि पार ।।
हणवो अचेतन कूकडो । तेणि वाध्यु ससार ।।१०।।

इम जाणी नीश्च्यु करी । पाल्यो श्रीजिनधर्म ।।
हिंसा पातिक पर हरो । जिम पामो सीव शर्म ।।११।।

सील समूं भूषण नही । समकित सम नहीं रत्न ।।
बंधु नहीं को धर्म समो । करो दयानूं यत्न ।।१२।।

मिथ्यात सम को रीपू नहीं । विष न मिथ्यात समान ।।
ते भणी मिथ्यात दूरि त्यजो । पालो दया निधान ।।१३।।

ब्रह्म गुणराजजी

हेमवंत पर्वत एवं वन का वर्णन

हेमवंत ए वखाण माय । नगरी पासि छि गिरिवर ए ॥
गुफा माहि ए सिंह रीछाल । भाटता भाठी वनचर ए ॥१॥

गजधरणाए । भीगी कडि समा । दंतु सवेसीरी मोकला ए ॥
गजतणाए कु भविदार । महीसू मुक्ताफल ओडता ए ॥२॥

फणधर ए करय फूत्कार । वाघ घणां बबवती रहा ए ॥
शूकर ए घूघू र साद । डाढ वांकी जम सम कह्या ए ॥३॥

हरिण ए गाहाठडां जाय । बाय कूर बहु घली घणाए ॥
वानरा ए फाल पसंत । बूतकार करय बीहामणाए ॥४॥

गूंजा ए पडी ठाम ठाम । दव जाणी हरीणी त्यजे ए ॥
सीआलीया ए फालू पोकार । मांस जाणी घण तें भजिए ॥५॥

भीलडीए गूंजा हार । फूल फल काजि वनि भमें ए ॥
भीलडाए कामठां हाथ । भमता जीवनें घणुं दमें ए ॥६॥

टाडडीए पीक्या जाण । वानरा चीस पाडि घणुं ए ॥
घणो ठीय ए उन्य करिय । तेवि जाणे ए तापणुं ए ॥७॥

घूघूयिए घूहडजाण । समली तीणाण तुप भमें ए ॥
माहोमाहि ए वंस घसाय । दवलागि एह संभवें ए ॥८॥

दवें बल्या ए फूटि वांस । तण बले वन घणुं व्यापीओ ए ॥
तेह वनें ए मोरडी गर्भ । अवतरयो पापें संतापयो ए ॥९॥

राजा का मोर के रूप में जन्म

जठरनीए आगिहुं दुख । नारकी सम्यगि कुंडे जल्यो ए ॥
मलमूत्र ए वरक्यो अपार । दुख तरसें घणुं कल्यो ए ॥१०॥

मोरडी ए जनम्यो जाण । ताम पंखमाहि राखीओ ए ॥
हुं फोणहयो पुच्छ मंड । इडूं फूटि तव तनु साखीओ ए ॥११॥

जीवडे ए पोसतो तन । तव भमतो आव्यो पारधी ए ॥
मनुष तव वाण वाय मोहारी तेणि बंधीए ॥१२॥

मोरडीए नाथी सांथ। हूं लीधो कांठि शहीए ॥
थाटिए भावतां मोरी। कोटवालें लीधी सहीए ॥१३॥

पारधीनें दीधी माल। ठालु ते घिर आवीयो ऐ ॥
नारीय ए देवे गाल। गलुतें गध्य मावीयो ए ॥१४॥

खासे ए मोटा पाहाण। हाणवासीर सीव थयो ए ॥
घालीयो ए चहूटा मांहि ॥ कोटवाल मेहूं वेचीयोए ॥१५॥

थोडीए मूलज माठा। हूं राय चहूटें वेचाईयोए ॥
संसार ए मंडपें एम। करम नटावे नचावीयो ए ॥१६॥

कोटवालें ए जसोमती राय। भेट काजे घरे लेई गयो ए ॥
जतननें ए काजे तेण, पांजरा माहि हूं ठव्यो ए ॥१७॥

कण भणा ए। चणीपीयू नीर। सनें सनें योवन हुवों ए ॥
सोभतो ए मभ्र कलाप्य। पचवरण तव अभीनवो ए ॥१८॥

एक वार ए जसोमती राय। मागलहूं भेट वरघो ए ॥
देखीयो ए मभ्र स्वरूप। मोह राय मनें वीस्तरघो ए ॥१९॥

आमणे ए हीडू खेलंत। मोती चोकनि मंजतु ए ॥
बोलतु ए मधुरी भास। राय तणुं मन रंजतो ए ॥२०॥

नारीनें ए नेउरि नाद। पाय पाय हीडू नाचतु ए ॥
ऊडीय ए वेसूं अवास। मेघ देखी घणुं रात्तु ए ॥२१॥

स्वान का जन्म लेना

चन्द्रमतीव ए जे मभ्र मात। मरी करी स्वान हुवो ए ॥
चंचल ए क्रूर अपार। अवतरघो जाणे जम जूवो ए ॥२२॥

यसोमती ए आवयो भेट। रावनें तव मोह ऊपनो ए ॥
थामतो ए बाघनी फाल। पारथ तारथी नीपनो ए ॥२३॥

सो वन ए सांकल कोड। पंचवरण फूल सोहयो ए ॥
दीसे ए अति विकराल। नयण बीहामणो ओपवो ए ॥२४॥

मोर का कुबड़े पर आक्रमण

एक दीन ए मोर हूं जाण। अमृतमती अवासि चढ्यो ए ॥
कूबडो ए राणी संघात। खेलंतो दृष्टे पड्यो ए ॥२५॥

हालवू ए वैर अपार । काकड़ तेई कुकड़ो हूवो ए ।।
थोंभलाए कीधा प्रहार । नारीयूं वीह्वल कीधो वणो ए ।।२६।।

कटी तणी ए मेखला छीड । नारीनि भांगी बंक घणी ए ।।
मोडीयो ए पग तेणी वार । खोजतो नाहू ठो मन घणो ए ।।२७।।

कोखीए के ए हुण्यो भमरलें दंड । कोणे कपूरनि दावडे ।।
कोणीए कें ए दीघा दंड । मारयो कोलि हेमदंड वहि ए ।।२८।।

यसोमती ए आक्यो स्वान । सांकल मोडी ते धावीयो ए ।।
हाहा ए करतो तेण । कंठे धरी कुब चावीयो ए ।।२९।।

जीवडो ए गयो तेणी वार । मोर मुओ राय जाणीयो ए ।।
कर धरीए चोकीयो उत्तंग । राय वली स्वान हणीयो ए ।।३०।।

यशोमती ए करि बहू सोक । हा हा मोर तूं कहो भावतु ए ।।
हींडतो ए आंगणे वेखंत । तुझ कलाप देखाडतो ए ।।३१।।

मोतीय ए रतनना चोक । फूल साथीयारो हों अमपकाए ।।
नाचतो ए तूं अपार । नेउर नाद सोहें सापका ए ।।३२।।

चढी करी ए ऊंचो अवास । मेहो मेहो कुण बोलसि ए ।।
जाणे ए जसोधर राय । आज हूवो एम वन वसे ए ।।३३।।

हे हे ए स्वान बलिष्ठ । इण्ड एक कोकोंमि मारचो ए ।।
धावतो ए बाघनी फाल । वन माहि बकारचो ए ।।३४।।

हरीणाए सूणि रहो रान । तुझ वेण हवे कुण सांभलए ।।
ससलाए तू उभाल माहि । तुझ वीण कोण विदारसि ए ।।३५।।

तेडीयए परोहीत तास । संस्कार कीधा करी ए ।।
ब्राह्मणनिए दीधलां दान । उभावनां बेहू बहू फिरिए ।।३६।।

दूहा

मनुष्य काई न पामयूं । पामवूं केवल दुःख ।।
सरजीयि ते पूरन पामहि । जे करि ते सही मूर्ख ।।१।।

सुवेग नामा काहो तहि । चोवि भाण मनमत्य ।।
बेहेली गहवें कुआहो । कनकाकुल बन्ध ।।२।।

मोर का सेहेली के गर्भ में उत्पन्न होना

जणायो मूलें पीडयो । सूल तणी तेन होय ॥
मोरनि भवे जे दुःख सहां । तेथी अधीकां कोय ॥३॥

मूंडो तनूं कांठि मरणूं । जीव तणो वली आहार ॥
पापें पाप ज बांध्यो । मारीतल अणवार ॥४॥

स्वान का सर्प होना

स्वान मरी सापज हवो । तेह वनि अती विकराल ॥
वन वसतो भूखो भमे । अनेक जीवनो काल ॥५॥

तब ते मझ नजरें पडयो । ग्रह्यो ने में पूछ ॥
खावा मांडयो अती बलो । हऊंउ तेह बल तुछ ॥६॥

थोडे थोडे खायतां । तडफड करि ते साप ॥
करि फूतकार चालि नही । नडयो मिथ्यात पाप ॥७॥

तरविरु जीव एक आवयो, तेणि हणयो हूं जाण ॥
पाप फलें वली अति घणुं । पाम्यो हूं दु.ख खाण ॥८॥

वैर ते दुखनीड रडी । वैर वधारि संसार ॥
वैर तें धर्म विनासणो । वैर दुर्गती दातार ॥९॥

गुण तरु वैर कोठारखो । वैर सुमति वन अग्नी ॥
दयावल्ली वैर हिम समो । तेह भणी वैरम लग्नी ॥१०॥

मन जाणी निश्चो करी । वैर मधरसो कोय ।
क्षमा रमा सु रंगे रमो । यम भव भमण न होय ॥११॥

भास अध्य चोवीसीनी

उज्जयिनी की शिप्रा नदी का वर्णन

उजेणी नयरी ने पासे ।
नदी ऊंडी नीर्मल जलें भासे ।
सीप्रा नाम छे तासे ॥१॥

बेहु तटिय पंच वरण पारवाण ।
ऊपर कोमल माँहि कठण सूं पाण ।
कुंभाण समा करकाँछ ॥२॥

सूर्य कांति सूरज में झलकि ।
दीसि कहीं एक जल्ली जलके ।
मृग धावंता रंके ॥३॥

चन्द्रकांति निसि चंद्रने तेजि ।
जल परं वाह झरण होइ सिहिजि ।
नदी वाधि सखी हेजि ॥४॥

कही एक राता किरण विस्तरए ।
जाणी सीमाल सधीर जही करए ।
जण घाटता फीरए ॥५॥

कहीं एक पीला किरण विस्तार ।
हरणी सब भय न करे संचार ।
मूली तापें गमार ॥६॥

नीलकिरण विस्तरए दीहि ।
चक्रवाक वियोग मुंयविहि ।
निसि समय खेलिलीहि ॥७॥

भीलते पंचुक सीलाथि अपार ।
चलतां बाण चलवे ते वार ।
वेघी कही भाथि गंमार ॥८॥

तरु फूल रेणु पवन घणुं उडए ।
नदीय नीर मांहि ते पडए ।
कनकह उपमा जडए ॥९॥

वनवाडी तेह कांठे सोहि ।
अनेक वृक्ष लता मन मोहि ।
कोए तरु निःफल नांहि ॥१०॥

नदी कांठि तरु फल्या अपार ।
जलिमिसि प्रतिबिंब विस्तार ।
कर वा प्रति उपकार ॥११॥

ग्रहु कांहि चपल खेलंता मछ ।
मोती दीपक काढे पुंछि ।
नदि तणि मोती समुच्छ ॥१२॥

मछ पुंछ कहीयि जल ऊछालि ।
मकर कपाट सूं जल अफाले ।
बीहींना वानर दीयि फाले ॥१३॥

तीहां थकी मरी सेहेलनो जीव ।
रोहीत मछी गरमें अतीव ।
दुःखें पाडूं रीव ॥१४॥

रौहीत मछ महा तनुं मोटो ।
बहु परी मछ गलंतो खोटो ॥
चपल परिण बर्णं छोटो ॥१५॥

जाडूं गलू मुख छि विकराल ।
अनेक मछ तणो ते काल ।
खेलूं जलि विसाल ॥१६॥

चन्द्रमती जीव हूतो जे साप ।
मरणो दुःख तणो हवो व्याप ।
तेह द्रहि हवो ते पाप ॥१७॥

मछली मरकर संसुमार होना

सींसुमार मछी ने पेटि ।
गरभ बेयसि दु.खीयो हवो नेटि ।
नही क्षण एक सुख भेटि ॥१८॥

ससूमार ते बेणीयि जणयो ।
वाधतां निज कुल सहू हणयो ।
कुपुत्र ते कुल क्षय भणयो ॥१९॥

मोटूं सरीर बदन अति गाढ ।
क्रूर दुष्ट बांकी तस डाढ ।
उदर जाणो गिरि खाड ॥२०॥

जल मांहि हूं दीठ फीरंतो ।
ससुमार मुख भरयो तरंतु ।
डाढ वचे चूरत ॥२१॥

राय तणी नूतकी तिहां आवी ।
रमभम करती सखी मन भावी ।
अनेक भूषणि सोहावी ॥२२॥

कुबड़ी कहीत्यि कोमल अंगी ।
पिहिरी चीर चोली नवरंगी ।
संगीत नाच अनंगी ॥२३॥

वासंती मेखला खलकावि ।
चूडी सहीत बांहोडी लहकावि ।
लहकि मधुर गावि ॥२४॥

नदीय देखामें मणुं संखूठी ।
चरणा सूं जलि वेगि पेठी ।
सीसूमारि ते दीठी ॥२५॥

वदन पसारी ग्रहीते बाल ।
हूं रोहीत ना हाठो ततकाल ।
मूक्यो आपे काल ॥२६॥

राय आगल तब कीधी राव ।
सेवक सर्व जणाव्यो भाव ।
वेगें धीवर तेडाव ॥२७॥

जाल सहीत माछी बहू मलयो ।
जाल नाखि जलचर खलबलयों ।
तबहूं कपाढि मलयो ॥२८॥

सीसुंमार मुख थी हूं वांच्यु ।
नदी कपाड लही तब राच्यों ।
चपल पणुं घणुं वांच्यो ॥२९॥

सिसुमार को पकड़ना

जाल माहि पड्यो ससूमार ।
खांची ताठें नाखु ते बार ।
टलवल करय अपार ॥३०॥

लाकडि़ लकडे मूंकलि मारयो ।
काप्यो लोहि घणुं विदारयो ।
मरण पाम्यो दुःख भारयो ॥३१॥

नगरी समीप खाली उथली ।
[illegible]
मोटी तन तीजली ॥३२॥

मर कर बकरो होना

किहां जसोधर राजानी राणी ।
किहां ए छाली दुःखनी खाणी ।
पाप तणां फल जाणी ॥३३॥

पीठ कूकडा हण्यानां फल भासि ।
मारीदत्त बहू जीव तूं विणासि ।
न लहूं केतुभ तूं यासि ॥३४॥

दिवस केता हूं रह्यो द्रह माहिं ।
जलचरने बहू ग्रसंतो ताहिं ।
तव नीपनूं ते चाहि ॥३५॥

अनेक माछी आल लेई आव्या ।
द्रह देखी नें मनें सोहाव्या ।
जाल नाखी घणूं फाव्या ॥३६॥

लेह जाल माहिं हूं पडयो ।
पीठ कूकडा नो पाप ज नडयो ।
तडेनाखु माछडयो ॥३७॥

मारवा माछी आव्या अनेक ।
तव बुध मली आव्यु एक ।
म मारो बोल्यो बिवेक ॥३८॥

मि आव्यूं मुझनें मूकेसि ।
नरछोएं को दयालूं दीसि ।
पण राकस इम भासि ॥३९॥

रोहीत मछ सह्यं ए आणो ।
पितर सराधनें जोग्य बखाणो ।
एणि भेटूं दुविराणो ॥४०॥

रोहित मच्छ का पकडा जाना

तव सहूए मली ऊचली लीधो ।
माछी बाडा माहिं भाखी दीधो ।
मछ हाथें तनूं दीध्यो ॥४१॥

डम दीसि तनु मछह फेरा ।
माछलां पांच ठामे ठाम बैरया ।
हाड तणा ऊकेरा ।।४२।।

मोटा मछ बांसानां मोभ ।
मछ पांसलीनां दीधां थोभ ।
सींगीय वेरि कहूं सोभ ।।४३।।

आल तणां जिहां मांकण वेलू ।
करंड मोटा मछ भरया मेलू ।
नरक पटल बीबीसेलू ।।४४।।

हाड पाथरि बली थोभ्य कठीण ।
थलेना छोहयो पणं खीण ।
करमें कीधु दीण ।।४५।।

नमर पलंक हंसतू ले सूतो ।
फूलडीय पण तनु नवि सूतो ।
करमें हूं एम बपूतो ।।४६।।

मूजको मोहि करे मुफ बात ।
स्वान नाग वायस वदि वात ।
इम अच्यूं मैं परभात ।।४७।।

गयगमी नार तणां सती पाय ।
वाजिय वाहनें नायण वाय ।
इम वापतो हूं राय ।।४८।।

हुयडा प्रभात एणी पिरि आव्यो ।
पाप तणो परताप प्रमाण्यो ।
मारीवत मन आण्यो ।।४९।।

दूहा

माछी सहु भली मुफनें, राज मुगत मेई जाव ।।
रत्य आपचहूं मेहलीयो । राज दीधी कराय ।।१।।

वेद पाठक स्मृत जाणीनि । वाचको देसी बार ।।
मस्तक नाखि ते बोलता । राजा मुं अपकार ।।२।।

रोहित मछए आणीयि । उज्जल छि शीर मध्य ॥
हव्य कव्य कार्जे कह्यो । उत्तम मछह मध्य ॥३॥

पचवरण तनु दीसिवि । प्रगट चपल भ्रूभंग ॥
साहामी प्रारिए चढि । एह पवित्र छि अंग ॥४॥

एहवि रूपि नरहरी । वाल्या केद वार ॥
अंग सहीत इम जाणयो । माहात्म माहिछि वीचार ॥५॥

श्राद्ध कीजि जो पीतरनूं । कीजि ब्राह्मण भोज्य ॥
अक्षय तृप्ती पीतरनि सही । स्वर्गे जसोधर राज्य ॥६॥

तवहूं रोहित पाठव्यो । अमृतानि घिर जाए ॥
माय प्रति जसोमती कहि । रोहित मछ वखाण ॥७॥

पितर काज ए कल्पीयि । सराध कीजिए णे आज ॥
चन्द्रमती साथि तृपती होय । जेम जसोधर राज ॥८॥

रोहित मच्छ को तल तल कर मारना

तव तेणीयि पापणी । पूंछ छेद्यूं ततकाल ॥
हीग म्यरी मीठूं मली । मूख भरीयूं वीकराल ॥९॥

ताता तेल माहि तल्यो । फेर फेर पाडू रीव ॥
नारकी पिर दुःख देखीया । कष्टि गयो मुझ जीव ॥१०॥

कुंअरे ते मछ कल्पीयो । खाधो लेइ मुझ नांम ॥
पिड पाडी किहि चन्द्रमती । जसोधर स्वर्गे ठाम ॥११॥

माहारी तृप्तानि कारणि । हूं खंड खड कीयो जाण ॥
आपनि आपज कलपयो । जो जो लोक अयाण ॥१२॥

अह्यो तो काई न पायूं । मारीदत्त सुण वात ॥
फल पाम्या पापज तणां । कीधु ते जीव घात ॥१३॥

इमजाणी म कलपसो । मूंआ ने सहू कोय ॥
गतो अतर जीवनि सही । संबल सुकृत ज होय ॥१४॥

ढाल हेलनी

हू रोहीत इम जाण । विविध वेदना पामी मूंओ हेल।
चन्द्रमती नुं जीव । संसुमार मरीचे छाली हूवो ।हेल।१।

संसुमार का बकरी होना

तेहनि कुखि हुं धंग । गरभ उपयो दुःखि भरयो ।हेल।
गरभ तणां तणां दुःख । जनम्यो मल मूत्रि भरयु ।हेल।२।

वृद्धि पाम्यु हुं धंग । अनुक्रम यौवन पामयो ।हेल।
मद करी तनु दुर्गन्ध । थूतकार करता दिन वामयो ।हेल।३।

मायनो जीव वली माय । छाली सुं संगम कियो ।हेल।
दीठु बडेरे छाग । संगि करी पेट वींधीयो ।हेल।४।

बकरी मर कर फिर बकरी होना

मरी करी तेणी वार । तेह ज छाली गभि उपनो ।हेल।
आपो पानि वीर्य । ते माहि आपि संपनु ।हेल।।५।।
जूउ जूउ कर्म वीचार । पोति पीता पुत्र स्थि हुंयो ।हेल।
धिक धिक गति तीर्यंच । मातप्रति भाव कीउ जूयो ।हेल।।६।।

वीलखा वाहीयो जीव । सुभ असुभ जाणी नहीं ।हेल।
हृदय तणा नेह । काम अगन लागि सही ।हेल।।७।।

चतुरन जाणि वीचार । तु पसुनि वीवेक हुयि किम ।हेल।
पशु पामी मिथ्याती । एनहणे भव नीस्फल गम ।हेल।।८।।

देवी काजि दीच अचेतन । तेह पापि बांधीयो ।हेल।
पांमी पशू अवतार । ते पाप बीज यिम बांधीयूं ।हेल।।९।।

विखय जलि सींचाव । आतमा मडप वीस्तरि ।हेल।
पाप बेल यिम वाण । दुःख फल वेई नीस्तरें ।हेल।।१०।।

गरभ मोटु हुवो जाम । ताम राजा पारथ चकयो ।हेल।
जीवह हणवा काज । परजीव तेह हाथि गम्य चढयो ।हेल।।११।।

भमतो भमतो काल । नगरी समीपि आव्यु फरी करी ।हेल।
राय तणी तेणी वार । दृष्ट पडी छाली जरी ।हेल।।१२।।

तेह उपरी मूक्यूं बाण । जीव गयो तेहनो सही ।हेल।
गर्भ ज पाम्यो दुःख । संसारिको कहि ज नहीं ।हेल।।१३।।

राय छाली दीठ । करजली वींधी मोह पडी ।हेल।
ते देखी तेणी वार । रायनि मन दया चडी ।हेल।।१४।

पेट चीरी करी जाण । हूं काढी पाल वाधीयो ।हेल।
अयोनी संभव माट । मळ जतन बीजेल कीयो ।हेल।।१५।।

ज्याव्यो मनेरी छालि । दिन दिन हूं मोटो थयो हेल।
लर्लाक मोटा कान । लांबू मुख मद पामयो ।हेल।।१६।।

विवि बोल नु जाण । वेसा वरतु बन माहि फरुं ।हेल।
हवि जाणू छूं भेद । तेणि भवि साधू न उच्चरुं ।हेल।।१७।।

बेद्धे जीवनि साथ । पुण्य पाप सही जाणयो ।हेल।
अवर कुटंबनि साथ । डाहा मोह न आणजो ।हेल।।१८।।

जसोधर सरखो राय । बोकडो थई बन माहि भम्यो ।हेल।
कीयो मिथ्यात पाप । तेणे भव माहि सही एम दम्यो ।हेल।।१९।।

एक बार जसोमती राज । राज काज चिता वाधीयो ।हेल।
देवी काजि जाण । महीष तणो बल मानीयो ।हेल।।२०।।

सहजें सीज्यो काज । मूढपणो नीवचो वरी ।हेल।
महीष आण्या अपार । देवी आगलें हींसा करी ।हेल।।२१।।

मूढ मिथ्याती अध । एमहणे जाणो सरखां सही ।हेल।
हींडि आप मुराद । धर्मनु मर्म न सुनही ।हेल।।२२।।

ज्ञान नयन विहीण । ऊमि वर्गि संकष्ट माहि पडि ।हेल।
भव माहि भमे अपार । सूधो मारग नही लपडे ।हेल।।२३।।

हणवा महीष ते जेह । राज भुवन माहि आणया ।हेल।
सूपकारें तेणी वार । वेलीम ते न वखाणया ।हेल।।२४।।

कूतरा काग अपार । ए पाडा विटलीया ।हेल।
केम पकवां अधिकार । ए ऊछीष्ट न सोधालीया ।हेल।।२५।।

ब्राह्मण तेड्या तेणी वार । वेद स्मृती वारु वाचीया ।हेल।
पूछयो महीष विचार । बोकड़ा राय कर्ने आवीया ।हेल।२६।।

अजोनी संभव जे छाग । ते सू चे जो वहुजें सही ।हेल।
तो ए पवित्र जोग । वाढ में एम स्मृती कही ।हेल।।२७।।

राय बोल्यो तेणी वार । अजोनी संभव सुणो कही ।हेल।
केमें थयो तेह । तेणे ए सुणयो इम सही ।हेल।।२८।।

बेगि मऊ मासोय । सु बावना महीक सवे ।हेल।
कुबड़ा महीक विचार । मारिवत कर्य एम करस्यें ।हेल।।२६।।

ते महीक पचाव । आवि तेह सहु गली ।हेल।
राय भुवन मझार । हूं तेहें जई बोल्यो बली ।हेल।।३०।।

वीतवूं मन मझार । के कोई नहीं पापणी ।हेल।
गंध उठी छि अपार । दासी किहिए पाका तणी ।हेल।।३१।।

बीजी कहि तेणी बार । मावडी बाती राणी लोभणी ।हेल।
ऊपनो तेहथी कोढ । ते गंधाय सणी सही ।हेल।।३२।।

त्रीजी कहि सणो बेहेन । तहीं ए भेद जाणो नहीं ।हेल।
राय जसोधर मारी । कूबड़ा साथि संगम करयो ।हेल।।३३।।

शील महात्म्य

नाह हण्यो विष देव । मेम पापि पिकडो ।हेल।
तीणि पापें हवो कोढ । सरीर सवे गली गयूं ।हेल।।३४।।

सील न पाल्यो काण । तेह पाप फलें रोग भयो ।हेल।
सही सुख कारण सील । सील संसार सूं तारण ।हेल।।३५।।

सहु गुण सागर सील । सील सील सयल दुखवारण ।हेल।
सरीरह मंडण सील । सील ते दुरगति खंडण ।हेल।।३६।।

निरमल जस होय सील । सील संसार विहंडण ।हेल।
सील त्रीलोकें पूज्य । विकट संकट सील थी टले ।हेल।।३७।।

सीलें देव करि साह्य । सांति पुरा बन् रीय मलि ।हेल।
इम जाणी नर नार । सील पालो मती ऊजलो ।हेल।।३८।।

जिम लहो संसार पार । सील सुख पाम्यो नीरमलो ।हेल।
सील न पालि जेह । नरनारी ते दुरगत गयो ।हेल।।३९।।

अपकीरत पवो जेह । लोक मांहि बवारीयो मयो ।हेल।
उत्तम पुरुष जेकय । तीरिए सम्यागस पूजीयो ।हेल।।४०।।

अनेक आपदा कष्ट । जाणो जेकवा मंत्रित कीलो ।हेल।
सत्य पुरुषी कुमार । बार सोल जता कोडी कीयो ।हेल।।४१।।

त्रिभुवन पूज्य उत्तम । सील पालयो सीलि सोपीयो ।हेल।
सीला सील तेह सवकाल । जिणि नबी सील न खण्डीयो ।हेल।।४२।।

नीफल हुवो तस जन्म । मनुष भव वली रालीयो ।हेल।
पाम्यो चींतामणी रत्न । तेह सही प्रालि गम्यो ।हेल।।४३।।

पामी मनुष्य जन्म । जिणे रुडो सील न प्रागम्यो ।हेल।
इम जाणी नरनार । सील तणो लोप म करो ।हेल।
जिम पाम्यु बहु सुख । संसार सागर हेलांतरो ।हेल।।४४।।

दूहा

शील नष्ट होने से अमृतमती की दशा

तव तेमि सहू सांभल्यू । कोढणी तेण विचार ।
जो मंता द्रष्टि पडी, मारीवस्त मनवार ।।१।।

प्रलतो भरी पगि चालती । रातां पगलां पडंत ।
हवि पगलां पठ भरयां । कूबडा चित्त गडत ।।२।।

बीछीयडा झमकावती । जाती कूबडा सूं जेण ।
ते आंगली मली गली पडी । पग्ग थकी पापेण ।।३।।

घूंटी पामी राती हती । मांस गली गयो जाण ।
हाड उघाडा दीसीयि । कांकसा चरण न ठाण ।।४।।

पग पींडी सडी पडी । नसीयि कीडा कोड ।
कूबडो चरतु जे हनि । तसास ऊपर करी कोड ।।५।।

जांघ भरी सासनी हती । घूंटण हुतो सुसोभ ।
हाड ऊघाडो दीसियि । टाली तणो टल्यो सोभ ।।६।।

नीतंब रयो परीवेसतो । कूबडो बेडतो जन ।
मांस सोटिम गली गई । हाडखाकरखो तन ।।७।।

उदरें नाभी ग्रह हतु । ते पसयि गराय ।
स्तन कूबडो कर झालतु । ते तो गली गली जाय ।।८।।

कंठ सत सखो हुतो । हवि जातां अन्न न जाय ।
अधर कूबडो जे चूंबतो । गली गया नहीं ठाय ।।९।।

नाक तेहनो गली गयो । रह्यो डंडी बहु कष्ट ।
आंख ते कुडा समी हती । कूबडा ओती अयद्रष्ट ।।१०।।

कूबडा पग बेणी औहती । ते सीरखूं वककर्ण ।
कुंडल जिहां शिहिकावली । गली गया तेह कर्ण ।।११।।

करें कूबडो आलंबती । ते कर रह्या झाव ।
दांत उभाड़ा सदा रिहि । काजल बाल्यें रंक ॥१२॥

रूप एह जो हुतो किहां गयो । कोहोयो शरीर अपार ।
ठांम ठांम कीडा कणवणि । पासि कूबडो पगार ॥१३॥

तेह्नु पण दीठुते हवू । हुं हरखो मन मांहि ।
हवि ए बोहूं सरखूं थयूं । देवतणी गत्य चाहि ॥१४॥

महिष मांस में रुचि नहीं । अम बोली ते दुष्ट ।
कुंअर असोमती मन रली । वलतु बोल्यो द्रुष्ट ॥१५॥

अयोनी संभव ए बोकडो । पितरानि कह्यो योग्य ।
जसोधर नि चन्द्रमती । एणि स्वर्गि पामि भोग ॥१६॥

तब तेणि आंच छेदावई । मच्छ तणी प्रतीच ।
भूष तरस दु:खि पीडियो । पिर पिर पाडू रीव ॥१७॥

ते सेकी सराव करय । मुझ निकलण्यु चंम ।
लाधु मातु तुतें मली । सेई मुझ नाव उत्तंग ॥१८॥

मितु कांई लहुं नहीं । सहयूं तीर्यंच गति दु:ख ।
मिथ्यातहि साफल सही । सहूं तृषा बहु भूष ॥१९॥

भास मद्रबाहुनी

चन्द्रमती नु जीव स्वानमें साप ।
मरी हवोसिसो मार वे बाप ।
मरीनि आली वे हुवीसणी ए ॥१॥

असोमती कुंअर हणी वे जाण ।
कलिंग देस हुवो महीस बखाणो ।
वरदत्त साहा घेर भारवहिए ॥२॥

वरदत्त व्यापारी का महिष

तीरथां सीस मग्रसा सिं राखो ।
मोटी मनोडी सीसि बद मातो ।
जातो हाथी सम मलपतोए ॥३॥

वणू मोटुं मुख जोडूं विसाल ।
महिषमतू नकतो माटो काम ।
बाजवी नाव ते बड करयो ए ॥४॥

भार भरी वरदल एक वार ।
महिख लाव्यो उजेणी मझार ।
जमण काजे नदी कंठ रह्यो ए ॥५॥

तेह सहीख तीहां जल झीलि ।
सीस उछालि जल घण लीलि ।
जली कराड खणि जल करीए ॥६॥

तीणि अवसर राय तणा घोडा ।
आव्या तिहां चपल नहीं थोडा ।
रोडा देता जली नदी तटिए ॥७॥

घोडे एवं महिष की लडाई

बडो घोडो तीणि महीषि दीठु ।
पूरब जनमनो वैर पईठो ।
बैठो जात वैर वखोए ॥८॥

तेह साहामो महीस वली च्याल्यो ।
जठर मध्य तस सींगज घाल्यो ।
माहाल्यो जम वेर के गलें ए ॥९॥

ततखण रायनि हवू जाण ।
सूपकार बोल्याव्या जाण ।
प्राण मरों महीख मरयो ए ॥१०॥

महिख आण्यो ते राज दुआर ।
लोह तणा आण्या खीलाची भार ।
पगे दृढ करी बांधीयो ए ॥११॥

दोर घाल्यो ते नाक मझार ।
ज्यू मुख बांध्यु करय पोकार ।
मारवत पाप केम छूटसो ए ॥१२॥

हेठल पोढी अगन प्रजाली ।
तीणि अवसरि एक बोल्यो हाली ।
बोली लूंण हींग अगडू आणो ए ॥१३॥

महिष को मूल कर जाना

तारें बल करी मेहुली कहावे ।
हेठल थम्भी वली बलाय ।
वलि महीष मणु री अकारिए ॥१४॥

कूरसे ते वली नीर पान करंतो ।
मधीक मधी तेरिण लोक परंतो ।
नरक वेदना जिम दुःख सहिए ॥१५॥

अमेर पापी थकिव कापि ।
सारिर जल छांटि दुःख व्यापि ।
पापें फल एह्वा हाजम्यांए ॥१६॥

पीठनु कुक्कु हणयो जोव ।
देवी पूज्यानां फलए होय ।
कोयम करणु मिथ्यात मसोए ॥१७॥

जन्म पर्णे रहयो हुं जोव ।
वेवी परकार रच्य वणुं रोय ॥१८॥
कोय न सार माहारी करिए ॥१८॥

मारल नीरे मीर न पाय ।
अमृतणी सराव करी कहू थाय ।
मणा रास्ता रावनो होमरचार ए ॥१९॥

माहयण मणा मली सराव सरावे ।
राय कहिइ अंजली भराविव ।
न कावि माम माहारो वेहिए ॥२०॥

वाँक अंगूठें पीव मवाविं ।
पिवि पिवि बावि वेवावि ।
मिहिली अस्वारिक वम वणुं ए ॥२१॥

वासनूं कायी कहि एम कहो ।
राय रावमी माय परवधी लहों ।
जिम करीइ तिम कुमार करिइ ॥२२॥

सूनागीव नोई मुद्रिका दीधि ।
आधाड संकल्प करी द्विज लीधि ॥
जसोधर पामो मिम किहे ए ॥२३॥

मि जोयू माहारा तनू साहामू ।
पण आभरण एक नही पाम्यू ॥
दाम्यु दीठु गलि दोरडू ए ॥२४॥

मांस तणा तेणे पिंड पडाव्याए ।
सजन सांई मांस खवराव्या ॥
वली वाडवनि ते दीयू ए ॥२५॥

छेदवी छेदवी दीध लुलाय ।
एणी पिर मीन पलादिक खाय ।
नाम ग्रह्या हलेई करीए ॥२६॥

मन्य खायि मन्य जो नव्य पामे ।
वाडवेलोक चाल्या एम धामे ।
कामें चाह्या ते आपणिए ॥२७॥

पुत्र जमे माता रही भूखि ।
मात जमें पुत्र थाय दुःखी ।
मूआ थकां कोहो किम लहे ए ॥२८॥

पूरव भव आपणा संतान ।
श्राद्ध करी देतां हवि दान ।
किणजिमें आपण भूखा सहीए ॥२९॥

एणि दृष्टांति पूरव जे मरया ।
पाप पुण्य लेई अवतरया ।
निज करणी सहू भोगवि ए ॥३०॥

मारीदत्त म्हा कांई अणलव ।
मिथ्यात पापि पिर पिर लव ।
दव मुधा अगनें बलं ए ॥३१॥

कूमर तणी हू दृष्टि पडयो ।
जाणे मम मझ कालज नडयो ।
कह्यो वचन सूपकारनिं ए ॥३२॥

महिष भजि तीहा वेकीजतो ।
वैमसिए कालागे वाम्यो ।
वाणी तुरणी भ्रकमि केई वली ए ॥३३॥

मचक माहि तेसि पिर पिर वाल्यो ।
अचेतान कूकडें वासे वैर वाल्यो ।
वाल्यो महिष सूं भम धरिए ॥३४॥

नगरी बाहिर फलीहां बाकाल ।
घर बणा दीसि तेह सूकाल ।
बाल चरम भस्ती भरया ए ॥३५॥

यस्ति तणा कि बोडा लाख ।
मोटा मस्ती तणी बार लाख ।
पाखल ऊपरि चरम बीटी ए ॥३६॥

बाध्या ते तणा पशुआ नेस ।
रुधीर मांस करि रह्या बस बस ।
कसमसे मन बीठे मणं ए ॥३७॥

पशूआ करंक दीसि ठाय ठाय ।
आव्यानि ते वेसणा वेवाय ।
वाय कमोडीना पराटलाए ॥३८॥

धूंक बाह्यारकी बमर बबराज ।
मांस तणा इन कि बहु आय ।
लाख कूलरा करं धूणकीए ॥३९॥

सूम काज समली घणा फरए ।
मांसमें काई में कल कल करए ।
पीशित करी अति बीहामणं ए ॥४०॥

खग महीख बेहू सबें तूमा ।
तीहां कूकडी पेटिइं मूल्हो था ।
ऊदर मथन वाचा मणं ए ॥४१॥

कूकडी तब हवी मारखंडी ।
मांमारें तब वाचा मंडी ।
ईसो तब नीसरी मखपां ए ॥४२॥

चांडालणी कवरे बंधायो ।
सक्कमूढ हूं फेंहूं कायो ।
काया लह्यी केटले दीनें ए ॥४३॥

माय पीसा वहूणा नीपंना ।
पीडा फूटा पासें संपना ।
हलू हलू तिहां थी चाव्यां ए ॥४४॥

माय वहूणां बह्यां ऊजरयां ।
करमें अपारव दुःखी कर्यां ।
भूख तरस पीडया सही ए ॥४५॥

चांडालणी ऊपरें कवरव् नाख्युं ।
तव बेहुए कांई कांई बोल भाख्यु ।
पर्में कवरो तेणी खोलयो ए ॥४६॥

मह्यो बेहू कूकडा तेणीयि देखां ।
रुडां गरज भावंता लेखां ।
कर धरी घिर लेई गई ए ॥४७॥

कण खवरावी तेणीयि पाल्यां ।
खोलनी पेरे संसाल्या ।
हींडीयि कुमीनें खायता ए ॥४८॥

जेहू एवडो जसोधर राणो ।
चांडालणीयि पर्गे हुप्यो जाणो ।
जाणो मारीदत्त मार्ने पाप फल ए ॥४९॥

सिर पेर छत्र चमर वीजतो ।
ते कवरि चरणें लजंतो ।
जंतुनि एम पाप पीडंतु ए ॥५०॥

राय सामंतहूं हाथ कालंतु ।
रतन पावडीयि मही माह्यालंतो ।
चांडालनीयि ते पगि हुप्यो ए ॥५१॥

रतनभूम्य वलहरं घिर रमतो ।
लीला करतां चित्त नीगमतो ।
भमतो हींडें हूं ढेढ मांगणे ए ॥५२॥

सरस अन्न पंचामृत जमतो ।
भमर पलंग ऊपेरता सूकतो ।
समतो कंकाल फिर वेदना ए ।।५३।।

फूल मुकुट शिर फूल हार ।
सुगंध वस्त्र तनु लाडो अपार ।
उकरडैते हूं पडी रहूए ।।५४।।

अमूलक भीणां वस्त्र पहिरंतो ।
अनेक भूषण हूं देह धरंतो ।
ते हु सीतादिक दुःख सहूए ।।५५।।

मिथ्यात जीव हिंसा करवावें ।
जीवडा कोण कुण दुःख न पावे ।
पावे न कुण कोण वेदना ए ।।५६।।

इम जाणी मिथ्यामत टालो ।
जीव दया मन वच कम पालो ।
जिम दु.ख आल पडो नही ए ।।५७।।

वस्तु

वेहू कूर्कट वेहू कूर्कट पाप्या तिहां आण ।
गाती सीखा सिर सोमती । पीछ पुंछ पांख पीढी होइस ।।

पाछली रात्रि तह चडीय । कूकू कूकू बोलंत सोहीय ।।
कमी कीटक घणं खावंता । पाप्यां तीहां विचार ।
पापे पापज बाधयो मारिवत अणपार ।।१।।

श्री तीर्थंकरसन्मुखांबुजभवाश्रीताक्षमावासिनी ।।
या माता त्रिलिखाहूनी सुधरसा वेणाक्षमालाधरा ।।

पुस्तकाभूषित हस्तकात्रिनयना हारांबरा भूषिता ।
श्रीदेवेन्द्रसुविकमस्तुतपदा कुर्यात् सदा मंगलं ।।

इति श्री यशोधर महाराज चरिते । रासकुसुमसो काव्य प्रतिछंदे ।
भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्र विरचिते यशोधर चन्द्रमती ।
रचित कृत्रिम कुकडं द त्वोद्भूतपाप प्राप्त कुष्ट घोड भव भ्रमण ।
वर्णोनोनाम कष्टोर्ध्वधिकार: ।।

सप्तम अधिकार

भास पटुलडीनी – राग रामगिरी

कोतवाल का राजा के पास आना

तिणि अवसरि तिहां आवयो । पटुलडीए ।
रायतणो कोटवाल । सलूंणडीए ।

अह्मे दीठां तीहा तिणि कूकडा । पट० ।
हाथे लीधां ततकाल । सलूंणडीए ।।१।।

लेई करी ते चालयो । पट० । रायनि भेटनि काज ।स०।
राजा आगल आहे धरयां ।प०। हरषो जसोमती राज ।स०।।२।।

अह्म दीठी मोह उपनो ।प०। वली वली जुई राय ।स०।
करें करी अह्मो पपू आलया ।प०। पूरव स्नेह पसाय ।स०।।३।।

ये अह्मे पाली पोढो करघो ।प०। ते अह्मे करे संभाल ।स०।
अवलीगत जूउ करम तणी ।प०। ते करि अह्म प्रतिपाल ।स०।।४।।

राय रली आयन बोलीयो ।प०। भलो कूकडा सुघ ।स०।
राखो राय कही अती रुडी परे ।प०। भलां करमेतो युघ ।स०।।५।।

कोटवाल नें अह्मे सोपया ।प०। पोढां करे वा काज ।स०।
कोटवाल घिर लेइ गयो ।प०। राख्यां पांजरा ठाम ।स०।।६।।

कण चणू अह्मे अति घणूं ।प०। पीयू रुडू नीर ।ह०।
दिन दिन डीले वाधयां ।प०। यौवन पाम्यां धीर ।स०।।७।।

टूंकडी कोटवालूं सो मनूं ।प०। वरण कठण कंटाल ।स०।
माहोमांहि वढंतडा ।प०। रीस भरयां जेम काल ।स०।।८।।

मधुरि स्वरे वली बासतां ।प०। राती सीखा ललकंत ।स०।
कोटवाल घिरे सहू जणा ।प०। घणूं अह्म जतन करंत ।स०।।९।।

यशोमती का वनक्रीडा के लिये प्रस्थान

एकवार जसोमती ।प०। चालु वन संभार ।स०।
अंतेउर सूं मनरली ।प०। क्रीडा करवा उदार ।स०।।१०।।

पढो वजाव्यो ते वेला ।प०। ऊमह्यो नाद नीसाण ।स०।
भागो अरी हृदय घट ।प०। ढलया वेरी प्राण ।स०।।११।।

भरी नारी भवन चल्यां ।प०। ए मोटूं आचंभ ।स०।
भवर हूआ भवर भागा ।भ०। अवरथी वसयां अंम ।स०।।१२।।

हय गय पार न पामीयि ।प०। रथ धजा लेहे कंत ।स०।
पाला बहु तव धसमसें ।प०। चतुर्विध सैन्य महंत ।स०।।१३।।

वसंत क्रीडा रमवा चल्यो ।प० असोमती कुमार ।स०।
अतः पुर आदर घणो । ।प०। साथें कुसमावली नार ।स०।।१४।।

राव आलंनो जाणीयो ।प०। वनि चाल्यो कोटवाल ।स०।
अद्यो वेह छूं तो पांजरे ।प०। ते लीधं सु विसाल ।स०।।१५।।

वनमांहि छि रायतणो ।प०। लात घणो आवास ।स०।
डेरो आगलि विस्तरयो ।प०। तिहां अद्यो पांजर निवास ।स०।।१६।।

वन के फल फूल

कोटवाल तब जोअंतो ।प०। अनेक तरु छि रसाल ।स०।
आंबा रायण आंबली ।प०। राय आमली विसाल ।स०।।१७।।

कोठ करणीके कदमदी ।प०। लीबूं साकिर लीबू ।स०।
लीब बकायन बीजोरी ।प०। फणस फोफल नें जंबु ।स०।।१८।।

रातिं फर्ने फलया बड ।प०। गंभीर जाय अपार ।स०।
पीपल पीपर वारोली ।प०। सालमी बडीसार ।स०।।१९।।

नालकेर खजूरडी ।प०। ताल तमालहें ताल ।स०।
अखोड बदाम नागकेसरा ।प० सुकित तरु गुणमाल ।स०।।२०।।

मोगरो मालती मंदार ।प०। मरुआ मोटा मचकुंद ।स०।
पीला फर्ले फूल्या चांपला ।प०। पाडल बलसरी वृंद ।स०।।२१।।

जाई जूई जोई कूजडी ।प०। रूपमंजरी गुणमाल ।स०।
केसु जासू मसाणवणी ।प०। केसर टगर गुलाल ।।स० ।।२२।।

बकुल केवडो केलकी ।प०। स्थल कमल असोक ।स० ।
पंथीयका पंथ देखता ।प०। आगे अवरह कारि सोक ।स०।।२३।।

ठाम ठाम चर वेलना ।प०। मंडप फूल्य बहील ।।स०।।
वेचे अवरहणी हरसती ।प०। रह्यो अंचारि काम भील ।स०।।२४।।

मालती रेवती सही ।प०। सेवन्त्री संधुकार ।।स०।।
मंधुकरातां फूलीयां ।प०। करी भमरा रण झणकार ।।२५।।
केलवणी कोडामणी ।प०। द्राख मंडप विसाल ।।स०।।
एलचि फूलि लची रही ।प०। भरी झूबका गुलमाल ।स०।।२६।।
नागवेलना मंडप ।प०। छाया शीतल होय ।।स०।।
ईक्षु दंड वाडी घणी ।प०। फरहं बहू पेर जोय ।स०।।२७।।
रायतणी अतेउरी ।प०। कावी कचुकी साथ ।।स०।।
पालखी मोती झूबका ।प० वस्त्र दीधा बहू भात ।स०।।२८।।
राय आव्यो वन खेलवा ।प०। दलवाद सजूत्त ।।स०।।
हाथीयडा बहू आगल ।प०। रथवालिहा सजूत ।स०।।२९।।
सणगारया घणा जलमती ।प०। गज अवगाह छि कोटि ।।स०।।
सामत छत्री परवरयो ।प०। आगल पाला कोड ।स०।।३०।।
हय बेसी राय चालीयो ।प०। उजल छत्र सोहता ।।स०।।
गज अवगाह चमर ढालि ।प०। जाणे इंद्र मोहंत ।स०।।३१।।

राजा की सुन्दरता

के रूपि काम कहूं ।प०। के नल कहूं कुवेर ।।स०।।
नाग कूंमर कं चांदलु ।प०। धीर गुणि कहू मेर ।स०।।३२।।
सायर समए गंभीर ।प०। प्रिय प्रीति नरनार ।।स०।।
ठाम ठाम नृप जोअंती ।प०। करे ए जय जय कार ।स०।।३३।।

राजा की सेवा

एक मोती के वधावती ।प०। एक ते भामणां लेय ।।स०।
एक ते फूलि पूजती ।प०। एक ते आसीस देय ।।३४।।
एक ते लाजा वीखरती ।प०। सेती नृप गुण एक ।।स०।।
जीवनंद एक बोलती ।प०। एक ते विनय विवेक ।स० ।३५।।
नगरी पोलथी नीकल्यो ।प०। दीठु तव उद्यान ।।स०।।
पखी साव सोहामणी ।प०। वन जाणे दीधि मान ।स०।।३६।।
श्रीसोवाम तरुवर लहिकि ।प०। फूलह रज उडाय ।।स०।।
श्रमलीन जाणी राय ने ।प०। ए वीजणे वालि वाय ।स०।।३७।।
फूल पडि तिहां परी परी ।प०। उद्यान जाणे वधावती ।।स०।।
झलहर कलश सोना तणो ।प०। सिखर ध्वजा लिहिकावि ।स०।।३८।।

घूमरी घणुं घाणी घमघमे ।प०। घासी राज पुरुष नावि ।।स०।।
मेडी कोटी मतवारणां ।प०। राय देखी सुख पावि ।।स०।।३६।।
सयम थकी राय उतरयु ।प०। लीला अवाजि जावि ।।स०।।
सर्व सैन विदा हुवी ।प०। कुसुमावली मने भावि ।।स०।।४०।।
राणी सुरंगे रमि ।प०। टुलवीए दासि आसन भेद ।।स०।।
सुरत रमता श्रम हुवो ।प०। पवनें नीगमयो खेद० ।।स०।।४१।।

दूहा

कोतवाल द्वारा मुनि दर्शन

कोटवालि उद्यम करी । जोयू बहु आराम ।।
असोक वृक्ष हेठल रह्यो । मुनीश्वर दीठु ताम ।।१।।
नासा अग्रे थापयूं । अर्द्धोन्मीलीत नेत्र ।।
शुद्ध चीद्रूप ने ध्यायतो । अभ्यंतर पवित्र ।।२।।
अंतरदृष्टे नीहालतो । अनोपम आत्म स्वरूप ।।
शत्रु मित्र समलेखतो । समता रसनु कूप ।।३।।
बावीस परीसह जीपतो । मूकतो चोवीस संग ।।
रत्नत्रय करी मंडीयो । मुगती रमा सुरंग ।।४।।
दश दिशि अंबर पेहेरणे । मलमलीन तेह गात्र ।।
ध्यान करी संकरथी । आणे दया नो पात्र ।।५।।

कोतवाल की चिन्ता

कोटवाल मन चींतवीयो । चिंता मने बहु थाय ।।
मझ ऊपर बहु खीजसे । जो देखसे एह राय ।।६।।
ए नागो अमंगलो । असुची दीसे एह देह ।।
किहां थी ए अही आवयो । लाज तणो एह गेह ।।७।।
वेस धरम थकी वेगलो । आण आणु मंदे भेद ।।
ए समजो माय नहीं बहु । तो जाये मुझ खेद ।।८।।
एहनि नीकलवा तणो । मांडु कांई उपाय ।।
काम सरे तेम मझ तणुं । ए अहींथी जाय ।।९।।

कोतवाल की कपूर्ण युक्ति

मझ चींती बुद्धि आपणी । बेठो कपट उपाय ।।
चित्ते चक चिंति गयो तटि । मनि बीजु अनुराय ।।१०।।

प्रणाम करयो विनय करी । भव्य जाणी मुनिराय ।।
धर्मबुधि तेहनि कही । कपट रहीत गुण ठाय ।।११।।

ढाल चोपईनी

कोतवाल मुनि का उत्तर प्रत्युत्तर

चंडकरमा बोल्यो कोटवाल । धर्म बुधि तह्मे कही विसाल ।।
ते अह्मनें छि सदा मुनी जाण । भेद कहूं तेहनो वखाण ।।१।।
धर्म अनुष पण अगुण होय होय । बाणह मोक्ष छे नित मित जोय ।।
तेह भणी अह्मो धर्म इम लहू । कवण विशेष वचन तह्मे कह्यू ।।२।।
मुनिवर बोल्यो मधुरीय वाण । नामि अरथ न होये जाण ।।
हेम धतूरो कनक कहेवाय । पण गुण जाणी वीसेख जणाय ।।३।।
मुनी कहि धर्म भेद छि भला । धीरथं सांभलो कह्यू केटला ।।
ससार माहे पडतां जेह । धारे धरम कहीजे तेह ।।४।।
वली तह्मे सरीरें दीसो काक्षीण । वस्त्र रहीत कां दीसो दीण ।।
मल मलिनकांतनु तह्म तणो । चालो वस्त्र भूखण दीयू धणो ।।५।।
भूम्य सयने खेदायि देह । सीत उष्ण लागि वली एह ।।
स्नान वीलेपन धर आदरो । फोकि कष्ट तह्मे काय करो ।।६।।

मुनि का उपदेश

मुनीवर बोला मधुरीय वाण । सांभलो कोटवाल सुजाण ।।
वस्त्राभूषण धर भवे भवे लह्यो । पण रत्नत्रय कहीमन ग्रह्यो ।।७।।
सूं ध्याउ जे कह्यू वचंन । ते भेद कहूं सुणो सज्जन ।।
जीव कर्म मल्या अनादि काल । पाखण हेम संजोग गुणमाल ।।८।।
पाखाण थकी कनकज धरे । तेहनो काज धणो जेम सरे ।।
तिम आतमा कर्म एकठा मल्यां । ध्याने करी करसूं वेगलां ।।९।।
तेह भणी आतम ज्ञान स्वरूप । अछेद अभेद अनंत अरूप ।।
चेतन तेज तणो पूतलो । जनम मरण भयथी वेगलो ।।१०।।
एहवो आतमा ध्याऊ जाण । वांछू लहवा सास्वत ठाण ।।
अजरामर पद लहवा सार । असह दुःख छे ए संसार ।।११।।
अनादिकाल जीव भमतो जोय । पुरुष नारी नपुंसक होय ।।
चंद्र सौम्य हवो जय समतूर । के वारें राहु सम के वारें सूर ।।१२।।

कै बार राय प्रतापह ठाय । कै बार पालो आगल पलाय ॥
कै बार काम रूप एम जोय । रूप विहीण कै वारें होय ॥१३॥

कै वारें उत्तम कुल हूवो । कै वारे नीच नीच थिम जूवो ॥
कै वारें हूवो जीव जीव बलीरण । कै वारि रांकह थो दीरण ॥१४॥

आर्यखंड म्लेछ खंड मझार । नरभव पाम्यो जीव कै वार ॥
धनहीन हूवो वली धनवंत । हूवो जोगी चंडाल दुरंत ॥१५॥

भवगति कुकह जाणो कोटवाल । सोक वियोग संताप विकराल ॥
तिर्यंच गति वाघ सिंघ ज हूवो । तृण चर रंभाणी जीव मूवो ॥१६॥

नरकों के दुःख

रत्नप्रभा आदि नरक उपन । छेदन भेदन घणू सपंन ॥
नारकी माहोमाहि छेदे तन । भूख घणी मले नही सीथ अंन ॥१७॥

तरसें जाणे सायर सोखवो । पण पावयें नही जल बिंदूवो ॥
गीरी समो लोह गोलो गली जाय । एहेवू उष्ण ने सीत सहिवाय ॥१८॥

सहस्र बीछी वलगायी घणो । दुख ऊपजे मृतीका स्पर्स तणो ॥
सूला कंटक मंडित मही । इम भोगव्यां जीवें पाप फल सही ॥१९॥

मृतिका गंध सही मध्य जाय । भूखें बल यो तेह ज खाय ॥
वेतरणी रुधीर मय नीर । पीनो जल तो पावय रीर ॥२०॥

करवतें नारकी छेदे काय । ए कतरवू कहूनू करी पाप ॥
एक अगन थंभ सू करें भेट । साते व्यसन तणा फल भेट ॥२१॥

वलयो असीपत्र वन तलि जाय । पत्र पडंता छेदें काय ॥
गिरि प्रस्थेंभयें गिरि तूटी पडे । जीव नें नरकें कर्म एम नडि ॥२२॥

तिर्यञ्च गति के दुःख

वली तिर्यंच माहिं भमतो जोय । जलचर थलचर वली वली होय ॥
नभचर गरुड भेरंड आदि भम्यो । भूख तरस छेद भेदे दम्यो ॥२३॥

देव गति के दुख

सुरगति पाम्यो मानसीक दुख । इम भमतो किहीं नहीं लह्यो सुख ॥
इम वारिधि जोहो गती संसार । अंतमें कर्म नट्याबो अपार ॥२४॥

बहू परी वेष लेवाडे जाण । जीव नृत्यकोनि नाचावे वखाण ॥
इम जीवि जीव विम वली मरे । थावर जंगम माहि एम फरे ॥२५॥

संसारी जीव

जिम संसारथी बीहू घणुं । विलम सौख्य नेहू अवगणुं ॥
बारभेद वली तप आचरूं । पर घर फासुक भीक्षा करूं ॥२६॥

धर्मे नीरंजन ठामे वसूं । आगम तत्त्व घणुं अभ्यसूं ॥
धर्म कहूं वली मौनि रहूं । निद्रा जीतू मोह निग्रहूं ॥२७॥

क्रोध मान माया लोभ त्यजूं । कपट हास्य रति अरति न भजूं ॥
चिंता सोक उद्वेग न धरूं । मद तणो मद हूं चूरि करूं ॥२८॥

अंध हूं नारी नीहालवा । हृदय सून्य अवगुण जाणवा ॥
राग गीत सूं बहेरो जांण । पर अपवाद मूंगो बखाण ॥२९॥

कुतीरथ जावा ने पंगली । कामकेलि विलय हूंदलो ॥
आश्रयो अचेतन चेतन तनु होय । चेतने वहीयि सकट इम जोय ॥३०॥

वृषभ विना सकट नवि चली । तिम तनु चेतन सरिसोमलि ॥
जीव अन्य कलेवर अन्य । इम लहि दिगंबर हवो धन्य ॥३१॥

परने न नींदू मोक्ष ईछंत । ध्यानामृत रस पीयूं नचींत ॥
आर्त रौद्र दोए मूकुं दूर । झीलूं धर्म शुक्ल ध्यान पूर ॥३२॥

केवली कहयो लीयूं आहार । रूंधू हूं पापाश्रव द्वार ॥
इम यही बल ने जीतऊं । कर्म कलंक नहीं छीपऊं ॥३३॥

कोतवाल का पुन प्रश्न

कोटवाल इम जपे चंग । गोस्तन मूंकी दुहि कुण शृंग ॥
ठेली कनकथाल मिष्टान्न । कवण करि भीक्षा थिर मन ॥३४॥

प्रत्यक्ष ससार सुखनि त्यजि । मूरख जे मोक्षकारणे भजि ॥
विण छत्रि छाया नवि होइ । विण जीवें मोक्ष पावे कोय ॥३५॥

फोकि देह संतापु आज । मुक्त कह्यां करु तु सीधि काज ॥
देह जीव ए भिन्न न होय । जिम तरु कुसुम परीमल जोय ॥३६॥

फूल विनासे गंध विनाश । तिम तनु नासे जीव निरास ॥
भूत वीहो बंधायो देह । पवन योगि यंत्र फिर फरे एह ॥३७॥

गुड महू छाल उदक धावडी । मलि उन्माद सक्ति तिम चडी ॥
तिम ए जीव देहे धार कहिवाय । किहां थी न आवी किहां थी न जाय
॥३८॥

दीप सिखा पवनें लोप । कहो ते कवण दिसे ते जाइ ॥
तह लोपावें जीवादि जाय । तिम तनु जाता जीव न जाय ॥३९॥

पवन ते प्रबल सरीसो मांहि । जाम्यो तत्व भेव ए तुझ्य प्रति ॥
जीवस संवाहन वायु काय । जोकि एहुणी प्रातम थाय ॥४०॥

सुक मसीका मध बैठो चैन । जिम बंधि बंध जैसे एम ॥

मुनि का उत्तर

मुनीवर बोल्या बोल बीचार । कह्या ए जीव मरचो मूल व्यार ॥४१॥

माटी पात्र जलिकली भरयू । नवन अतीत काम अपरे करचो ॥
व्यार मलि सु उपजि जीव । माटी पात्र तो होय अजीव ॥४२॥

जे युद्ध भावि कह्या दृष्टांत । ते तुझनि छे मोटी भ्रांत ॥
जीव चेतन व्यापन्नु पूतलो । अचेत मए दृष्टांत न भयो ॥४३॥

बली मद शक्ति चेतन ने जोय । काठ पूतला नैं मद नव्य होय ॥
मूल बंध दृष्टांत जे दीय । अवला काल गोपाल प्रसीद्ध ॥४४॥

फूल स्पर्शी गंध तेल सु रमि । प्रवर देह लेइ तिम जीव भमे ॥
जो पूर्व भव जीवनें न होइ । तीतु बालक सु धावे न कोय ॥४५॥

जण्यू बालक जाणि स्तन ठाय । प्रग्ग सीखव्यु वलमिते धाय ॥
जाले काल प्रसाद जीव भमें । करमें सीखवयो काल नीगमि ॥४६॥

जीव तनु प्रति जूजूवा जाणवा । साधु असाधु भेद आखवा ॥
एक राय एक किंकर जाण । वाहन एक वलीवा वखाण ॥४७॥

धनवंत एक एक धन हीन । एक सुखी एक दीसि दीन ॥

कोतवाल नमे पुन शंका

कहि कोटवाल सुणी प्रवधार । चोर एक धरच्यु मैं मझार ॥४८॥

लाख लिखो न राख्यो ठाम । त्यांह्यां मरयो चोर करी क्यो काम ॥
जीवन गयो एकन रती । जंतु गयो कुण मारगि जती ॥४९॥

एक चोर तोली मारयो । वली तोलवी तें तु धारयो ॥
हलवो न थारे हुवो लगार । जो किम जीव छि तनु मझार ॥५०॥

एक चोर करयो खंड खंड । जोयो कुण्ड तणाली प्रचंड ॥
जीवन जातो दीठो लेह कही । एह उत्तर चाहुवें मुझ मनी ॥५१॥

मुनि का उत्तर

मुनी बोलि एक आणी मजूस । संख सहित नर रह्यो पेस ।।
लाक्षा बीडी तीरणें संख बाजयो । लोक कानें सबद छाजयो ।।५२।।
छीद्रन पडयो तीरणि लगार । स्थूल शब्द वली छे अपार ।।
नाल ने सबके गीरीवर ग्रसि । आप अमूरत केम दृष्टी ग्रसि ।।५३।।
चर्म मसक ठाली तो लेय । वायू भरी पुनरपि तो लेय ।।
भार समान जो पवन प्रचंड । तरु जेऊ मेले करे खंडो खंड ।।५४।।
रूपी वायु जे नव्य देखाय । आत्मा केम दृग गोचर थाय ।।
समवडी काष्ठ खडो खंड करयो । जोयो अगनी पण नही नीसरयो ।।५५।।
जे वन तरुवर नगर वहे य । एह वा अगन ने नयण नग्रहे य ।।
मूर्ति पदारथ ने दृष्टी ज ग्रहे । क्षयोपसम योग्यता ए लहि ।।५६।।
खडग धार तीखी नभ न छेदाय । चपल बालके नीज छच न चढाय ।।
तीम नीर्मल ए दृष्टि छि घणी । आप रूप न देखि आपणी ।।५७।।
नव्य देखीयि ते नथी जे कहि । तह मूर्ख माहिव उपण लहि ।।
मात तात लघु पण थी मूर्वा । विण दीठि तिणे केम मानवा ।।५८।।
भूत प्रेत व्यंतर राक्षसो । विण दीठि छि केम सरखसो ।।
दूर आवतो सबद न देखाय । पण कान सूं मलयो थी जणाय ।।५९।।
इंद्रि निज निज विखय ग्रहे वाय । अमूरत ज्ञानीनिथी लख थाय ।।
ना केसू कुणि रूप देखाय । काने सूं भोजन स्वाद जणाय ।।६०।।
जीणीयि निज निज सही योग्यता । रूपीयि रूपवी योग्यता ।
सूक्ष्म आप स्थूले न जणांय । हाथी सूंढे राई न लेवाय ।।६१।।
तिल माहि तेल भली जेम रह्यो । दूध माहि यम घृतित कह्यो ।।
काष्ट माहि यम अगनी समाय । तिम तनु माहि जीव जणाय ।।६२।।
सूरज कांति मांहि जिम अग्नी । चंद्रकांति जल रह्यो विलग्नि ।।
पाखाण मांहि जिम छि धात । तिम तनु मांहि जीव विख्यात ।।६३।।
सुखदुखादि दृष्टांत अनेक । चेतना लक्षण जाण विवेक ।।
बुद्धि व्यापार जू जू आजोय । आतमा उपजी भमय होय ।।६४।।
केम जीव वेह्यतर वरि । किम संसार मांहि ए फरि ।।
मुनीवर कहि सांभलो धीर चित्त । जिम होइ तह्म जीवह हित ।।६५।।
आठ करम अठलाल सुअक्षत । अनादि मल्यो पण एहुहि विक्षत ।।
ज्ञानदर्शनावरण ए बेहो । वेदनी मोहनी आयुहि मेह ।।६६।।

नाम मोक्ष कहीयि प्रसराम । आठ करम पाखमें कहियाय ॥
भेद कहु एहना वेगला । संखेपि जाणि जी भला ॥६७॥

ज्ञान आवरें ते ज्ञानावरण । पंच प्रकारि तेह विस्तरण ॥
सिद्ध इष्टपद नम्य देखीयि । देवगुरु परी वस्त्र लेखीयि ॥६८॥

दर्शनावरण देखावान जेम । दरसन आवरे छे नवभेद ॥
इष्ट वस्तु देवी नम्य पामीयि । राज पोलीयानी फिरतामीयि ॥६९॥
सुख दुख नि जणावि जेह । बे प्रकार वेदनी कही तेह ॥
खडगधार मधुलीप्त छि जेम । सुख दुःख जीवि लहीयि तेम ॥७०॥

आत्मानि मोहि जे थए । मोहनी नाम कहीयि तेह तखं ॥
भेद अठावीस तेहना ते सही । मदिरा माध्या कोइ वपिरत कही ॥७१॥

आयुकरमि भव माहि राखीयि । च्यार प्रकार केवली भाखीयि ॥
हड घाल्या नरनी पिर जोय । भवथी नीकलवा नही दीयि सोय ॥७२॥

नाना रूप कारण ए लह्यो । तारणं भेद नाम करम कह्यो ॥
चीत्रक पिर परिलखे चीत्राम । नाम करम एहवा परीणाम ॥७३॥

गोत्र करमना छे बे भेद । ऊंच नीच जाणो त्यजी खेद ॥
कु भकार भाजन परी जेम । जीव ऊंच नीच कुल लहे तेम ॥७४॥

इष्ट वस्तु पामता जोय । अंतरकरि अंतराय कर्म होय ॥
पच प्रकार आगम माहें कह्यो । भंडारी परि गुणें ते लह्यो ॥७५॥
ए आठ करमि करी ए जीव । अनाद कालनी बांध्यो अतीव ॥
मिथ्यात अविरत प्रमाद कषाय । बंध हेत कह्या मन वच काय ॥७६॥

एकांते प्रथम मिथ्यात विचार । असत्यता ते जाणि अपार ॥
केम खटमास अवधि कहिवात । पुण्य पाप जुआ लहि मात तात ॥७७॥
विपरित ते जे बगासुखे कहि । विधि वीसेखि हींसा नें ग्रहि ॥
सात व्यसन मास्त्र माहि आदरि । ते केम पर तरि आप तरे ॥७८॥

खर कूतर जो महीसह तणो । अकबर पवन पीठीनो भणो ॥
विनय करि कुसाचिरण देव कही । विनय मीथ्यात कह्यो ते सही ॥७९॥

नर सिंसुगति स्त्रीनि सिं नही । यह जाणि संसय ग्रहि सही ॥
धर्म माहि करि संदेह । संसय मिथ्यात कहीयि तेह ॥८०॥
अज्ञान मिथ्यात पंचेंद्री हसें । एकेंद्री जोकलो जाण करिए ॥
देव धर्म प्रतिमा उच्छेद । पंच पापना कहुमा भेद ॥८१॥

क्रोध मान माया ने लोभ । सोल प्रकार दीधि अब बोध ॥
कूड कपट वली काम विचार । पंचेंद्री वली विकथ विकार ॥८२॥

कृष्ण नील कापोत जे नाम । जीव ने दुष्ट करें परिणाम ॥
आर्त्तरौद्र ए बहु दुर्ध्यान । जीवनि भमाडिए भवरान ॥८३॥

प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश । बंध तणो भेद कह्या विशेष ॥
ईम बंधायो जीव बणु भमे । चारों गति मांहि काल निगमें ॥८४॥

नाम करम नाना रूप करि । आनुपूर्वी भव्यंतर भरे ॥
जीवनो ऊर्द्ध गति छे सभाय । कर्म वलि विचीत्र गत्य जाय ॥८५॥

ऊर्द्धगमन जेम अगनीही झाल । अही पही वाय जघोति विसाल ।
अथवा संकड संकलि भरयो । जिम फेरवीयि तिम जीव फरयो ॥८६॥

संहार विस्तार कर्म प्रमाण । कूथू आसमो वली हाथी समान ॥
जिम लघु घट माहि दीपज धरयो । घटमांहि धरयें घट उद्योत करयो
॥८७॥

ते बडो देहते बडो व्याप । कह्यो केवलीयि निःपाप ॥
घाति करम क्षय होय ए प्राप्त । दोष रहीत गुण त्रिभुवनि व्याप्त ॥८८॥

जीवनमुक्त अर्हंत भगवंत । सर्वज्ञ ते कहीयिए संत ॥
तणि आगलि कह्यो जेह । जीव स्वरूप कहो इयाहा एह ॥८९॥

द्रव्य नये छे आत्मा एक । पर्याय भावे कहीयि अनेक ॥
कर्म कलंक रहीत जब थाय । अछेव अभेद अनंत कहिवाय ॥९०॥
नित्य कहियि द्रव्यं सही । पर्यायि अनित्यज कही ॥
नित्य कहितां नव्य मरण न होय । अनित्य कहितां गगन सम जोय ॥९१॥
जिनवर कहि जीव नाना भेद । छ काय एह भवि भमि सखेद ॥
एक रोसाल कहिये एक साध । एक अरोग अने एक न व्याध ॥९२॥
एक छे गुरु अनेक छे सीष्य । एक मूर्ख अनेक छि दक्ष ॥
एक छे राय अनेक छे भृत्य । एक करि पुण्य अनेक अकृत्य ॥९३॥
रागद्वेष विरुद्ध कहि जेह । वचन प्रमाण न कहीयि तेह ॥
जे पितृवनें नाचंतो भमि । निज महीला सुं रंगे रमि ॥९४॥
जेह करे गदा सकति त्रिसूल । क्रोध कपट के राजे मूल ॥
तेह वचन प्रमाण केम होय । स्वयं सीव आगम एम जोय ॥९५॥
लोक ए स्थिरकेम कहिवाय । न करे कार्य तो नास न थाय ॥
बंधायो ते कहीयि नमू काय । गुर सीक्षादी भेद न जणाय ॥९६॥

इंद्रि बुद्धि कारज जो करयो । हंस सरीर कोई नहीं करयो ॥
बिण तनु हंस को कारज करै । बिणु तनु देव कांगी अणुसरि ॥९७॥

मगन फूलै कंठ हार यु होय । व्यष्णा सुत जातो ए जोय ॥
सत सूं नहु धनुष कर धरी । मृगतृष्णा जल नाही करी ॥९८॥

कथरणा हंस जननी थाय । एक सुखी एक दुःखी जो थाय ॥
मात तात सीसु मध्य जारेय । तो किम कहीजि संहार करेय ॥९९॥

एक ब्रह्म बहु व्यापी रह्यो । सवे घट मांह जिम पेर कह्यो ॥
ब्रह्म ते वेद कहि नीकलंक । जग ए जीव मलिन सकलंक ॥१००॥

एक कहि जो मन बंधाय । जीव कमल परें रहयो जल ठाय ॥
सुक नलीका पेर उपजि भ्रांत । कोकिं देखाडो ए दृष्टांत ॥१०१॥

मन बंधन कारण सही होय । सुक मरिजीव बंधातो जोय ॥
कोसीयो बंधाय जिम नीज लाल । तिम जीव बंधातु स्वयं माल ॥१०२॥

जो ए जीव बंधाय नहीं । तो दीन दुखी को दीसि नहीं ॥
जाणो जीव करमि बांधयो । विषय वसूयो दुखि बांधयो ॥१०३॥

इन्द्रियों के कारण बन्धन

स्पर्शन विषय बांध्यो हाथीयो । खाड पडयो अंकुश वस थीयो ॥
बहु पेर मार लेहजि भम्यो । विषय तृष्णाथि ए ममं दम्यो ॥१०४॥

रसना विषय वाहीयो होय । माछलो दुःख सहतो जोय ॥
रसना विषय जीत्या बिण जीव । माछला पिर दुःख पावे सदीव ॥१०५॥

नासिका गंध तणो लोभीयो । भमरो कमल माहि थोभीयु ॥
वास कोरि एह्णी कठण सभाउ । तिहां मूढ विषया अनुराउ ॥१०६॥

नयण विषय जे तरायु पतंग । दीवा माहि नाखे निज अंग ॥
काई पखं काज सरंतम नणो । कोकिं सोहि जीव आपणो ॥१०७॥

पारधी थाट नाद वन सुणी । बैधाया हरणा हरणी ॥
श्रवण विषय जीतव्यायें पतंग । अर्थ न साध्यो प्रासे जाय ॥१०८॥

इम जाणी विषया मन तजो । सुख नीरंजन भावें भजो ॥
जिन पाम्यो सुख केवल नाण । भवीयण पद पाम्यो निर्वाण ॥१०९॥

व्यसनों के कारण दुखी हुये मनुष्य

जूव रमत युधिष्ठर राय । राज रमण हारि कहिवाय ॥
पाम्यो वन माहि फिर फिर दुःख । जूव मीडा भयो सहु सुख ॥११०॥

मांस तणो लोभी बक हूवो । भीमसेन हाथि ते मुवो ॥
मुनिध्य खातो काहाव्यों राखसु । नरकगति ते कर्मइ करयो ॥१११॥

मद्य नियोगि यदु राजीया । माहो माहि बढो क्षय गया ॥
मद्य निगोद पातिक नो ठाम । जीवनि नरकि थापि विश्राम ॥११२॥

प्रकटि मूक्यूं जेहेवूं ऊतारणूं । वेश्यानि ते सरखी भणूं ॥
कूं तरां एक थाकि एक जाय । चारुदत्त पेर दु:ख सहाय ॥११३॥

पारध बसने ब्रह्मदत्त भणो । हिंसा दोखि नरक गयो भणो ॥
बापडा तृण चर किहिनू न खाय । दुर्जन प्राण लेवा धूठि धाय ॥११४॥

परदारा व्यसनि जाणजो । रावण क्षय गयो मन आणजो ॥
अवर पुरुष कहू केही मात्र । व्यसन व्यलूधो नरकह पात्र ॥११५॥

चोरी व्यसन ते मूक्यो दूर । तीणि पाप लागि अति क्रूर ॥
मरी नरकि सिवभूती गयो । परधन हरतां दुखीओ थयो ॥११६॥

सात व्यसन ए मुकि जाण । प्राणी पामि सुखनी खाण ॥
एह लोक परलोक जय होय । अनुक्रमि शिवपद पामि जोय ॥११७॥

दया धर्म का प्रभाव

समता रस सहुसूं आदरो । क्रूर चित्त कोई पर मत करो ॥

क्षमा धरंता जीवनें जोव । पदे पदे परम अनोपम होय ॥११८॥

कोमल मन आपणूं कीजीइ । जीव जयणा करी धर्म लीजीइ ॥
मार्दव त्रिकरण शुधि धरो । भवसागर जल हेलां तरो ॥११९॥

आर्जव कहीइ कपट रहीत । जीव दया उपरि धरजें चित्त ॥
कलुष भाव टालीजे जोय । तश्चेतो अविचल पद होय ॥१२०॥

सत्य वचन बोली जें सही । एटला ऊपरि पुण्य नहीं ॥
पर अपवाद विकथा नें त्यजो । मुगती नारी सूं वेगि भजो ॥१२१॥

लोभ रहीत कीजि अतरंग । परमातम सूं लीजि रंग ॥
बाह्य अभ्यंतर शौच धराय । मुगति नारी लीला वस थाय ॥१२२॥

कीजे संयम करत विचाल । इन्द्रिय रोधी धर्म निहाल ॥
काम महागज वश आणीइ । संयमि मुगति ढूंकडी आणीइ ॥१२३॥

बार भेद ये तप आचरि । धीरवीर भव उध्दरि ॥
कर्म महावन अग्नी समान । पामइ नीर्मल केवल ज्ञान ॥१२४॥

सर्व परीग्रह कींजि त्याग्य । अथवा त्रिविध पात्र दान भाग ।।
आकांक्षा रहित जे करि । ते संसार माहि नव्य करि ।।१२५।।

परीग्रह सहु दूर मूकइ । अथवा बलतकर हूकए ।।
तृष्णा नदी ऊतरि जेह । मुगती मारग सही नमो तेह ।।१२६।।

निकरण सूध धरि ब्रह्मचर्य । व्रत आचार धर्महि वर्य ।।
तेहि आचारवंत सही सहू धर्म । करिहु मुगति मानवी सुख सर्म ।।१२७।।

दूहा

दस प्रकारि धर्म कह्या, मुनीवरनि उत्कृष्ठ ।
अंस पणि जो पालए श्रावकनि पण सुष्ट ।।१।।

लेश्या वर्णन

पीत पद्म शुक्ल कही, भव्या लेश्या वे धन्य ।।
सुगति आवा कारण सही, जे जाणि ते धन्य ।।२।।

धर्म शुक्ल बे ध्यान ते, आपि अविचल वास ।।
मन पवन बंधा करी, करछु तहे अभ्यास ।।३।।

अनुभवावा सिद्ध सौख्य ने, स्वाधीन नीरव छे जेह ।।
इन्द्रीय रहीत जे अनुपम, सास्वतु कहींयि तेह ।।४।।

कोटवाल तब बोलियो, जाणुं हुं सिद्ध भेद ।।
गुटिका सिद्ध अंजन सिद्ध, प्रहस दीसि नही भेद ।।५।।

सिद्ध स्वरूप

मुनि कहीं ते कपटी सही, व्यसनी खोटा अपार ।।
सीध नीरंजन नीरुपमो, ज्ञान तणो आधार ।।६।।

असंभम तैजस रूपए, कोणि ते तेज न हणाय ।।
ते तेज कुही नैन दूखवे, रह्या परस्पर समाय ।।७।।

ज्ञान तेज मोटिम पणि, रही सहू मध्य गात ।।
किहिनि नही प्रमादि, वस कमलहु वेर भाव ।।८।।

केवलीनि गोचर होय, जीव मुक्त विशेष ।।
तेह विना गोचर नही, जोहू जाणि छि अशेस ।।९।।

मूको तें साकर खावता, करसीर मूर्गी देखाय ।।
स्वाद जाणि हरखीत होय, निज जीभि न कहिवाय ।।१०।।

ब्रह्म सिद्ध स्वरूप छि, व्यापक सकल अनंत ॥
ज्ञानी वखानि आराधवो, अजर अमर छि महंत ॥११॥

विष्णु संभु संकर कह्यो । ब्रह्म सुगुण बली होय ॥
सकल निरंजन अकलए । नाम अनंता जोय ॥१२॥

भोला विष्णु व्यापक कहि । जल थल गिहि सुं अपार ॥
माया मोह्यो वेगलो । वली कहि धरि अवतार ॥१३॥

भगत उद्धरवा कारणि । निरंजन काय धरि रूप ॥
करम काया थी वेगलो । ब्रह्म जो सहज स्वरूप ॥१४॥

एम जाणी मन दृढ करु । ब्रह्म न धरि अवतार ॥
ब्रह्म हण्यो ब्रह्म अलिहि । ए छि वचन व्यापार ॥१५॥

ध्यान बलि कर्म जीकीयि । होय ब्रह्म ज्ञान अभ्यास ॥
तेज सु तेज जई मले । काल अनंत विलास ॥१६॥

पुत्र कलत्र मित्र नहीं । नहीं नगर पुर हाट ॥
मरण तणी भेवब नहीं । नहीं चींता उचाट ॥१७॥

भोजन आयन लखन नहीं । नहीं प्रभु सेवक भेद ॥
पगतलां सचा सूबू नही । नही सुख नो वली छेद ॥

इत्यादिक गुण सिद्धना । गुण गातां होय पुण्य ॥
जिनवर देवने स्तव्यो । तेह कई होई धन धन्य ॥१९॥

भास अन्याकलौनी

कोटवाल की स्तुति

तव कोटवाल मनें हरखयो तो । अम्माइली । धनधन मुनीवर भासतो ॥
वेद मद थीकी वेगलो तो ।अ०। अभातणो आवास तो ॥१॥

जीव द्रव्य एणि ठलत तो ।अ०। ब्रह्म न स्वरूप लह्यो जोय तो ॥
बाल फुलावे बीबा सही तो ।अ०। तत्व ज्ञानी एह सही होय तो ॥२॥

मेलीजवयो बहु परी तो ।अ०। पांचां बयस बीलव तो ॥
जीवड पाप्यो बहु परी तो ।अ०। वारवाक मत सेव तो ॥३॥

बलीए लियो में व्रण तो ।अ०। नागो पशुनी मबाणतो ॥
पण ए हरी समजी नही तो ।अ०। ए सही अलीही मुजाण तो ॥४॥

सत्रु मित्र एह गने समा तो ।अ०। लोष्ट कनक सम भावतो ॥
विकार अंग एहवें नहीं तो ।अ०। ए भवसागर नाव तो ॥५॥

कामकुंभ एह जाणीयि तो ।भ०। कामधेनु अवतार तो ॥
काम करि ए आपणु तो ।भ०। कामतणी दातार तो ॥६॥

इम कही दीए कर जोडीया तो ।भ०। बीठ तणी सामी पामतो ॥
मझ जन्म सफल हुवो तो ।भ०। हु दीठ मुनीराय तो ॥७॥

हु न्यू कर साही मझ तणो तो ।भ० आज सफल कीयो कामतो ॥
जिम मुझ देह सफल होय तो ।भ०। तु कही मुनीश्वर राज तो ॥८॥

धर्म की महिमा

मुनीश्वर स्वामी बोलीयो तो ।भ०। मधुरीय सुललीत वाण तो ॥
काम कहुं एक सबदु तो ।भ०। कोडयाण सुणो सुजाण सु ॥९॥

धरम करो तह्मे नीरमलो तो ।भ०। त्रिभुवन तारण हार तो ॥
जिणि फल वस्तु पामीइ तो ।भ०। जीव दया भंडार सु ॥१०॥

धर्मि भवनीधि सपजितो ।भ०। हरीबल पद धर्मे होइ सु ॥
चक्रवर्ति पद धर्मथी सु ।भ०। धर्म समो नहीं कोय तो ॥११॥

लाख चोरासी हाथीया सु ।भ०। रथ सेता सु जोय तो ॥
कोड अढार तुरंगम तो ।भ०। धरम फलें सणो लोय तो ॥१२॥

कोड चोरासी पएला भला तो ।भ०। चउद रतन घर मांहि सु ॥
छनऊ सहस अतेउरी तो ।भ०। धरम तणा फल थाइ सु ॥१३॥
बतीस सहस मुकुट बंध तो ।भ०। राय करे निज सेव तो ॥
सोल सहस गणबध देवता तो ।भ०। अंगरक्षक सेवें देव तो ॥१४॥

छखंड तणो ते राजीयो तो ।भ०। ग्राम के कनक कोड तो ॥
मागध वर्तन छे मावि तो ।भ०। आव्या देव वेवि कर जोड तो ॥१५॥

एणि मार्ने चवर रीध तो । भ०। आरुन कह्यो बहु भेद तो ॥
धरम फलि एहवा सुख लह्यो तो ।भ०। नहीं सोक संताप खेद तो ॥१६॥

धर्मि तीर्थंकर पद वली तो ।भ०। लहीयि पंच कल्याण तो ॥
मेरु सीखर पूजा लहि तो ।भ०। धरम तणि परमाण सु ॥१७॥

बत्तीस लाख विमान धणी तो ।भ०। इंद्र सेवि नीत नीत तो ॥
जाणें किंकर घर तणों तो ।भ०। जगत आण करी चीततो ॥१८॥

आंम धरम परकासने तो ।भ०। वरीये मुगती नार तो ॥
त्रिभुवन जस विस्तारयो तो ।भ०। धरम तणि विस्तार तो ॥१९॥

इन्द्र मांणीक उपजलो तो ।भ०। पद पामीयि धर्मि जाणतो ॥
देवांगना सु क्रीडा करता तो ।भ०। अनेक देव माने आण सु ॥२०॥

विद्याधर विद्या भली तु ।भ०। धर्मिचंद्र सूरय थाय तो ।।
देवांगना नाटक रचि तु ।भ०। नारद किन्नर गुण गायतो ।।२१।।

कामदेव सरखूं रूप तो ।भ०। नारी मन मोहंत तो ।।
रूप देखी देवी भूलि तु ।भ०। धर्मि होइ भूप महंत तो ।।२२।।

सीर वर छत्र उजलो तो ।भ०। चमर ते गज अवगाह तु ।।
गज तोरगम रथ घणा तु ।भ०। पराक्रम जय तणो ठाह तो ।।२३।।

धर्मि सात तणा घर तु ।भ०। रतन तणीं सोहि भींत तु ।।
धन कण कंचण रयणें भरया तो ।भ०। पट कोल वस्त्र वीचीत्र तो ।।२४।।

धरमि नार सोहागणी तो ।भ०। रूपें रती अवतार तो ।।
मुनीवर ना मन मोहती तो ।भ०। सोहती सील भंडार तो ।।२५।।

नमती सासू नणद ने तो ।भ०। गमती नाहनें मने तो ।।
रीस न करती रती भरी तो ।भ०। हरष वदन दिन दिन तो ।।२६।।

हसगामिनी मृगलोचनी तो ।भ०। धरमि बहु गुणवंती तो ।।
जीव तणू जतन करती तो ।भ०। कोमल वचन महंत तो ।।२७।।

निज कुलनि मजू मालती तो ।भ०। चालती लक्ष्मीय होय तो ।।
वरत विधानमि पालती तु ।भ०। धरम करंती ओय तो ।।२८।।

दान देती सुपात्रमि तु ।भ०। मानती सगा सजन तो ।।
जिनपूजा करती रंगे तो ।भ०। निरमल करती मन तो ।।२९।।

प्रोहोणा सगानि संतोषती तु ।भ०। चतुर पणानु ठाम तो ।।
भाग्यवंती विनयवंती तो ।भ०। कंतना पूरती काम तु ।।३०।।

धर्मिं पुत्र भला होय तो ।भ०। मातपीतानि मानंत तो ।।
धरमवंत गुणि आगला तो ।भ०। नयनें आणंद देय तो ।।३१।।

धर्मे पुत्री पामीयितो ।भ०। रूप सोभागनी रेहतो ।।
सीलवंती गुणि आगली तु ।भ०। विनय विवेकनो गेह तो ।।३२।।

धर्मि मित्र भला लहितु ।भ०। पाप थी वारय जेह तो ।।
हीत मारगनें उदेसि तो ।भ०। अमर भंवर लाधि ओज तो ।।३३।।

धरम तणे फल पामीयि तो ।भ०। अनेक इष्टनो संयोग तो ।।
मणि माणिक मुगता फल तो ।भ०। मोती नवसर हार तो ।।३४।।

पालखी रथ सुखासन तो ।भ०। धरम तणो विस्तार तो ।।
कनक सांकल हींदोलार भला तो ।भ०। हींचोलि हींदोलि दास तो ।।३५।।

माननीसूं मननी रली तो ।भ०। महयि लीला विलास तो ॥
पकवान बहुजात तु ।भ०। वडा अन्न अनेक प्रकार तु ॥३६॥

भोजन सजाई भोजन सरिस सो ।भ०। दधि दुध घृत सुविचार तु ॥
वली राम कपूर नाग बेल दल तो ।भ०। फोफल पूलनी सबंध तो ॥३७॥
ए आदि भोग उपभोग तो ।भ०। धरम फलि उपांत ।भ०॥३८॥

वस्तु छन्द

धरम ना फल धरमना फल । तणो विस्तार ।
भव भव जीव सुख लहि । दुःख लेश एक अरा न पामि ॥

दूर देसांतर पावतां । धरम एक सखाय आमि ।
जल गिरि रण वन माहि पड्यो । जीवनें राखि धर्म ॥
इम जाणी धर्म आचरो । दूर मूको पाप कर्म ॥१॥

रास जीवडानी—राग देशाख

पाप के कारण विभिन्न गतियों में भ्रमण

पापतणि फल भव भवे हो । जीव भमें अपार ।
दु.ख सहि नीहो गती मांहि हो । सुख न पामि लगार हो ॥
पापें दुःख दालीद्र सहि हो । भव माहि भमतो जीव हो० ॥१॥ जीवडा

नीत्य निगोद सात लाख कही हो । इतर निगोद तेनी होय ।
नील फूल कंद मूल मांहि हो । जीव अनंतो जोय हो० ॥

पाप तणां फल होय । पापें दुःख दालीद्र सहि होय ।हो०॥
भवमांहि भमती जोय हो० ॥२॥जीवडा॥

मद्य मांस सरीरि मांहि हो । कंद मूल मांहि जेह ।
फूल फल छाल पल्लव हो । जीजोवें भाख्यो जीव एह हो ॥३॥

सात लाख पृथ्वी काय हो । मृदु खर पृथ्वी भेद ।
भेद मीरी मांटी सीला हो । जीव ऊपनो सह्यो खेद ।हो जी० ॥४॥

सात लाख अपकाय मांहि होय हो० । जीव अनंती वार ।
नदी सागर सरोवर कूआ हो । अपनो एहु भण्डार । हो जी०॥५॥

तेजकायक सात लाख कह्या हो । अगनी काय उपंन ॥
काय अनंतो जीव भमती हो । कहीं कहीं दुख संपंन ।हो जी०॥६॥

वायकायक लाख सात हो । तनु घन घनोदधी वाम ।
थर वायु मांहि वली हुवो हो । जीव भम्यो ठाम ठाम ।हो जी०॥७॥

अनेक वेल्ल तरु तृण आदि हो । वनसपती दस लाख ।
जीव अनंतीवार अवतरयो हो । केवली बोलि भाख ॥
पाप तणां फल होय । पापि दुःख दारीद्र सहि हो ।हो जी०॥८॥

बिलाख बिइंद्री माहि हो० । अलसीयां शंख सीपोलि ॥
कीडा लालीया मेहर आदि हो । जीव भम्यो बहु ओण ।हो जी०॥९॥

त्रेण्द्री बेलाख लेखा हो । बीछी कीडी मंकोड ॥
जीव एह भमतो बापडो हो । कर्मि लाई मोटी खोड ।हो जी०॥१०॥

बे लाख चोरेन्द्री कही हो । हुवो जीव अनतीवार ।
माखि गोवालि डंस मसाहो । भमरा आदि मझार ।हो जी०॥११॥

च्यार लाख नारकी जोनें हो । धतूरा फूल आकार ।
हुडकू संस्थान हुवो हो । सह्यो दुःख अपार ।हो जी०॥१२॥

तीर्यंच च्यार लाख माहि हो । थल नभ जलचर जात ॥
वार अनंती अवतरयो हो । वेसलेई बहु भात ।हो जी०॥१३॥

च्यार लाख देवगती मांहि हो । भावन व्यंतर जाण ॥
जोतषी कल्पवासी हुवो हो । मानसीक दुःख वखाण ।हो जी०॥१४॥

चौद लाख मनुष गती हो । आर्य म्लेच्छ नु जोय ॥
भोगभूमीया विद्याधरा हो । भमतो जीव अवलोय ।हो जी०॥१५॥

लाख चोरासी योनि भम्यो हो । थावर जंगम हो एह ॥
सूक्ष्म बादर जन्म मरणा हो । दुःख तणो नहीं छेह ।हो जी०॥१६॥

पंच परावर्त्त पूरयां हो । भमतो वार अनंत ॥
संसार वनी भीतरि हो । करमनि कलि महंत ।हो जी०॥१७॥

खोंडा पांगला आंधला हो । मूंगा बहिला जेह ।
पूरब भव पाप करयो अति हो । उदय आव्यो सही एह ।हो जी०॥१८॥

पाप का फल

कोढी दाद कांख वाळा हो । जीवनी पाखा काय ॥
गज चर्म वात रक्त आदि हो । पाप तणि पसाय ।हो जी०॥१९॥

कंठमाला मकमूंबका हो । पाठो हरस आदि व्याधि ॥
मस्तक कण रोग पीडया हो । नहूहीं न कर्मि समाधि ।हो जी०॥२०॥

मूखें मरणुं मरणुं पीडतो हो । बीकतो सरीरि तेह ॥
भीख मागतां घर घरें हो । पाप तणां फल एह ।हो जी०॥२१॥

सणखलें खाजुं अंपडं हो । मरसावि तकंत ॥
भोयें पडिया लोटपि हो । भूटो काट कलंत ।हो जी०॥२२॥

कोढ़ीं सल्यां कोला खायें हों । नीरस भमें अन्न ।
परदेसी सेवावरती हो । पापें नीगमें दन्न ।हो० जी०॥२३॥

पाप तणाई फल होय । पापि दुःख सरीर सहि होय ।
भवें भव समनो जोय ॥

फाटां भूटां लूगडा हो०। जूइं भरया मसेस ॥
चांचड मांकण मसान हि । दैव ए दिन मग लेख ।हो जी०॥२४॥

नारी चिर करूपिणि हो । साधिणि पिरि काला काय ॥
मोर पमी रीछ गती हो । पाप तणे पसाय ।हो जी०॥२५॥

नख कूणा आंगली वरली हो । चूटी मोटी जाण ॥
जांघ ऊर रोम भर्या हो । दौर्भाग्य तणी खाण ।हो जी०॥२६॥

मादल ढोल सम पेट हो । महिषी जेटलूं साथ ॥
सांभि व्याहाणि छूती दीसि हो । शील हीणी पाप पसाय ।हो जी०॥२७॥

उत्तर दक्षिण स्तन न्यम्या हो । कोटिते मल तणो ठाय ॥
गालेतु खाडा पडया हो । स्त्री लहीइं पाप पसाय ।हो जी०॥२८॥

होठ काला डाकणी सभा हो । नाक ते चीबूं जेण ॥
कान भूटा साकिनी स्मी हो । पीली टूंकडी सीर वेण ।हो जी०॥२९॥

सिहिंधि भमरा कातरी हो । ऊंचूं मोहो लू कपाल ॥
सरीर कठण अंगे सूकी हो । खरवा वे विकराल ।हो जी०॥३०॥

सोभिण में गंधक भणी हो । बहुरोमता कालि देह ॥
बकवाद बीसेवे करें हो । नाहलूं न राखि नेह ।हो जी०॥३१॥

होठ पीसंती दीसीसि हो । कुमती चंचल नार ॥
साहस करि कलहकारी हो । देह दुर्गंध अपार ।हो जी०॥३२॥

प्रलय काल लीला करी हो । कनक तणी वह देह ॥
मूर्ख बाहुली भीख भती हो । पाप तणां फल एह ।हो जी०॥३३॥

बीनय रहीत वीकथकारणी हो । पापिणी पाप करंत ॥
मुख मीठी मने खोटी हो । भरतार चिर चरंत ।हो जी०॥३४॥

दान पूजा नथी गमि हो । धरम कथा न सुहाय ॥
विकथा कूटि कपटणी हो । जीव जतन न कराय ।हो जी०॥३५॥

पुत्र पुत्री होइ नही हो । होइ तु मरीनि जाय ॥
धर्म कहीं करें नहीं हो व्यसनि भूंडा सहाय ।हो जी०॥३६॥

मित्र तेह्धि तारा मलि हो । लायि पापह बाट ॥
इष्टतणा वियोग होइ हो । घरि घरि पामि उचाट ।हो जी०॥३७॥

नीच कुलि वली अवतरि हो । करतां नीच जे काम ॥
पोखि पिंड पापि आपणो हो । न जाणि धर्म्म नू नाम ।हो जी०॥३८॥

लांच लेइ चाडी करी हो । धूतारी भरे पेट ॥
पर अपवाद जूंठा दीयि हो । पापनूं कारण नेट ।हो जी०॥३९॥

पाप आरंभ पोढा करि हो । करि पाप व्यापार ॥
पापी सू संगत करि हो । पाप कारण ए वीचार ।हो जो०॥४०॥

साधु साधर्मीनी नींदि हो । धर्मनी वाटि न जाय ॥
दान पूजाये कलेश करि हो । तीणि किम सुखलहाय ।हो जी०॥४१॥

दूहा

कोटवाल द्वारा धर्म के स्वरुप को कहने के लिये प्रार्थना

कोटवाल कहि धर्म नो । कोहो स्वामी स्वरूप ॥
जिम भेद जाणं भणो । धरम लेऊ सुख कूप ॥१॥

मुनिवर स्वामी बोलीया । दया धरम करु सार ॥
सुरग मुगती फल पामीयि । जिम तरीयि ससार ॥२॥

कोटवाल का पुन. प्रश्न

कोटवाल तब बोलीयो । ब्राह्मण कहिसे क्यंम् ॥
दान दीजि विप्र तेहनी । सुइ लहि धर्म एम ॥३॥

जमीनि हीसा कही । पापजे आदिक कर्म ॥
मास खायते दोष ज नहीं । न्याय पालि होय धर्म ॥४॥

मद्य मास दूषण नहीं । वेस्या सम प्रवृति ॥
ए जीव सहित वि वती भल_। जो करे एह की नीवृत ॥५॥

ब्रह्माई पशु सरजयां । सम्रुति कहि यज्ञ काज ॥
वेद कहि पशु यज्ञ थी । लहि ते स्वर्गह राज ॥६॥

मास साहेलडीनो

मुनि का उतर

वलता मुनीवरउ । उत्तर बोलि सुणो तह्यँ कोटवाल ॥
क्षत्रीकुल उत्तम सहू मध्ये । कयंम हिंसा करि बिकराल ॥
सुणु धरम बिचार । जीवदया मंडित सही जाणो ।
सुरग मुगति सुखकार ॥१॥

क्षत्री धरम रखावणे भाख्यो । जीवनो साह्यमोपचारी ॥
नाह्या जता बकता दांति तृण धरता । तेहनें क्षत्री कम्य मारी ।साहे०॥२॥

बापडा हरण दांति तृण धरता । नाहासता वहता अपार ॥
क्षत्री पारध किम एहनें मारि । चतुर करी बिचार ।साहे०॥३॥

तीर्थंकर हरी हलधर उपजि । क्षत्री वंश पवीत्र ॥
मांस भक्षण जीव हिंसा । किम बोली । जूउ वीचारी मीत्र ।साहे०॥४॥

जीव हणंतां धर्म जो होय । तो माछी पूजीयि ॥
मांस खाधि जो धर्मी कहीइ । तु मातंग गुण लीजि ।साहे०॥५॥

ध्यान मोन जीव हिंसा करता । पामि कु उत्तम ठांम ॥
तु नदी कांठि मीन ध्यानी । बकनि दीजि मुनी नाम ।साहे०॥६॥

जीव बधंता धर्म जो कहिइ । प्रथम कहोंनि कहिवाय ॥
केवल स्नानि जो धर्म होय । माछला तो तीन जाय ।साहे०॥७॥

ब्रह्मादि पशू यज्ञ निसरज्या । वे तह्यँ बोली वचन ॥
वाघ सिंह सरष पशूनि कह्या । ते हणवान करि मंन ।साहे०॥८॥

ते क्रूर जीव वलतीं तीख देखि । पण बापडा वंश हीणा ॥
तेहु पसूं पामनि बाधरया । देवे पम्भावे दीन सा०॥९॥

जीव अहिंसा परम धरम कहियो । वेद स्मृती मझार ॥
जीह्वा लंपट जे विप्रह । बसनी व्यपरीत थापि बिचार ॥
जुउ धरम बीचारी । जीव दया मंडित सही ।सा०॥१०॥

जीवत दांन एक जीवनें दीघ । भूप दीधि एक प्रदेश ।
एक मेर सम कनक देयंता । जीवत दांन विसेस ।सा०॥११॥

एम जाणी जिन धुर मन आणी । छांडो मिथ्या भ्रांत ॥
केवली भाषीत धर्म कसी जाणो । त्रिभुवन मांहि विख्यात ।सा०॥१२॥

अष्ट मूल गुण

मद्य मांस मधुवर जीयि । वली पंचु बर परीत्याग ॥
आठ मूल गुण एहने कहीयि । श्रावकनु ए मार्ग ॥सा०॥१३॥

बारह व्रत

अहिंसा व्रत पहिलूं कहीयि । बीजूं सत्य वरतह मन आणरे ॥
अचोरीज व्रत पञ्चूं मूक्यूं न चोरीयि । स्वदारा संतोष बखाणो ॥म.१४

परिग्रह परीमाण वली कीजे । रात्रि भोजन टालीयि ॥
जीवदया आदि तह्यें जाणो । अणुव्रत एह पालीयि ॥सा०॥१५॥

दीगवरती देसवीरती अनरथ । दंडव्रती ए देषो ॥
गुणव्रत त्रुहि गुणे व्रत पाले । संसार तारण लेखो ॥सा०॥१६॥

सामायक पदर्वे उपवास । भोग उपभोग संख्या ॥
अतीथविभाग ए च्यार प्रकार । शीक्षाव्रत शुभ सीक्षा ॥सा०॥१७॥

समकित सहीत बारि व्रत कह्यां । संलेखना तनु त्याग ॥
दृढ मन करी तह्यें ए पालो । सरग मुगती नु मार्ग ॥सा०॥१८॥

षडकरमा बलतूं इम बोलवि । ए सहू पालूं सुजाण ॥
जीव दया मण नवि पलयेमे । होयि कुल धर्म हाण ॥सा०॥१९॥

विकट लोटा चुरटा जे मोटा । निग्रह करु तेह करे ॥
भली परीहू नवरी ने राखूं । क्रूर कर्म छि महारो ॥सा०॥२०॥

मुनी बोलिहुवी तह्म मन केरी । भ्रांत वे काम न आव ॥
कुलि पांगलो कोढो को व्यसनी । तिम आपणी शुं थवाव ॥सा०॥२१॥

वली राजानो भय तह्म होसि । कुटम भरण लणो सहू ।
खावा काजि कुटब सहू मलयू । दुःख सहिसि जीव बहू ॥सा०॥२२॥

परतक्ष तह्म निदृष्टां तज वासू । सांभलो मन थिर राखी ॥
असोधर चन्द्रमती भव भमयां । ए कूकडा बेहू साखी ॥सा०॥२३॥

पीठ कूकडो हणयो देवी आगलि । ते पाप बहू लागी ॥
अमृतांमि असोधर चन्द्रमती मारचा । मोर कत्यरा भव भव भाग्यो ॥सा.।२४

यशोधर एवं चन्द्रमती के जन्म

तीहां थी मरी सिहिली साप हुवां वली रोहीत संसुमार ॥
चन्द्रमती आली हवी । तेह अभि राय छाग हवी बे वार ॥सा०॥२५॥

चन्द्रमती सहित योनि पाम्यो । तिहां थी कूकडा हुवा बेहु ।।
कुमित जीव हिंसा फल पाम्या । पणि समता नहीं बेहु ।।सा०।।२६।।

कोटवाल का संसार से भय

तब कोटवाल आचंभ मनि पाम्यो । कांप्यो थर थर देह ।।
राज राज करुणा करी मुनीवर । किम होशि पाप छेह ।।सा०।।२७।।

कोटवाल मुनी पाये लागी । वरत मागि मनि सूध ।।
समकित सहित श्रावक व्रत दीधां । मुनी करुणा करी बीध ।।सा०।।२८।।

तब सहूँ बेहु कूकडे सहु सुणयूं । वर मनि अवांतर सार ।।
जाती समर ऊपनूं सही । सहूँ पण लीधा वरत मनतार ।।सा०।।२९।।

जाती समर बली वरतज पाम्यां । हरख ऊपनो अपार ।।
कूकू कूकू इम मधुरज वाल्यां । नारीजन सुण्यो वीचार ।।सा०।।३०।।

कुसुमावली सूं रंगि रमता । काने पडयो शब्द साद ।।
जूव जूव सबद बेधी बाण मूकनूं । बाण लीधु करी नाद ।।सा०।।३१।।

बाण वेधि राजाइ मूक्यूं । मूक्यो सहूँ जीव प्राण ।।
कुसुमावली गरभे ऊपनां । जोडु जुग सत प्रमाण ।।सा०।।३२।।

कोटवाल मुनीवर पद वांदी । उत्तम करत्यु सत संग ।।
धन्य धन्य मुनीवर तह्म तणी वाणी । नीरमल मंन तरंग ।।सा०।।३३।।

पापकलंक मह्यारा पखलावा । मुझ वाणी जल पूर ।।
मझ मन प्राप कायव सहू मूको । मुनिवर दीठु सूर ।।सा०।।३४।।

संसार सागरि बूडंता । मुझ तह्मे दीधु हाथ ।।
हूं पाप लहिरी कंपाबु वर्णीवरि । मोहि आवर्त्यो अनाथ ।।सा०।।३५।।

आज चिंतामणि रत्न में पाम्यूं । पाम्यो धर्म कल्पद्रुम ।।
जिनवाणी जिनमत जिनशासन । जिहां आव्यो छे वल ।।सा०।।३६।।

धुई नीच कुल अवतरयु । तु मुझ माण्य विशाल ।।
समकित रयण वरय मिल हूवी । जीव दया कुलगात ।।सा०।।३७।।

कोटवाल मुनी नमी निज स्थान के । पोहोतो मुनी गुण वातो ।।
मुनीवर चोटे वरह महंत । रह्यो चीहुप व्यातो ।।सा०।।३८।।

वस्तु

बेहू कूकड बेहू कूकड मरीते जाए ।
कुसुमावली गरभिहूवां । सने सने ते गरभ वाध्यो ।
गरभ वेदना व्याकल हूवां । नवमासे अवतार लीधु ।।

अभयदानजो होलो हूवो । अभय अभयमती नाम ।
पुत्रनें पेटेज पुत्रज हुयु । भव एहवु दुःख ठाम ।।१।।

श्रीमंतो वृषभादयो जिनवरा वीरावसानाः सदा ।
संसारार्णवनौसमाः समदमध्यानात्सद्बोधका. ।

सद्भव्यप्रतिबोधकाश्चमनुता षडवेदशु भद्गुणाः ।
श्रीदेवेन्द्र सुविक्रमस्तुततपदा. कुर्वंतु वो मगलं ।।७।।

इतिश्री जसोधरमहाराज चरिते । रास चूडामणी काव्यप्रतिछदे ।
भूदेवकवि श्रीविक्रमसुत देवेंद्र विरचिते । यसोमती कुमार ।

वसंतक्रीडावनागमन कोटूपालमुनीविचार ककु ट लब्ध ।
सद्धर्मप्राप्ताभयरुच्यभयमत्यवतार वर्णनोनाम सप्तमोधिकारः ।।७।।

अष्टम अधिकार

ढाल रासनी

अभयमति एवं अभयरुचि का शिशुकाल

सने सने मोटां हवाए । म्हा बेहू सुंदर बालतु ।।
बत्तीस लक्षणि अंकरधांए । चन्द्रकला गुणमालतो ।।वरमाहें हीडीयो ।।१।।

रीखतांए मोतीचोक चूरंततो । रतनसाकीया वेरंतडाए ।।
वली वली तेह पूरततो ।।१।। वरमाहे हीडीयो ।।२।।

रतन आगिणि खेलतडाए । दीसि म्हा प्रतिछांहीय तु ।।
नागकुमर नागकुमरीए । जाणे म्हासू खेलायतो ।।३।।

क्षण खीजता क्षण हसतडाए । क्षण क्षण धरणी पडंततो ।।
रतन खेलणां आगल धरिए । तेहूं पण आछे चडंततो ।।४।।

अनुक्रमि म्हा मोटा हवांए । सुललीत तनु सुकुमाल तो ।।
विविध वस्त्रे भूषणे भराए । कंठि मुक्ताफल मालतो ।।५।।

मोटा उछव संभ्रम करीए । मूंक्या भणवानी सालतु ।।
अक्षर अंक राजनीत भण्यांए । लेपसक्षण विसालतु ।।६।।

सातवरसना मह्या हुआए । मऊ लघु पगि बहु लाजतो ।।
यसंत्रली राय देखी चीतवेए । प्रोहोणाधारति काजतो ।।७ ।

पारथ कूर आणीयाओ ए । बाज्या अनेक प्रकार तो ।।
पारधी सहूए सज थया ए । हाथ अनेक हूथियार तो ।।८।।

पाश केटला हाथ धरीए । केटला मूसल प्रचंड तो ।।
कंजडा हाथें धरि केटलाए । केटला लोढा दंडतो ।।९।।

गर्जे लोह लाकडा धरीए । हाथ बरर्या कलीहार तो ।।
पानवाटी ओडण धरयाए । सीचाणा बेहेरी प्रकार तो ।।१०।।

शृंघ अनि सकरा धरी ए । चीमी रथ धिर बिठतो ।।
कनक साकल भूरण पचवरणी ए । दीठें मन भय पेठतो ।।११।।

पांचसि स्वान बीहामणा ए । बल बलता आणी काल तो ।।
लांबी राती जीभ ललकि ए । नयण पीला विकराल तो ।।१२।।

लाबा कांन वरण् धीसिए । बेहू पेर टूंका काम तो ।।
केता धोला केता रातडा ए । केता दीसि पंचवर्न्न तो ।।१३।।

वकारया वाघ सांघि बढिए । वांकडे पूंछ रीसाल तो ।।
दात ते जम डाढ समा ए । मुख मोटू विकराल तो ।।१४।।

कनक साकल वरण् साकल्या ए । रतनपाटी गलि सोहि तो ।।
झल झलकि पचवर्णनी ए । राजानूं मन मोहितो ।।१५।।

राय चाल्यो तब वेगसि ए । आव्यो वन समीप तो ।।
कूर वाजित्र सुणसडा ए । तीरीयंच वली कपतो ।।१६।।

मुनि सुदत्ताचार्य पर पांच सौ शिकारी कुत्तों को छोड़ना

सुदत्ताचारज मुनीवरए तीणि अवसरें भूप दीठतो ए ।।
अपसुहोण भारवनें हुआ ए । राय मन कोप पईठ तो ।।१७।।

पांचसि स्वान मेंकावयाए । मुनी ऊपेरं तेणी वार तो ।।
मुनीवर धर्य्यते थामयाए । बाले बल आकार तो ।।१८।।

मुनीवर तेणी बीटीयो ए । सोहिते गुणमाल तो ।।
सिंह पंचक्रम पुंजली ए । जिम दीवो सीआल तो ।।१९।।

मुनीवर तणी तप बलिए । स्वान नम्या थया सांत तो ।।
विमलव्या सम देखी करीए । राय मनें हुवो भ्रांत तो ।।२०।।

मछ पारध विघन करयू ए । स्वांन सील्या एणि काल तो ॥
ए कपटी को दीसीमिए । एहनें मारूंह विहाण तो ॥२२॥

तब खडग करें धरीए । झसमस चाल्यो भूप तो ॥

कल्याण मित्र की मुनि वन्दना

राज मर्दे जीव मांधलोए । न लहि न्याय सरूप तो ॥२३॥

तीणि अवसरें मुनी वंदवाए । कल्याणमित्र वन मांहि तो ॥
आव्यो भावसहीत भलो ए । राय दीठो तणि ठाहि तो ॥२४॥

अपूरव भेट लेई मल्यो ए । राय दीधो बहुमान तो ॥
चालो नरेंद्र मुनी वंदीयिए । कीजि धर्म नीधानतो ॥२५॥

राजा के विचार

तब राजा कहि मित्र सुणो ए । यह्व कीधो अपसोस तो ॥
पारध फावेवा तणो ए । एह आंदि मुख कोस तो ॥२६॥

वली एणि स्वान सीलीया ए । मछ तणा अति क्रूर तो ॥
वली नागो अमंगलो ए । कुल एहनूं ं जसापतु ॥२७॥

हूं कुलवत राजा सहीए । किम एहने नमावतो ॥२८॥

कल्याण मित्र का उत्तर

तब कल्याण मित्र बोलीयो ए । राज सणो मम बात तो ॥
पारध अपसुण वहुं कह्यो ए । ते बोल सत्य वीख्यात तो ॥२९॥

पाप कारब एथी नव्य होय ए । होय पुण्यनो एथी काज तो ॥
स्वान सील्या ते फोक कहोए । कपटनो न लहि नाम तो ॥३०॥

तप परभाव एह मन गल्यो ए । सांत हुवा ए अपार तो ॥
नागो कह्यो ते ऊत्तर कहूं ए । सहूजन सहिजि विचार तो ॥३१॥

लोक नाचो जन्मे नागो मरिए । नागो साचि सीव मोक्ष सु ॥
सीव स्वभाव नागो होय ए । पहिरयो ए विकृत भेख तो ॥३२॥

वली ईश्वर नागु कह्यो । नागो वही क्षेत्रपाल सु ॥
सुरविद्याधर एहनि नमें ए । नगन काजि मुणमाल तो ॥३३॥

वेद धर्मथी वेगलो कह्यो ए । वेद कहीजि एह ज्ञान तो ॥
ब्रह्म विद्या उपनिषध ए । ब्रह्म लहि जेम मान तो ॥३४॥

मलमलीन शरीर सही ए । वस्त्र् वस्त्र् शोभन कीय तो ॥
सात पात मन मूर्ख धरयो ए । नविन कुसंग नहीं ठवें तो ॥३५॥

सील संयम तप पालतां ए । एह होवे पवित्र तो ॥
अशुची कह्यो ए किम हुवो ए । आतू नहीं पवित्र नीलतो ॥३६॥

सील प्रवाह तट सत्य तो । दया कलोल बीतराई कह्य ए ॥
आत्मा नदी संजम जल ए । मांजन दाहूं नीलतो ॥३७॥

कुल एहनु कहुं सांभलो । कलिंग देशनु रायनु ॥
सुदत्तराय नाम कहूं ए । अनीय कुल गुण ठाम तो ॥३८॥

सपताण रांजे मंडीयो ए । राजपाल तो एक धारयु ॥
कोटवालि चोर धरी आणयो ए । रायप्रति कहि बीचार तो ॥३९॥

एणि चोरि गृहपती मारयो ए । तिस चोरयू उसंग तो ॥
दंड देवा ब्राह्मण पूछीया ए । ते बोल्या सुजंग तो ॥४०॥

नाक हस्त पग खंड करो ए । राव कहि कोहि पाप तो ॥
ब्राह्मण कहें पाप रायनें ए । मूंक्यां करि पाप ब्यापतो ॥४१॥

ते पाप पण रायने सही ए । तब राय लह्यो वैराग्य तो ॥
राजभार सुतनें दीउए । संजम लीधो मोक्ष मार्ग तो ॥४२॥

मोक्ष करि नहीं तहा तणो ए । पाप मूल हार तो ॥
सुर नर करतु विचारवर ए । मुनि चरण सुखकार तु ॥४३॥

राजा द्वारा वन्दना करना

तब राजा बोल मानीयो ए । मुनीवर पासल जाय तो ॥
नमोऽस्तु करए बेहु बासिए । बोध धारयो मुनीराज तो ॥४४॥

प्रासुक अमें वेबीसाए । धर्म बुद्धि देहूवे बीनती ॥
राम वणं पायंमीलाए । सतूं बीचार तब कीजह ॥४५॥

दूहा

मुनिवरनि राजा कहि, कारण देह कल्याण ॥
राजाने बीजि नही । क्षमा तणो नीधान ॥१॥

ब्रह्मा कहुं तो जनमती चल्या । हरी तो गोपी सुजाव ॥
शीव कहुं तो गौरी नवें करि । रवि कहू तो ताप कोय ॥२॥

चंद्र कहूं तो कलंकी सई । गुरु पतनी दोष इन्द्र ॥
सगर हूं तो खारो करे । मेरु तो जड़ लोभ मंद्र ॥३॥
नारद कहु तो कलह करे । दुर्वासा तो बहु रोष ॥
विश्वामित्र वसिष्ट कहूं । मातंगी उर्वसी सुत दोष ॥४॥
कपिल सगर सुत बालया । जमदग्नी रीसह ठाय ॥
व्यास कहूं तो चूको अपछरा । धीवरी सुत कहिवाय ॥५॥
सुक तु अपसरा सुडीथि जन्यो । हरणीथि जन्यो एक शृंग ॥
इम जोतां कुल सील थी । अनोपम मुनी उत्तम ॥६॥
वली एहथि स्वान मूकवा । कोपि चढ्या विसेस ॥
हूं पण सज्ज काढी वरधो । रीस न चढी लवलेस ॥७॥
साधु तणी निंदा करी । किम छूटसूं ए पाप ॥
सिर छेदी मुनी पावे धरूं । तो टलिए सताप ॥८॥
इम चिंतें राय कोटि भट । खडग्रि चालि जब हाथ ॥

मुनि द्वारा सम्बोधन

राय प्रति वली वोलियो । दयावंत मुनीनाथ ॥९॥
भाभो भूप भलूं नहीं । सिरछेदवानूं काम ॥
आप हत्या ए मानीयि । दुरगति केरो ठाम ॥१०॥
तपि करी पाप पखालियि । तप करि छूटि पाप बंध ॥
तप करी सरग सुगतो सुख । अवर आले सहू धंध ॥११॥
राय मनें आश्चर्य हवो । कल्यणमित्र बूं कही बात ॥
मुझ मन भाव किम जाणायो ए तह्मे कहो मझ भ्रात ॥१२॥

भास धंनिकासी

कल्याण मित्र द्वारा राजा को समझाना

कल्याण मित्र बोल्यो तेणी बार । राय सुणो वाणी मुझ तणी ए ॥
ए कारण तो थोडु विचार । ए मुनीवर ज्ञानी घणी ए ॥१॥
तप करतडा अती स्पृधो । रीध ऊपनी छि अती घणीए ॥
रिधि सकति जे मुनी कन्हे होय । विस्तारी कहूं कोडामणी ए ॥२॥
जो जिन नाम रुधी स्मरण करत । विसुचिकायादि रोग टलेए ॥
अथवी जिनमुनी स्मरण थी नाण । सर्वज्वर रोग मले ए ॥३॥

परमावधि मुनी स्मरण विशेष । रोग मस्तकनी जाय बली ए ।।
सर्वावधि मुनीनें नमस्कृत । जाणी मधु रोग हरिए बलीए ।।४।।

अनंत अवधि जाणे जब स्वरूप । बाध्य बहु रोग हरिए ।।
कोष्ट बुधी रथी परमार्थ । बुध गुल्मोदर नाश करेय ।।५।।

सर्वशास्त्रनूं बीज अक्षर सही जाणि सर्वशास्त्र ।।
बीजबुधी स्वास सही हरोए । मुत सही माहोमाहि वैर साहित ।।
वैर तजि पदानुसारी बुधिए ।।६।।

सभीन श्रोत बुधी रीधन ध्यायत । स्वास खास क्षय रोग हरे ए ।।
स्वयं बुधी रथी मुनी तणूं ध्यान । कवित कला फल जनि शोभिए ।।७।।
नाद बिना होय जेहनि ध्यान । प्रत्येक बुधि मुनी कह्या ए ।।
बोधीत बुधि बुधी गभिर । तत्त्व पदारथ जाणी रह्या ए ।।८।।

सरलपणें मन चींत्यो पदारथ । जाणे रजू मती रथो बलीए ।।
विपुलमती कहि कुटिल विचार । मन अर्थ चिंता बली ए ।।९।।

जेहनी भक्त नर सहू जाणि भव । दशपूर्व रथी गुरु जाणीयिए ।।
स्वसमय पर समय सहि भेद । चौदस पूर्व बखाणीयिए ।।१०।।

अनेक प्रकार जाणे निमित्त । अष्टांग निमित्त कुशल मुनीए ।।

ऋद्धियों का वर्णन

अणीमा महिमा आदि रीधी दातार । विकुर्वण रधि छि पावनी ए ।।११।।

लघु अणु सम मोटूं मेरु समान । सरीर करि रिधी बलें ए ।।
आकाशगामिनी ध्याता दीधि । सीधी विद्याधर रिधी फलिए ।।१२।।

हृदयचींता मुष्टीगत वस्तु । चारण रथी जाणि सहीए ।।
अंग आदि जाणि श्रुत मुनीन्द्र । पण्य श्रमणाण रथी कही ए ।।१३।।

मेरु शीखर जई स्पर्श करंत । आकाशगामि रथ तणूं फलिए ।।
आवी बीडि रीधि दाल पीसंत । चक्रवर्ति सैन्य अधिष्ठ बलिए ।।१४।।

जो करपति शत्रु करे वैराग । कोप न करें सही क्षमा बलिए ।।
दृष्टि विष जो क्रूर करि दृष्टि । चक्रवर्ति सैन गो ठाम टले ए ।।१५।।

वज्र बल मुनीए रुद्री शती सक्र । पण को प्रति कोप न करिए ।।
तेह रुधी मुनी ध्यातां सुणो राय । अनेक प्रकारें विघ्न हरिए ।।१६।।

क्षीर पलिए तप थी न चलंत । उग्र तपि रधी फल कह्यो ए ।।
सरीर कांति जाए पंचकार । जिनवाणी जिके विख्यात कह्यो ए ।।१७।।

तन तणो पाप संयम सहू जाय । विल तप रिद्धे वरणुं ए ॥
एहवि ध्याने करतां फल होय । स्तंभन योद्धो सेन्या तणुं ए ॥१८॥

ताता लोहा पिर पडयो जल जेम । तम थका पाप विलटी जाय ए ॥
तप्त रूपी क्षमा विख्यात जाणो । विघ्न तणुं स्तंभन थाय ॥१९॥

छट्ठ अट्ठम पक्ष मासोपवास । मन वीकृती पामि नहीं ए ॥
महातप रीधी तणो परीणाम । जलस्थंभन ध्यातां सही ए ॥२०॥

सिंह व्याघ्र क्रूर आक्रम्याए । वां सर्पही मुनीं वीकृती रती न भजेए ॥
घोर तपि घोर गुणवली रुषि । परीसह जीपि नभ बुझिए ॥२१॥

धीर गुण पराक्रम जोय । कर्म विरी साधि बढिए ॥
घोर गुण ब्रह्मचारी गुणाग । नारी परीसहि नवि पडे ए ॥२२॥

आमोसहीए पत्त परभाव । आमय पिर पिर ना टलिए ॥
खीलो सही रुषि थूंकने स्पर्श । रोग सहू दूरे पलिए ॥२३॥

तपनि मेलथी साप विष रोग । वील आंती फीफक थाय ए ॥
जल्लोसही पलि मरकी विनास । रोग जाय रुषी ध्यावतां ए ॥२४॥

सर्वोषधीय पत्त गुण जोय । सर्वोष उपच आव्यो ध्यावताए ॥२५॥

अंतरमूर्त्ति द्वादश अंग । प्रस्वन मरकी हणि तेणि कहीए ॥२६॥

कामवली जु ऊंधलि मीलोक । तर्क अन्य स्थानकि करिए ॥
हस्त पास्यू ते दूध सही होय । खीरस वीरा रुषी करिए ॥२७॥

हस्ति वीपादी तें भूत सही थाय । सप्पीसवीसु रुषी धीर कहीए ॥
हस्ति धान अमृत गुण होय । अमी ए सवीस गुण कहीए ॥२८॥

अखीण महानसीकथ्य मुनींद्र । जेह घेर आहार लेई आवए ॥
च्यार हाथ भक्ती सैन्य समाय । ब्रह्मज्ञान अक्षय थाय ए ॥२९॥

वर्द्धमान रुषि गुणि धन धान्य । विद्या तणी वृधी थाईं ए ॥
सप्वसिद्धायद व्यास प्रमाण । सर्वोतमी आहा पुण्य कीजिए ॥३०॥

वर्द्धमान वृधी रुजी नाम । सर्वार्थ सीधी मोक्षादी देहए ए ॥
एह रुषी मुनी कह्या विस्तार । विनय करी गुण सीखीजिए ॥३१॥

सुर असुर नर जोडि हाथ । ए मुनी मोटा रायीव ए ॥
अनेक शास्त्र छि अरथ भंडार । तव नम करुं ए माजीव ए ॥३२॥

सुकल ध्यान करि [illegible] ।। मोह मिथ्यात्व [illegible] ए ।।
काम [illegible] मद माहुठवा आय । [illegible] पाटरा [illegible] ए ।।२३।।
करम वैरी रखे रोकवा जेवा । [illegible] [illegible] कीधु ए ।।
त्रिभुवन माँहि एकल मल वीर । [illegible] मोकि [illegible] जव कीउ ए ।।२४।।
[illegible] सुं रंग अनंत । ध्यान [illegible] निधि [illegible] ।।
नित्य नव पदारथ जाण । आतम तत्त्वनिसही बूझिए ।।२५।।
अठार सहस सील रत्न राशि । चौरासी लाख उत्तम गुण ए ।।
सुभट सवे पंचाचार प्रधान । एह सबु पूरि कुशाए ।।२६।।
उपसम गज चढी करे काम । ठाम विषय वैरी नी टालिए ।।
पोढी प्रजा चतुर्विध संघ । वचन धर्म करी पालिए ।।२७।।
पुण्य पाटरा राजधीनि जाण । सरग सबल गृह सोभता ए ।।
व्यंतर ज्योतिक विविध विमान । परकार्म सोत पुर सोभता ए ।।२८।।
एणी पिर राज करे मुनीराज । आतमा चिंतन राजबट चलीए ।।
पापी अभव्य ने मोहोल न होय । न्याय मारगे चालि वलीए ।।२९।।

दूहा

भवांतर पूछु स्वका, मात पिता तणा साज ।।
ए मुनीवर न्याने चागलो । सुणो जसोमती राज ।।१।।
तब जसोमती कर जोडीनि । मुनीनिं लागो पाय ।।
मिथ्याजाणि अविनय करयु । तम्हे [illegible] मुनीराय ।।२।।
मुनीवर कहि राजा सुणो । लाख चौरासी जीव ।।
ते ऊपरि [illegible] । समता [illegible] ।।३।।
भवांतर मेऊ मात तातना । कहो तबे [illegible] ।।
मुनीवर कहिसे [illegible] । सुणो जसोमती [illegible] ।।४।।

[illegible] (चौपाई)

जसोमती राजा के भवान्तर

राय जसोधर [illegible] पितामी । अमृतमती [illegible] के ।। राय [illegible]जी
[illegible] । [illegible] के ।।राय।।
[illegible] । पुण्यनि [illegible] के ।।
जसोधर [illegible] । [illegible] ।।
वैराग्य धरी तब [illegible] । सुरग [illegible] के ।।१।। राय

पूरव करम पसाय थी जी । राणी कुबजा सु लब्ध ।।
जसोधर मन तेह सु सही जी । बहु परलोहिं बद्ध के ।।२।। राय०

राणी अज्ञानी ही जाणीयो जी । राय हूवो मन मंत्र के ।।
रति वैराग्य आवती गई जी । प्रभात हूवूं उतंग के ।।३।। राय०

सामंत क्षत्री मंडीयो जी । राय सभा बईठ ।।
चन्द्रमती तिहां आवई जी । सुत दीठें हरख पईठ ।।४।। राय०

जसोधर दीक्षा लेवा सही जी । कहिं कूर समग उपाय ।।
चन्द्रमती बलती कहे जी । देवी कोपी राय ।।५।। राय०

देवी मडू जीव बल दीजिये जी । जिम होय विघन विनास ।।
उत्तर प्रति उत्तर कहिवा लगी जी । जसोधर दया निवास ।।६।। राय०

मांय प्रेरयो लाजिं पड्यों जी । पीठ कूकडी करेया ।।
भाव करयो हुंसा तण्यो जी । देवी में बलि देय ।।७।। राय०

देवी तूं स्तवन करयूं जी । मझ विघन करो दूर ।।
तूं चन्डी कात्यायनी जी । सींह वाहनी तू कूर ।।८।। राय०

ते समरथ केम राखवा जी । जो प्राण्यू मृत पास ।।
भोला फोकि मिथ्यात करी जी । पडिते पापनें पास ।।९।। राय०

देव स्वरूप जाणि नही जी । तुज बांछि संसारि ।।
जे पर जीवना प्राण हरि जी । ते किम तारि संसार ।।१०।। राय०

फिर आवी तुम्ह राज दीयूं जी । संजम लेवा उजवायें ।।
तब अमृतायि बीलयूं जी । जाण्यो मुझ अन्याय ।।११।। राय०

ते आवी विनय कर बोवी जी । दीक्षा लेस्यूं तुम्ह साथ ।।
माय सार्थि मुझ मंदिर जी । आज जमो मुझ नाथ के ।।१२।।राय०

रायें बीसवास तेम करयूजी । जेसूं पछी चीत साथ ।।
बली वसेंजिलदी बली जी । नारी माबु साह के ।।१३।। राय०

विश्वास करवो नहीं जी । राय ते बज्यो कुवाण के ।।
पण तेह फिर जमवा गयो जी । कर्म तणो परमाण के ।।१४।।राय०

विष देई तीणि बेहूं जणां हण्यां जी । अचेतन कूकडा ते वाप के ।।
राय मोर मांय स्वान होई जी । पापें पाम्यो संताप के ।।१५।।राय०

मोर मरी सेहलो थयो जी । स्वान थयो ते साप ।।
सेहलो मरी रोहीत हुवो जी । पापते अनुसार पाप ।।१६।।राय०

पामि सापवि मातको जी । हुओ कलोमही सुत के ॥
माव बेटा फिर विस्तरयु जी । संसार दुःखनो कूप ॥१७॥राय०

माछामि तह्म ने भेट करयो जी । जे रोहीत विख्यात ॥
अमृता ए जे तैल माहि तल्यो जी । ते सही जाण्यों तह्म तात ॥१८॥
राय०

सीसु मार जेरणी कुकडी हुसी जी । मृत्यकी नाकली सार के ॥
माछी लेवी तेमारयु जी । ताती वेलु मभार के ॥१९॥राय०

पोतां कीरव पोति तहा हुवो जी । संसार ए हुवो विपरीत के ॥
तह्में कार्ली हुसी तिहां । तह्म पिता जी । पोति पीता पोति पुत्र के ॥
२०॥ राय०

छाली मरी महिष हुवो जी । तह्म मध्य हुसो पेख के ॥
अजोनी संभव छाग तह्म पिताजी । दुःखी हुवो जाण हुणेश के ॥२१॥
राय०

महिष मारयो वाल्यो बकडमतो जीवजी । छाग वाल्यो फिर तरण के ॥
छाग महिष ताथि मूआ जी । कूकडा हुवा पापेश ॥२२॥राय०

वन क्रीडा तह्ये आवया जी । वन सीधी कोट पाल के ॥
मभसू वाद करंतडा जी । प्रतिबोधायो विसाल के ॥२३॥

कुकडे तव भव सांभल्या जी । मुझ वचन थी सार के ॥
कोटवालें साथे व्रत लीया जी । हरखें बाधा ते भार के ॥३४॥

कुसुमावली सूं बोलंतडा जी । मुख्य सब्द बेच बांण के ॥
कुसुमावली वर्गे जोवि अवतरया जी । कुकडे मुकि प्राण के ॥२५॥राय०

अभयमती अभयरुची जी । रूप सोभाग अपार के ॥
मिथ्या पाप तसि फलि जी । इम भाग्यो संसार के ॥२६॥राय०

अमृताथि पाप करयो घणुं जी । नाह मारयो वेई विष के ॥
सील न पाल्यो मिथ्या करी जी । पांचमें नरकें पापी सील के ॥२७॥
राय०

राजा की दशा

राय मनें तव थहि करयो जी । नयणे आंसू नायके ॥
झूरी झूरी आपने मंत तो जीके । रा०। थरथर कांपि काय के ॥२८॥

माह्मारो मात पिता तणो जी । माहारि हाथि व्यय कीध के ॥
जीविस हूं पाल्यो पोठो करयो जी । तिहनें मैं दुःख दीध के ॥२९॥ राय०

कल्याणमित्र प्रति बोल तो जी । मैं कीधां बहु पाप के ।।
जलचर नभचर थलचर जी । हणांका कीध संताप के ।।३०।। राय०

ते पातिक हवि छेद सूं जी । लेसू संजम घोर के ।।
तनु भव भोग विरक्त हवो जी । दुर्धर तप करी घोर के ।।३१।।राय०

दुःकर्म विरीजी पसू जी । जीकू इन्द्रिय चोर के ।।
तनु भव भोग विरक्त हवो जी । दुर्धर तप करी घोर के ।।३२।।राय०

मयण माण मर्दन करूं जी । कंपूं मन ए मिन के ।।
कल्याणमित्रनि मनी कहु जी । कुंअर नें देवो राज के ।।३३।।राय०

महीछत्र राय कुंअर यु कुंमरी नी । करवी देहवांनू काज के ।।
वलतु कल्याण मित्र वदि जी । नीज हाथि देयो राज के ।।३४।।राय०

यम कुंअरने राज भोगपडिओ । परजानां सरि काज के ।।
राजांय राज स्वस्त होइ जी । स्वस्ति मुनी तणा योग के ।।३५।। राय०

स्वस्ति बहु वाद्य सांभलि जी । सांभलि धर्म संयोग के ।।
राए तेह बोल बालीयो जी । तव जाणु नगरी मझार के ।।३६।।राय०

जसोमती के वैराग्य भाव के चारों ओर चिन्ता

असोमती राय वैराग्य हवो जी । तव हवु हाहाकार के ।।
तब अंतेउर सल भल्यूं जी । एक ऊतावली आय के ।।३७।। राय०

मोती प्रोती तिम रह्यो जी । ते पण वन मांहि आय के ।।
एक अरीसे मुख जोती जी । एक सणगारती आय के ।।३८।।राय०

एकनें अंजन करि धरयो जी । वेगुलि वन मह्यो आय के ।।
एकते वेणी गूंथती जी । एक ते पीठी लायके ।।३९।।राय०

एक हार पिहिरवा करि धरयो जी । वेगुलिवन मांहि आयके ।।
एक सिहिथी सीरें रोपती जी । एक करि तिलक धराय के ।।४०।। राय०

एक फूली करि ग्रही जी । वेगुलि वन मांहि आय के ।।
एक चंदन तनु लावती जी । कचोली हाथि लेकायें के ।।४१।।राय०

एकें भोजन थाल त्यजी जी । वेगुलि वन मांहि आयके
एक अधुरे पान बीडी धरी जी । अधूरी छि मुख ठायके ।।४२।।राय०

चीर पिहिरी चोली बीसरी जी । वेगुलि वन मांहि आय के ।।
एक अवर्सि चीर पिहिरतीजी । एक आटकी वीतराग के ।।४३।।राय०

[illegible] सुदि वेणी मरिण जी । वेगुलि वन मांहि राय के ॥
एक ते [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] राय के ॥[illegible]॥राय०

एक केडेवी मेखला पहि जी । वेगुलिवन मांहि राय के ॥
एक वीछींया नेउरी पहि जी । एक कुसरा कुटी राय के ॥४५॥राय०

एक मूंदडी करि जी पहि जी । वेगुलि वन मांहि राय के ॥
एक मोती हार मोकली जी । एक [illegible] [illegible] के ॥४६॥

एक वेणी [illegible] जी । वेगुलि वन मांहि राय के ॥
एक [illegible] [illegible] जी । एकलो [illegible] [illegible] के ॥४७॥राय

एक तिलाय कारंतडी जी । वेगुलि वन मांहि राय के ॥
नयन काजल [illegible] बोली तरणा जी । मोती हूंस काला राय के ॥४८॥

एक नाहना मुख बोलती जी । वेगुलि वन मांहि रायके ॥
एक आंसुवि [illegible] पीजती जी । तेऊ कांचली [illegible] के ॥४९॥

नयण नीर करी नाहली जी । वेगुलि वन मांहि रायके ॥
कुसुमावली राणी कीनवती जी । सुणो जसोमती राय के ॥५०॥

तप फलि स्वर्ग पामीइ जी । तेणि तह्म केतु काज के ॥
नगरी अमरावती लमी जी । तूं जो परलोक इंद्र के ॥५१॥ राय०

हूं इंद्राणी अपछरा जी । राणी केरो वृंद के ॥
वली योवन रस [illegible] जी । राज भोगी मन रंग के ॥५२॥राय०

[illegible] [illegible] तप करूं जी । दीक्षा लीउ उतंग के ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जी । मन [illegible] [illegible] [illegible] राय के ॥५३॥ राय०

[illegible] एकला [illegible] मूंकीयि जी । कीजीयि [illegible] [illegible] के ॥
फूलहार [illegible] समा जी । भूषण तह्म विण भार के ॥५४॥राय०

नयण दावानल तनु दहि जी । दहीवली चंद्र अपार ॥
तह्म विण सूनी सेजडी जी । गोडकी [illegible] राय के ॥५५॥राय०

किम [illegible] एह्वी प्रीतडी जी । मह्म तह्म विण [illegible] राय के ॥
[illegible] [illegible] [illegible] राखी । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जी ॥५६॥राय०

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के । राय [illegible] [illegible] [illegible] जी ॥
[illegible] तनु [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] [illegible] राय के ॥५७॥राय०

[illegible] [illegible] करो जी । [illegible] [illegible] [illegible] राय के ॥
[illegible] [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] [illegible] के ॥५८॥राय०

कुप यशोधा तब मांडवो जी । किम तेरूही यवनी सहुसाय के ॥
मातपित अवधारीय जी । यहुँ वाल्यो राय विचार के ॥५९॥
पालखी बेसी बेहु जणां जी । आव्या वनह मझार के ॥
मुनीवरनि पाये पड्या जी । वीनव्यो यशोमती भूप ॥६०॥राय०

तह्य विण परवार सोरहि नहीं जी । तारा विण सवी रूप ॥
अंतेउरी सहु वीनवी जी । एह तनु तह्यें तणवार के ॥६१॥

मदन दावानल बली रह्यो जी । तुं उपरि मांडो संसार ॥
तुझ नयनें अमीं करें जी । तुमही मेघमल्हार । ॥६२॥राय०

प्रेम जल वरसी करी जी । एह संताप निवार के ॥
अह्मनें लघु पणि किम तज्यो जी । केम सरि प्रजा नो काज ॥
निमित्त हवं ते वल कहो जी । दीक्षा लेवा आज ॥६३॥राय०

दूहा

राजा का निश्चय

राय कहि कुंअर सुणो, सुण्यो यसोधर भव जाण ॥
मोर आदि तह्य लगि सही । पाप पुण्य भेद प्राण ॥१॥

भव सुणतां अह्य बेहुनि । हवो जाती स्मरण सार ॥
सात भव दुःख सांभल्या । मूर्छा आवी तेणी वार ॥२॥

सीतल वायु पंवनें करी । अह्यें कीधा सावधान ॥
मूर्छा कारण अह्यें कह्यु । तीणि दुख वर्ष निधान ॥३॥

राय कहि तह्यें राजि लीउ । पालो प्रजा परिवार ॥
जप तप बहुं साधि करी । अह्यें लीउ संजम भार ॥४॥

दीधो राजपि तह्यने । वलतां केम लीउ आज ॥
राजनीति इम रहित नहीं । आपि वली वहु लाज ॥५॥

अथवा तह्यें तात सुख तणा । वांछीउं कोइवि हीत ॥
मोह जाल विनासो तह्यें । ए दीसी वीपरीत ॥६॥

बाप जोवनि सुख करि । सुत अहीवि ते वाट ॥
ते राज राग मांहि भीलपि । वलि मांचिऊ वाट ॥७॥

जु बाप तह्यें हीत करय । तो देखाडो दीक्षा सार ॥
काज सीझि मन आपणा । दुस्तर तरीयि संसार ॥८॥

राज कहुं जो सहू कहे । तो ए छोडी काज ॥
योगि बालक हे तारसीरि । चतुरखे आरब्धे न काज ॥९॥

कल्याणमित्र मुनि कहुं । राज भीयो तहां आज ॥
जिम नीसल्य राय तप लीधि । सहि कीधो आतम काज ॥१०॥

तब में तेह बोल मानीयो । रायें दीध पद दीध ॥
दान पूजा जप तप करी । सत्य रहीत मन कीध ॥११॥

इति श्रीमद्दर्शनमप्टया निपादितं ज्ञानं सवृत्तात्मकं ॥
वृत्तं तस्यिवधार्चितं जिनवसन्तु वैभवोन्नु वक ॥
सद्गबोधसुवृत्तकानिगदिता न्यायैः सुरत्नानि वै ॥
देवेन्द्रसुविक्रमसुतपदं कुर्वंतु वो मंगलं ॥८॥

इति श्री यशोधरमहाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिवद्धे ।
भूदेव कवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते । यशोमती राज-
पापार्द्धिनीर्गमनमुनिदर्शन प्राप्तबोध कल्याणमित्रबोध ।
नृपलब्ध प्रतिबोधयशोमती वैराग्य लब्धराज्यवर्णन ।
राज्यांगीकारवर्णनोनाम अष्टमोऽधिकारः ॥८॥

नवम अधिकार

× × × × ×

भास मीता चंदनी—गोर गोरे तह्य मीनबूए ॥
मुनीवर स्वामी बोलीया ए । मधुरीय सुललित वाण ॥
यशोध यशोधर यशोमती ए । तह्य आयि भवांतर जाण ॥१॥

पूर्व कथा

पुण्य पाप फल बूझवा ए । भणता सु विस्तार ॥
गंधर्वपुर जि सोहामणुं ए । गंधर्व राजा सुसार ॥२॥

ग्यांवली राणी जि गुणवती ए । रूप सौभागनी खाण ॥
ते तेह कूखि उपनोए । गंधर्वसेन कुंमार सुजाण ॥३॥

वली तेह पुनी हुवी सहीए । गंधर्वसेना नाम ॥
रूपसौभाग सोहामणीए । बहुल कलागुण ठाम ॥४॥

तेह राजानो मंत्री सहीए । राम नाम विख्यात ॥
तस नारी चन्द्ररेखा सहीए । रूप लावण्य सुजात ॥५॥

तस बेहू कूखि अवतरयो । सुंदर बेटा बेय ॥
जीतसत्रु पहिलो कह्यो ए । भीम नाम दूजा होय ॥६॥

बेटी राजनी बेह कहीए । गंध्रव सेना सार ॥
जीतसत्रु कूमति स्वयंवरे वरीए । प्रीत ऊपनी तै बार ॥७॥

राजसंगी सुत सुख भोगवे ए । राजकुमारी सुमाहंत ॥
गंध्रवराय एक बार गयो ए । पारध काज कुतात ॥८॥

वन मांहि मृग देखीयो ए । बांधे सांधतु देख ॥
हरणी बेगें भाजी रही ए । हरण मरंतो देख ॥९॥

बाण तेणि ओरि मूंकयूए । बेधी हरणी अपार ॥
बाण नैं वाइ मोइ पडी ए । प्राण गया तेणी बार ॥१०॥

जो को प्रीत हरणी तणी ए । नाह माटि धरयु देह ॥
प्रीत राखी प्राणनी गम्या ए । एहवु कहीइ सनेह ॥११॥

सरणें आवी बाणे प्रीतडीए । हरणीनें देह देह ॥
प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१२॥

प्रीतडी जाणो वन समीए । मन पेई माहि धरी एह ॥
प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१३॥

प्रीत कहीइ खीर नीर समीए । जलवहि नाखि देह ॥
प्रीत राखी प्राण नीगम्याम । एहवो कहीइ सनेह ॥१४॥

रखेलीक्याम प्रीत रसकई ए । बासें ऊकालो आरपो एह ॥
प्रीत राखी प्राननी गम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१५॥

माणस राक्षस सरीखडा ए । कोपतां बार न होय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणलीए । पशुआं तणो नेह जोय ॥१६॥

केटला खोटाला पाखो विलडिए । प्रीत करीहति सोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशुआं तणो नेह जोय ॥१७॥

केटली नारी मायावनी ए । नाहनि बंधती जोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशुआं तणो नेह जोय ॥१८॥

नाह मेहें प्राण मारे ए । पापणी अवतार जोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशुआं तणो नेह जोय ॥१९॥

भाई पुत्राली कुटंब बहुए । माहो मांहि बंधि बहु कोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणलीए । पशुआं तणो नेह जोय ॥२०॥

कांमनीं कोकल जाणें फूल ए । कमल कमंलणा होय ॥
प्रीति प्राण दीजो हरणली ए । पतंगा जसो नेह जोय ॥२१॥

वांणी हरणी सुणें तदा ए । बांधि भाली तेणी वार ॥
राय नगर भणी पाछो वल्यो ए । हरणों न दीठी नार ॥२२॥

राय पूठि मृग पाछो वल्यो ए । राय दीठो ते प्राण ॥
हरणली तणि मोहि व्यापिओ ए । पामीयो दुःखिनी खाण ॥२३॥

आंसू धारि मेह सींचतु ए । दस दिश धूल अपार ॥
नष्ट देखिले हरणली ए । व्यरह व्यापो अपार ॥२४॥

पंथ पड्यो पूठि भावतो ए । रहतो दुःखीयो होय ॥
राय वीचारे नीज मनें ए । मोह तणी गत जोय ॥२५॥

ग्यान विहूणड़ो ए पसू ए । भाखा रहीत ते होय ॥
विरह थकी ए दुःख धरे ए । मोह तणी गत्य जोय ॥२६॥

संसार वन ए दुःखे भरयु ए । जीवने भमाडि सोय ॥
वीसय वसें वीह्वल करी ए । मोह तणी गत्य जोय ॥२७॥

संसार सागर ए दुस्तरयु ए । जीवनें बोलि सोय ॥
कुटुंब पाषाण कंठे करीए । मोह तणी गत्य जोय ॥२८॥

लाख चोरासी जोन बहूटडांए । संसार नगर ए होय ॥
छेतारि जीवनें लोभि करीए । मोह तणी गत्य जोय ॥२९॥

लाख चुरासी रूप धरयां ए । जीवने नचावि सोय ॥
आपें नटूवो थई करीए । मोह तणी गत्य जोय ॥३०॥

क्रोध मानादिक चोरडांए । संसार कूप ए होय ॥
जीवने नंखावी प्रेथ करीए । मोहतणी गत्य जोय ॥३१॥

संसार तणी गत्य जोय । संसार अटवी जीव मृग ए ॥
वेगें पीडे सोय । आसा पास नाखी करीए ॥३२॥

राजा मृग देखी दुःख धरे ए । एहनें कीधु संताप ॥
विषय केरे संकट पडि ए । केम छूटे हूं पाप ॥३३॥

वैराग्य मन मांहि चींतवतो ए । पुत्र ने दीधु राज ॥
दीक्षा लीधी वने जई ए । करवा आतम काज ॥३४॥

तप करी घाती ऊजलो ए । जीते इन्द्री चोर ॥
ध्यान जोगें करी [illegible] ए । [illegible] घन घोर ॥३५॥

कुंअर राजे पालि म्यासुं ए । बांधवो तपसाई राज ।।
गजघोडा रथ भंडार घणो ए । परजाना सारि काज ।।३६।।

एक वार कुंअर दीठो मुनीवरें । ए गज घोडा बहु परिवारें ।।
ते देषी मोह ऊपनो ए । नाणुं बांध्यूं तेणी वार ।।३७।।

तपकरी व्रत आचरी ए । नाणुं म बांधसो कोय ।।
नारिण तप नीःफल थाइए । कोडी हाथी वेच्यो जोय ।।३८।।

ते रतन आपी काच लीजीयिए । घोडा साटि खर लेवि तेह ।।
आमला मोती साटि लीयि संबलो ए । तप करी नाणुं बांधि जेह ।।३६।।

परधन पर रामा पर कथी ए । नाणुं ज बांधि देव ।।
हाथ चींतामणि सांपडिए । काग ऊडाडतो लेख । ४०।।

तपें कर्म क्षय ईछीयि ए । ससार दुःख विछेद ।।
मोक्ष तणां सुख वांछीयिए । नव्य धरीयि मन खेद ।।४१।।

मरण पाम्यो मुनीवर तणाए । मालव देश ऊजेण ।
जसोबंध राजा तणो सणोए । जसोर्ध हुवो गुण तेह ।।४२।।

गंधर्वराय राणी ब्यीऊणीश्री ए । मीथ्यात तप करयो आण ।।
चन्द्रमती हुवी ते सहीए । जसोधनी राणी बखाण ।।४३।।

देवीनें दीधु पाठभु कुकडो ए । व्यर्थे करीमोई तेह ।।
मिथ्यात पाप उदय हुवो ए । सात भव भमी जेह ।।४४।।

गंधवसेना पुत्री राजनी ए । शील लोप्यूं दुःख लाख ।।
भीम देव रमू अति घणुं ए । विषयासक्त ते आण ।।४५।।

नार तणो अणाचार लही ए । जीत शत्रू हुवो वैराग्य ।।
मोह मछर राग परहरीए । दीक्षा पामी भलो भाग ।।४६।।

तप करी तेणे अती घणोए । पाल्यूं संयम शील ।।
संन्यास लेई प्राण मूंकयाए । पाम्यो आहाराव लील ।।४७।।

राज जसोधर ते हुवो ए । राणी शील मरेय ।।
पीठ कुकडा पाप उदय हुवो ए । भव साते भ्रम करेय ।।४८।।

राम मनीमि बहु वीचार सुण्यो ए । शील शील काम असार ।।
नारी सहीत तीणे आचरयो ए । शील वरत अवतार ।।४६।।

शील अतिचार विणा पाली सूघाए । हुवा विद्याधर तेह ।।
रूप सोभाग विद्या भलीए । शीलतणां फल एह ।।५०।।

पुरुष तणी नेहले मर्यो ए । भमत महाविष योग ॥
रोग संताप पीड्यि सही ए । पामवा पुरुष संयोग ॥५१॥

गंधवसेन राजा एं तणो ए । नेहेत तणो अन्याय ॥
तप वैराग्य मन बसो ए । लीयो तब गुण ठाय ॥५२॥

संयम पाल्यो अति निर्मलोए । नाणं बांध्यू असार ॥
पछी करी एह अवतरयो ए । नारीवस विचार ॥५३॥

गंधव की बेटी रायनीए । तप करी सोषी काय ॥
ते मर करि ऊपनीए । अमृताहुवी रूपठाय ॥५४॥

भीम देवर जे तेहनोए । तेणें भवें करयो जार ॥
पोढा पाप तणि फलिए । कूबडो हुवो गमार ॥५५॥

पूर भवि आसक्त हती ए । नाह त्यजी अपार ॥
एणी भवि नेह तिम करयो ए । मारी निज भरतार ॥५६॥

राम मंत्री विद्याधर हुवो ए । पालीय श्रावकाचार ॥
ते मरी करी अवतरयो ए । जसोमती कुमार ॥५७॥

चन्द्ररेखा राजे दीक्षाधरीए । तेणें करयो धर्म बखाण ॥
कुसुमावली सही तेहवी ए । परणी जसोमती जाण ॥५८॥
चित्रांगद नाम तहा तणो ए । तेणे बांध्यू राज ॥
तापस दीक्षा आदरी ए । कुतप करय कुकाज ॥५९॥

कुनीर्यवास्त्र कीधी घणी ए । आपको दीधी ज्ञान ॥
देवी देवी मोह बांध्यो ए । तसणो बांध्यु अज्ञान ॥६०।

मरी करी ते देवी हुवोए । नारीवस कुसो विचार ॥
नाणं अमल महारोए । मोह मार व असार ॥६१॥

चीत्ररेखा नाम तहा तणीए । दीधि प्राण करयो दीन रात ॥
चंद्रमत्त मरी ते हुवो ए । तणो करपणो जीवघात ॥६२॥

माया जीव आदि मोह घणोए । तहां जाणो सही राय ॥
संसार मांहि जीव फर्णं अनेए । मिथ्या तणो पसाय ॥६३॥

यशोध पिता जे अमरोबुं ए । समान सह परिणाम ॥
ते मरी, मयादत राम पुत ए । हुवो सुपत सुनाम ॥६४॥

गंधर्व राणी कोय मरी हुवी ए । जंगलणी यसोधन नार ॥
मिथ्यात फलें मरी कोढी हुवीए । नहीके ते छयणो विचार ॥६५॥

ते वली श्रेष्ठी पिर वध हवीए । मरतां पाम्यो नवकार ।।
ते मारीदत्त तहा सुत हविए । क्षिते राणी मनें सार ।।६६।।

मुनीवर तणी वाणी सांभलीए । मारीदत्त हवो वैराग्य ।।
ससारनी स्थिति भावतो ए । सरग मुगति तणो ठाम ।।६७।।

भैरवानन्द आदि को वैराग्य होना

राणी ते राज वेसाडी करीए । पांत्रीस राजा सहीत ।।
दीक्षा लीधी निरमलीए । जीव तणुं करयुं हीत ।।६८।।

भैरवानंद जोगहि बरधो ए । जीव हिंसा करयो पाप ।।
तेह हवे किम छूट सुं ए । मुनिवर टाल्यो संताप ।।६९।।

आयु थोडो जाणी करीए । दीक्षा अणसण लीध ।।
बावीस दीवस लगि तिणए । अणसण पाल्यो प्रसीध ।।७०।।

पापएवडो जो नो क्षय करयु ए । अणसण करवा माट ।।
जोगी टली देव हवा ए । धन धन करम महत ।।७१।।

पाप एवडो जो नो क्षय करयु ए । अणसण करया माड ।।
उपवास वरत संजम तप ए । सही सरग मोक्ष वाट ।।७२।।

ब्रह्मचारी बाई जेहतीए । प्रतीबोध्यो जेह्नि मारीदत्त ।।
हिंसा ठाम उछेदीधी ए । देवी संकोची महंत ।।७३।।

तीणि महाव्रत आदरो ए । आचरियो तप अपार ।।
सील संयम घणुं पालीयूं ए । अणसण लेई तेणी वार ।।७४।।

बीजो देव लोक साधीयो ए । संपुट सीला अवतार ।।
सातधान रहीत तनए । मोती पिर विचार ।।७५।।

कनक कुंडल मुगट आदि ए । पहिरया भूषण होय ।।
अंतरमुहूर्त मांहि होय ए । सात हाथ तनु सोय ।।७६।।

जय जय कार देवी करेए । वरे वाली फूल माल ।।
देवीय सुं क्रीडा करे ए । सोख भोगवि विसाल ।।७७।।

अकृत्रिम चैत्य कल्याणकि ए । यात्रा करें मनरंग ।।
पूजा अभिषेक भती करणं ए । पुण्य जोडे उतंग ।।७८।।

सुदत्ताचारय मुनीवरें ए । अणसण लीधी उदार ।।
समाधि सरीर मूंकी करीए । सोलमि सरग अवतार ।।७९।।

सुख भोगवि तिहां थकी चवई ए । हिवीय संसार दोष ॥
अनेक बांधवां कल्याणक करे ए । पुण्य तणो संयोग ॥८०॥

मारीदत्त आदि मुनी सहीए । तप कीधो बहुत ॥
आपापणा तप फलीए । सरग साध्यु जयवंत ॥८१॥

वस्तु

राय जसोधर कथा विस्तार । गौतम स्वामी इम कह्यो ॥
दया तणो भंडार कारणो । पवित्र जीव कुसल भयो ॥
सात भवांतर भम्या वखाणो । पुण्य पाप फल प्रकास्या ॥
स्वामी ज्ञान भंडार । बार सभा सहीत तदा ॥
श्रेणीक हरखु अपार ॥२॥१॥

भास वणजारानी—राग धन्यासी

भगवान के धर्मोपदेश का प्रभाव

वीर स्वामी तणी सार । दीव्यध्वन ध्रती नीरमलीए ॥
गणधर गौतम स्वामी । विस्तारी अती सोहामणीए ॥१॥

सुरवर फणधर स्वामी । व्यंतर ज्योतिषि सहुमलीए ॥
वली तिर्यंच नर नारी । विद्याधरें सभे सांभली ॥२॥

हरख पाम्या सहू कोय । आनंद घणो मन माहि थयो ए ॥
चन्द्र पूरणा बिंब जोय । सागर कल्लोल उल्लस्योए ॥३॥

केता लीधा व्रत सील । केते अहिंसा व्रत आदरयु ए ॥
केता मिथ्यामति जीव । केते अणुव्रत महाव्रत आदरयो ए ॥४॥

सांभली श्रेणीक राय । हरख उपनो मनमाहि घणो ए ।
जिनवाणी पुण्य ठाय । स्तवन करि हुंति देह तणो ए ॥५॥

वीर वाणी वरसे मेह । भव भव कर्म खावती ए ॥
वरसि धर्मामृत मेह । भविजन पंखी मन भावती ए ॥६॥

सर्वे भविक सुख लेय । हरिख पामती दिन दिन ए ।
ज्ञान प्रवाह पवित्र । सुनि तणी वाणि जाय वणी ए ॥७॥

सुरपति आदि भव्य जीव । वीतराग वस्तु वखाणतीए ॥
संसारतारणो प्रवीण । जिनवाणी तणी ध्यावती ए ॥८॥

वनस्पतिकायि नहीं वरसी । वाद परंपर दीपजे ए ।।
सहु जीव संशय हरशी होय । ए आश्चर्य ऊपजे ए ।।९।।

सब्दलीवगति न होय । पुष्टादि व्यापारन नीपजे ए ।।
प्रीछि जीव सहु कोय । मोटु आश्चर्य मने उपजि ए ।।१०।।

सूरज प्रभा जिन वाणि । मिथ्यात तिमिरनि टालती ए ।।
भव्य कमल सुख खाए । पातक पकनि रालती ए ।।११।।

चन्द्रकांति सम जिन भास । भव भ्रम वेदनि वेदती ए ।।
हरष समुद्र उल्लास । कुवादीयां मान उछेदती ए ।।१२।।

मेरु सुदर्शन जाम । चैतालासु नादिज अलगिए ।।
पूरती भवीयां काम । महावीर वाणी नांदो तव लगिए ।।१३।।

लवणादि स्वयंभु समुद्र । द्वीप सहीत नादि जब लगिए ।।
मेघ समीए सन्द्र । महावीर वाणी नांदो तव लगिए ।।१४।।

विजयारध गिरि जाम । मेरु श्रेणसु नादि जब लगिए ।।
तत्व रतन तणी खाण । महावीर वाणी नांदो तव लगिए ।।१५।।

कुल गिरि हिमवंत आदि । पद्मद्रह नादि जब लगिए ।।
हरती विषय विषाद । महावीर वाणी नांदो तव लगिए ।।१६।।

गंगा आदि नदी परवाह । जिन बींब अभीषेक जब लगिए ।।
सुरवहा आपि उछाह । महावीर वाणी नादो तव लगिए ।।१७।।

गंगादि महानदी बीच । नदी पर वरी नादि जब लगिए ।।
प्रतिद्वीपे सुप्रमोद ।महा०।।१८।।

गजदंत गिरि बीस संख्य । जिन भुवन सु नादि जब लगिए ।।
परंपरए असंख्य ।महा०।।१९।।

विदेहादि भारत खंड । धरम-सहीत नादि जब लगिए ।।
म्लेच्छ खंड वादि प्रचंड ।महा०।।२०।।

चक्री हरी बलदेव । प्रगट पराक्रम जब लगिए ।।
सुर नर करें बहु सेव ।महा०।।२१।।

जिनवर पंच कल्याण । इन्द्र रचित वादि जब लगिए ।।
मेहेरमानए जिन भाण ।महा०।।२२।।

प्रतीहरी वर आपचार । भारत प्रगटि जब लगिए ।।
त्रिभुवन जन सुखकार ।महा०।।२३।।

मुनीवर हवी निदान । केवल ज्ञानादि जब लहिए ।।
प्रगटि वर्षे विमान महा०।।२४।।

कर्म हणी मुनी संत । सिव पद पामें जब वलि एह ।।
अनंत सौख्य महन्त ।महा०।।२५।।

चक्रवर्ती नाभि सुत । वृषभाचल नांदि जब लहिए ।।
योजन विस्तारें प्रभूत ।महा०।।२६।।

नीचपानीसोपरि जाण । रवि ससी उदय जब लहिए ।।
ग्रह नक्षत्र सूं वखाण ।महा०।।२७।।

रवि ससी ग्रह नक्षत्र । मेरु प्रदक्षिण जब लहिए ।।
करी दिन रात्रि विचित्र ।महा०।।२८।।

असंख्यात योतकलोक । चैत्याला नांदि जब लहिए ।।
सुणतां टलि सहू शोक ।महा०।।२९।।

व्यंतर पे असंख्यात । आठप्रकारि नांदि जब लहिए ।।
चैत्याला सुविख्यात ।महा०।।३०।।

भवनवासी दस जात । चैत्याला सूं नांदि जब लहिए ।।
सात कोड बीहोत्तर लाख ।महा०।।३१।।

सुधर्म ईसान आदि होय । सोल स्वर्ग नांदि जब लहिए ।।
कल्पवासी विमान जोय ।महा०।।३२।।

ग्रैवेयक नवोत्तर । पंचोत्तर नांदि जब लहिए ।।
कल्पातीत अमर ।महा०।।३३।।

लाख चोरासी सहस्त्र । सत्ताणु त्रेवीस संख्य जब लहिए ।।
चैत्यालासु विमान वास ।महा०।।३४।।

गुणती सिलाजी चोरीस । सिद्धावगाह नांदि जब लहिए ।।
त्रिभुवन विषेरु बलस ।महा०।।३५।।

वातवलय सहू भेद । त्रिभुवन भरी रही जब लहिए ।।
षट् द्रव्ये भरयो अछेद ।महा०।।३६।।

जिनआदिक अवसर्व । भविकर्में आदि सुख लहिए ।।
सास्वतो आपे धर्म । महावीर गोयो तब लहिए ।।३७।।

इम स्वामी समवसरण राय । श्रेणिक आणी हरष घणो ए ।।
महावीर पूजवा सुठाय । अष्टप्रकारी सामग्री अन्यो ए ।।३८।।

रतन जडीत शृंगार । नीरमल जल पूजा करे ए ॥
वीर आगल दीपि अपार । अनम जस मरल हरिए ॥३६॥

कुंकुम केसर सार । करी चंदन पूजा भलीए ॥
सुगंधि शरीर उदार । जिनपुरुष पामवा मन रलीए ॥४०॥

नीरमल मोती सार । तंदुल पंच पुंज करिए ॥
अक्षय पद नीर्वाण । दीयो स्वामी हम भाव करीए ॥४१॥

जाई जुई मचकुंद । चंपा कमल आदि फूल ग्रहीए ॥
तह्म कीयो काम नीकंद । एह गुण लिहिवा पूजिइ सहीए ॥४२॥

पंचामृत नैवेद । उतारि हेमथाल भरीए ॥
नहीं तुझ क्षुधा तृषा खेद । तेह गुण प्राप्त होय करीए ॥४३॥

रतन कपूरना दीप । उतारि जीन आगलिए ॥
तत्त्व प्रकासन रूप । केवल ज्ञान लहिवा भलीए ॥४४॥

कृष्णागुरु आदि धूप । जिन आगलिड खेविता ए ॥
कर्मदाह करो भूप । तह्म तणो हम मन भावतो ए ॥४५॥

मोच चोच जंबीर । आंबा आदि बहु फल ए ॥
शिव सुख फल दीयो वीर । तह्म स्वामी गुण आगला ए ॥४६॥

कनक थाल भरि करी अर्घ । वीर आगलि उतारतु ए ॥
रत्नत्रय जे अनर्घ्य । पामी भव दुःख तारतु ए ॥४८॥

पूजा करी अष्ट भेद । श्री महावीर स्वामी तणी ए ॥
करवा भव उच्छेद । नृत्य भावना भावी घणी ए ॥४९॥

कुंडलपोर नगर धन्य । वीर जनमे जे पवित्र करयो ए ॥
सीधारथ नृप धन धन्य । जेह घर स्वामी अवतरयो ए ॥५०॥

धन धनपति यक्ष । बद्ध सबमास रत्नवर्षा ए ॥
चउनीकाय असंख्य । देव समूह सही हर्षतो ए ॥५१॥

भगवान महावीर की स्तुति

धन धन्य त्रिसुल्यो मात । जीणीमि वीर जिन जनमयो ए ॥
धन नाथ वंश विख्यात । त्रिभुवन माहि जे उपमयो ए ॥५२॥

धन धन सौधर्म इन्द्र । मेरु सीखर स्नपन कीउ ए ॥
धन धन जिन बालचंद्र । दुनिया में जग उद्योतीयो ए ॥५३॥

घन जिन तनु सात हाथ । वन अर्ध लाख मंडीउ ए ।।
कनक वरण शरीरनाथ । अष्टज्ञान करी मंडीओ ए ।।५४।।

कुंडल मुकट मणि हार । इन्द्र निकाय जिन भूलतो ए ।।
नमन करंतो अपार । भाल सुरवर भुलतोए ।।५५।।

त्रिस वरस कुमार । वैराग्य लोकांतिक देविय ए ।।
दीक्षा कल्याणक सार । कीयो तीन नमी संयम लीउ ए ।।५६।।

घाति करम क्षय कीय । केवलज्ञान रवि प्रगटयो ए ।।
लोकालोक कीय प्रसिद्ध । मिथ्यातम विघटयो ए ।।५७।।

समोसरण आदि होय । अनंत चतुष्टय भाखीयो ए ।।
तिहुयण भवीयण लोय । तेवि वांछित फल पावीयो ए ।।५८।।

सिंह लांछन जय वीर । वर्द्धमान महावीर सन्मतीय ।।
महती महावीर वीर । जयो जयो जगगुरु जगपती ए ।।५९।।

जयो ब्रह्मा तू ब्रह्मा विष्णु । व्यापक शिवशंकर ए ।।
बुद्ध अलख निःकर्म । हरी हर तू पातक हरो ए ।।६०।।

बोहोत्यर बरस जिन आय । विक्रम देवेन्द्र पूजीयो ए ।।
जयदेव त्रिभुवन राय । भवीजण जन जय जय कीयो ए ।।६१।।

इम स्तवी जिन वीर । पुष्पांजलीवि वधावतो ए ।।
श्रेणीक साहस धीर । गणधर नमी पुण्य पावतो ए ।।६२।।

हरखीत सुगण समुद्र । वीरनें इन्द्र आरती करें ए ।।
आशीवाद कोड भती मंद । वाजित्र ध्वनी अति विस्तरे ए ।।६३।।

करतो जय जय कार । इन्द्र उतारे आरती ए ।।
नरचंता हरख अपार । दीठडि दुरीतनी वारती ए ।।६४।।

रतन जडीत हेम थाल । रतनदीपि उद्योतनीए ।।
रचना रतन फूल माल । जाणे आज सुसंतती ए ।।६५।।

चौसठ चमर ढलंत । किन्नर किन्नरी सुस्वर गावती ए ।।
ता ता थेई थेई करंत । अपछरा नाचे नमी भावतीए ।।६६।।

करता स्तवन वास्तु नमनाल । कुंद प्रबंध भणि सुरवर ए ।।
मानली संगल त्रिजगत । भवीयण जय जय जय करीए ।।६७।।

करतो जय जय कार । इन्द्र उतारि आरती ए ।।
नरखतां हरख अपार । दीठडे दुरीत नीवारती ए ।।६८।।

जय जीवंत सु देव । वीर जिन जगदीसर ए ।।
विक्रम देवेन्द्र करि सेव । जय जय देव सुख हम उच्चरि ए ।।६१।।

वस्तु

इन्द्र भारती इन्द्र भारती कीय उचार ।
भवतरणी भारती मंगली रंगली भवीयां चीत्त दीठीय ।।
दुरित तिमिर निवारती । वंदी सुर नरें चली गरीबीय ।।
हरखीत श्रेणिक नृप तदा । जिन गणधर नमी पाय ।।
चेलणा तथा परिवार सु आव्यो निजपुर ठाय ।।१।।
भास साहेलडी नी । राग धुल धन्यासी ।।

प्रशस्ति

नव सहस देस सदा भलो । साहेलडीए । ठांम ठांम बहु गाम ।।
नयर पुर पाटन घणा साहेलडीए । वेका द्रोण सुनाम ।।१।।
धन कण कनय रयणें भर्या ।स०। गोधन तणो नही पार तो ।।
महिखी मोटी दीसि घणी ।सा०। दूध छि तेहनो फारतो ।।२।।
कनक भाव न ओइ मेहेली ।सा०। दोहता होइ भार नारको ।।
पंखीयडा त्रासि पापि ।सा०। मोर नाचि सुखे सारतो ।।३।।
सालक्षेत्र सोहि घणा ।सा०। सूडा ताव सोहंत तो ।।
परीमल वहो दश दिसतरे ।सा०। रण भण भमरा करंत तो ।।४।।
अनेक धान्य क्षेत्र भला ।सा०। गीरी सभा आम्र अंबार तो ।।
आंबा वन विविध परी ।सा०। ठाम ठाम वन विस्तार तो ।।५।।
नदी कुआ व्यावपणी ।सा०। सरोवर भर्या अपार तो ।।
कमल राता नीला नीलां ऊजला ।सा०। भमर तणा गुंजार तो ।।६।।

महुआ नगर वर्णन

तेह देस माहि सोहि ।सा०। महुआ नयरी वसंत तो ।।
धन कण कणय रतने भरी ।सा०। मोहाकन वसय महंत तो ।।७।।
ब्राह्मण वेदने अभ्यासे ।सा०। नाहि पूर्णा नदी माहि तो ।।
व्यवहार वरण घणा वसि ।सा०। नित नित होइय उच्छाह तो ।।८।।
मोटा मंदिर मालीयां ।सा०। तोरण आदि बहु सोभती ।।
मेडी गुखने मालीयां ।सा०। कहोइ नही तस सोभती ।।९।।

चहुटा चौटा हाट घणा ।सा०। मिलती मंदिर आवास तो ।।
मारुंगीची ठौरी घणी ।सा०। धणहुड तरणा नहीं पार तो ।।१०।।

बोभा बहुल बेल मोगरो ।सा०। नागबेली बहुली अनेक तो ।।
ताड तमाल आंबा आंबु ।सा०। नाली बन सुधीरिकयो ।।११।।

सिंहपुर कुल मंडल ।सा०। वाडिकनीमा अनेक वसंत तो ।।
दान पूजा तप अभिषेक ।सा०। बहु धर्मी धरम करंत तो ।।१२।।

ते नयरी माहि ऊनत ।सा०। जिन प्रासाद विशाल तो ।।
तोरण कलस धजा लहिकि ।सा०। तापका सोहि झिकझालतो ।।१३।।

वेदी स्थंभ कला भाखि ।सा०। जाली गोख सुचंग तो ।।
गर्भगृह कंवाड भला ।सा०। चंद्रोपक पंचरंग सो ।।१४।।

रयमंडप मोतीजाली ।सा०। नाटक शाला रसाल तो ।।
भीत चित्राम चतुर चमके ।सा०। लटके बहू फूल माल तो ।।१५।।

मोती फूल तरणा चोक ।सा०। चोक मोटी पटसाल तु ।।
कलस भृंगार चमर रूडा ।सा०। भामडल झाक झमाल तो ।।१६।।

रतन कनक पीतल रूपा ।सा०। पाषाण प्रतिमा अनंत तो ।।
तेजि सूरज दीपता ।सा०। दीठि होय पाप खंड खंड तो ।।१७।।

ताल कंसाल घंटा घणी ।सा०। भूगरी झल्लरी नाद तो ।।
अनेक धनी पंडीत जणि ।सा०। दीठि हरख अपार तो ।।१८।।

मूलनायक चन्द्रप्रभ ।सा०। सोम मूरती रूप ठामतो ।।
चन्द्रपुरी महासेन जय ।सा०। धन धन लक्ष्मणा माय तो ।।१९।।

देखतो चतुर कनत वही ।सा०। चन्द्रवरण सोही देह तो ।।
धन धन चन्द्रप्रभ प्रभू ।सा०। धर्मामृत आणि मेह तो ।।२०।।

शांभु अगणधरि सेवीउ ।सा०। धन धन कमल सुलेम तो ।।
धन धन चन्द्र लांछन प्रभू ।सा०। धन धन जिन धम तो ।।२१।।

आपु दल लाल पूरव ।सा०। पूरवि पाडीत काम तो ।।
काम मोह नी सेन को ।सा०। होय तकतीत मोह ताम तो ।।२२।।

धन धन जिन त्रिभुवन पती ।सा०। धन धन धम विलास तो ।।
धन धन तु कनकीश्वर ।सा०। धन धन मंडप नाम तु ।।२३।।

करि विनय सेवि सदा ।सा०। विनय बंकुलणी विलास तो ।।
त्रिभुवन देवि पूजीता ।सा०। करमणानी पुरि आश तो ।।२४।।

त्रेवीस मो जीन अवितोयो ।सा०। पास विघन हर नाम तो ॥
वाराणसी पुरी अश्वसेन प्रभु ।सा०। वामा नन्दनो अभीराम तो ॥२५॥

नीलवरण तनु नव हस्त ।सा०। सुरनर स्वीत कल्याण तो ॥
धरणेन्द्र पद्मावती पूजीयो ।सा०। जेह नामि होय कल्याण तो ॥२६॥

नावसाधन नवनिधी पूरें ।सा०। पूरि वीघनतणी रास तो ॥
डाकणी साकिणी व्यंतरा ।सा०। भूत भय जेह नामि नास तो ॥२७॥

पुत्र कलत्र मित्र संपदा ।सा०। भवीयां पूरि आस तो ॥
कवि देवेंद्र पूजीयो ।सा०। जयो जिन विघनहर पास तो ॥२८॥

जिन सासन रक्षा करो ।सा०। जयो जायो श्री क्षेत्रपाल तो ॥
नागो नाग विभूषणो तो ।सा०। हाथि डमरू जटाल तो ॥२९॥

घूघरी पायें घमघमे ।सा०। नेउर रव झमकार तो ॥
माणीभद्र धरी मदभूरी ।सा०। संघनि करो जयकार तो ॥३०॥

भट्टारक परम्परा

मूलसंघ सरसती गछ ।सा०। बलात्कार गण अभिराम तो ॥
पद्मनंद गुरु गछपती ।सा०। देवेंद्रकीरती गुण ठामतो ॥३१॥

विद्यानंदि विद्यानीलो ।सा०। तस पाटि सोहि नीधान तो ॥
मल्लिभूषण महीमा भलो ।सा०। मानीयो जेह सुलतान तो ॥३२॥

ललित अंग लक्ष्मीचंद्र ।सा०। तेहपाटि वसनीयो चन्द्र तो ॥
तप तेजें करीं सोहीयो ।हा०। वीरचंद्र सुमुनींद्र तो ॥३३॥

लाडवंस सोभा कर ।सा०। तेह पटि सार सणगार तो ॥
ज्ञानभूषण ज्ञाने भलो ।सा०। अभिनवो गोयम अवतार तो ॥३३॥

सुमतिकीरती सूरी आचार्य ।सा०। सेवयो जेह अनुदीन तो ॥
रत्नभूषण सूरी थरि स्तव्यो ।सा०। ज्ञानभूषण सूरी धन्य तो ॥३४॥

तेह पाटि धुरंधर ।सा०। बीसा हूंबड वंसतो ॥
प्रभाचंद्र महीमावलो ।सा०। ज्ञान सरोवर हंस तो ॥३५॥

कल्याण कीरती आचार्य ।सा०। सेवयो जेह सुभ मंन तो ॥
वादिराज बहु स्तव्यो ।सा०। प्रभाचंद्र धन धंन तो ॥३६॥

तेह पाट उदयाचल सूर ।सा०। मिथ्यावादी मदचूर तो ॥
वादिचंद्र वादिस्वर ।सा०। दीठडि होई आणंद तो ॥३७॥

तेहु पद्मावती आदेश थी ।सा०। मथुरा नयर मझार तो ॥
चन्द्रप्रभ चैत्यालय ।सा०। रास रच्यो सुखकार तो ॥३८॥

संघवी नरवर नंदन ।सा०। संघवि जीवराज तो ॥
कुगाल कुल दीहा करु ।सा०। संघवी बाबाई सुगुराज तो ॥३९॥

साहा माह्रो मथुरा आवतो ।सा०। धावाई धन धर तो ॥
सघवी अना कुल मंडण ।सा०। जयवंत संघवी उधरतो ॥४०॥

हंसराज सुत साहा कुंवर की ।सा०। साहु सुत वालजी सुगंग तो ॥
मल्लजी आदि संघ आवरजी ।सा०। रास रच्यो मन रंग तो ॥४१॥

धनपुर नगर

मंडावती देस भलो ।सा०। धनपुर नयर सुठाम तो ॥
आंबा वन विविध परी ।सा०। दीसि घणा ठाम ठाम तो ॥४२॥

वाव्य कुआ सरोवर घणा ।सा०। कमल पोयणा बहुभांत तो ॥
खेत दीसि धान्य तणा ।सा०। इखुवाडी विख्यात तो ॥४३॥

इखुयंत्र तणा चीत्कार ।सा०। जाणे ए गीत गाय तो ॥
कूंकि पीवणा पंथीया ।सा०। जीवा वकरी तैडायतो ॥४४॥

द्राख तणा मंडप बहु ।सा०। पंथीयडा करव विश्राम तो ॥
नागवेल वाडी घणी ।सा०। केल तणा वन अभीराम तो ॥४५॥

उन्नतपद पोल पोली ।सा०। मंदिर मोटा आवास तो ॥
हाट श्रेणी सोहामणी ।सा०। महाजन वसत मो वास तो ॥४६॥

मणि मुक्ताफल धन घणा ।सा०। हीराहाटीया बहुरंग तो ॥
वाहूरा वस्ति दीहा भला ।सा०। वेवहारन करी उत्तंग तो ॥४७॥

सोहि प्रासाद जीनजीना तणा ।सा०। कलश धजा सहीत तो ॥
कनक पीतल बींब भला ।सा०। सुर नर समूह में मोहीत तो ॥४८॥

घंटा तोरण झल्लरी ।सा०। वार्मडल शृंगार तो ॥
ताल कंसाल कलश आदि ।सा०। चंद्रूआ सोहि उदार तो ॥४९॥
बल नायक आदि जिन ।सा०। दीठडे होय आनंद तो ॥
सीमन्धरस्वामी रचीया भला ।सा०। पुण्य तणवर कंद तो ॥५०॥

मूलसंघ भारती गछ ।सा०। बलात्कारी गण गुण तो ॥
तेह पाटि सोहि दीपकर ।सा०। सकलकीरती गुरु जाण तो ॥५१॥

भुवनकीर्ति मुनि विख्यात ।सा०। तस पाटि सार सणगार तो ॥
ज्ञानभूषण ज्ञानसोहित ।सा०। गोयम सम आचार तो ॥५२॥

विजय कीरती गुरु गच्छपती ।सा०। भवन सिरी मुनिहंस तो ॥
तस पटोधर शुभचंद्र ।सा०। वादीश्वर वर वंस तो ॥५३॥

हूंबड कुल बडे साखली ।सा०। सकल कुमुदों गुरु राय तो ॥
वादीयां मानमर्दन ।सा०। षटदर्शन वादी राय तो ॥५४॥

तेह पाटि सुमतीकीरती सूरि ।सा०। तेह पाटि अवयोभाग तो ॥
भवीयां कमल विकासवा ।सा०। गुणकीरती गुण आणतो ॥५५॥

एह गच्छपती अणि अन्वय ।सा०। ब्रह्मचारी जिणदास तो ॥
शांतिदास तस पद धर ।सा०। ब्रह्म हूंसराज गुणवास तो ॥५६॥

रत्नराज ब्रह्म तेह पाटि ।सा०। सांप्रति श्री शांतिदास तो ॥
तेह उपदेस धनपोर ।सा०। श्री जिनधर्म उल्हास तो ॥५७॥

जैन ब्राह्मण सोहि तीहां ।सा०। श्री संघ अनेक प्रकार तो ॥
सघली मैत्री प्रवृत्ति बहु ।सा०। करि जिनधर्म उदार तो ॥५८॥

धन धन सकलकीरती गुरु ।सा०। जेहने एह्वा सीख विज्ञान तो ॥
धन धन ब्रह्म श्री जिणदास ।सा०। रच्या बालक रास निधान तो ॥५९॥

धन धन जिनदास महावाणी ।सा०। प्रतीबोध्या ब्राह्मण राय तो ॥
अनंत पंडवाना नाम भणूं ।सा०। जाणो जेहने राय प्रधान तो ॥६०॥

ताणें आदरयो समकीत रत्न ।सा०। पाले जीवदया प्रतिपाल तो ॥
घट सर्पदीव्य करयूं ।सा०। कुंडलुसाने सभा विसाल तो ॥६१॥

जैनधर्म तिहां थापीयो ।सा०। व्यापीयो जस अपार तो ॥
बिंब प्रासाद उद्धार करया ।सा०। तस सुत केजणी उदार तो ॥६२॥

तस पुत्री [illegible] ।सा०। धरणी [illegible] तो ॥
चोवीस ब्राह्मण कुल ।सा०। सोहि [illegible] तो ॥६३॥

तस पुत्र योग्य पवित्र ।सा०। बोधित संघपति नाम तो ।।
जिनवाणी विद्यानिधा ।सा०। समकित रतन सुठाम तो ।।६५।।

मंगावर्रे तप उद्धरयो ।सा०। आम्य सौभाग्य समूह तो ।।
विद्याकीर्ति पाटि हुवा ।सा०। देवेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्र तो ।।६६।।

अकलंक सुरी सीपासनी ।सा०। कर्नाट देस प्रसीध तो ।।
जिनधर्म दीहा उद्धरयो ।सा०। वैनराजादि हुवा कोधतो ।।६६।।

त्रिविध आगम जाणि भला ।सा०। विक्रमभट्ट विख्यात तो ।।
विद्यादान जीणि दीया ।सा०। महीचन्द्रकीर्ति सुजात तो ।।६७।।

अबचाई तस भामिनी ।सा०। सीलसमकित गुण जाणतो ।।
तसवि पुत्र वीसारद ।सा०। देवेन्द्र वासुदेव जाणतो ।।६८।।

जिनवर चरण कमल सेवि ।सा०। करि जिन शास्त्र अभ्यास तो ।।
कवी देवेन्द्रे एह रच्यो ।सा०। राम जसोधर तणों रास तो ।।६९।।

सांभलि सर्व सुख संपजि ।सा०। धर्मबुधी होइ प्रकास तो ।।
पुत्र पौत्र धान्य धन ।सा०। मंगल आनंद उलास तो ।।७०।।

संवत १६ आठभोत्ति ।सा०। मासो सुद बीज शुक्रवार तो ।।
रास रच्यो नव रस भरयो ।सा०। महुआ नगर मझार तो ।।७१।।

लखे लखाविसे भणि ।सा०। भाव सहित सुणि जेह तो ।।
तेह घिर नव्य नव्य संपजि ।सा०। नित मंगल तेह गेह तो ।।७२।।

मुनीसुव्रत जिन वणितीणो ।सा०। विक्रमदेवेन्द्र करि सेव तो ।।
वासुदेव बलीरामे ।सा०। जयदेव कही स्तव्यो देव तो ।।७३।।

पंचकल्याणि पूजीयो ।सा०। देवकीय सुयश प्रकाश तो ।।
श्री जिनने मंगल करो ।सा०। सो जिन पूरयो आस तो ।।७४।।

वस्तु

जिन चोबीस तणा जिन चोवीस तणा
मनीते पाया । राम जसोहर तेह तणो । रास रच्यो वे सार नीर्मल
सरस्वती माय प्रसाद थी । श्रीगुरुतणो महिमाय उज्वल ।।

अक्षर मात्र पद स्वर, जो कोई चूको होय
आदरजो कवी बुध करी, क्षमा करयो सहु कोय ॥१॥

श्रीरस्तु उत्तमदानशीलगुणभृत् संघायतुर्यात्मने
नंदत्वे सदनतकीर्ति महिमार्हद् वसत् शासनं ॥

जीवंतु व्यलवाक् सुधोक्षितहृता तापी: कवीन्द्रा: सदा
सद्धर्म : किलवर्द्धतां त्रिभुवने जैनो दयालक्षण: ॥१॥

इति श्री यशोधर महाराज चरित्रे रासचूडामणी काव्य—
प्रतिबंधे बुधेशकवि श्रीविक्रमसुतदेवेन्द्र विरचिते
यशोध यशोधर राजादि भवांतर यथाक्रम स्वर्गगमनोनाम
नवमोऽधिकार: । यशोधर रास संपूर्ण ॥ अरहंत: ॥

संवत १६४४ वर्षे भाद्रवा सुदि २ भृगौ । अथेहजफरपुर वास्तव्यं । उदीच
जातीय राउल सोमनाथ सुत विश्वनाथ लीखतं । शुभं भवतु ।
ग्रंथ संख्या पांचीससे पूरा । श्लोक ३५०० । इति शुभम् ।

—